भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थमाला-22

संस्कृत कोश-शास्त्र के विविध आयाम

सत्य पाल नारंग

योऽनूचानः स नो महान्।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

भारत-स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थमाला

संस्कृत कोशशास्त्र के विविध आयाम

सत्यपाल नारंग

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

भारत- स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थमाला — 22

संस्कृत कोशशास्त्र के विविध आयाम

सत्यपाल नारंग

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
1998

प्रकाशक
डॉ॰ कमलाकान्त मिश्र
निदेशक
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
५६-५७, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली - ११००५८
दूरभाष : ५५४०९९३, ५५४०९९५

विक्रम संवत् २०५५

प्रथमं संस्करणम् १९९८

मूल्यम् : रूपये १७५.००

मुद्रकः
नागप्रकाशक
११-ए, यू॰ ए॰ जवाहर नगर, दिल्ली-७

पुरोवाक्

योऽनूचानस्स नो महान् के अनुरूप संस्कृत के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार के लिए सन्नद्ध राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने भारत की स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती को विविध शैक्षिक कार्यक्रमों के द्वारा मनाया है, यह संस्कृतानुरागियों के लिए अपार हर्ष का विषय है। संस्कृत की प्राचीन शास्त्रीय परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने एवं राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में संस्थान का योगदान संस्कृत जगत् में सुविदित है।

भारत की स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती के अन्तर्गत देश के विभिन्न प्रान्तों के मूर्धन्य मनीषियों द्वारा संस्कृत के विविध शास्त्रों एवं उनमें निहित वैज्ञानिक तत्त्वों पर आधारित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को **भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला** के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

संस्कृत कोशशास्त्र के विविध आयाम नामक यह अमूल्य ग्रन्थ दिल्ली विश्वविद्यालय के आचार्य एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष, **प्रो० सत्यपाल नारंग** द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने कोशशास्त्र के विविध आयामों पर भरपूर प्रकाश डाला है एवं देश विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विद्वानों द्वारा अब तक निकाले गये कोश शास्त्र सम्बन्धी निष्कर्षों को भी संगृहीत किया है। ऐसे उपादेय ग्रन्थ को संस्थान की **भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला** में प्रस्तुत करने के लिए हम उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

भारत की स्वातन्त्र्य-स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा आयोजित विविध शैक्षिक अनुष्ठानों, विशेषतः ग्रन्थमाला के आयोजन, प्रकाशन

आदि कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले हमारे सहयोगी डा० सविता पाठक, डा० विरूपाक्ष वि० जड्डीपाल, डॉ० रमेश चन्द्र होता आदि साधुवाद के पात्र हैं ।

नाग प्रकाशक ने अथक परिश्रम कर ग्रन्थ को लोकार्पणार्थ प्रस्तुत कर हमारा सहयोग किया है । इसलिए हम उनके आभारी हैं ।

६.१०.१९९८ **कमलाकान्त मिश्र**

नई दिल्ली निदेशक

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

आभार

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के निदेशक **डॉ. के. के. मिश्र जी** वस्तुतः धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिए मुझे अनुगृहीत किया।

फ़ोगल का ग्रन्थ उस प्रेरणा का स्रोत है जिनके वैज्ञानिक संग्रह और तकनीक से प्रतिक्षण इस ग्रन्थ को सहायता प्राप्त हुई।

इस शृंखला में अन्य कार्यों के लिये सामग्री एकत्रित करने में **प्रो. आर. के. शर्मा जी** का आभार प्रकट करना अत्यावश्यक है।

प्रो. टी. एस. नन्दी ने १९८९ में अहमदाबाद में एक सेमिनार का आयोजन किया और हेमचन्द्र की विषयवस्तु को **हैम वाङ्मय विमर्श** में प्रकाशित किया जिसका हेमचन्द्र पर कार्य करते समय मैंने प्रयोग किया। मैं पाटन के **डी. जी. वेदिया** का आभारी हूँ जिन्होंने पाटन में आयोजित गुजरात संस्कृत प्रशिक्षकों की संगोष्ठी में हेमचन्द्र की मुख्य भूमिका प्रस्तुत करने के लिये मुझे आमन्त्रित किया जहां मैंने हेमचन्द्र के कोशों का विस्तार से विश्लेषण किया। इसके अतिरिक्त **प्रो दण्डेकर, प्रो. घाटगे** तथा **प्रो. महन्दले,** भण्डाकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट में मुझे उदबुद्ध करते रहे। **प्रो. टी. एस. नन्दी** तथा **प्रो. वी. एन. झा** भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने मुझे उन सेमिनारों और गोष्ठियों में आमन्त्रित किया जो बाद में इस विषय पर कार्य करने के लिये एक मुख्य स्रोत बना। इन विद्वानों ने अपने यहाँ आयोजित सेमिनारों के लेखों को प्रकाशित किया जिसका मैंने अपने ग्रन्थ तथा सूची में प्रयोग भी किया है। मैं **पी. पी. आप्टे, एच. सी. पटयाल, रानाडे, निर्मल कुलकर्णी, उज्ज्वला पेन्टसे, बी. के. दलाई, एस. सी. दाश** तथा श्रीराम शर्मा का अत्यन्त ऋणी हूं जिनसे मैं समय-समय पर इस विषय पर वार्ता कर सका।

इनके अतिरिक्त अन्य विषयों एवं काल-गणना के लिए ब्यूहलर ए. ओझा **राजबली पाण्डेय** (लिपिमाला), अनेक ग्रन्थों की भूमिकाएं, कोशशास्त्रों एवं कालगणना सम्बन्धी ग्रन्थों का प्रयोग करने के लिए लेखकों का।

मैं विशेष रूप से **विल्सन, ज़खारियां पाटकर** एवं **फ़ोगल** का ऋणी हूं जिन की कृतियों ने मेरे लिए नींव तैयार की हुई थी। प्रासाद की सज्जा,

विभाजन, नए विषयों का अन्तर्भाव तथा हस्तलेखों की सामग्री देश-विदेश से संजोने का कार्य ही मेरा योगदान है।

डा. एस. एस. राणा और **टी. आर. शर्मा** को धन्यवाद देना मैं अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ क्योंकि इन्होंने मुझे इस विषय के लिये लगातार प्रोत्साहित किया।

मेरे वे पुराने छात्र भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके शोध-प्रबन्ध एवं लेख मेरे इस ग्रन्थ के लिये लाभदायक सिद्ध हुए यथा - अञ्जू कपूर, सुषमा खन्ना, सुधा सिंह, निर्मल तथा मिथिलेश आदि।

सुधा शर्मा ने अनेकार्थकैरवकौमुदी पर, अंजू सेठ ने वैजयन्ती पर, सुषमा खन्ना ने हलायुध पर, मनीषा अग्रवाल ने इस विषय को पढ़ने के लिये मुख्य स्रोत-ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत करने में एवं नीलम शर्मा ने इन सब को क्रमबद्ध करने में मेरी सहायता की अतः ये सभी धन्यवाद एवं आशीर्वाद के पात्र हैं।

मालती राघव, अंजू सेठ, दलजीत तथा निशा गोयल आदि ने सामग्री एकत्रित करने में विशेष रूप से न्यू कैटेलोगस कैटेलोगोराम् के प्रत्येक भाग को तत्परता से देखने और लिखने में मेरी सहायता की और वह भी भयंकर गर्मी की छुट्टियों के दिनों में अखिलेश कुमार दुबे ने कुछ पुस्तकों को ढूंढकर लाने और उसकी फोटोकापी कराने में मेरी सहायता की।

मैं अपनी बड़ी बहनों तथा जीजा श्री आर. एल. सरना का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने ग्रीष्म में अत्यधिक कार्य करने के कारण बीमार होने पर मेरी सेवा की।

अमेरिका से इस विषय पर कुछ अज्ञात सामग्री एकत्रित करके मेरे इस कार्य को पूर्ण करने में मेरे बड़े पुत्र गिरीश ने सहायता की। अतः मैं उसका भी आभारी हूँ।

डा. निशा गोयल ने सामग्री एकत्रित करने में कई प्रकार से सहायता की। श्रीमती सुषमा खन्ना, डॉ. आशुतोष, डॉ. शीला डागा, डॉ. अंजू सेठ, पंकजा और सोनिया सेठी ने इस ग्रन्थ की त्रुटियों को संशोधित करके प्रकाशन काल में मेरी सहायता की। अतः मैं सबका आभारी हूँ।

प्रिन्टर्स, नरेन्द्र, सुरेन्द्र और उनके पूरे परिवार का मैं आभारी हूँ।

08-09-1998 **सत्यपाल नारङ्ग**

दिल्ली

Abbreviations

ABORI	—	Annals of Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona
ALB	—	Adyar Library Bulletin
AR.	—	Asiatic Researches
BDCRI	—	*Bullectin of Deccan College & Research Institute, Poona.*
BEFEO	—	*Bulletin de lecole francaise d' Extreme Orient.*
Beitrage	—	**Zachariae,** *T. Beitrage zur Indischen Lexicographie; Berlin, 1883.*
Bibli	—	*Bibliotheca* / **Bibliography**
BORI. D.	—	Descriptive Catalogues of Manuscripts in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
Chaterjee, S.K. (1928)	—	*Varnaratnākara* : (1300-1325) of Jyotirīśvara Kaviśekhara's Ed. Suniti Kumar Chatterjee and B Mishra 1928
CC	—	Aufrecht *T. Catalogus Catalogorum*
Comm.	—	Commemoration / Commemorative
DCPR	—	Deccan College Postgraduate and Research Institute

DMG	—	*Deutschen morgenlandischen Gesellschaft*
DLZ	—	*Deutsche Literaturzeitung*
Ed.	—	Edited / Edition
EIP	—	Potter, Encyclopaedia of Indian Philosophy Vol. I. Bibliography. Rev. Edn. Delhi, 1983.
Fel. Felicitation	—	Felicitation / *Festschrift* / *Festgable/melanges/* Comm./Memorial/Tributes Abhinandana/Smṛti/ etc. Volume.
GGA	—	*Göttinger gelehrte Anzeigen*
Gode: P.K. (1953)	—	Studies in Indian Literary History Vol. I. Bombay, 1953.
GPS	—	S.P.V. Ranga-Grantha Pradarshani Series, Nizagapatnam
GSAI	—	*Giornale della Societ'a Asiaica Italiana*
Hai. Vāṅ. Vim.	—	*See* है.वाङ्.वि.
HCSL	—	History of Classical Sanskrit Literature (Generally by M. Krishnamachariar)
Hema.	—	*Hemacandra/ Hemacandrācārya*
HIL	—	History of Indian Literature
HSHL	—	Ghatage, A.M., Dandekar, R.N.

		Mehendale, M.A. Ed. Studies in Historical Sanskrit
		Lexicography, Centre of Advanced Study in Linguistics No.3, Poona, 1973
IA	—	Indian Antiquary
IBK	—	*Indogaku Bukkyogaku* = Journal of Indian and Buddhist Studies, Tokyo
ICO	—	International Congress of Orientalists
IHQ	—	Indian Historical Quarterly
IKL	—	Warder, A.K.
		Indian Kāvya Literature
IO. Printed Books	—	India Office Library Printed Books Catalogue
JA	—	*Journal Asiatique*
J. Ass. R.S.	—	Journal of Assam Research Society
JBRS.	—	Journal of Bihar Research Society. Formerly : Journal of Bihar & Orissa Research Society
JGRS	—	Journal of Gujarata research Society.
JJ	—	Jain Journal, Calcutta
JOIB	—	Journal of Oriental Institute, Baroda

JOR Madras	—	Journal of Oriental Research, Madras
JRAS. (N.S.)	—	Journal of Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland
JSML	—	Journal of the Sarasvati Mahal Library, Tanjore
Kavindracārya List	—	*See:* NCC. II. Abbreviations
Keith: HSL	—	Keith, A.B. A History of Sanskrit Literature, reprint, London, 1956
KM	—	Kāvyamālā
NAWG	—	*Nachrichten von der Königlischen Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen (Philosgischen-Historische Klasse)*
NCC	—	*New Catalogus Catalogorum* **See** *Raghavan* etc.
N.S. / NS	—	New Series
NSP	—	Nirnaya Sagar Press, Bombay
OH	—	Our Heritage, Calcutta
PAIOC	—	Proceedings All India Oriental Conference
Patkar, M.M. (1981)	—	History of Sanskrit Lexicography, Delhi, 1981
PO	—	Poona Orientalist

Proc. seminar. Dict. Pune.	—	Proceedings of the National Seminar on the art of dictionary making in Ancient India Ed. Jha, V.N. University of Pune, Pune, 1997
Rev. edn	—	Revised edition
RORI	—	Rajasthan Oriental Research Institute
Saṁ	—	Saṁvat
Sternbach, 1974	—	Subhāṣita, Gnomic and Didactic Literature. Wiesbaden, 1974
Sharma, Sudha (1994)	—	*Mahendrasūrikṛta anekārthakairavakaumudī kā samālocanātmaka adyayana Ph. D.* Thesis Delhi University, 1994 (Unpublished). Done under the supervision of Prof. S.P. Narang (In Hindi)
SIAL	—	Sources of Indo-Aryan lexicography
SKAW	—	*Sitzungsberichte der Wiener Akademie der Wissenschaften*
SVOI	—	Sri Venkatesvara Oriental Institute, Tirupati.
TSS.	—	Trivandrum Sanskrit Series.
Unnithiri, NVP. Pūrnasarasvatī	—	*Pūrnasarasvatī* - As a versatile scholar Journal of Haryana Sanskrit Sahitya Akademy, 1986.

Vision	—	Gonda, J. The vision of the Vedic poets. The Hague, 1963
Vogel	—	Vogel, Claus: Indian Lexicography. Wiesbaden, 1979 *WZKM*.14
Vol.	—	Volume
VVRI	—	Vishveshvarananda Vedic Research Institute, Hoshiarpur
Winternitz (1963)	—	See Winternitz. HIL. III. Delhi, 1963
WZKM	—	*Wiener Zeitschrift für die Kunde des Morgenländes*
Zachariae: Kośa	—	Zachariae, Theodor *(Die Indischen Wörterbücher (Kośa).* Strassburg, 1897
ZDMG	—	*Zeitschrift der Deutschen Morgenländischen Gesellschaft*

देवनागरी

एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रहः	—	Ekaksaranāmakoṣasaṅgraha Ed. Ramaniya Vijaya, Jodhpur, 1964
द्र.	—	द्रष्टव्य
प्रका.	—	प्रकाशित / प्रकाशन/ प्रकाशक
पृ.	—	पृष्ठ
शि.स.ना.अ.	—	शिवसहस्रनामाष्टकम्
सम्पा.	—	सम्पादक / सम्पादित
है.वाङ्.वि.	—	Haima-vāṅmaya-vimarśa. Papers presented at the seminar on Kalikālasarvajña Hemacandrācārya Ed. Tapasvi Nandi and Rajendra Nanavati, Gandhinagar, 1990.

भूमिका

स्नातक कक्षाओं में अध्ययन काल में काव्य पढ़ते हुए **अष्टाध्यायी जगन्माता अमरकोषो जगत्पिता** की व्याख्याओं और उद्धरणों का मुझ पर इतना प्रभाव पड़ा कि स्नातकोत्तर कक्षाओं में एक विशेष विषय के रूप में ग्रहण किया। तत्पश्चात् संस्कृत शास्त्रकाव्यों पर अनुसन्धान किया और कुछ ग्रन्थों को प्रकाशित भी किया, जिनके नाम हैं — Bhaṭṭi-kāvya : A Study, Delhi, १९६९; Hemacandra's Dvyāśrayakāvya : A literary and Cultural Study, Delhi, 1972.

अपने अध्ययन काल में व्याकरण, प्राकृत व्याकरण और कोशशास्त्र के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर विशेषरूप से हेमचन्द्र से प्रभावित होकर द्व्याश्रय काव्य को भूमिका सहित इसे सम्पादित किया। अनेक छात्रों ने चान्द्र व्याकरण, हेमचन्द्र व्याकरण, दैव, ऋग्वेद और उसकी धातुओं के अर्थपरक अध्ययन तथा कोश पर कार्य करके एम.फिल् एवं पीएच्.डी. की उपाधि ग्रहण की।

यह कोई पुराना संस्कार था कि १९७६ में कोशों के विकास के लिये एक योजना आरम्भ की जिसके अन्तर्गत अनेक छात्रों ने एम. फिल् के लिये कोशों के तकनीकी तथा सांस्कृतिक विकास आदि विषयों पर कार्य किया, यथा- सुषमा फक्का (खन्ना), अंजू सेठ (कपूर), सुधा सिंह, मिथलेश शर्मा, सुधा शर्मा, निर्मल कुमारी तथा मनीषा अग्रवाल (पीएच्.डी. में संलग्न)। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य छात्र भी इस विषय पर पी.एच.डी. कर चुके हैं। (द्रष्टव्य-ग्रन्थ-सूची)

मिथलेश शर्मा ने एकाक्षरी पर और सुधा शर्मा ने महेन्द्रसूरि के अनेकार्थकैरवकौमुदी पर आलोचनात्मक अध्ययन के रूप में पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की जिनके निष्कर्ष पूर्वसूरियों के बिर्वे, पाटकर तथा फोगल के ग्रन्थों के निष्कर्षों से भिन्न सिद्ध हुए यथा - सुधा शर्मा ने कुछ पत्र भी प्रकाशित किये जबकि अन्य सामग्री यथावत् पड़ी रही। कुछ सूचनाएँ और निष्कर्ष भी इस ग्रन्थ में सम्मिलित किये गये जिसकी सामग्री अभी भी अप्रकाशित है।

इस विषय से सम्बद्ध एक योजना १९९७-९८ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत की गई। इसके अतिरिक्त **राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान** ने

भी इस विषय में ग्रन्थ लिखने के लिए निमन्त्रण दिया जिसके फलस्वरूप **संस्कृत कोशशास्त्र के विविध आयाम** नामक यह ग्रन्थ पाठकों के हाथ में है। इसे भविष्य की बृहद् योजना की पूर्वपीठिका कहा जा सकता है।

भारत में हस्तलेखों पर कार्य करने वाले भारतीय विद्वानों के नाम हैं — आर. जी. भण्डारकर, पी. के. गोडे, आर.एल. मित्र, हरप्रसाद शास्त्री, टी. गणपति शास्त्री, तथा राघवन् **न्यू कैटेलोगस कैटालोगोरम्** तथा इसमें उल्लिखित अनेक कृतियाँ। अप्रकाशित **न्यू कैटेलोगस कैटालोगोरम्** और अन्य अत्याधुनिक ग्रन्थसूचियों की सामग्री का उपयोग इस ग्रन्थ में नहीं किया गया।

कोशशास्त्र की अनेक कृतियों तथा उसके विविध संस्करणों का जिन विद्वानों ने सम्पादन किया तथा भूमिका लिखी, वे इस प्रकार हैं बरुआ, एच.डी. शर्मा, आर.ए. शर्मा, कत्रे, कुलकर्णी, पाटकर, भ्यानी Sources of Indian Lexicography

कत्रे ने अनेक ग्रन्थों के प्रकाशन को पूना में प्रारम्भ किया।

घाटगे ने - Historical Lexicography, Sanskrit Lexicography पर कार्य किया और महन्दले ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया।

हरिचन्द, पी.वी. काणे, एस.के.डे. और एस.पी. भट्टाचार्य वार्डर, गेरु का संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास; एस.के.डे. कृष्णमचारियर, वाचस्पति और बलदेव उपाध्याय, वार्डर, लीनहार्ड, क्लाउज़, लेखक की कालिदास, बिब्लियोग्राफी संस्कृत साहित्य अथवा शास्त्रों के सामान्य इतिहास; भगवद्दत्त और बलदेव उपाध्याय तथा गोण्डा का वैदिक साहित्य का इतिहास; आर.ए. शर्मा, देवव्रत शर्मा, केशव शर्मा एच.डी. शर्मा, राघवन्, कुलकर्णी, पार्टकर लोकेश फोगल बालमुकुन्द द्विवेदी का कोशशास्त्र का इतिहास; सुधा शर्मा का अनेकार्थकैरवकौमुदी, मिथिलेश शर्मा का एकाक्षरी कोश, डी.सी. सरकार, एस.पी. तिवारी का शिलालेखों के कोश ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन साहित्य का बृहद् इतिहास तथा जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश नामक ग्रन्थों को भी विभिन्न निष्कर्षों के लिए प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक सेमिनारों से भी सामग्री एकत्र की गई है, यथा - ऑल इण्डिया ओरिएन्टल कांफ्रेंस, Summary & Proceedings; इण्डियन कांग्रेस आफ ओरिएन्टलिस्ट; अभिनन्दन ग्रन्थों की विषयानुक्रमणी, अहमदाबाद

एवं बडोदा में हेमचन्द्र की संगोष्ठियां पूना में सम्पन्न घाटगे द्वारा समायोजित एवं वी.एन. झा द्वारा कोशशास्त्र की संगोष्ठियों के लेखों का इसमें उपयोग किया गया है।

यूरोप में हस्तलेखों पर कार्य करने वाले विद्वान् हैं — वेबर, एजलिंग तथा आउफ्रैख्ट आदि।

कोलब्रुक, विल्सन, वेबर, राज एवं बोटलिंक, बर्नूफ, आउफ्रैख्ट, लोनमैन, ज़खारिया, एजलिंग, विन्टरनित्ज, कीथ (कोशशास्त्र पर) फोगल, बोतो, लुई रेनू, तथा बौद्धविधावित् नाकामुरा, लामो गोण्ड संस्कृत के सामान्य इतिहास पर लीनहार्ड, गेरु, फ्रांके आदि विदेशी विद्वानों ने इतिहास ग्रन्थों पर कार्य किया है। इन का प्रायः मैंने उपयोग किया है।(द्र. ग्रन्थसूची)

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

(१) प्रस्तावना

कीथ[१] के अनुसार **संस्कृत कोशों के वैज्ञानिक मूल्यों को बहुत ऊंचा नहीं आंका जा सकता। यह व्यवहारिक कोशों का निर्माण करने वालों से अपेक्षित भी नहीं है।** इस कथन का खण्डन केवल एक वाक्य में ही किया जा सकता है कि संस्कृत कोशकारों ने अनेक कोशों का एक ओर व्यवहारिक निर्माण किया और दूसरी ओर सारे भाषा के दाय को एक स्थान पर संजोने का परिश्रम किया। अमरसिंह और हेमचन्द्र के कोशों से लगता है कि वे किसी भी आधुनिक विश्ववैज्ञानिक कोश से कम नहीं हैं। तकनीक की दृष्टि से आज भी अनेक तकनीकें अपनाई जा रहीं है जिनमें अकाराद्यनुक्रम भी एक है। पर्यायवाची कोशों का निर्माण संस्कृत कोशों की विशेषता है। अन्तक्रम से निर्मित कोष अत्याधुनिक तकनीक के कोश कहे जा सकते हैं और उन की उपादेयता अनुसन्धान की दृष्टि से भी बहुत अधिक है।[२] संस्कृत कोशकारों ने प्राचीनकाल से ही इस तकनीक को अपना कर उसे एक स्वर, द्विस्वर आदि अङ्कों की गणना से विभक्त कर दिया था।

जहां तक पाठों के गलत संयोजन का प्रश्न है,[३] अनेक तन्त्रों एवं लोक में प्रचलित यह सम्भावना वास्तविकता पर आधारित है। वैदिक पाठों का अथवा लोकपाठों का बृहत् समूह वैदिक साहित्य तथा महाभारत, रामायण, पुराण, पञ्चतन्त्र तथा अनेक समालोचना के सिद्धान्तों से सम्पादित कृतियों में उपलब्ध होता है।[४] जहां तक अर्थों की सुनिश्चितता का प्रश्न है, कोई भी पर्यायवाची कोष यदि सुनिश्चितता के निकष पर कसा जाता है, खरा नहीं

---

1 Keith A.B. A History of Sanskrit Literature Reprint, London, 1956, p.415

2 Katre, S.M. Sanskrit Lexicography and middle Indo Aryan Woolner Comm. Vol. pp. 133-136

3 वही पृ.४१५

4 Bloomfield & Edgerton, Vedic Variants, Sukthankar द्वारा सम्पादित सिद्धान्त : Prolegomena to the Mahābhārata, Poona; रामायण का वडोदा संस्करण; पुराणों के काशीराज ट्रस्ट, वाराणसी के संस्करण; द्विवेदी, रेवाप्रसाद : कालिदास ग्रन्थावली (पाठान्तरों सहित संस्करण) ; एडजर्टन : *Pañcatantra* Reconstructed; Sternbach; L. *Cānakya Rājanīti* Tradition; Roth & Böhtlingk : Sanskrit Wörterbuch;

उतरेगा। ऐतिहासिक सम्पादक की प्रतिभा से अर्थों का भी ऐतिहासिक अर्थ उपलब्ध हो सकता है।[१] फिर भी संस्कृत कोशकारों ने अर्थ का निर्धारण करने की चेष्टा की है।

सामान्यतः कोशशास्त्र एक विशेष भाषा के शब्दों का उस भाषा में उपलब्ध होने वाली कृतियों के आधार पर अर्थ का निर्धारण करता है। परम्परा से उपलब्ध होने वाली कृतियों में हम अर्थ यथानिर्दिष्ट स्वीकार कर लेते हैं। इन्हें कई बार आज प्रचलित शब्दों के माध्यम से भी अभिव्यक्त करना होता है जो एक शास्त्र से अन्य शास्त्र में भ्रामकता भी उत्पन्न कर सकता है। यही सामान्य एवं ऐतिहासिक कोश का भेदक तत्त्व है। ऐतिहासिक कोश में एक ही शब्द की पृथक् पृथक् प्रविष्टियां रहती हैं जिनमें विचार के सूत्र से ऐक्य भी स्थापित किया जा सकता है जो कालक्रम से खो गया है। संस्कृत के कोश के लिए इसीलिए ग्रीक, लेटिन, अवेस्ता या भारतीय भाषाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निस्सन्देह संस्कृत कोशशास्त्र न केवल व्याकरण शास्त्र तथा लोक से शब्दों का संकलन करता रहा अन्य भाषाओं के कोशों का निर्माण भी करता रहा जहां भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त पारसी तथा तुर्की भाषाएँ भी सम्मिलित हैं। पारसीक प्रकाश की विभाजन की दृष्टि फारसी के कोशों एवं व्याकरण से अधिक वैज्ञानिक है।

सब भाषाओं के समान संस्कृत कोशों के समक्ष भी न केवल व्याकरण की कृतियां (यथा अमर के समक्ष व्याडि, निघण्टु, निरुक्त, पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि) उपलब्ध थीं, पाणिनि के समक्ष भी अनेक कोश उपलब्ध रहे होंगे जिन से वह गणपाठ, धातुपाठ तथा प्रत्ययों का निर्माण करता रहा होगा। **लिङ्गानुशासन** व्याकरण एवं कोशशास्त्र के मध्य एक महत्त्वपूर्ण शृंखला है। लोक से शब्दों को एकत्रित कर के हेमचन्द्र ने अभिधानचिन्तामणि का निर्माण किया परन्तु लोक से सिद्ध शब्दों का संकलन भी **सिद्धहैमशब्दानुशासन** में किया जैसे निरुक्त ने अनेक देशों के शब्दों को संकलित करके अर्थ का निर्धारण किया उसी प्रकार हेमचन्द्र के साधु जो अनेक देशों के वासी थे,

---

1 Buck C.D. Dictionary of Synonyms of Principal Language of Indo — European; Ghatage, A.M. Ed. Encyclopaedic Dictionary of Sanskrit on Historical Principle, Poona.

मधुकरी वृत्ति से देश देशान्तरों के शब्दों को कोश में अन्तर्भूत करते थे और उसे अत्याधुनिक बनाने की चेष्टा करते थे।

वैय्याकरणों के अतिरिक्त काव्यशास्त्र में भी **उत्पत्तिनिमित्त** तथा **प्रवृत्ति-निमित्त शब्दों** का निर्माण विशेष प्रयोजन से हुआ जिस का सम्बन्ध व्युत्पत्तिशास्त्र कोशशास्त्र तथा प्रयोजन सहित अर्थविज्ञान से भी है। एक ओर काव्यशास्त्री लक्षणा शक्ति से अर्थ का विशेष प्रयोजन बनाने की चेष्टा करता है[१]। दूसरी ओर जैन काव्यशास्त्री सिद्धिचन्द्र अपने सम्प्रदाय से विरोध होने के कारण उस का खण्डन करते हैं। (द्रव लक्षण) **सिद्धिचन्द्र** के **काव्यप्रकाशखण्डनम्** में एकाक्षरीकोश एक शब्दों के अर्थ लक्षणा से भी अपने अपने सम्प्रदाय की ओर खींचते रहे मीमांसक शास्त्रविरोध होने से इस का निषेध करते रहे यद्यपि व्यवहार में वे स्वीकार करते रहे। नैय्यायिक वाक्यबोध को अपने शास्त्र के अनुरूप बनाकर प्रयोग करते रहे। अन्य शास्त्र भी अर्थों को अपने-२ शास्त्र के अनुरूप बना कर प्रयोग करते रहे।[२]

निस्सन्देह कोशशास्त्र में नैरुक्तों, वैयाकरणों, तान्त्रिकों, काव्यशास्त्रियों एवं विभिन्न दार्शनिकों के सिद्धान्तों का अद्भुत योगदान रहा।

---

1 Ghatage, A.M. Proc. Seminar. Dict. Poona, pp.4-5, भाषा एवं समाज के नैसर्गिक सम्बन्ध के लिए तथा प्रामाण्य के लिए द्र. भर्तृहरि — वाक्यपदीय — I तथा Ghatage, op.cit.p.5

2 द्र. न्यायकोश, मीमांसाकोश, ज्योतिषकोश, धर्मशास्त्रकोश इत्यादि : Pandey, R.C. Philosophy of Word and Meaning; Raja, K.Kunjunni : Indian Theories of meaning. Jha, V.N. Proc. Seminar. Dict. Pune, pp.79-82.

(२) पृष्ठ भूमि

ऋग्वेद में

ऋग्वेद में विशेष धातुओं से निष्पन्न होने वाले शब्दों का सहप्रयोग इस बात को अभिव्यक्त करता है कि ये पर्याय के रूप में प्रयुक्त हैं जो पर्यायवाची कोशों का उद्‌भव कहा जा सकता है।[१] भारोपीय भाषाओं से गृहीत एवं साम्य रखने वाले इन पर्यायों को निरुक्त परम्परा में प्रकृति पद के रूप में स्वीकार किया गया।[२] निरुक्तसम्प्रदाय अपनी आवश्यकता के अनुसार इन का किसी प्रकार का भी निर्वचन करने के लिए तत्पर रहता है जिस का मूल भाषा से सम्बन्ध हो अथवा न हो।[३] ऋग्वेद के इन शब्दों का पर्यायरूप में निघण्टु ने सङ्कलन किया। निघण्टु १.१२ **ऋतस्य योनिः** में ऋत का अर्थ जल होना चाहिए जैसा कि ल्यूडर्ज ने प्रदर्शित किया। सर्वोच्च ऋत सर्वोच्च स्थान में रहने वाले जल से जुड़ा हुआ था। ऐसे सन्दर्भों की विधिवत् व्याख्या की जानी चाहिए[४] इसी प्रकार से **दुरोणा** का सम्बन्ध गृह से है।

ऋग्वेद के देवशास्त्र का अन्तर्देवसम्बन्ध होने के कारण तथा पर्यायों का विविध देवों में परिवर्तन होने के कारण सुनिश्चित अर्थ की सम्भावना कम बनती है। विविध देववादों के सुस्थापित होने के पश्चात् यह प्रवृत्ति उन-उन देवताओं के कोशों में भी दृष्टिगत होती है विशेषरूप से एकाक्षरी एवं साम्प्रदायिक कोशों में वेद में एक ही पदार्थ के लिए अनेक पर्याय उपलब्ध होते हैं जिन के सुनिश्चित अर्थ को जानना कठिन है। यथा अश्व के लिए अर्वत्, अत्य,

---

1 द्र. ऋग्वेद १.११.३ स्तोतृभ्यो **मंहते मघम्** १.१०.१ **गायन्ति** तथा **गायत्रिणोऽर्चयन्त्यर्कमर्किणः अर्च, अर्क, अर्किन्** ७. ८८.७ **क्षितिषु क्षियन्तः** ८.३२.१२. **शक्रश्चिदा शकद्** इस प्रकार की अनेक व्युत्पत्तियों के प्रकारों के लिए द्र. शिवनारायण शास्त्री - वैदिक वाङ्मय में भाषाचिन्तन, दिल्ली १९७२ पृ. २४ से

2 निरुक्त — सर्वाणि नामान्याख्यातजानि

3 Buck, C.D. A Dictionary of Synonyms in the Principal Languages of Indo - European में इन का बृहत् संकलन तथा विकास निर्दिष्ट है।

4 Mehendale, M.A. Proc. Seminar, Dict Pune. पृ. 9; Details. Lüders : Varuṇa.

हय, सप्ति तथा वाजिन्। उन के विप्रयोग एवं सौन्दर्यबोध से भी अर्थ जाना जा सकता है।[१] यह सौन्दर्यबोध प्रायः लौकिक कोशों अथवा उनकी टीकाकारों में भी लुप्त है यद्यपि शब्द एक स्थान पर उपलब्ध हो जाते हैं।

पुनरुक्तियाँ अनुप्रासों के कारण अथवा व्युत्पत्ति या सौन्दर्य के कारण भी हो सकती हैं।[२]

विविध सन्दर्भों में प्रयुक्त होने के कारण यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वैदिक ऋषियों को पर्याय-सङ्कलन में रुचि थी। संस्कृत कोशों के इन्हें बीज मात्र माना जा सकता है। निघण्टु से पूर्व भी कुछ कोश अपनी-२ शाखाओं में प्रसिद्ध रहे होंगे।

अनुक्रमणिकाएं

सामान्य के अतिरिक्त विविध शाखाओं की अनुक्रमणियां प्रकाशित अथवा अप्रकाशित उपलब्ध होती हैं।

सामान्य अनुक्रमणियां

द्विपदा[३]

संहितास्वाहाकार के लिए वैदिक अनुक्रमणी

नामानुक्रमणी

माधवकृत द्र. आख्यातनामानुक्रमणी[४]

---

1 Gonda, J. Vedic Literature, Widesbaden १९७५.पृ.२१९ तथा Gonda, J. Vision. पृ.७१

2 Bloomfield : Vedic Repetitions; Mainkar, T.G. Some Poetic Aspects of the Ṛgvedic Repetitions, Poona, 1966; Gonda J. Stylistic Repetitions of the Ṛgveda; Gonda, J. Vedic Literature, पृ.२२५ ऋग्वेद ३.३९.६ गुहा हितं गुह्यं गूढमप्सु; हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान्

3 NCC. IX. पृ.२०८

4 NCC. X. पृ.५०

परिशिष्टानुक्रमणी[१]

निगमाख्यकोश अथवा **नैगमाभिधान**[२]

इसे अमरकोश पर रायमुकुट ने उद्धृत किया है।

पर्जन्यमन्त्रानुक्रमणी[३]

पदानुक्रमणिका[४]

ऋग्वेद

अनुक्रमणी — आर्ष शौनक

आर्षानुक्रमणी के लेखक शौनक हैं। सर्वानुक्रमणी पर षड्गुरुशिष्य ने वेदार्थदीपिका में इसे १६ बार उद्धृत किया है।[५]

पदगाढ

अन्त्य के अनुसार तथा संख्या के अनुसार ऋग्वेद के पदों की अनुक्रमणी[६]

द्र. पदगाढगानि

यजुर्वेद

परिभाषाङ्कसूत्र[७]

अनुक्रमणिका — तैत्तिरीयसंहिता

त्वन्ताद्यनुक्रमणिका[८]

यह तैत्तिरीयसंहिता के त्वन्त शब्दों की अनुक्रमणिका है।

---

1 NCC. XI. पृ.२३३

2 ZDMG. २८ (१८७४) पृ.११४

3 NCC. XI. पृ.२३६

4 NCC. XI. पृ.१०४

5 प्रका.राजेन्द्रलालमिश्र के बृहद्देवता के संस्करण पृ.२४१-७८ में प्रकाशित कलकत्ता, बिब्लि.इण्डिका

6 प्रकाशित सामाश्रमी,सत्यव्रत कलकत्ता,पृ.१८९५

7 NCC. XI पृ.२२०

8 NCC. VIII. पृ.२५६

अनुक्रमणी - आपस्तम्ब

आपस्तम्ब गृह्यानुक्रमणी[१]

अनुक्रमणी - श्रौत - आपस्तम्ब

आपस्तम्बश्रौतसूत्रप्रयोगानुक्रमणिका[२]

अनुक्रमणी - प्रयोग - आपस्तब

आपस्तम्बपूर्वप्रयोगानुक्रमणी[३]

अनुक्रमणी - कर्मकाण्ड - आपस्तम्ब

आपस्तम्ब - आधानयाजमानमन्त्रानुक्रमणिका[४]

अनुक्रमणी - आश्वलायन

आश्वलायनपूर्वप्रयोगऋगनुक्रमणिका[५] आश्वलायनसूत्रानुक्रमणीवृत्ति[६]

अनुक्रमणी - गृह्य

आवसथ्यपदार्थानुक्रम[७]

अनुक्रमणिका[८] - कर्मकाण्ड / आधान

— आधानादिमन्त्राणां छन्दसि देवता (छन्दोगानाम्)

— आधानादिमन्त्रिाणामनुक्रमणिका (रामभक्तकृत)

— आधानादिमन्त्रानुक्रमणिका

— आधानानुक्रमणिका

अनुक्रमणिका — प्रायश्चित्त श्रौ.

---

1 NCC. II. पृ.१२७

2 NCC. II. पृ. १३९

3 NCC.II. पृ.१२९

4 NCC. II. पृ.१४१

5 NCC. II. पृ.२२१

6 NCC. II. पृ.२२७

7 NCC. II. पृ.१९१

8 NCC. II. पृ.९५

आपोदेव प्रायश्चित्तानुक्रमणिका[१]

निघण्टु

भारत में कोशशास्त्रों में सब से पुराना ग्रन्थ निघण्टु है जिस पर यास्क ने व्याख्या लिखी है। इसका उद्देश्य वैदिक शब्दों को एकत्रित करना था।[२]

इस का मुख्य उद्देश्य उन शब्दों को एकत्रित करना था जो शनैः शनैः अर्थ की दृष्टि से कम ज्ञात होते जा रहे थे। उत्तरकालीन परम्परा में अध्ययन का अभाव भी कारण हो सकता है।[३]

निघण्टु — उद्देश्य

इन कोशों के निर्माण के साथ ही वैदिक अध्ययन का इतिहास प्रारम्भ होता है जिस का उपबृंहण यास्क ने वैदिक मन्त्रों को उद्धृत करते हुए कठिन अथवा सामान्य शब्दों की निरुक्तियों के साथ किया।

निघण्टु — विभाजन का उद्देश्य

प्रथम तीन अध्याय पर्यायों के रूप में है तथा अन्तिम दो अध्याय अनुक्रमणिकाओं के रूप में। इनके निर्माण का विशेष उद्देश्य हो सकता है।[४]

निघण्टु : पर्याय : प्रकार

ये पर्याय **विशेषणों** के रूप में यथा रात्रि के लिए तमस्वती तथा उषा के लिए चित्रामघा, **प्रतीकात्मक** यथा अङ्गुलि के लिए स्वसारः इत्यादि हैं। कुछ विशेष अर्थों से जुड़े हैं यथा घोड़े के लिए **पैद्व** ‹ **पेदु** अथवा **दौर्गह** ‹ **दुर्गह**। यद्यपि निघण्टु में ये अश्व के लिए हैं तथापि ये अर्थ के आधार पर विशेष प्रकार के घोड़े हैं।[५]

---

1 NCC. II. पृ.१४३

2 Varma, Siddheshwar PAIOC I, Poona, 1919. पृ. ६८ से Karmarkar, R.D. वही. पृ. ६२ से; Keith, A.B. History of Sanksrit Literature. पृ.४१२

3 द्र.निरुक्त १.२० साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवु —

4 Mehendale M.A. Proc. Seminar Dict. Pune पृ.७

5 Mehendale, M.A. Proc. Seminar Dict. Pune. पृ८-९

निघण्टु तथा वैदिक अनुक्रम

बेल्वेल्कर[१] ने निघण्टु से विशेष रूप से ऐकपदिका शब्दों से ऋग्वेद के साहित्यिक अनुक्रम को निश्चित करने की चेष्टा की।

निघण्टु — नैगम

यद्यपि निरुक्त में निघण्टु का एक निर्वचन निगम भी बताया है तथापि इन का अर्थ वैदिक परम्परा से एकत्र किया हुआ कोश = निघण्टु तथा सामान्य परम्परा से अथवा लोक से निगम . नैगम भी हो सकता है।अज्ञातसंस्कार वाले शब्दों को भी निगम कहा जाता है (**अनवगतसंस्कारांश्च निगमान्**) कालान्तर में निघण्टु अनेकप्रकार के कोशों के लिए विशेषतः वैद्यक के लिए रूढ हो गया। निगम वेद का पर्याय बन गया जो आगम को इस परम्परा से भिन्न करता था।

निघण्टु के रचयिता

कतिपय विद्वान् यास्क को ही निघण्टु का रचयिता मानते थे[२]। दुर्गाचार्य ने यास्क एवं निघण्टु के रचयिता को पृथक् माना है[३]। महाभारत में वृष अथवा वृषाकपि अथवा प्रजापति कश्यप को इस का रचयिता माना है।[४] विभिन्न शाखाओं की अनुक्रमणियां यथा शौनक की अर्थानुक्रमणी; माधव की आख्यातानुक्रमणी; तैत्तिरीयसंहिता की त्वन्ताद्यनुक्रमणिका; द्विपदा; आपस्तम्ब तथा आश्वलायन की विविध अनुक्रमणियां[५] इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन काल से शब्दानुक्रमणियों का निर्माण करने की प्रवृत्ति चलती आ रही थी।

इन के निघण्टुओं के निर्माण को भी नहीं नकारा जा सकता।

---

1 Belvelkar, S.K. AIOC. II. पृ.११ से

2 भगवद्दत्त - वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग १ खण्ड.२ पृ.१६२

3 दुर्गवृत्ति,पृ.३

4 महाभारत मोक्षधर्मपर्व अ.३४२ श्लोक ८६-८७ वृषो हि भगवान् धर्मः ख्यातो लोकेषु भारत निघण्टुकपदाख्याने विद्धि मां वृषमुत्तमम्। **कपिर्वराहः** श्रेष्ठश्च धर्मश्च **वृष** उच्यते तस्माद् **वृषाकपिं** प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः ॥ उद्धृत - उपाध्याय बलदेव,वैदिक साहित्य और संस्कृति,वाराणसी,१९७३ पृ.३२८

5 N.CC. VIII. पृ.२५६;IX. पृ.२०८;II. पृ.१२७,१३९,१२९,१४१, २२१, २२७,१९१ (आवस्थ्य पदार्थानुक्रम) तथा पृ.९५ (आधानादि) परसर्वानुक्रमणी — आपस्तम्ब NCC. XI. पृ.१९९

निघण्टु — विभिन्न शाखाओं के

निघण्टवः का बहुवचन में प्रयोग इस बात को सिद्ध करता है कि अनेक निघण्टु प्रचलित रहे होंगे। यह भी सम्भावना है कि प्रत्येक वेद अथवा प्रत्येक वैदिक शाखा के साथ भी निघण्टु रहे हों जो कालान्तर में लुप्त हो गए। अथर्व शब्दों का एक पृथक् संकलन भी उपलब्ध होता है।[१] यास्क को तैत्तिरीय सर्वानुक्रमणी का लेखक भी माना जाता है।[२]

निघण्टु[३] — शब्द

---

1 Bloomfield : JAOS. 15 पृ. XLVIII; Modak, B.R. The Ancillary Literature of the Atharvaveda : A study with reference to the pariśiṣṭas for Kautsavya Nirukta. Nighaṇṭu p. 388; for caraṇavyūha, p. 397

2 Kunhan Raja : JOR.5 . पृ.२१५
नैघण्टुकाध्याय — बाह्लीकेयमिश्र
क्या यह बाष्कलसंहिता का निघण्टु था ?
NCC. X. पृ.२२७ (अप्रकाशित)
निघण्टवः
अथर्ववेद का ४८ वां परिशिष्ट
NCC. X. पृ.११४
निघण्टवः (लघु अष्टादश)
NCC. X.

3 निघण्टु — वैदिक
आख्यातानुक्रमणी — माधवकृत
एकार्थाख्यातपद्धति — भट्टमल्लकृत
द्र. एकार्थाख्यनिघण्टु अथवा एकार्थाख्यदीपिका
एकार्थाख्यात निघण्टु
इसका अन्य नाम एकार्थाख्यदीपिका भी है। एक हस्तलेख में इसका नाम एकार्थाख्यातदीपिका है।
द्र.NCC. III. पृ.७३
एकार्थाख्यात पद्धति II पृ.८ जहां इसके अन्य नाम आख्यातचन्द्रिका तथा क्रियानिघण्टु हैं।
निघण्टु हस्तलेखों के लिए द्र.
NCC. X. पृ.११४;

निघण्टु में न केवल प्रतिपादिको का अथवा शब्दों का सङ्कलन है परन्तु क्रियाओं का सङ्कलन भी है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मूलतः निघण्टुओं में नाम, आख्यात, उपसर्ग तथा निपात अथवा अन्य वर्ग जो वैय्याकरण स्वीकार करते रहे, अन्तर्भूत हुए होंगे। अव्ययादिवर्ग केवल लौकिक कोशों में उपलब्ध होता है। उपसर्गों के अतिरिक्त कर्मप्रवचनीयों का संकलन भी व्याकरण ग्रन्थों ने किया। व्याकरण की विभिन्न कोटियों के अनेक कोश पृथक् रूप से उपलब्ध होते हैं।

निघण्टु — विभाजन

निघण्टु में पांच अध्याय हैं जो तीन काण्डों में विभाजित हैं। प्रथम नैघण्टुक काण्ड है जिसमें तीन अध्याय हैं। इनमें पर्यायवाची शब्द हैं जिन की तुलना अमरकोश जैसे कोशों से की जा सकती है। प्रथम भाग में पृथिवी के २१ पर्याय हैं जो **एकविंशतिः पृथिवीनामधेयानि** जैसे वाक्यों से समाप्त होता है। इसी प्रकार हिरण्य आदि। यदि किसी भाग में क्रियाएं हैं तो वह **इति एकादश ज्वलतिकर्माणः** अथवा इति **अष्टादश कान्तिकर्माणः** से समाप्त होते हैं[1]

निघण्टु — ब्राह्मण ग्रन्थों मे

यह प्रवृत्ति ब्राह्मणग्रन्थों मे देखी जा सकती है। यहां एक शब्द के लिए दूसरा पर्याय देने की प्रवृत्ति है। ब्राह्मणग्रन्थ एक विशेष कर्मकाण्ड के लिए रूप समृद्धि की व्याख्या करने की चेष्टा करते थे, ये कठिन शब्दों के स्थान पर

निघण्टुकोश
NCC. X. पृ.११५
पञ्चाशन्निघण्टुसार
NCC. X. पृ.११६
इस के कर्ता विदग्धचूडामणि हैं। इसका अन्य नाम निघण्टुसार भी है।
NCC. X. पृ.७५
निघण्टु — भास्करराय कृत
लेखक का वैदिककोश
NCC. X. पृ.११५नैघण्टुकनिर्वचन — देवराजयज्वन् कृत निरुक्त पर निघण्टुनिर्वचन द्र.NCC. X.ग्.ङ्क १

1 Mehendale, M.A. Proc. Seminar. Dict. Pune. पृ.८

सामान्य शब्द का प्रयोग करते थे ।[१] ये क्रियाओं का कई बार विपरीत अभिव्यक्ति से भी प्रयोग करते थे । श्रौतसूत्रों में भी यह प्रवृत्ति चलती रही ।[२]

निघण्टु का प्रतिपाद्य

निघण्टु में वैदिक शब्दों के संग्रह को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है[३] । प्रथम अध्याय में — गौ, ग्मा, पृथिवी, हिरण्य, अन्तरिक्ष, साधारण,

---

1 सन्दर्भों के लिए द्रष्टव्य Mehendale, M.A. Proc. seminar dict. Pune pp. 7-8

2 उदाहरणों के लिए वही पृ.८

3 Rajavade, V.K. - Yāska's Nirukta, Bhandarkara oriental Research Institute, Poona, 1940

Editions etc.

Roth R. Jāska's•Nirukta, Göttingen, 1847-1852; Nighaṇṭu and Nirukta : Sarup. L. Lahore, 1927; (Translation and introduction. Reprint, Delhi. 1962 Sköld, H. The Nirukta: Lund, 1926 : Mahendale, M.A Nirukta Notes and Prasad, Mantrini language of Nirukta; शास्त्री, शिवनाराण निरुक्त पञ्चाध्यायी, दिल्ली

शिवनारायण शास्त्री, निरुक्त मीमांसा, १९७०. Bhattacharya, Bishnupada yāska's Nirukta and the Science of Etymology Calcutta, 1958.

निघण्टु - व्याख्या

निरुक्त सम्पादन तथा उसकी व्याख्याएं द्र. NCC. X पृ.१३९-१४० हस्तलेखों के लिए NCC. X पृ.१३८-१३९; पाठों के लिए द्र. IHQ. XXV. पृ.१६६-७४ पाठान्तरों के लिए हस्तलेख

निरुक्त व्याख्या पाठान्तराणि (अप्रकाशित) ; वार्तिकों के लिए — निरुक्त वार्तिक तथा निरुक्तविवरणसमुच्चय (हस्तलेख —NCC. X पृ.१४०) निरुक्तश्लोक वार्तिक के लिए

Raja, K.K. ALB. XXVIII. ii He=. 250-62. Ann. Or. Res. University of Madras. Vol. 5. Pt.2

विविधशाखाओं में सम्भवतः विविध निरुक्त प्रचलित थे जो उपलब्ध (यास्ककृत) निरुक्त में उपलब्ध नहीं होते ।

निरुक्तसमुच्चय — वररुचि (वाररुच)

यह ऋग्वेद का निरुक्त है ।

Ptd. Ann. of Ori. Res. II. Special Supp. 1938

रश्मि, दिक्, रात्रि, उषा, अर्हन, मेघ, वाक्, उदक्, नदी, अश्व, आदिष्टोपयोजनः; ज्वलतिकर्माणः, ज्वलतः तथा सप्तदश पदों का संकलन है ।

द्वितीय अध्याय में - कर्म, अपत्य, मनुष्य, बाहु, अङ्गुलि, कान्ति कर्म, अन्न, अत्तिकर्म, बल, धन, क्रोध, क्रुध्यति कर्म, गतिकर्म, क्षिप्र अन्तिक संग्राम, व्याधि, वध, वज्र, ऐश्वर्य, ईश्वर के पर्याय तथा द्वाविंशत पदों का संकलन है ।

तृतीय अध्याय में बहु, ह्रस्व, महत्, गृह, परिचर, सुख, रूप, प्रशस्य, प्रज्ञा, सत्य, पश्यतिकर्म, मेधावि, यज्ञ, ऋत्विक, अध्येषणा-स्वपति कर्म, कूप, स्तेन, षट् निर्णितान्तर्हित नाम, दूर, पुराण, नव, उत्तर, द्यावा पृथिवी के पर्याय तथा त्रिंशत् पदों का संकलन है ।

चतुर्थ अध्याय में ६२ पद, ८४ पद, १३३ पदों को संकलन है ।

पंचम अध्याय में १३ पद, ३६ पद, ३२ पद, ३६ पद तथा ३१ पदों का संकलन है ।

उपरोक्त पांच अध्याय तीन कांडों में विभक्त हैं — निघण्टु, नैगम, दैवत । पहले तीन अध्यायों में समानार्थी शब्दों का संकलन है — ये निघण्टु कहलाते हैं, चतुर्थ अध्याय में संगृहीत शब्द अनवगत संस्कार हैं, ये नैगम कहलाते हैं तथा पंचम अध्याय में संगृहीत देवता पद दैवतकांड कहलाते हैं ।

दैवतकांड में १५१ देवता पदों का संकलन है । वैदिक देवमंडल के देवताओं का उल्लेख किया है वैदिक साहित्य में प्राप्त होने वाले तत् तत् देवताओं के प्रचुर पर्यायों का नहीं ।

निघण्टु का कर्त्ता तथा समय के सम्बंध में डा. लक्ष्मणस्वरूप ने विस्तारपूर्वक चर्चा की है और यह विचार व्यक्त किया है कि उपलब्ध निघण्टु सम्भवतः किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं अपितु पीढ़ियों द्वारा किया गया समाम्नाय समाम्नातः है ।[१]

निघण्टु में संकलित पदों में से अनेक पद स्पष्ट हैं तथा कई अत्यंत अस्पष्ट । उपलब्ध निघण्टु के आधार पर वैदिक साहित्य के अर्थ को ग्रहण

Ncc. X. पृ. 140

1 Sarup, Laxman - The Nighaṇṭu The Nirukta, Intro.

नहीं किया जा सकता। सम्भव है प्रस्तुत निघण्टु से कई विपुलतर निघण्टु बने हों[१]।

निरुक्त

निघण्टु की व्याख्या निरुक्त है। **समाम्नाय समाम्नातः। स व्याख्यातव्य**[२] यास्क ने निरुक्त में निघण्टु के शब्दों का निर्वचन किया है फिर भी कई ऐसे शब्द निघण्टु में प्राप्त होते हैं जो निरुक्तकार ने छोड़ दिये हैं।[३]

यास्क ने १२ निरुक्तकारों के नाम गिनवाये हैं[४]—

१. ओदुम्बरायण	७. और्णवाभ
२. औपमन्यव	८. तेटीकी
३. वार्ष्यायषी	९. गालव
४. गार्ग्य	१०. क्रौष्टुकी
५. आग्रहायण	११. स्थौलीष्ठीवि
६. शाकपूणी	१२. कात्थक्य

दुर्गाचार्य के अनुसार निरुक्त १४ हैं।[५] वर्तमान में केवल यास्क द्वारा रचित निरुक्त वेदाङ्ग के रूप में उपलब्ध है।

निरुक्त में १२ अध्याय हैं।[६]

प्रथम अध्याय में निघण्टु समाख्या, नामाख्यात, भाव, उपसर्ग, निपात, निरुक्त प्रयोजन, संहिता लक्षण, ज्ञानप्रशंसा, नैघण्टुक, नैगम, दैवत कांड इत्यादि का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में निघण्टु के प्रथम अध्याय में संकलित पदों की व्याख्या की गई है।

---

1 Rajvade, V.K. - Yāska's Nirukta, P.205

2 निरुक्त १ / १

3 Rajvade, V.K. - op. cit Preface पृ.६

4 उपाध्याय बलदेव, संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, पृ. ३२३

5 दुर्गाचार्य, दुर्गवृत्ति १/३ (बलदेव उपाध्याय द्वारा उपर्युक्त पुस्तक पृ. ३२३ पर उद्धृत)

6 Rajvade, V.K. - op.cit.

तृतीय अध्याय में निघण्टु का दूसरा और तीसरा कांड व्याख्यायित है।

चतुर्थ अध्याय में नैगम कांड और संवत्सर की व्याख्या है।

पञ्चम अध्याय में उपलप्रक्षिणी अस्में इत्यादि की व्याख्या है।

सप्तम अध्याय में दैवतम् की व्याख्या तथा तिस्र एव देवता के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा की गई है।

अष्टम अध्याय में द्रविणोदा, इध्म, वनस्पति, देवता प्रजायानुजाया के विषय में चर्चा की गई है।

नवम अध्याय में पृथिवी स्थानीय देवता, दशम तथा एकादश अध्याय में मध्यम स्थानीय देवता तथा द्वादश अध्याय में द्युस्थानीय देवता नामों की व्याख्या है।

निरुक्तकार का प्रमुख सिद्धान्त है **सर्वाण्याख्यातजानि नामानि**[१] सभी शब्दों को धातुओं के आधार पर सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है।

---

1 निरुक्त,१.१२

(३) नींव के आकर

पुरुषोत्तमदेव ने हारावलि में शब्दार्णव, उत्पलिनी, संसारावर्त, वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य के द्वारा निर्मित कोशों का उल्लेख किया है[१]। टीकाओं की परम्परा में उपलब्ध भागुरि, हुग्ग, कात्य अथवा कात्यायन रसभपाल रन्तिदेव, वररुचि, वोपालित अथवा बोपालित भी उपलब्ध होते हैं[२]। फोगल की सूचना के अतिरिक्त कुलकर्णी[३] तथा सत्यपाल नारङ्ग[४] ने भी व्याख्याकारों की अनेक सूचनाएं एकत्रित कर के प्रकाशित की हैं। इन में उल्लिखित नाम हैं गौड, वासुकि, व्याडि, विन्ध्यवासी, पलुर (?), शेषकर, नारद, पालक्य, भरत, भागवृत्ति, आगम, शेष, शेषाख्यनाममाला, शेषसङ्ग्रहनामोद्धार, विक्रमादित्य तथा शब्दार्णव। इन की सूचनाएं निम्नलिखित हैं :—

गौड

यह कोशकार क्षीरस्वामी के अमरकोश पर अमरकोशोद्घाटन, हेमचन्द्र पर अभिधानचिन्तामणिनाममालाटीका तथा ज्ञानविमल गणि कृत शब्दभेद प्रकाशटीका से ज्ञात है। कोशकल्पतरु के निर्माण के लिए विश्वनाथ ने भी इस का प्रयोग किया।[५]

महेन्द्रसूरिकृत अनेकार्थकैरवकौमुदी में सुधा शर्मा ने १८ अंशों का अन्वेषण किया।[६] इनमें से ११ अंश लिङ्ग की दृष्टि से अन्य कोशों से भिन्न हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि वह वैय्याकरण कोषकार है जिसका मुख्य सम्बन्ध लिङ्गान्वेषण

---

1 हारावली — पुरुषोत्तमदेवकृत, प्रकाशित - पुनर्मुद्रित अभिधानसङ्ग्रह ५.२७५ (पृ. १२) शब्दार्णव उत्पलिनी संसारावर्त इत्यपि। कोषा वाचस्पति व्याडि विक्रमादित्यनिर्मिताः।

2 Zachariae : WZKM, 14 पृ.२२५; ३५ पृ.३७; Vogel: पृ.३५७;

3 Kulkarni, E.D. Kośa Citations in commentarial Literature Belonging to Classical Period. Vāk. No.1 Dec.1951 pp.69-69; No.2 Dec.1953 pp.130-50 Kulkarni, E.D. The Dhanurveda and its Contribution to Lexicography. BDCRI. XIV. 1952-53 pp. 208-20 Kulkarni, E.D. कोशांची अवतरणें, टीकाग्रन्थाती (मराठी में) Chitrav Vol. पृ.१३७-१४६

4 Narang, S.P. Proc. Seminar Dict Pune, pp.97-130

5 PO. XIII. पृ.२२; NCC, VI. पृ.२१८ Vogel : पृ.३५७

6 Sharma, Sudha (1994), पृ.२०६

से हैं। अंश २, ९ तथा १५ में वनस्पति का उल्लेख है जिससे उसके वैद्यक निघण्टु के ज्ञान की सूचना मिलती है। वैद्यक निघण्टुकार गौड पण्डित से इनका पार्थक्य हो सकता है।

हुग्ग[१]

यह कोशकार संस्कृत के नाम जैसा प्रतीत नहीं होता। सम्भवतः यह किसी स्थानीय (कन्नड़ ?) ध्वनि से प्रभावित हो कर आदि - ह को ग्रहण किए हुए हो। कोपर्कर के अनुसार इस की अभिज्ञा दुर्ग › दुग्र › उग्र से भी हो।[२]

व्याडि

संस्कृत व्याकरण शास्त्र में विशेषरूप से व्याकरणदर्शन के सन्दर्भ में व्याडि का नाम उल्लेखनीय है।[३] ऐसा प्रतीत होता है व्याडि कोई व्यक्ति विशेष न होकर जातिवाचक शब्द है (यथा कात्यायन) जिस जाति के अनेक व्यक्ति अनेक शास्त्रों के निर्माण में व्यस्त थे।

कृतियां

उत्पलिनी[४]

इसे अमरकोश की व्याख्याओं में बहुत उद्धृत किया गया है।[५]अनेक काव्यों की व्याख्याओं में भी यह उद्धृत है।

परिभाषा

यह पाणिनि के अनुसार है परन्तु व्याडिकृत मानी जाती है। परिभाषासूचना में सूत्रों की संख्या परिभाषा से भिन्न है[६] व्याडि की उत्पलिनी प्रायः उद्धृत है

---

1 विस्तार के लिए : Zachariae : WZKM. 14 पृ. २२५ तथा ३५ पृ. ३७; Vogel: पृ. ३०६

2 Koparkar, D.G. Liṅgānuśāsana of Durgasiṁha Poona, 1952. पृ. VII.

3 मीमांसक, युधिष्ठिर, व्याकरण शास्त्र का इतिहास भाग १

4 हस्तलेखों के लिए द्र. NCC II. पृ. ३१८; काव्यकल्पलता कल्पद्रुकोश की भूमिका

5 इसे रायमुकुट, रामनाथ विद्यावाचस्पति, नारायण विद्याविनोद, भानुजी ने अमर पर उद्धृत किया है **कोशों में** हारावलि, त्रिकाण्डशेष, त्रिकाण्डविवेक, मेदिनी, शिवकोश पर शिवदत्त ने; नाना कोशसङ्ग्रह, उणादिसूत्रों पर उज्जवलदत्त; **व्याख्याओं में** मल्लिनाथ, शिवराम तथा शर्वचन्द्र ने वासवदत्ता, ZDMG २८, १८७४ पृ.१११

6 हस्तलेखों के लिए - NCC. XI, पृ. २१९

जिसमें अनेक बौद्ध शब्द थे। काशगर से उपलब्ध होने वाले वेबर हस्तलेखों में इसके टुकड़े उपलब्ध होते हैं।[१] **अभिधानचिन्तामणि** में इसे वासुकि-व्याडि के नाम से उद्धृत किया है[२] परन्तु **विश्वप्रकाश** में इसे व्याडि के नाम से उल्लिखित किया गया है।[३] हेमचन्द्र का वासुकि व्याडि केवल पुनरुक्त प्रतीत होता है जहां दोनों सर्प के पर्याय हैं।

व्याडि तथा वररुचि मुख्यतः कोशों में लिङ्ग निर्धारण के लिए प्रयुक्त होते रहे जो इन के मुख्य वैय्याकरण व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करते हैं।नामों के सङ्ग्रह के लिए मुख्यतः उत्पलिनी आदि स्रोत बने[४] यह तथ्य सर्वानन्द एवं रायमुकुट से ठीक प्रतीत नहीं होता।

हेमचन्द्र की अभिधानचिन्तामणि तथा पुरुषोत्तमदेव के त्रिकाण्डशेष के आधार व्याडि की अभिज्ञा विन्ध्यवासी से की गई। विन्ध्यवासी रायमुकुट, चारित्रसिंह तथा भानुजिदीक्षित में उद्धृत हैं[५], परन्तु फोगल इस के विपरीत मत अभिव्यक्त करते हैं।[६] सुबन्धु की वासवदत्ता पर नारायण दीक्षित[७] तथा विदग्धवल्लभा[८] भी विन्ध्यवासी को उद्धृत करते हैं। वाडेल ने प्रदर्शित किया है कि व्याडि महायान बौद्ध मतावलम्बी था और उसने विशेषतः बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर (छठी शताब्दी ई.) का ज्ञान प्राप्त किया था।[९] सुधा शर्मा ने महेन्द्रसूरी की अनेकार्थकैरवकौमुदी से तीन उद्धरण एकत्रित किए हैं जिनमें से एक पशुओं सम्बन्धी, एक लिङ्ग सम्बन्धी तथा तृतीय **बोधिसत्त्व**[१०] का उल्लेख करता है जिस से वाडेल के मत की पुष्टि होती है। इस से यह

---

1 Keith : HSL. p.413

2 Böhtlingk, Otto. सम्पा. हेमचन्द्रकृत अभिधानचिन्तामणि, भूमिका. पृ. VII.

3 विश्वप्रकाश — चौखम्वा, वाराणसी, १९११ भूमिका

4 Zachariae : Die Indischen Wörterbücher, पृ.७;Vogel: पृ.३०७

5 Zachariae : Indiscen Wörterbücher

6 Vogel : पृ.३०७

7 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol.I. पृ.२६३-२८० (हस्तलेख के पृ.४०,४८,५६ पर उद्धृत)

8 वही. वासवदत्ता के BORI हस्तलेख संख्या ४६४ (१८८७-९१) में उद्धृत

9 Waddell, L.A. JRAS. 1894. पृ.६३

10 Sharma, Sudha (1994) पृ.२०८ अनेकार्थ. २.२४० बोधे च बोधजं ज्ञानं तन्मयो बोधिसत्त्वकः

भी सिद्ध होता है कि व्याडि उस समय हुए जब **बोधिसत्त्व** केवल कथाओं में नहीं थे परन्तु दार्शनिक स्वरूप भी ग्रहण करते जा रहे थे।

हेमचन्द्र के द्वारा उद्धृत होने के कारण इन का काल निश्चितरूप से ११०० ई. से पूर्व होना चाहिए।

कात्य [१] कात्यायन

कात्य एवं कात्यायन एक वंश से सम्बद्ध होने पर भी पृथक् व्यक्ति प्रतीत होते हैं। व्याकरण परम्परा में वार्तिकों के निर्माता कात्यायन निस्सन्देह वैय्याकरण हैं। यह सम्भव है कि इन का नाम कात्य हो (जो अधिकतर उपलब्ध होता है) और कात्यायन से कालान्तर में सम्मिश्रित हो गया हो।

कात्य को अमरकोश पर सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द ने उद्धृत किया है[२] **केशवस्वामी** ने **नानार्थ सङ्क्षेप** पर भी इसे उल्लिखित किया है। **अभिज्ञान-शाकुन्तल** पर राघवभट्ट ने इसे उद्धृत किया है[३] इसे महेश्वर ने विश्व प्रकाश तथा रायमुकुट ने अमरकोश (ZDMG २८ (१८७४) पृ.१११ पर उद्धृत किया है।[४]

विश्वप्रकाश ने अपने कोश के निर्माण के लिए अन्य कोशकारों यथा राजकोश, भोगीन्द्र, साहसांक, वाचस्पति, व्याडि, विश्वरूप, अमलमङ्गल, सुभङ्ग, गोपालित एवं भागुरि के अतिरिक्त कात्यायन का भी प्रयोग किया है[५] महेन्द्रसूरि ने इस का एक उद्धरण दिया है।[६]

---

1 उद्धरणों के लिए द्र. वररुचि; NCC. III. पृ. ३१९ इसे क्षीरस्वामी, रायमुकुट (ZDMG 28, 1874 पृ.१११); महेश्वर नारायण (JOR Madras XII पृ. ७) बोम्मगणि अप्पयार्य (IHQ XIX पृ. ७४); अभिधानचिन्तामणिटीका, कल्पद्रुमकोश, अनेकार्थकोश मंखकृत शब्दभेदप्रकाशिका - ज्ञानविमलगणिकृत; वामन (काव्यालंकारसूत्रवृत्ति) में उद्धृत किया गया है।

2 Gode P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I पृ.२१९

3 वही.पृ.४२९-४३६

4 वार्तिककार कात्यायन के लिए द्र. G. Cardona : Pānini : A survey of Research

5 विश्वप्रकाश — भूमिका

6 Sharma, Sudha (1994), पृ.२०८ इसके कर्तृत्व के अन्य तर्क के लिए द्र. फोगल,पृ.३१२ परिशिष्टसूत्र — कात्यायनकृत NCC. III पृ.३२३ तथा NCC. XI पृ.२३३

निस्सन्देह कोशशास्त्र के निर्माण के लिए कात्यायन का महान् योगदान है क्योंकि वार्तिकों में व्याकरणप्रक्रिया के अतिरिक्त अनेक शब्दशृङ्खलाओं की सिद्धि, एकशेष तथा लिङ्ग सम्बन्धी विचार मिलते हैं जिन्हें पतञ्जलि ने भी स्वीकार किया है। कात्यायन के स्रोतों में से रामायण तथा महाभारत एवं प्राचीन पुराणों का निषेध नहीं किया जा सकता जिन का अधिक भाग कात्यायन के समकालिक हो सकता है।[१]

भागुरि

इसे सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द ने अमरकोश पर[२], ज्ञानविमलगणि ने (१५७३-१६११ ई.) ; केशवस्वामी ने नानार्थसङ्क्षेप पर[३] तथा राघवकवि के एकाक्षरकोश[४] में उद्धृत किया गया है।

इस तथ्य का अन्वेषण किया जाना चाहिए कि क्या भागवृत्ति का कर्ता व्याडि तथा भागुरि एक हैं ? इनके पर्याय व्यालि, भोगीद्र, नगेन्द्र जिन के कोश

---

1 कुछ शब्दों के स्रोतों के लिए द्र. Limaye, V.P. Studies on the Mahābhāṣya जिनमें व्याकरण के लिए अतिरिक्त कोशों के आधार पर तथा स्वतन्त्र अन्वेषण से वैदिक साहित्य के स्रोत ढूढे गए हैं जिनमें कात्यायनश्रौतसूत्र भी एक है। अन्य तथ्यों का अन्वेषण Encyclopaedic Dictionary के आधार पर भी किया जा सकता है।

कात्यायन - काल विविध समस्याओं के लिए द्र. Liebich, B. Cānda Vyākaraṇa, die Grammatik des Candragomin. Leipzig, 1902 (Reprint : Wiesbaden 1966); Zur Einführung IV, Analyse der Candra vṛtti Heidelberg, 1920

कात्यायन का पतञ्जलि से सम्बन्ध, Cardona G. Pāṇini. A survey of Research पृ. २६०

2 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.२१९

3 Vogel : पृ.३३१

4 राघवकवि — एकाक्षरकोश. सम्पा. एकाक्षर नामकोशसङ्ग्रह, १९६४. पृ. १२

विश्वप्रकाशो गोपालः शेषकरो धनञ्जयः
शब्दार्णवो वैजयन्ती सूर्यो रुद्रश्च यादवः।
प्रतापो भागुरिर्दण्डी रसभश्च हलायुधः॥
सभूतिहरिर्विष्णू च वररुच्यमरोत्पलाः।
अजयश्शाश्वतश्चैते उच्यन्ते पण्डितैः पुरा॥

बहुत कम मिलते हैं, विभिन्न स्थानों पर अन्य ध्वनि, अथवा पर्यायों से प्रसिद्ध हो गए। कभी-२ व्याडि विन्ध्यवासी के नाम से भी जाने जाते हैं।

पलूर (?)

इस कोशकार को ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्य के वर्णरत्नाकर में उद्धृत किया गया है।[१]

शेषकर

इसे भी कोशकार के रूप में राघवकवि ने एकाक्षरकोश में उल्लिखित किया है।[२]

नारद

सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द ने इसे अमरकोश पर उद्धृत किया है।[३]

पालक्य

इसे भी सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।[४] इसे राघवभट्ट ने अभिज्ञानशाकुन्तल पर भी उद्धृत किया है।[५]

भरत

इसे भी सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।[६]

आगम[७]

अनेक प्रकार के आगम तथा तन्त्र जिन के अनेक मत मतान्तर दर्शनग्रन्थों में तथा स्वतन्त्र रूप से उपलब्ध होते हैं, अपने-२ सम्प्रदायों के अनुकूल वर्णों के अर्थों का सन्नियोजन कर रहे थे। ये विशेषरूप से यन्त्र लेखन पद्धतियों में बीजमन्त्र के रूप में गृहीत थे। यह बृहत् सामग्री हस्तलेखों में अद्यावधि

---

1 Chatterjee, S.K. Proc. AIOC. IV Allahabad, 1928

2 सम्पा. एकाक्षरकोशसङ्ग्रह. पृ. १२

3 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I. पृ. २१९

4 वही पृ. २१९

5 वही पृ. २१९

6 वही. पृ. २१९

7 सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द द्वारा अमरकोश पर उद्धृत : Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol.I, पृ. २१९

अप्रकाशित सुरक्षित है जिस का प्रयोग कुछ आधुनिक कोशों में हुआ है[१]। मन्दिरों के निर्माण के लिए भी कुछ कोश तथा शिल्परत्नकोश इन का निर्माण कर रहे थे जिस का धार्मिक एवं रहस्यवादी प्रयोजन था।[२] इसके अतिरिक्त उद्धारकोश

कोश - मन्त्र

आशादित्यत्रिपाठिन् का मन्त्रकोश अथवा मन्त्ररत्नावली कोश

NCC.II पृ.१९३

पराशरतन्त्र सूची

पराशरतन्त्र सूची

एकाक्षरी कोशों[३] के समान इन में भी एक अथवा अनेक देवों के ग्रहण के अतिरिक्त उनसे सम्बद्ध अर्थों का संकलन भी किया गया है। **ठ का लाङ्गली** के अतिरिक्त तान्त्रिक स्वाहा अर्थ भी उपलब्ध होता है जो सम्बद्ध अग्नि की पत्नी के रूप में भी स्वीकृत है। ऋ, ॠ, लृ, ॡ का अर्थ ऋकारदेवी, ॠकारदेवी, लृकारदेवी, ॡकारदेवी स्वीकृत किया गया है। यह आवश्यक नहीं कि **एकाक्षरी** कोशों के समान इन में अर्थ ध्वनि पर ही निर्भर करता हो। कुछ कोशों में अर्थ आध्यात्मिक भी है यथा भा = भासन,. धी = चेतना। कुछ शब्द उपासना परक भी हैं जहां द का अर्थ दुर्गापूजा[४] तथा ह का शिवपूजा से है। यह ध्वनि पर भी निर्भर हो सकता है द = दुर्गा, ह = हर

---

1 द्र. शब्दकल्पद्रुम (अवधूत) ; Roth & Böhtliagk : Sanskrit Wörterbuch; Ghatage, A.M. Encyclopyedic Dictionary

2 Apte, P.P. Proc Seminar. Dict. Pune. पृ.१९-२४

3 एकाक्षरी कोशों में अर्थो व सिद्धान्तों के लिए द्र. Narang, S.P. Determination of meaning in monosy llabic lexicons. Kamlesh Kumar Kulashreshta Comm. Vol. Delhi, 1992 पृ. ६६-६७ इन की तुलना Apte, PP. के उल्लिखित पत्र से की जा सकती है।

4 इससे सम्बद्ध अनेकों हस्तलेखों तथा कवचों के लिए द्र. दुर्गा से युक्त कृतियां

पाञ्चरात्रागमों में वर्णों के अर्थ

वर्णों के अर्थ

तन्त्रों में विश्वामित्र - संहिता ने भी मातृका के अन्तर्गत आये वर्णों की प्रायः इसी प्रकार संज्ञाएं दी हैं।[१]

नारदीय संहिता ने मूर्ति-प्रतिष्ठा के क्रम में मूर्तिमन्त्रवर्णन् करते हुए मकारादि कुछ वर्णों के व्युत्क्रम से सतत् तत्त्वस्वरूप होना कहा है

म = जीवभूत

भ = प्राणभूत

ब = बुद्धिभूत आदि —- ग, घ, ङ आदि वर्णों के तत्त्वरूप का स्पष्ट उल्लेख नहीं देख पड़ता[२]। तन्त्रों में जयाख्य संहिता[३] में निर्दिष्ट वर्णों की संज्ञाएं अधोलिखित रूप में हैं

प्रथम वर्ग

अ =	१. अप्रमेय २. प्रथम ३. व्यापक
आ =	१. आदिदेव २.आनन्द ३. गोदान

द्वितीय वर्ग

ऋ =	१. सत्य २. ऋतधामा ३. अंकुश
ऋ =	१. विष्टर २.ज्वाला ३. प्रसारण आदि

तृतीय वर्ग

च =	१. चञ्चल २. चक्री ३. चन्द्रांशु आदि

---

1 चौधरी : पाञ्चरात्रागम पृ. ७८ विश्वामित्र संहिता ८, १८-४५ (उद्धृत - चौधरी - उपर्युक्त)

2 चौधरी : पाञ्चरात्रागम, पृ. ८० ने ईश्वरसंहिता २३, ६२-७१; २७४-२८०; श्री प्रश्नसंहिता ५१.३३-३४; जयाख्यसंहिता आदि

3 चौधरी, राघवप्रसाद पाञ्चरात्रागम पटना, १९८७ पृ. ७६ से आगे

चतुर्थ वर्ग

ट = १. चान्द्री २.आह्लाद ३. विश्वाप्यायन आदि

वररुचिकोश

जैसा कि व्याकरण में कात्यायन तथा वररुचि एक माने जाते हैं उसी प्रकार कात्य, कात्यायन तथा वररुचि भी कोश-परम्परा में अभिन्न हो सकते हैं। उद्धरणों से उन का पार्थक्य सिद्ध होता है। आफ्रेक्ट ने अनेक वररुचियों का निर्देश किया है जिस की अभिज्ञा पूर्णतः निश्चित नहीं है[१] इनकी अन्य कृतियां हैं :— अष्टाध्यायीवृत्ति, एकाक्षरकोश, एकाक्षर-निघण्टु, कारकचक्र, कारिकाचित्रकुटि, दक्षगणकारिका, पत्रकौमुदी, प्रयोगविवेक अथवा प्रयोगविवेकसङ्ग्रह अथवा प्रयोगविधिसङ्ग्रह, फुल्लसूत्र, योगशतभेद, राक्षसकाव्य, राजनीति, लिङ्गविशेषविधि, लिङ्गवृत्ति, लिङ्गानुशासन, वररुचिवाक्यकाव्य, वादतरङ्गिणी, वार्त्तिक, विवेकसङ्ग्रह, शब्दलक्षण, श्रुतबोध, समासपटल, कातन्त्रवृत्ति, शब्दचक्र तथा प्राकृतप्रकाश।[२]

---

1 Aufrecht : CC. I. पृ.५५१;II. पृ.११७

2 वही — द्र.(कात्यायन; वररुचि- एकाक्षरनाममाला)
वररुचि - एकाक्षरनाममाला
द्र.पुरुषोत्तमदेव
एकाक्षर निघण्टु — वररुचि द्र .एकाक्षरनाममाला
एकाक्षरनिघण्टु — अज्ञातकर्तृक
कुछ हस्तलेखों में इसका लेखक वररुचि भी माना गया है इसका पाठ इरुगप्पनाथ के नानार्थरत्नमाला से साम्य रखता है।
NCC. III. पृ.५९
एकाक्षरीनामाला / एकाक्षरनिघण्टु
यह वररुचि कृत है। यह ग्रन्थ कुछ पाठान्तरों के साथ पुरुषोत्तमदेव के कोश के समान है। इसे एक हस्तलेख में ऐन्द्रनिघण्टु के नाम से बताया गया है।
NCC. III, पृ.५८
ऐन्द्रनिघण्टु
इसके लेखक वररुचि तथा इन्द्र माने जाते हैं। इसमें ३८ श्लोक हैं। इसका साम्य पुरुषोत्तमदेव के एकाक्षरकोश से है।
द्र.NCC. II, पृ.२५३;III पृ.९०

निस्सन्देह शङ्कराचार्य एवं कालिदास के समान वररुचि भी लोकप्रिय लेखक हैं जिन के नाम से अनेक प्रकार की कृतियां जोड़ दी गई जिन में काव्य भी उल्लेखनीय हैं। सूक्तिग्रन्थों में इनके नाम से कई पद्य भी उद्धृत हैं।

निश्चित रूप से **राक्षसकाव्य, प्राकृतप्रकाश, राजनीति** तथा कालान्तर में लिखी गई **कातन्त्रवृत्ति** का लेखक अलग २ होना चाहिए।

कोशकारों को **लिङ्गनिर्धारण** के लिए लिङ्गसम्बन्धी कृतियों में अधिक रुचि रही है। एकाक्षरी कोश का लेखक भी बाद का है। इनका स्वतन्त्र अध्ययन आन्तरिक साक्ष्यों के आधार पर अपेक्षित है।

वररुचि कोश का एक उद्धरण सिद्धान्तचन्द्रिका पर सदानन्दगणि के द्वारा प्रदत्त है।[१]

एकाक्षरकोश का साम्य पुरुषोत्तमदेव के कोश से है। दक्षिण के हस्तलेखों में इस कोश का नाम ऐन्द्रनिघण्टु भी है।[२]

प्रकाशित लिपि में तथा बङ्ग शब्दावली सहित प्रशास्ति प्रकाशिकाग्रन्थ कलकत्त,१९४२ तथा BDCRI. पूना XX i-IV. 1960. पृ.३-१८

इस के काल तथा कर्तृत्व के विषय में द्र.Janaki, S.S. Annals of Ori. Res (Silver Jubilee Vol.) University of Madras, 1975. पृ. 200-215

वररुचि - वैयाकरण

Konow, GGA. 1884. पृ.४७३;वाजसनेयी प्रातिशाख्य के लेखक के Indian Culture 4 पृ.१८९.श्रोतसूत्र के लेखक का सम्बन्ध पालि के कच्चायन से मृग्य है। कात्यायन तथा कात्यायन- श्रौतसूत्र के ऐक्य की सम्भावना को नकारा नहीं किया जा सकता। वार्तिकों के लिए - Subrahmanya Śāstī. JOR. 2.25.172; Sarma, Krishna. PO. 5.126, Scharfe, H. Grammatical Literature, wiesbaden, 1977. pp.135-148. Sarma, K. Madhava Krishna. Pāṇini, Kātāyana and Patañjali, Delhi, 1968.

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I, पृ.९६-१०० (पृ.९९ में उत्तरार्ध की पुष्पिका १-११७) पर यह उद्धरण है।

2 Sharma, Mithles (1988), पृ.३ तथा विश्लेषण सम्पा. एकाक्षरकोशसङ्ग्रह, १९६४.

विक्रमादित्यकोश

भारतीय परम्परा में नवरत्नों के आश्रयदाता विक्रमादित्य को कोशकार के रूप में भी स्मरण किया गया है। इस के दो उद्धरण सदानन्दगणि की रामाश्रम अथवा रामचन्द्राश्रम (१७४३ ई.) की **सिद्धान्तचन्द्रिका** में उपलब्ध होते हैं।[१] — [अभिज्ञा एवं अन्य विस्तार - द्र. संसारावर्त-विक्रमादित्यकृत]

शब्दार्णव

इन सब कोशों से जिन के कुछ २ उद्धरण प्रकीर्ण उपलब्ध होते हैं, यह कोश सब से बड़ा है। इनका संकलन बिर्वे[२] ने ४४० उद्धरणों से २४८ अंशों में किया है।

शिवदत्त की शिवप्रकाश जो वास्तविक रूप में इस के उद्धरणों का सङ्ग्रह है, बिर्वे ने प्रयोग नहीं किया[३]।

इसका एक उद्धरण सदानन्दगणि की रामाश्रम अथवा रामचन्द्राश्रम (१७७३) ई. की सिद्धान्तचन्द्रिका में उपलब्ध होता है।[४]

उत्पलिनी

इसे सुभूतिचन्द्र, रायमुकुट तथा सर्वानन्द ने अमरकोश के स्रोत के रूप में स्वीकार किया है। उत्पलिनी को शब्दों के स्रोत के रूप में तथा व्याडि और वररुचि को लिङ्ग के लिए स्रोत बताया गया है।[५] गोडे ने

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol. I. पृ.९६-१०० (पृ.९९ में उत्तरार्ध की पुष्पिका १-११७) पर ये उद्धरण हैं। विक्रमादित्य Worder, IKL.VI, १९८७ पृ.१-१५०

2 Birwe, R. JAOS. ८५.पृ.५३१

3 Vogel : पृ.३०७ पादटिप्पणी द्र. Sec.45

4 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. Vol. I. पृ.९९

5 Zacharischee : Die India Wörterbücher, पृ.७; Vogel : पृ. ३०७ व्याडिवररुच्याप्रिणीतानि लिङ्गमात्रतन्त्राणि।

हस्तलेखों में इसके एक अंश को उद्धृत बताया है।[१] अन्यकोशों के साथ वर्णरत्नाकर (१३००-१३२५ ई.) में उत्पलिनी को भी परिगणित किया गया है।[२]

उत्पलमाला

फॉगल के अनुसार **उत्पलिनी** का ही दूसरा नाम **उत्पलमाला** था जिसका सम्पादन बृहदुत्पलिनी सहित बिर्वे ने किया।[३] इसे अनर्ध राघव की व्याख्या पीञ्चका तथा मेघदूत पर विद्युल्लता में पूर्णसरस्वती ने उद्धृत किया है।[४]

राघवकवि कृत एकाक्षरकोश में केवल उत्पल को कोशकार बताया गया है न कि उत्पलिनी को।[५]

उत्पलमालदीपिका

इसे श्री हर्ष के अमरखण्डन में उद्धृत किया गया है।[६]

सूर्य

इसे राघवकृत एकाक्षरकोश में नाम्ना उल्लिखित किया गया है।[७]

---

1 Gode, P.K. Studies in Indan Literary History Vol.I. पृ.४४; हस्तलेख के पृ.४०,४५,५३ पर दात्यूह : कलकण्ठक इत्यमरेः। दाउक इति लोके

2 Chatterjee, S.K. 1928 उद्धृत Gode, P.K. उपर्युक्त पृ.२८१-२८९

3 Birwe, R. JAOS. 87. पृ.४६१। इसमें १२२ उद्धरणों से ७९ अंशों को एकत्रित किया गया है। Vogel : पृ.३०८

4 Unnithiri, N.V.P. Pūrṇasarasvatī — As a versatile scholar. Haryana Sanskrit Akademi Journal

5 राघवकविकृत एकाक्षरकोश. सम्पा. एकाक्षरनाम - कोशसङ्ग्रह, १९६४ पृ. १२ विश्वप्रकाशो — मरोत्पलाः— पुरा Velankar, H.D. Utpale and Varchasnihira in relation to Sanskrit — C.K. Raja Fel. Vol. पृ.१४१-५२

6 Ed. Chintamani, T.R. JOR V. PP. 23, 25 पुनश्च द्र. Raghavan, V. Ed. Amaremandanam.

7 राघवकविकृत एकाक्षरकोश उपर्युक्त विश्वप्रकाशो — सूर्यो — पुरा

रुद्र

इसे भी राघवकविकृत एकाक्षरकोश में नाम्ना उल्लिखित किया गया है।[१]

प्रताप

इसे भी राघवकविकृत एकाक्षरकोश में नाम्ना उल्लिखित किया गया है।[२]

रसभ

इसे भी राघवकविकृत **एकाक्षरकोश** में नाम्ना उल्लिखित किया गया है[३]। गोडे ने हस्तलेखों में इसका दूसरा नाम **शूलभञ्जन** भी बताया है।[४] इसे केशव ने **नानार्थार्णवसङ्क्षेप** में उद्धृत किया है।[५]

विष्णु

इसे भी **राघवकविकृति** एकाक्षरकोश में नाम्ना उल्लिखित किया गया है।[६]

वाचस्पति

यह कालिदास के बाद के हैं। कालिदास के **सहाध्यायी** निचुल जिन के विषय में विस्तृत उद्धरण मल्लिनाथ मेघ. १.१४ स्थानादस्मात्सरसनिचुलात् पर

---

1 वही. विश्वप्रकाशो —- रुद्रश्च —- पुरा

2 वही. —- विश्वप्रकाशो — प्रतापो —- पुरा

3 वही. विश्वप्रकाशो —- रसभश्च —- पुरा

4 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol.I, पृ. ४८ शूलभञ्ज इति प्रसिद्धः हस्तलेख का पृ. ४७

5 Vogel पृ. ३४६ से

6 राघवकविकृत एकाक्षरकोश वही. विश्वप्रकाशो —- सुभूतिर्हरिर्विष्णू — पुरा।

दिया है, इन्हें ज्ञात है।[१] हेमचन्द्र ने भी वाचस्पति का उल्लेख लगभग ५९ बार किया है।

सुधा शर्मा ने दो उद्धरण अनेकार्थ **कौरवकौमुदी** से ढूंढे हैं[२]। सुदर्शनचक्र एवं पञ्चगण्डकों के उल्लेख से यह वैष्णव तान्त्रिक प्रतीत होते हैं।

---

1 निचुल के लिए द्र. Narang, S.P. Kālidās - Biliography, 1976; शुक्ल, हीरालाल कालिदासकोश भाग १

2 Sharma, Sudha, 1994.

द्वितीय अध्याय

समार्थी पर्यायवाची कोश

कोशों की संख्या

राघवकवि ने एकाक्षरकोष में प्रमुख कवियों के नामों का परिगणन किया है। वे हैं — विश्वप्रकाश, गोपाल, शेषकर, धनञ्जय, शब्दार्णव, वैजयन्ती, सूर्य, रुद्र, यादव, प्रताप, भागुरि, दण्डी, रसभ, हलायुध, सुभूति, हरि, विष्णु, वररुचि, अमर, उत्पल, अजय, तथा शाश्वत।[१]

सुबन्धु की वासवदत्ता के व्याख्याकार नारायण दीक्षित ने २० कोशों का प्रयोग किया।[२]

प्रयोजन

अन्यान्य शास्त्रों के कोषों के अतिरिक्त कवियों की शिक्षा भी इस का एक प्रयोजन रहा होगा।

इसी लिए अनेक स्वतन्त्र कविशिक्षापरक ग्रन्थों के अतिरिक्त कालिदास, बाण, मयूर, मुरारि तथा श्रीहर्ष के साथ भी कोषों को जोड़ा गया।[३]

---

1 एकाक्षरनामकोशसङ्ग्रह (१९६४) पृ. १२ विश्वप्रकाशो गोपालः शेषकरो धनञ्जयः। शब्दार्णवो वैजयन्ती सूर्यो रुद्रश्च यादवः॥ प्रतापो भागुरिर्दण्डी रसभश्च हलायुधः। सुभूतिर्हरिर्विष्णू च वररुच्यमरोत्पलाः अजयः शाश्वतश्चैते उच्यन्ते पण्डितैः पुरा॥

2 Gode, P.K. १९५३:(४२) पृ.२६४ नारायणपण्डितेन बहुशः श्रुत्वा गुरुभ्यः — दृष्ट्वा **कोशदशद्वयीम्** रसमयान्ग्रन्थांश्च शब्दाकरान्। अन्य कोशकारों के लिए द्र. विभिन्न कोशों के स्रोत मंख ने अनेकार्थकोश में कई कोशों की परिगणना की है। हलायुध तथा विश्वप्रकाश की भूमिका में भी कई कोश परिगणित हैं।

3 Keith. HSL. पृ.४१२ इनके प्रामाण्य पर Vogel. ३०४ पादटिप्पणी

कविजन शेवधि[१]

आदिनाथकवि कृत

सम्भवतः यह कवियों के लिए पर्याय ढूंढ़ने के उद्देश्य से संगृहीत हो। इस उद्देश्य के अन्य कोश भी प्रतीत होते हैं।

कविजीवननिघण्टु[२]

धर्मराजकवि द्र. कविजनशेवधि

कविदर्पणकोशसङ्ग्रह[३]

प्रयोजन ने लिए द्र. कविजनशेवधि; कविसंजीवनी (निघण्टु)

कविदर्पण अथवा कविदर्पणनिघण्टु[४]

उद्देश्य के लिए द्र. कविजनशेवधि। इसके लेखक राम उपाध्याय है।

कविदीपिका[५] **अथवा विक्रमनिघण्टु**

इस के कर्ता विक्रमादित्य माने जाते हैं। प्रयोग ने लिए द्र. कविजनशेवधि

काव्यसञ्जीविनी — कोश अज्ञातकर्तृक[६]

कविसञ्जीविनी निघण्टु[७]

महाक्षपणककृत अनेकार्थध्वनिमञ्जरी का ही यह अन्य नाम है। प्रयोजन के लिए द्र. कविजनशेवधि

कवि सेनादि निघण्टु

द्र. कविजनशेवधि — आदिनाथ कविकृत

---

1 NCC. III. पृ.२७५

2 NCC. III. पृ.२७५

3 NCC. II. पृ.२७८

4 NCC. III. पृ.२७८

5 NCC. III. पृ.२७८

6 NCC. IV. पृ.१०७

7 NCC. III. पृ.२८६

अमर की जीवनी

जो स्थान व्याकरण में पाणिनि का, काव्यशास्त्र में मम्मट का, अद्वैतवेदान्त में शङ्कर का तथा वैदिक परम्परा में निरुक्त का है, वही स्थान संस्कृत कोषशास्त्र में अमर का है। यद्यपि कई विधाओं के एवं विद्याओं के कोश कालान्तर में प्रणीत हुए तथापि अमरकोष का कोई भी अतिक्रमण न कर पाया।

संस्कृत साहित्य में व्याकरण, दर्शन, पुराण, धर्म, वैद्यक अथवा ज्योतिष कोई क्षेत्र नही जहाँ अमरकोश का प्रवेश न हो और व्याख्याकार शब्दप्रमाण के लिए इसे उद्धृत न करते हों।[१]

इसी लिए परम्परा में बृहदमरकोष एवं वृद्धामरकोश भी व्याख्याकारों में प्रसिद्ध हो गए (द्र.)।

इसकी लोकप्रियता केवल सन्दर्भों से ही नहीं इस की व्याख्याओं की संख्या से सिद्ध होती है (द्र.) विदेशों (द्र.) में इसकी संरचना के आधार पर नए कोष बने अथवा अनूदित हुए। पालि, प्राकृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोश भी इसे आधार बना कर निर्मित हुए (द्र.)।

अमर की जीवनी के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

---

1 इसके उद्धरणों में प्रायः सभी कोशकार यथा केशवकृत नानार्णवसङ्क्षेप, वर्णरत्नाकर Chatterjee, S.K. (1928) श्री हर्ष (अमरखण्डन — द्र. खण्डन तथा मण्डन); राक्षसटिप्पण अनेक हस्तलेखों में (Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I. 1953. पृ. ९६-१००; सिद्धान्तचन्द्रिका पर सदानन्दगणि (Gode, P.K. वही.पृ.९८); अष्टाङ्गहृदयकैरली व्याख्या में (Gode. P.K. वही पृ.२६६); नैषधीयचरित पर लक्ष्मणभट्ट के द्वारा (Gode, P.K. पृ.४२५-४२८; वल्लभदेव, मल्लिनाथ, पूर्णसरस्वती दक्षिणावर्तनाथ, राघवभट्ट, घनश्याम, सिद्धिचन्द्र, शंकर (हर्षचरित पर) (Gode, P.K. पृ. ४२९-३६) कृष्णपति, नारायण, भरतसेन, हेमचन्द्र, भोज, महेन्द्रसूरि की अनेकार्थकैरवकौमुदी Sharma, Sudha (1994) सात उद्धरण ; काव्यशास्त्र के ग्रन्थों में काव्यप्रकाश की व्याख्याओं में द्र. De S.K. : Sanskrit Poetics तथा Kane, P.V. History of Sanskrit Poetics) काव्यों पर जैन व्याख्याएँ व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र तथा अन्य शास्त्रों में सर्वत्र।

अमरसिंह एवं विक्रमादित्य

आज भी यह परम्परा प्रचलित है कि अमरसिंह विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे।[१] इसी प्रकार आदि आठ शाब्दिकों में भी वे एक माने जाते हैं।[२]

धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शङ्कु, वेतालभट्ट घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर तथा वररुचि के कालपार्थक्य को आधुनिक अनुसन्धानकर्ताओं ने सिद्ध किया है। विक्रमादित्य के काल पर भी विवाद है।[३] ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक शास्त्रों के सर्वोत्कृष्ट प्रणेताओं का सर्वोत्कृष्ट राजा से मिलान करने की यह परम्परागत सूक्ति है।

अमर का काल

अमरकोश के काल के विषय में कुछ भी निश्चितरूप से कहना कठिन है। तथापि उसे चतुर्थ शताब्दी में रखा जाता है।[४] यदि उसे कालिदास के पश्चाद्वर्ती माना जाए[५] और कालिदास को गुप्त काल में तो भी लगभग इसी

---

1 शब्दकल्पद्रुम पृ.८२ धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्टघटकर्पर कालिदासः। ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायाम्। रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

2 वही. पृ. ८२ इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्ना पिषली शाकटायनः पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिकाः।

3 विस्तृत विवादों के लिए द्र. Narang, S.P. Kālidāsa Bibliography, 1976. Nos. 2490, 2507, 2530, 3130, 3132, 3158; अभिज्ञा तथा उसके खण्डन के लिए संख्या. २४८२-८३; कालिदास से सम्बन्धः— २५०९, २९५०, २९९३, ३०२१, ३०२७, ३०३३, ३०५६ तथा काल के लिए ३५३२ तथा Pandey" Raj Bali इसके अतिरिक्त द्र. नवरत्नवाद पर मीमांसा तिवारी, रामचन्द्र — कालिदास की तिथि संशुद्धि दिल्ली, १९८९ पृ.१५३-१६९; विक्रमस्मृतिग्रन्थ में कई अनुसन्धानलेख; Krishnamachariar : History of Classical Sanskrit Literature तथा अन्य इतिहास ग्रन्थ; तिवारी, रामचन्द्र उपर्युक्त - पृ.१-३०

4 Amarakoṣa Ed. Oak, K.G. तथा Ed. Ramanathan, A.A. भूमिका तथा प्राचीन मतों का भूमिकाओं से संकलन - Vogel. पृ.३०९-३१०

5 Hengsen : उपर्युक्त के अतिरिक्त - कालिदास के काल पर द्र.Narang, S.P. Kālidāsa Bibliography, संख्या २३६९ से आगे; तिवारी रामचन्द्र— कालिदास की तिथि संशुद्धि इत्यादि

काल में अमरकोश की स्थिति बनती है। परन्तु कालिदास को विक्रमादित्य का समकालीन मानने पर अमरसिंह को लगभग २०० वर्ष पूर्व भी स्थापित किया जा सकता है। समकालिक बौद्ध साहित्य एवं विचारधारा, लौकिक संस्कृत काव्य, विशेष रूप से अश्वघोष, कालिदास एवं बुद्धघोष से उनका समय मृग्य है और इस माध्यम से किसी निश्चित स्थिति पर पहुँचा जा सकता है।

अमरसिंह तथा कालिदास

ए. बरुओ[१] ने प्रतिपादित किया कि या तो अमरसिंह ने कालिदास की कृतियों में प्रतिपादित अर्थों का परीक्षण ही नहीं किया अथवा उन २ अर्थों में देना उचित नहीं माना परन्तु हेंसगेन ने कुमारसम्भव के कुछ शब्दों की अमरसिंह के कोश से तुलना की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कालिदास के कुछ शब्द अमरसिंह में नहीं हैं अतः वह उन से पूर्ववर्ती है। यह विषय विस्तार से मीमांस्य है।[२]

क्या अमरसिंह बौद्ध था ?

सिंह शब्द अन्त में होने से प्रतीत होता है कि वह जाति से क्षत्रिय था।

यद्यपि कुछ विद्वानों[३] के अनुसार वह बौद्ध था परन्तु अमरकोश से प्रतीत होता है कि उसने पहले हिन्दू देवशास्त्र के शब्द रखे तथा आवश्यक होने पर कहीं २ बौद्ध विषयों की ओर ध्यान दिया। प्रायः बौद्धों की कृतियों के परिपक्व सिद्धान्त, जिन में दर्शन भी सम्मिलित है, अमरकोश में कम दृष्टिगत होते हैं। इससे उसके बौद्ध होने की सम्भावना कम प्रतीत होती है।

अमरकोष

अमरसिंह द्वारा रचित **नामलिङ्गानुशासनम्** अमरकोष के नाम से प्रसिद्ध है। अमरकोष[४] समानार्थ कोष है। इसमें नाम तथा लिङ्ग दोनों का ही समन्वय

---

1 Borooah, A. Bhavabhūti and his place in Sanskrit literature, Calcutta, 1878. पृ.२६

2 Hensgen, Hans. *Das Verhaltnis des Amarasiṁha zu Kālidāsa dargestellt an einer untersuchung des Kumārasambhava I.* १-८ *ZDMG*. 104.पृ.३७७

3 Amarakoṣa. Ed. A.A. Ramanathan, 1971 (Introduction)

4 त्रिकाण्ड अथवा त्रिकाण्डकोश

NCC. VIII. पृ.२३१
हस्तलेखों के लिए द्रष्टव्य
NCC. I. पृ.३१८-३२३ तथा
NCC. I. पृ.५०२-५०३
NCC. X. पृ.४८ (नामलिङ्गानुशासन)
ग्रन्थसम्पादन, भारतीय तथा अंन्य भाषाओं में अनुवाद तथा भारतीय भाषाओं में व्याख्याओं के लिए
NCC. I. पृ.३१८ से
नाममाला अथवा नाममालिका अथवा अमरमाला — अमरदत्तकृत
NCC. I. (Revised) पृ.३३३
तथा ३३५;NCC. X. पृ.४५
H.T. Colebrooke
Kosha or Dictionary of the Sanskrit language with English interpretation and annotation.
Ist Edn. 1807. Reprinted, Delhi, 1989.
अमरसिंह विरचित देवकोश अर्थात् अमरकोश भाषाविवरण मूल सहित (Hindi) लेखक देवदत्त तिवारी प्रथम संस्करण १९७९ पुनर्मुद्रिति १९८९ अमरकोष, नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, १९६९-७० (अमरकोषपरिशेषः) Katre S.M. - Amara's contribution ot Indian Lexicography
विक्रमस्मृति-ग्रन्थ पृ.१९९-२१२ अमरकोश के स्रोत द्र.Vogel. पृ.३१२
नाममात्रतन्त्राणि,लिङ्गमात्रतन्त्राणि के आधार पर सुभूतिचन्द्र,सर्वानन्द तथा राममुकुट
Aufrecht *ZDMG;* भानुजिदीक्षित
द्र.व्याडि,कात्य,कात्यायन Vogel; अन्य कृतियाँ
एकाक्षरनाममाला — अमरचन्द्र अमरसिंह कृत
द्र.NCC. III. पृ.५८ तथा
NCC. X. पृ.४५
धनञ्जय कृत नाममाला
भारतीय ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला ६ वाराणसी,१९५० के अन्त में प्रकाशित
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी
यह अमरसिंह अथवा अमराचार्य द्वारा प्रणीत माना जाता है। इस पर गदसिंह,महादेव (अनेकार्थमञ्जरी) लिङ्गभट्ट (?) तथा व्याडि ने व्याख्याएँ लिखीं।
NCC. I. p.221 (Revised) पृ. 336
नाममाला (एकाक्षरी) — अमरकृत
कवि के रूप में आते हैं। उद्धरणों के लिए (कवीन्द्रवचनसमुच्चय तथा सूक्तिमुक्तावली
NCC. I. पृ.३३६

किया गया है। यह तीन कांडों में विभक्त है प्रत्येक कांड में पुनः अनेक वर्ग हैं।

प्रथम स्वरकांड है। इसमें १२ वर्ग हैं—

१. स्वर्ग वर्ग[1] - स्वर्ग की परिभाषा, देवता पद के पर्यायगण, विभिन्न विद्याधर असुर आदि, बुद्ध, ब्रह्मा, विष्णु बलभद्र, मदन, अनिरुद्ध, लक्ष्मी, शिव, उमा, गणेश, कार्तिकेय, इन्द्र, अश्विनौ, अग्नि, यम, राक्षस, वरुण, कुबेर किन्नरों के पर्याय दिये गये हैं।

२. व्योम वर्ग[2] में आकाश के पर्याय दिये गये हैं।

३. दिग्वर्ग[3] में दिशा, मेघ, वृष्टि, चन्द्र सूर्य एवं अन्य नक्षत्र तारामण्डलों के नाम हैं।

४. कालवर्ग[4] में समय संबंधी, रात्रि-दिन, मासों, ऋतुओं मन्वन्तर आदि का वर्णन है।

५. धी वर्ग[5] में बुद्धि अहंकार रंगों इत्यादि के नाम हैं।

६-७ वाक्शब्दादिवर्ग[6] में वर्ग में वाक्, ओंकार, वचन स्तुति आदि सम्बन्धी नाम संकलित हैं।

८. नाट्यवर्ग[7] में वाद्ययन्त्रों, नाट्यकारों रस आदि का विवेचन है।

९-१० पातालभोगि[8] वर्ग में पातालवासी नाग सर्पो इत्यादि के नाम हैं।

११. नरक वर्ग[9] में नरक के प्रकार एवं विविध यातनाओं आदि का वर्णन है।

---

1 ६९ श्लोकों में निबद्ध

2 ११/२ — वही

3 ३५ — वही

4 ३२ — वही

5 १७ — वही

6 २६ — वही

7 ३८ — वही

8 ११ — वही

9 ३१ / २ — वही

१२. वारिवर्ग[1] में विस्तारपूर्वक जलस्रोतों के प्रकारों का वर्णन किया गया है।

द्वितीय भूम्यादि कांड है, इसमें १० वर्ग हैं —

१. पृथिवी वर्ग[2] में भूमि, भारत तथा आस-पास के प्रदेशों का वर्णन हैं।

२. पुरवर्ग[3] में नगरों के नाम तथा प्रकार वर्णित हैं।

३. शैलवर्ग[4] में पर्वतों के पर्याय तथा भारतवर्ष के पर्वतों के नाम हैं।

४. वनौषधि[5] वर्ग में अत्यंत विस्तारपूर्वक विभिन्न वृक्षों तथा फलों एवं औषधियों के नाम गिनवाये गए हैं।

५. सिंहादि वर्ग[6] में पशु-पक्षियों का वर्णन है।

६. मनुष्यवर्ग[7] में परिवार, पुरुष-स्त्रियों के प्रकार एवं आपसी व सामाजिक संबंधों का उल्लेख है।

७. ब्रह्मवर्ग[8] में ब्राह्मणों का उल्लेख है।

८. क्षत्रिय वर्ग[9] में क्षत्रियों का वर्णन है।

९. वैश्य वर्ग[10] में वैश्यों का वर्णन है।

१०. शूद्र वर्ग[11] में शूद्रों का वर्णन है। इन चारों वर्णों के प्रचार, कार्य, समाज में स्थान तथा आपसी सम्बन्धों का उल्लेख है।

---

1 ४५ — वही
2 १८ श्लोकों में निबद्ध
3 २० — वही
4 ८ — वही
5 १६९ १/२ — वही
6 ४३ — वही
7 १३९ १/२ — वही
8 ५७ १/२ — वही
9 ११९ — वही
10 १११ — वही
11 ४७ — वही

तृतीय समाख्या कांड है। इसमें पांच वर्ग हैं —

१. विशेष्यनिघ्न वर्ग[1]

२. संकीर्ण वर्ग[2]

३. नानार्थ वर्ग[3]

४. अव्यय वर्ग[4]

५. लिङ्गादि संग्रह[5]

कुल मिलाकर अमरकोष में १५०० अनुष्टुप् है।

स्रोत के विषय में अमरसिंह ने स्वयं एक कारिका में कहा है[6]

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्॥

अमर ने स्वयं स्वीकार किया है कि कुछ शब्दों को उन्होंने छोड़ दिया है —

शेषं तु ज्ञेयंः शिष्टप्रयोगतः[7]

अमर कोष में गृहीत शब्द

अधिकांश वैदिक शब्दों को ग्रहण किया है।

तकनीकी शब्दों को नहीं छोड़ा है। उनको उसी अर्थ में लिया है यथा अभास्वर जो सामान्य अर्थ की अपेक्षा विशेष अर्थ को व्यक्त करता है।

---

1 ११२ १/२ — वही

2 ४२ १/२ — वही

3 २५७ श्लोकों में निबद्ध

4 २३ — वही

5 ४७ वही

6 अमरकोष १.१.२

7 अमरकोष, ३.५.४६

एक शब्द के पर्यायों पर जो अमर ने शब्द बनाये हैं वे हलायुध ने छोड़ दिये हैं।

अमर के कोश में तत्कालीन समाज के हर वर्ग, हर पक्ष तथा हर तरह की वस्तुओं से सम्बन्धित शब्द संगृहीत हैं। कोश पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि मानो वह तत्कालीन समाज का चित्रण है।

व्यापार, तौल-माप, विनिमय के साधक सिक्के आदि से सम्बन्धित शब्दों का सविस्तार विवरण दिया गया है।

जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों का विशद विवरण है।

अमर ने व्याकरण सिद्ध शब्दों को भी लिया है यद्यपि वे प्रयोग प्रसिद्ध नहीं है।

प्रयोग की सिद्धि के आधार पर शब्दों का चयन अमरकोश का सिद्धान्त नहीं है।

अमरकोश — विषयवर्गीकरण

यह आवश्यक नहीं कि विविध वर्गों में जिन शब्दों का चयन किया गया है उन्हीं के आधार पर अर्थवैज्ञानिक वर्गीकरण हुआ हो। कई बार यह वर्गीकरण गति के प्रकार पर भी निर्भर करता है यथा चलना, भागना, कूदना इत्यादि यह वर्गीकरण सिंहादि वर्ग में स्वीकृत है। इसी प्रकार मनुष्यादि वर्ग में वह स्त्रीवर्ग को पुरुष वर्ग के बाद रखता है जो सामाजिक प्राथमिकता के कारण अथवा व्याकरण में स्वीकृत अनुक्रम के कारण भी हो सकता है।

देवताओं के सान्दर्भिक अनुक्रम यथा पत्नी, पुरी, वाहन, उद्यान, प्रासाद, पुत्र तथा ध्वजों को भी स्वीकार किया गया है।

नानार्थ

अमरकोश में नानार्थ शब्दों का संकलन तृतीय काण्ड में ही उपलब्ध होता है जो ककाराद्यन्त शब्दों के क्रम से वर्गीकृत हैं। बाद के अनेकार्थ कोशों में इन्हें पृथक् कर दिया गया और इन का वर्गीकरण भी अधिक वैज्ञानिक है यथा हेमचन्द्र का अनेकार्थसंग्रह। इनमें प्रायः लौकिक शब्दों का सङ्ग्रह है। कभी - कभी रोदसी इत्यादि वैदिक शब्द भी आते हैं। व्याकरणपरम्परा एवं नाट्य परम्परा में प्रसिद्ध अर्थों का संक्षिप्त ग्रहण इस वर्ग में हुआ है।

अमरकोश — स्रोत

व्याकरण

निस्सन्देह अमरसिंह एवं अन्य कोशकारों ने व्याकरणशास्त्र से शब्दसमूह का चयन किया है। इनमें कात्यायन अथवा वररुचि के वार्तिक प्रमुख हैं, जो स्वयं भी कोशकार के रूप में प्रसिद्ध हो गए। शिक्षाग्रन्थों से भी सिद्धान्तों का चयन किया गया है तथा पतञ्जलि के महाभाष्य में उल्लिखित ग्रस्त, निरस्त, अम्बूकृत इत्यादि शब्दों का अमरकोश में अर्थ निर्धारण हुआ है। व्याकरणपरम्परा में ध्वनिभेद से ज्ञात इत्यादि शब्दों का शब्दादिवर्ग में अन्तर्भाव है।

तृतीय काण्ड में भाषा के व्याकरणात्मक पक्ष का संकलन है। इस में विशेष्यनिघ्न, संकीर्ण, नानार्थ, अव्यय, तथा लिङ्गादिसङ्ग्रह वर्गों में विभाजित हैं। इन का अन्य आधार विशेष्यों से प्रस्तुत होने वाले पद, गुण, द्रव्य तथा क्रिया परक शब्द हैं। लिङ्ग का निर्धारण प्रकृतिप्रत्यय से भी होता है

अमरकोश के लिङ्गादिसङ्ग्रहवर्ग में सामान्य लिङ्गों के अतिरिक्त लिङ्ग निर्धारण के कुछ सिद्धान्त भी दिए गए हैं जिन का सम्बन्ध व्याकरण के लिङ्गानुशासन से है।

अमरकोश के शब्द सामान्य संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त निम्नलिखित क्षेत्रों को भी अपने स्रोत के रूप में ग्रहण करते प्रतीत होते हैं यद्यपि उन के विभाजन का मुख्य आधार अमरसिंह द्वारा कृत विभाग ही है यथा स्वर्गवर्गादि। इन का मूल से प्रतिसंस्कार अमर ने स्वयं किया है अथवा सम्पूर्ण शब्द का ही अभिधान किया है। प्रायः रूपभेद से अथवा साहचर्य से इन शब्दों के स्त्री, पुल्लिग तथा नंपुसक का भेद करना चाहिए। व्याकरण में द्वन्द्व अथवा एकशेष जैसे शब्दों के लिङ्ग निर्धारण को यहाँ प्रदर्शित नहीं किया गया। कहीं २ लिङ्ग के अनुसार इन का वर्गीकरण किया हुआ है।[१]

अन्तिम संरचना — प्रत्यय के आधार पर

कुछ शब्दों का निर्माण प्रतिपादिकों की संरचना के आधार पर हुआ। यथा दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः। प्रायः यह वर्गीकरण स्वीकार

1 अमरकोश १.२.५ समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्

नहीं किया गया। अर्थ के आधार पर भी प्रत्यय का संयोजन कर के शब्द का संकलन किया गया है यथा जागरूको जागरिता। ऐसे सन्दर्भों में प्रत्यय एक - धातु पृथक् अथवा धातु एक - धातु पृथक् अथवा धातु एक प्रत्यय रूप में अथवा ध्वनि से पृथक् हो सकता है। यथा **स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक्।**

किसी भी पर्यायवाले कोश के वर्गीकरण के समान अमर का वर्गीकरण भी समस्यामूलक है।[१]

सामाजिक परिप्रेक्ष्य

ब्राह्मणवाद

समाजसंरचनात्मक· शब्दों में व्याकरण परम्परा के अतिरिक्त लोक में प्रचलित शब्द तथा कामशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में प्रसिद्ध धाराएँ अन्तर्भूत है।

सम्पूर्ण ब्राह्मण परम्परा एवं यज्ञवाद परम्परा जिस का स्रोत श्रौतसूत्र, वैदिक ऋचाएँ, व्याकरणपरम्परा, अग्निवाद, छन्द, यज्ञों के पात्र, संस्कार, नियम, पूजा पद्धतियाँ एवं कर्मकाण्ड पृथक् रूप से ब्रह्मवर्ग में वर्गीकृत है। इससे स्पष्ट है कि वह इन से पूर्ण रूप से अभिज्ञ थे।

अमरकोश में बौद्धादि शब्दों का समन्वय

सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, मारजित्, लोकजित् तथा जिन शब्दों से बौद्ध एवं जैन शब्दों का समन्वय प्रतीत होता है। अमरसिंह उत्तर एवं दक्षिण के अनेक सम्प्रदायों से शब्द लाते हैं।

समाज संरचनात्मक शब्दों में व्याकरण परम्परा के अतिरिक्त लोक में प्रचलित शब्द तथा कामशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में प्रसिद्ध धाराएँ अन्तर्भूत हैं।

सामाजिक व्यवस्था में ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग के पृथक् संयोजन एवं शब्द, सामाजिक व्यवस्था में प्रचलित मान्यताओं के उन लोकसिद्ध मानदण्डों को अभिव्यक्त करते हैं जिन का प्रचलन अद्यावधि भारतीय

---

1 विस्तार के लिए द्र. Rajwade, V.K. Reflections on the Amarakośa ABORI. VI. pp. 26-45; त्रिपाठी कैलाशचन्द्र; अमरकोष का भाषावैज्ञानिक अध्ययन वाराणसी, १९८४

समाज में है। इन के मूल्य, जीवनयापन की पद्धतियाँ, धनार्जन की पद्धतियाँ एवं सामाजिक स्थिरता अमरकोश से जानी जा सकती है।

साजसज्जा एवं वेष

इस सन्दर्भ में अमरकोष ने न केवल् आर्यावर्त अथवा ब्रह्मावर्त के शब्दों का अपितु काश्मीर एवं वाह्लीक अथवा बलख में प्रचलित शब्दों का भी उल्लेख किया है। राज्यव्यवस्था तथा उसके सम्पूर्ण उपादानों तथा सेना के अङ्गों से प्रतीत होता है कि वे युद्धविद्या के गूढ तत्वों तथा उनकी संरचना से अभिज्ञ थे।

पौराणिक शब्द

स्वर्ग वर्ग में उपलब्ध शब्द यथा देवतावाची प्रायः पौराणिक देवशास्त्र से प्रभावित दृष्टिगत होते है। इन में वैदिक प्रभाव कम दृष्टिगत होता है। इसीलिए सम्भवतः वैदिक शब्दों के लिए निघण्टु का पृथक् निर्माण हुआ।

विष्णु के पर्यायों में वैदिक गिरिक्षिते तथा उरुगायाय के स्थान पर वैष्णव एवं सात्वत एवं व्यूहवाद सम्प्रदाय के शब्द यथा दामोदर, हृषीकेश, शार्ङ्गी तथा विष्वक्सेन अधिक हैं।

अमरकोश में शैव शब्द

अनेक सम्प्रदायों एवं तन्त्रों में प्रसिद्ध शिव के शब्द संकलित हैं। जिन्हें व्याख्याकार पुराणों में प्रदर्शित न कर के आगम की परम्परा से आए मानते हैं यथा **अत्यादित्यं हुतवहमुखे** — मेघ. पर मल्लिनाथ शम्भुरहस्य को उद्धृत करते हैं। उमा हैमवती को केनोप निषद् में तथा भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, मृडानी को पाणिनि पर कात्यायन के वार्तिकों में देखा जा सकता है। स्कन्द एवं कुमार सम्प्रदाय के शब्द मृग्य हैं।

अमरकोश में इन्द्रादि सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के शब्द अनेक आगमों, पुराणों में उपलब्ध होते हैं।

कुबेर सम्प्रदाय के शब्द जो कालिदास एवं अमरकोश में हैं, वैदिक साहित्य में उपलब्ध नहीं होते। यथा किन्नर, कैलास, चैत्ररथ तथा अलका।

अमरकोश में विविध दर्शनों का समन्वय

समाहृत्यान्यतन्त्राणि की बात को व्यवहार में सत्य करते हुए अमरसिंह विविध ज्ञान, विज्ञान, शिल्प, शास्त्र, मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, निःश्रेयस्, मोक्ष, अपवर्ग आदि विषयों के शब्द सम्प्रदाय विशेष से न लेकर अनेक शास्त्रों से उद्धृत करते हैं। वे शब्दों के पर्यायों को अत्याधुनिक वैज्ञानिक की तरह विषय के आधार पर वर्गीकृत करते हैं जो देश, काल, सम्प्रदाय से सर्वथा पृथक् है।

वनौषधि वर्ग

इस वर्ग में वनादि वर्ग तथा औषधि वर्ग का संकलन इतना विस्तृत है कि कालान्तर में वैद्यकशास्त्र को निघण्टु का पर्याय मान लिया गया। पश्चाद्वर्ती कोशशास्त्र में निघण्टु शेष को एक पृथक् शास्त्र के रूप में स्वीकार कर लिया गया। इनमें औषधि के स्वरूप के अतिरिक्त गुणों का भी उल्लेख है जो सम्भवतः वैद्यकशास्त्र परम्परा में चरक एवं सुश्रुत के समान है। इन्हें पहचानने के लिए अमरकोश काफी सहायक है।

इस वर्ग का स्रोत विविध भाषाएं भी हो सकती हैं जिनका विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।

नाट्यशास्त्र परम्परा

नाट्यशास्त्रीय परम्परा में उपलब्ध अनेक शब्द हैं, लगभग उसी अर्थ में अमरकोश में उपलब्ध होते हें। अनेक प्रकार के नर्तन, हावभाव, नाट्य, नाट्योक्त रसों के गणन इसके प्रमाण हैं।

अमरकोश का काव्यादि पर प्रभाव

कालिदास, माघ, भारवि, नैषध, बाण, सुबन्धु संस्कृत के अनेक तथा अन्य उत्कृष्ट कवियों का शब्दभण्डार अमरकोश से प्रभावित प्रतीत होता है। वे अमरकोश से सौन्दर्यात्मक शब्द ग्रहण करते हैं यथा हिम के लिए अवश्याय,

नीहार, तुषार तथा प्रालेय जिन्हें व्याख्यायित करने के लिए टीकाकार प्रायः अमरकोश अथवा बह्वर्थक के लिए अन्य कोशों का आश्रय लेते हैं।[१]

अमरकोश की व्याख्याएँ[२]

अज्ञातकर्तृक व्याख्याएँ

व्याख्या - अज्ञातकर्तृक[३]

अमरकोषसन्नय (सिंहली में) [४] इसकी रचना १३००-१५०० ई. के मध्य हुई

अमरान्वयप्रकाश[५]

अमरकोशाभिधान[६]

टीकाकृत्[७]

यह टीकासर्वस्व में उल्लिखित है।

नामनिधान अज्ञातकर्तृक[८]

कौमुदी (?) (अमरकोष की अज्ञातकर्तृक व्याख्या में उद्धृत)

नीलकण्ठशर्मन्[९]

पाञ्चिक[१०]

---

1 द्र. कुलकर्णी गोडे पी.के. तथा नारंग, सत्यपाल (ग्रन्थसूची); कालिदास एवं अमरकोश के तुलनात्मक अध्ययन के लिए द्र. अमरकोश; Narang, S.P. Kālidāsa Bibliography, 1976 (Index); Hensgen : ZDMG. 104. p.377

2 अमरकोष — व्याख्याओं के लिए पृ. ३२४ Aufrecht, I ZDMG.28.; NCC. I पृ.३२४ Vogel : पृ. ३१३ से बङ्गाल से — द्र. Indian culture, II. पृ.२६१-९

3 विश्लेषण के लिए JOR. Madras VI. pp.२४७-२७४

4 Vogel . पृ.३१६

5 NCC. I.

6 NCC. I

7 NCC. I

8 ZDMG. 28 (1874) पृ.११२; NCC. X. पृ.२८

9 NCC X. पृ.१७१

10 NCC. I

पदटिप्पण[१]

पदटिप्पण विवृति[२]

टीका भाषाटीका सहित[३]

पदविवृति[४]

पदवृत्ति[५]

पदव्याख्या[६]

प्रतिपदटीका[७]

मनोरमा (१६२९ ई.)[८]

मर्मभेदिनी[९]

यह व्याख्या मल्लिनाथ के वैश्यवंशसुधार्णव में उद्धृत है।

लघुभाषा[१०]

सज्झ अथवा सञ्झ कृत व्याख्या। नारायण विद्या विनोद तथा रामनाथ ने इस अमरकोश की अज्ञातकर्तृक व्यांख्या को उद्धृत किया है।[११]

अमरकोश के व्याख्याकार

अच्युत उपाध्याय

टीका अमरकोश[१२]

---

1 TSS. edn. Pt. III. पृ.१५४, २८२
2 NCC. I
3 NCC. I
4 NCC. I
5 NCC. I
6 NCC. I
7 NCC. I
8 NCC. I
9 Raghvan V. NIA. Ross. Vol. पृ.२३९
10 NCC. I
11 NCC. I. पृ.३३१;JOR Madras, VI.पृ.२६८
12 Colebrooke; Miscellaneous Essays. III. p.5.

आशाधर

कृत्यकलाप अथवा क्रियाकलाप[१]

कृत्यकलाप[२]

काशीनाथ

काशिका[३]

कुलतिथिशर्मन्[४] सुपुत्र जयदेव

कृष्णदास[५]

ये बंगालवासी हैं। अमरकोष की एक अज्ञातकर्तृक व्याख्या में तथा रामनाथ ने त्रिकाण्डविवेक में इन्हें उद्धृत किया है। नारायणविनोद ने अमरकोष की व्याख्या में इन्हें लगभग ४० बार उद्धृत किया है।

कौमुदी

इसके लेखक बंगाल के कौमुदीश्वर हैं।[६] रायमुकुटमणि ने इसे उद्धृत किया है। यह तर्क-पञ्चानन भट्टाचार्यकृत कौमुदी से भिन्न है।

क्षीरस्वामी

इनके पिता का नाम भट्ट ईश्वरस्वामी था। यह भोजकृत सरस्वतीकण्ठाभरण का उल्लेख करते हैं। इन्हें मैत्रेयरक्षित ने ११०० ई. में उद्धृत किया है; गणरत्न महोदधि में वर्धमान (११४१ ई.) भी इन्हें उद्धृत करते हैं।

---

1 इस का उल्लेख लेखक की प्रतिष्ठासारोद्धार की प्रशस्ति में है। NCC. I. पृ.३२५ विवरण के लिए — अनेकान्त, ३, xi. पृ ६७३

2 NCC. II. पृ.१९४

3 NCC. I. पृ.३२५ तथा JOR. Madras XII. पृ.१३

4 NCC. I. पृ.३२५ तथा JOR. Madras XII. पृ.१३

5 NCC. I. पृ.३२५ & JOR Madras, XII. p.13 ; अमरकोश — व्याख्या कृष्णमित्रकृत

6 NCC. I. pp. 325-326; JOR. Madras, VI. p.261

इन्होंने सम्भवतः व्याकरण एवं कोशशास्त्र की छः वृत्तियां लिखीं। इनकी प्रमुख कृतियाँ है — **अमरकोश क्षीरोद्घाटन; अमृततरङ्गिणी** अथवा **कर्मयोगामृततरङ्गिणी; अव्ययवृत्ति, क्षीरतरङ्गिणी** (धातुवृत्ति); क्षीरस्वामिकोश (अमरकोशव्याख्या ?) गणवृत्ति, निघण्टुवृत्ति तथा निपाताव्ययोपसर्गवृत्ति[1]।

१. अमरकोष[2]

२. क्षीरतरंगिणी

३. अमृततरंगिणी अथवा कर्मयोगामृततरंगिणी — अनुपलब्ध

४. निपाताव्ययोपसर्गवृत्ति —

इसका एक हस्तलेख अडियार (मद्रास) के पुस्तकालय में सुरक्षित है, जिसका क्रमांक ४८७ है। यह हस्तलेख तिलकनाम्नी व्याख्या सहित है। हस्तलेख के अन्त में लिखा है—

भट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितनिपाताव्ययोपसर्गीयतिलककृताः
वृत्तिः संपूर्णेति । भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रम् —।

५. गणवृत्ति

यह गणपाठ की व्याख्या प्रतीत होती है। इसका उल्लेख अभी तक अज्ञात है।

६. अज्ञात एवं संदिग्ध रचना

युधिष्ठिर मीमांसक — निघण्टु टीका **अभिनवराघव**

---

1 द्र. मीमांसक, युधिष्ठिर - व्याकरणशास्त्र का इतिहास - द्वितीय भाग. पृ. १३८-३८ NCC. V. पृ.१५३

2 हस्तलेखों के लिए - द्र.NCC. I. p.325; अनुक्रमणिका एवं उद्धरणों के लिए :- द्र. Aufrecht, T. *ZDMG*. 28 (1874) pp.103-24. Sharma, H.D. and Sardesai, N.G.; संस्करण - पूना ओरिएण्टल सीरिज १९४१ : केवल द्वितीय काण्ड TSS. ४३,५१ (टीकासर्वस्वसहित) १९१५-१९१७, Oka, K.G. Poona, 1913; स्थानीय शब्दावली के लिए द्र. Zachariae : *Beitrage* — पृ. ६७ विस्तृत विवरण के लिए शर्मा, सुधा. M.Phil. Dissertation, १९८० (दिल्ली,विश्वविद्यालय)

क्षीरस्वामी[१]

व्याख्या-पद्धति

क्षीरस्वामी ने अमरकोशोद्घाटन टीका में अमरकोश के स्पष्टीकरण के लिए सात पद्धतियों को अपनाया है — १. प्रकृति २. प्रत्यय ३. वाक्य ४. विग्रह ५. समास ६. निरुक्ति एवं ७. उक्ति ।[२]

१. प्रकृति एवं २. प्रत्यय

किसी शब्द में कौन सा मूल-शब्द या प्रकृति है और कौन सा प्रत्यय व्याकरण के नियमों के आधार पर निश्चित करते हुए व्याकरणात्मक रूप-सिद्धि दी गई है। क्षीरस्वामी ने पाणिनीय अष्टाध्यायी, वार्तिक, उणादिसूत्र, गणपाठ, चान्द्रधातुपाठ आदि के सूत्रों, धातुओं, धात्वर्थों इत्यादि का निर्देश करते हुए रूप-सिद्धि करने का प्रयत्न किया है।[३]

३. वाक्य

अर्थ की स्पष्ट प्रतिपत्ति करवाने के लिए क्षीरस्वामी ने इस तकनीक का प्रयोग किया है। जिसके अन्तर्गत उन्होंने प्रसङ्ग का आख्यान, उद्धरण, विवेचनात्मक वाक्य, न्यायों का प्रयोग, सकारण व्याख्या, आलोचनात्मक वाक्यों द्वारा व्याख्या और विभिन्न आचार्यों के मतों का उल्लेख किया है।[४]

४. विग्रह

अमरकोश के समस्त पदों की व्याख्या के लिए क्षीरस्वामी ने विग्रह-पद्धति का आश्रय भी लिया है। विग्रह करते हुए क्षीरस्वामी पदों के समानार्थक शब्दों को भी देते हैं। जिनसे अर्थ स्वतः सुस्पष्ट हो जाता है।[५]

---

1 डा. सुधा शर्मा के सौजन्य से (१११५-११६५)

2 अमरकोशोद्घाटन, पृ. १०१

3 वही, पृ. १०१-१०४

4 वही, पृ. १०४-११३ मीमांसक, युधिष्ठिर - संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास - II पृ. ७८-८५

5 वही, पृ. ११३-११४

५. समास

यद्यपि समस्त पद के अवयवों में भी सार्थकता तो होती है, किन्तु ये स्वतन्त्र रूप से भी इकाई के रूप में अर्थवान होते हैं। समास होने के बाद अवयवार्थ का अधिक महत्त्व नहीं रहता। समस्त शब्द जिस नए अर्थ की प्रतीति कराता है वह अवयवार्थ से संबद्ध भी हो सकता है और असंबद्ध भी। इसीलिए संभवतः क्षीरस्वामी ने कुछ समस्त पदों की विग्रह करके व्याख्या की है कुछ की समास रूप में। इसके अतिरिक्त कई बार वे अर्थ बताने की अपेक्षा शब्द का कारण देना अधिक उचित समझते है अतः उसकी समस्त पद के रूप में ही व्याख्या कर देते हैं।[१]

६. निरुक्ति

निरुक्ति में **शब्द** की मूल धातु की खोज की जाती है जिससे शब्द की उत्पत्ति का इतिहास ज्ञात हो सके क्षीरस्वामी ने टीका में निरुक्तियों के आधार पर भी विभिन्न शब्दों की यथासंभव व्याख्या करने का प्रयत्न किया है।[२]

७. उक्ति

किसी भी तथ्य को युक्तियुक्त एवं प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा कथित उक्तियां अत्यधिक सहायक सिद्ध होती हैं। क्षीर-स्वामी ने भी स्थान - स्थान पर अपने मत को प्रमाणित एवं युक्तिसंगत बनाने के लिए एवं लोक में शब्द का प्रयोग दिखाने के लिए उक्तियों का नामोल्लेखपूर्वक एवं नामोल्लेख के बिना उक्तियों को उद्धृत किया है।[३]

इस प्रकार यद्यपि क्षीरस्वामी ने सभी प्राचीन पद्धतियों का ही उपयोग किया है तथापि उनकी टीका में मौलिकता एवं विद्वत्ता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। अतः आज भी अमरकोश की सभी टीकाओं में से क्षीरस्वामी की टीका को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है

---

1 वही, पृ. ११४-११५

2 वही, पृ.११५-११६

3 वही. पृ.११६-११८

क्षीरस्वामी की टीका में उद्धृत आचार्य एवं ग्रन्थ[१]

क्षीरस्वामी ने अपनी टीका में अनेक आचार्यों के नाम अथवा उनकी कृतियों का उल्लेख एवं उनके मतों का विवेचन किया है। इनमें से कुछ प्रसिद्ध उक्तियों के उद्धरणस्रोतों का ज्ञान हो जाता है किन्तु कुछ उद्धरणों में उनके आचार्य एवं ग्रन्थादि स्रोत अज्ञात ही रह जाते हैं।

क्षीरस्वामी ने अमरकोशोद्घाटन टीका में विभिन्न पूर्ववर्ती कोशों एवं कोशकारों के उद्धृत किए हैं यथा — निघण्टु एवं निरुक्त, कात्य, मुनि, भागुरि, माला और मालाकार शाश्वत, नाममाला, अभिधानरत्नमाला, रुद्र, अनेकार्थ-कोष। क्षीरस्वामी ने पूर्ववर्ती कोशों के टीकाकारों उपाध्याय, गौड, श्रीभोज आचार्य तथा नारायण का भी उल्लेख किया है।

इस टीका में कुछ चिकित्सासम्बन्धों ग्रन्थों के अन्तर्गत विशेषतः आयुर्वेदिक ग्रन्थों का भी उल्लेख मिलता है यथा — चरकसंहिता, वैद्याः सुश्रुत, धन्वन्तरि और उसका निघण्टु, वाहट् या वाग्भट्ट, चन्द्र, इन्दु, चन्द्रनन्दन, धातुविद् निमि आदि। इसके अतिरिक्त पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, चन्द्रगोमी आदि वैयाकरणों का; गौतम, जैमिनी, कुमारिलभट्ट, सांख्यशास्त्र-सांख्यकारिका, योगशास्त्र, जैन, बौद्ध आदि दार्शनिक ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, शिशुपालवध, श्रीहर्षकृत नैषधीयचरित, कालिदास-कृत कुमारसम्भव, रघुवंश, मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय आदि, भवभूति-कृत उत्तररामचरित, नागानन्द, रत्नावली, मुद्राराक्षस, वेणीसंहार, किरातार्जुनीय, मालतीमाधव, काव्यादर्श, काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति आदि साहित्य- सम्बन्धी ग्रन्थों के भी उद्धरण उपलब्ध हुए हैं।

---

1 निम्न सम्पादनों के आधार पर (i)नामलिङ्गानुशासन (अमरसिंह) - सम्पा. ए. बरुआ, पब्लिकेशन बोर्ड, आसाम, गुवाहाटी - ३,१९७१ (ii) नामलिङ्गानुशासन (अमरकोश - अमरसिंह) - क्षीरस्वामी - कृत अमरकोशोद्घाटन टीका सहित सम्पा. के.जी. ओक, पूना, १९१३ (iii) नामलिङ्गानुशासन (अमरकोश - अमरसिंह) क्षीरस्वामीकृत अमरकोशाद्घाटन टीका सहित सम्पा. डा. हरदत्त शर्मा और एन. जी. सरदेसाई, पूना ओरियण्टल बुक एजेन्सी पूना, १९४१

उपर्युक्त विधाओं के ग्रन्थों के अतिरिक्त विभिन्न स्मृतियों, संहिताओं, अर्थशास्त्र, संगीतशास्त्र, सूदशास्त्र, तान्त्रिक, ज्योतिष, हितोपदेश, पञ्चतन्त्र, धनुर्वेद, पुराण, सौरतन्त्रादि को भी क्षीरस्वामी ने उद्धृत किया है।

इन समस्त स्त्रोतों के आधार पर कहा जा सकता है कि क्षीरस्वामी ने अपने से पूर्ववर्ती समस्त शास्त्रों का प्रयोग अमरकोश की व्याख्या को सुस्पष्ट बनाने के लिए किया है। इन पूर्ववर्ती स्त्रोतो का उपयोग करने पर भी क्षीरस्वामी की टीका का प्रस्तुतीकरण नवीन पद्धति से होने के कारण इसमें मौलिकता भी अवश्य दृष्टिगोचर होती है।

कोशकार

१. निघण्टु एवं निरुक्त — नाम्ना उल्लेख (पृ.२८-२९)

२. कात्य — नाम्ना उद्धृत (पृ. २९-३०)

३. मुनि — नाम्ना उद्धृत (पृ. .३१-३२)

हरदत्त शर्मा ने मुनि और व्याडि के एक होने की संभावना की है।

४. भागुरि — नाम्ना उद्धृत (पृ. ३२)

५. माला और मालाकार — नाम्ना उद्धृत (पृ. ३२-३३)

६. शाश्वत — नाम्ना उद्धृत (पृ..३३-३५)

७. नाममाला — नाम्ना उद्धृत (पृ. .३५-३६)

८. अभिधानरत्नमाला — अभिधानकार के रूप में नाम्ना उद्धृत (पृ..३६)

९. रुद्र — नांम्ना उद्धृत (पृ. ३६-३७)

१०. अनेकार्थ रत्नमाला—अभिधानकार के रूप में नाम्ना उद्धृत (पृ.. ३६-३७)

११. टीकाकार —

उपाध्याय	नाम्ना उद्धृत	पृ. ३८-३९
गौड	"	पृ. .३९-४०
श्रीभोज	"	पृ. .४०-४१
आचार्य एवं नारायण	"	पृ. .४१

चिकित्सा - सम्बन्धी

चरकसंहिता — नामोल्लेख के बिना एक स्थल पर (पृ. .४२)

वैद्याः — नाम्ना उद्धृत (पृ. ४२)

सुश्रुत — नामोल्लेखपूर्वक एक स्थल पर उद्धृत (पृ. .४३)

धन्वन्तरि और उसका निघण्टु — धन्वन्तरी का नाम्ना एवं अनाम्ना उद्धृत (पृ. .४३-४४)

वाहट् या वाग्भट्ट — नामोल्लेख बिना (पृ. .४४-४५)

आयुर्वेद से सम्बन्धित अन्य विद्वान् चन्द्र, इन्दु, चन्द्रनन्दन, धातुविद्, निमि आदि का नाम्ना उद्धरण है।

वैयाकरण

पाणिनि — अनाम्ना उद्धृत (पृ. .४७)

कात्यायन — वार्तिक अनाम्ना उद्धृत (पृ. ४८)

पतंजलि — नाम्ना, अनाम्ना उद्धृत (पृ. ४८-४९)

प्राच्य, प्रतीच्य और उदीच्य — नाम्ना उद्धृत (पृ. ४९)

चन्द्रगोमी — नाम्ना अनाम्ना उद्धृत (पृ. ५०)

बालबोधिनी — गोस्वामी शिरोमणि भट्ट कृत[१]

चतुर्भुज कृत व्याख्या[२]

यह अमरकोश की व्याख्या है। इस का अन्य नाम चतुर्भुजीटीका भी सम्भावित है।[३]

चिन्तामणि मिश्र[४]

---

1 NCC. I. पृ.३२६

2 NCC. I. पृ.३२६

3 NCC. I. पृ.३१४

4 NCC. V. पृ.३२६

चूडामणि[१] व्याख्या

जातवेददीक्षित कृत[२] बृहद्वृत्ति अथवा सुबोधिनी

इनके पिता का नाम याज्ञिक देवणभट्ट था।मालाबार के एक लेखक ने इसका सार प्रस्तुत किया जिस का नाम सुबोधिनीसार है।

तर्कपञ्चानन भट्टाचार्य[३]

(बंगाल के) त्रिलोचनदास[४]

दुर्लभवल्लभ[५]

दैत्यारि[६]

यह शंकर के पुत्र एवं पञ्चानन कवीश्वर के प्रपौत्र थे जो उड़ीसा के निवासी थे।

नयनानन्द शर्मा कृत कौमुदी[७]

इसे नयनानन्द शर्मा ने प्रारम्भ किया तथा रामचन्द्र शर्मा ने सम्पूर्ण किया

नाचराज

अमरकोष व्याख्या (कन्नड़ में)। इसके लेखक नाचराज हैं यह दो काण्डों तक विविध हस्तलेखों में उपलब्ध है। मल्लिनाथ ने इसे वैश्यवंशसुधार्णव में काचराजीय नाम से उद्धृत किया है[८]।

एक अन्य व्याख्या नाचराजीय भी उपलब्ध होती है।

---

1 NCC. I. पृ.३२६
2 NCC. I. पृ.३२६
3 NCC. I. पृ.३२६
4 द्र.Indian culture, II. पृ.२६२.
5 द्र.Indian Culture, II, पृ.२६३-२६४
6 NCC. I. पृ.३२६
7 NCC. I. पृ.३२६
8 NCC. I. पृ.३२७ द्र.Raghaven, V. NIA. Ross. Fel. Vol. पृ. २३८-२३९

सम्भवतः लेखनकला के कारण ये ध्वनियां सम्मिश्रित हो गई। लेखक एक ही हो सकता है। इसका सम्बन्ध नञराज भी हो।

नारायण शर्मा अथवा चक्रवर्ती कृत — पञ्चिका अथवा पञ्जिका अथवा पदार्थ कौमुदी[१]

इनके पिता पूततुण्ड के राम थे। ये पश्चिम बंगाल के निवासी थे। १६१९ ई में यह हस्तलेख लिखा गया।

नीलकण्ठ शर्मा कृत सुबोधिनी[२]

परमानन्द शर्मा कृत अमरकोशमाला

यह बंगाल के शालिकनि ग्राम के वासी थे।[३]

पुरुषोत्तम तर्कालङ्कार कृत अमरोद्योत[४]

अप्पयाचार्य कृत बोमघण्टी व्याख्या[५]

यह कुमारशुङ्ग के काल (१३८५-१४१० ई.) में लिखी गई।

मुग्धबोधिनी

इसके लेखक **भरतसेन** अथवा **भरतमल्लिक है।**[६]

भानुजिदीक्षित अथवा रामाश्रमी कृत
व्याख्या सुधा अथवा सुबोधिनी

---

1 NCC. I. ३२७; उद्धरणों के लिए द्र. Aufrecht, I ZDMG. २८ (१८७४) पृ.१२१-२२

2 NCC. I. मृ. ३२७

3 NCC. I. p.327

4 प्रकाशित कलकत्ता, १८०१

5 इस व्याख्या के विस्तृत विश्लेषण हेतु द्र. Raghvan V. IHQ. XIX. पृ.७३-७८ शुङ्गभूपाल के काल के लिए द्र. De, Sushil Kumar: History of Sanskrit Poetics. Calcutta, १९६०, पृ. २३९

6 NCC. I. पृ. ३२७ Bhattacharya, D.C. IHQ.१८ पृ.१६८

इसके लेखक भानुजिदीक्षित अथवा रामाश्रमी हैं।[१] इसका काल लगभग १६२०-१६४० है।

मञ्जुभट्ट कृत व्याख्या सारसुन्दरी[२]

इसका निर्माण १६६६ ई. में हुआ।

मधुमाधवकृत माधवी अथवा मधुमाध्वी

इसे सम्भवतः वङ्गालनिवासी मधुमाधव ने लिखा था। इसे विद्याविनोद ने अपनी व्याख्या में सन्दर्भित किया है।[३]

मल्लिनाथ[४] — अमरपदपारिजात

इसके लेखक श्रीवत्सगोत्र के बोलापिनी नृसिंह सूरि के पुत्र मल्लिनाथ हैं।

इसकी एक पाठान्तर अनुक्रमणी भी हस्तलेखों में उपलब्ध है जिसपर अहोबल ने व्याख्या लिखी है।

महादेवतीर्थ कृत

विद्वन्मनोहरा अथवा बुद्धमनोहार — इसके लेखक स्वयं प्रकाशित तीर्थ के शिष्य महादेवतीर्थ है।[५]

महेश्वर

अमरकोशविवेक अथवा शिशुबोधिनी। इसके लेखक महेश्वर हैं।[६]

---

1 हस्तलेखों के लिए द्र. NCC. I. पृ.३२७-२८ प्रकाशित बम्बई, (चौथा संस्करण) १९१५, चौखम्भा वाराणसी, १९९५-3rd edn. 1997

2 JOR Madras. VI पृ.२६३, १८८२;

3 JOR. Madras. VI. पृ.२६३

4 NCC. I पृ.३२८

5 NCC. I पृ.३२८ प्रकाशित - अभिधान सङ्ग्रह. Bombay, 1889

6 प्रकाशित - पूना, १८४९, १८८४, बनारस, १८५७, बम्बई, १८७७, रघुनाथशास्त्री तालकेर द्वारा अभिवर्धित अनुक्रमणी, बम्बई, १८८२, तृतीय संस्करण, वी. झलकीकर, १८८६, षष्ठ संस्करण. आर.जी. भण्डारकर १९०७

मणिक्य

इन की व्याख्या बालबोधिनी नेवारी में है जिस का निर्माण जयद्ब्रह्मस्वामी ने अपने पुत्र के लिए १३८६ ई. में करवाया।[१]

मुकुन्दशर्मा[२]

ये वोपदेव के व्याकरण का अनुसरण करते हैं।

रघुनन्दन[३]

अभिधान प्रकाशिका

रघुनाथ चक्रवर्ती[४]

त्रिकाण्डचिन्तामणि। **रङ्गाचार्यकृत अमरपदमुकुट** गोपालचार्य के पुत्र रङ्गाचार्य आत्रेयगोत्र में उत्पन्न हुए।

रत्नेश्वर चक्रवर्ती[५]

रत्नमाला के लेखक रामनाथ के पुत्र रत्नेश्वर चक्रवर्ती हैं।

राघवेन्द्र[६]

रामकृष्णदीक्षित[७]

पीयुष के प्रणेता रामकृष्णदीक्षित गोवर्धनदीक्षित के पुत्र हैं। इस व्याख्या का नाम कौमुदी अथवा नामलिङ्गकौमुदी अथवा नामलिङ्गार्थकौमुदी भी है।

रामगोपाल शर्मा[८]

रामगोपाल शर्मा नाम प्रभा के लेखक है। इसकी समाप्ति शक संवत् १७२३ में हुई।

---

1 Vogel, पृ.३१५

2 NCC. I पृ.३२८-३२९

3 NCC. I पृ.२९५

4 NCC. I पृ.३२८-३२९

5 NCC. I पृ.३२८-३२९

6 NCC. I पृ.३२८-३२९

7 NCC. I पृ.३२९

8 NCC. I पृ.३२९ एवं NCC. X पृ.४४

राम तर्कवागीश. कृत (व्याख्या)

इनकी व्याख्या व्याकरण के कलाप सम्प्रदाय से सम्बद्ध है।[१]

रामनाथ

त्रिकाण्डविवेक अथवा[२] त्रिकाण्डरहस्य / प्रकाश (लिङ्गादि सङ्ग्रहटिप्पणी)

रामनाथ

इस व्याख्या के लेखक रामनाथ अथवा रामनाथ चक्रवर्ती हैं। यह सम्भवतः १६३३ ई. में लिखी गई। Vogel ने इसका नाम रामनाथ विद्यावाचस्पति बताया है।

राम प्रसाद तर्कालङ्कार

वैषम्य कौमुदी[३]

रामशर्मन्[४]

रामस्वामी[५]

रामेश्वर[६] शर्मा कृत प्रदीपमञ्जरी

रायमुकुट मणि[७]

रायमुकुटमणि अथवा बृहस्पति ने पदचन्द्रिका अथवा पदपञ्चिका नामक व्याख्या लिखी है। लेखक ने पूर्ववर्ती सोलह व्याख्याकारों का प्रयोग किया है। इनका समय १४३१ ई. था।

---

1 Colebroke : Ed. Amarakośa तथा NCC. I पृ.३२९

2 NCC. I पृ.३२९

3 NCC. I पृ.३२९

4 NCC. I पृ.३२९

5 NCC. I पृ.३२९

6 NCC. I पृ.३२९

7 सम्पा. ए. बरुआ, बेरहामपुर, १८८७ (I.i.५ तक) Govt Sanskrit College Calcutta (one part only) द्र. Bhattacharya, D.C. IHQ. XVII. पृ. ४४२-४५५. लेखकानुक्रमणी एवं कृतियाँ दे. Aufrecht, T. ZDMG. २८ (१८७४). पृ. १०९-२१ हस्तलेख NCC. I पृ. ३२९ उसके कालादि के विषय में — Hazra, R.C. IHQ. XVII. पृ.४४२ अतिरिक्त हस्तलेखों के लिए NCC. XI पृ. ९७ प्रकाशित. Calcutta (Sanskrit College Series), 1966

लक्ष्मण शास्त्री[१]

व्याख्या विश्वेश्वर शास्त्री के पुत्र लक्ष्मण शास्त्री कृत

लक्ष्मीधर कृत अभिधानबोधिनी[२]

अभिधानबोधिनी

लिङ्गायतसूरि[३]

अमरपदविवृति[४] अथवा लिङ्गायतसूरि / लिङ्गसूरि अथवा पदविवृति अथवा लिङ्गाभट्टीय इसके लेखक बेङ्गल कामय भट्ट के पुत्र लिङ्गाभट्ट हैं। यह व्याख्या एक तेलुगु व्याख्या (गुरुबाल-प्रबोधिका के साथ भी उपलब्ध है।)

लोकनाथ[५] **— पदमञ्जरी**

वन्द्यघटीय सर्वानन्द[६]

टीकासर्वस्व

विदग्धचूडामणि विट्ठल[७]

(व्याख्या) कर्णाटक के विट्ठल की विदग्धचूडामणि कन्नड़ अर्थों सहित उपलब्ध होती है।

---

1 NCC. I पृ.३२९

2 NCC. I पृ.३२९

3 हस्त लेखों के लिए — NCC. I. पृ.३३०; लिङ्गभट्टीय के उद्धरण मल्लिनाथकृत वैश्यवंशसुधाकर में भी है। द्र.राघवन वी NIA. ROSS. Vol. पृ.२३८-२३९ प्रकाशित तेलुगुलिपि, मद्रास, १९१५; Ramanathan, A.M. Madras. Adyar Library Series 101. भाग १,१९७१; भाग द्वितीय.१ १९७८

4 द्र.NCC. I (Revised) पृ.३३०; अतिरिक्त हस्तलेखों के लिए NCC. XI पृ.१०२

5 NCC. I. पृ. ३३०

6 हस्तलेखों के लिए द्र.NCC. I. पृ.३३१; सम्पा.TSS. ३८,४३,५१,५२; इसके भाषा शब्दों के लिए — Chakravarti N.P. JA.209 (1926) 81-100

7 NCC. I. पृ.३३०

विद्याविनोदव्याख्या[१]

शब्दार्थसन्दीपिका[२] बाणेश्वर के पुत्र विद्याविनोद इस के लेखक हैं ।

वेङ्कटेश्वर[३]

अमरामृत (छन्दोबद्ध) इस के कर्ता आत्रेयगोत्र के लिङ्गप्पासूरि के पुत्र वेङ्कटेश्वर हैं ।

वेङ्कटेश्वर[४] **पञ्जिका**

यह तमिल अर्थों सहित उपलब्ध होती है । राघवन् इस का साम्य सम्भवतः अमरामृत से मानते हैं । (द्र. अमरामृत)

शम्भु[५]

श्रीकर आचार्य व्याख्यामृत [६]

श्रीधर[७]

श्रीपतिचक्रवर्ती[८] ज्ञानदीपिका

सर्वज्ञानारायण[९] — नामनिधान टीका

अमरकोश पर रायमुकुट ने उद्धृत किया है ।

सिद्धिचन्द्रकृत[१०]

अनेकार्थोपसर्गवृत्ति — यह अमर कोष के नानार्थवर्ग पर व्याख्या है ।

---

1 JOR. Madras, XII. पृ.६-१६

2 NCC. I. पृ.३३०

3 NCC. I. पृ.३३०

4 NCC. I. पृ.३२९

5 NCC. I. पृ.३३०

6 NCC. I. पृ.३३१.JOR. Madras .VI पृ.२६८

7 NCC. I. पृ.३३१ JOR. Madras. VI. पृ.२६८

8 NCC. I. पृ.३३१ JOR. Madras. VI. पृ.२६८

9 *ZDMG*. 28 (१८७४) पृ.११४ इसे भानुजि ने भी अमरकोश पर उद्धृत किया है । NCC. X. पृ.४४

10 भानुचन्द्रगणिचरित - सिंघी जैन सीरीज़, १५ पृ.७२

सुभूतिचन्द्र कामधेनु[१]

सुरसिंहसूरि[२]

हरिदीक्षित

इसे मल्लिनाथ ने वैश्य वंश सुधार्णव में उद्धृत किया है।[३]

वृद्धामरकोष तथा बृहदमरकोष

इसका एक उद्धरण सर्वानन्द ने अपनी टीका में उद्धृत किया है।[४]

फ़ोगल के अनुसार वृद्धामरकोश अथवा बृहदमरकोश जिसे रायमुकुट एवं भानुजि दीक्षित ने उद्धृत किया है केवल अमरकोश का उपबृंहणमात्र।[५]

अमरकोष संक्षेप[६]

अभिवर्धन

पुरुषोत्तमदेव के त्रिकाण्डशेष (द्र.) के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थ भी इसके शब्दों के अभिवर्धन हैं:—

अमर शिलोञ्छ अथवा अमरशेष

द्र.त्रिकाण्डशेष

---

1 सम्पा. Biblio Ind. No. 219 Calcutta 1912 ; यह भोजकृत सरस्वती कण्ठाभरण तथा शृङ्गार प्रकाश को उल्लिखित करता है तथा शरणदेव की दुर्घट वृत्ति (ई.११७२) में उद्धृत है। मध्य तिब्बत में इस के अनुवाद के लिए द्र., सांकृत्यायन राहुल JBORS, २१ पृ. ४०; पृ. २३ पृ. २१. सुभूतिचन्द्र के स्रोतों के लिए द्र. Chintamani, T.R. JOR. ८ पृ.३७२; Vogel. पृ.३१४-१५ (संस्करण एवं अनुवादों के लिए) Gode, P.K. Date of Subhūticandra's Comm. on the Amarakoṣa Kuppuswami Fel. Vol. पृ.४७-५१

2 NCC. I. पृ.२९५

3 Raghavan, V. NIA. Ross. Vol. पृ.२३९

4 TSS. 38. पृ.२२

5 Vogel. पृ.३१३

6 NCC. I. पृ.३३१

अभिधानतन्त्र[१] अथवा नामलिङ्गानुशासन अथवा अमरपरिशिष्ट / परिशेष

यह ग्रन्थ अमरकोश के उपबृंहित रूप पर आधारित है। इस के प्रणेता बंगाल के जटाधर (रघुपति एवं मन्दोदरी के पुत्र) हैं। यह रायमुकुट से पूर्व की टीका है।

काशीश्वर शब्दसङ्ग्रहमाला[२]

अमरसिंह के द्वारा परित्यक्त शब्दों का सङ्ग्रह है। (हस्तलेख का काल १७६६ ई. है)

नामलिङ्गानुशासन[३] अनुकरण

अमर पर सन्दर्भ ग्रन्थ

अमरकोशशब्दावली[४] अमरकोशश्लोकानुक्रमणी

अमरसूचिका[५]

अमरकोष से प्रभावित ग्रन्थ[६]

अमरकोश एवं अग्निपुराण

अग्निपुराण ने अमरकोश का अनुकरण किया है जिस का अनुकरण बिर्वे के अनुसार बारहवीं से चौदहवीं शताब्दी में विविध आयामों में हुआ। शक संवत् १५८७ अथवा १६६५-६६ के एक हस्तलेख में इस का अनुकरण किया गया। (द्र. अग्निपुराण)

---

1 NCC. I. पृ.२९४

2 NCC. IV. पृ.१४१

3 NCC. X. पृ.४८

4 NCC. I. पृ.३३७

5 NCC. I. पृ.३३७a

6 कोषशास्त्र की नाममाला परम्परा तथा अनेकार्थी / नानार्थी एवं एकाक्षरी परम्परा के लिए (द्र. विविधकोश) पाण्डित्य यह कोश अमरकोश पर आधारित है। प्रकाशित कलकत्ता, १८९४ द्र. ब्रिटिश म्यूजियम प्रकाशित पुस्तकें १८९२-१९०६. पृ.२५-२६; Birwe R. JAOS. 96 पृ.३८३ से आगे NCC. XII. पृ.२१

अमरकोश[१] तिब्बती में; पेकिंग मङ्गो, बर्मी तथा सिंहली में

अमर कोश का खण्डन एवं मण्डन[२]

अमरखण्डन - श्रीहर्ष

यह दो हस्तलेखों से सम्पादित है और दोनों में ही अशुद्धियां हैं बी. राघवन्[३] ने कृष्णसूरि के अमरमण्डनम् का सम्पादन करते हुए इन्हें सुधारा ।

अमर खण्डन की शैली

लेखक प्रायः अमर के शब्दों की अन्यकोशों के शब्दों से तुलना कर के अपना मत देता है ।

पर्यायरत्नमाला के आधार पर उन्होंने अनेक शब्द दिए हैं जिन्हें अमर कोश नहीं देते । शब्दों के सङ्क्षेप के सिद्धान्त का भी पालन नहीं किया गया ।[४]

पुनश्च अमर पर्यायों के अर्थों की गहनता से व्याख्या नहीं करते यथा उपेन्द्र, इन्द्रावरज । उनके पयार्यों के संकलन के कोई सिद्धान्त नहीं हैं ।

पर्यायवाची कोशों तथा तदितर का वर्गीकरण करने की अपेक्षा अमर ने सलिङ्ग तथा निर्लिङ्ग वर्गीकरण किया है । यह वर्गीकरण पर्यायवाची कोशों की कोटि में नहीं आता ।

एक देवकोटि के शब्दों में देवतान्तर अन्तर्भूत हैं । जो युक्ति संगत नहीं ।

अतएव अमरकोश एक वैज्ञानिक कोश नहीं ।[५] परन्तु अमरमण्डन के अनुसार अमर का वर्गीकरण वैज्ञानिक है ।

त्रिकाण्डमण्डनकोश[६]

इसका निर्माण सम्भवतः अमरखण्डनम् की प्रतिक्रिया में हुआ हो ।

---

1 द्र. Vogel. पृ.३१२; लोकेशचन्द्र — भारतीय-तिब्बती कोशशास्त्र का इतिहास - Vogel: पृ.३१२ की पादटिप्पणी [अज्ञान एवं प्रेस की असुविधा के कारण वे सारे सन्दर्भ यहाँ नहीं दिए जा सकते]

2 सम्पा.Chintamani, T.R JOR Madras.

3 Amaramaṇḍnam, पूना १९४९

4 Kulkarni Nirmala Proc. Nat Semi. Pune. — पृ.२८ से

5 उपसंहार के लिए द्र.Kulkarni, Nirmala op.cit. p.9.

6 हस्तलेख द्र. NCC. VIII. पृ.२३२

अग्निपुराण

अग्निपुराण में एक अंश कोश का उपलब्ध होता है[१] जिस का अध्ययन बिर्वे ने प्रस्तुत किया है।[२] इस पर अमरकोश के प्रभाव होने की पूर्ण सम्भावना है।[३]

हलायुधकृत अभिधानरत्नमाला अथवा हलायुधकोश[४]

हलायुध का काल

राष्ट्रकूट कृष्ण III के राज्य (९४०-९५६ ई.) में होने के कारण इन का काल यही माना जा सकता है। फ़ोगल हेलर का अनुकरण करते हैं।[५]

हलायुध का कर्तृत्व

आफ्रेक्ट ने बारह हलायुधों को अपनी सूची में ग्रथित किया है। अप्रकाशित न्यू कैटलोगस कैटालोगोरम की सामग्री के विषय में अधिक ज्ञात नहीं है।

---

1 अग्निपुराण - सम्पा. मनसुखरायमोर कलकत्ता अध्याय ३४८ - एकाक्षराभिधानम् जो मुख्यतः धार्मिक परम्परा से सम्बद्ध है तथा ३६० (स्वर्गपातालादि) ३६१ अव्ययवर्ग; ३६२ नानार्थ वर्ग; ३६३ भूमिवनौषध्यादि ३६४ नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रवर्ग; ३६५ ब्रह्मवर्ग; ३६६ क्षत्रविट्शूद्रवर्ग तथा ३६७ सामान्य नामलिङ्ग

2 अग्निपुराण अध्याय ३६०-३६७ बिर्वे. JAOS. ९६. पृ. ३८३ से बिर्वे बारहवीं शताब्दी एवं चौदहवीं शब्ताब्दी के बाद के दो विभिन्न भाग मानते हैं। यह उन्होंने बंगाल के हस्तलेखों के आधार पर माना है।

3 Vogel पृ.३१३

4 Aufrecht, Th. - Halāyudha's Abhidhāna Ratnamālā, 1861; सम्पादक - जोशी, जयशंकर, लखनऊ सम्पादित कन्नड़ लिपि में नागवर्ग कन्नाड़ व्याख्या; सहित सम्पादित मद्रास, १९४० Rao, A.V.; फक्का (खन्ना), सुषमा - देवतावाची शब्दों का विकास संस्कृत कोषों के आधार पर १२ वीं शताब्दी तक एम.फिल् दिल्ली विश्वविद्यालय, १९७८ तथा अध्ययन — निर्मलकुमारी - अभिधानरत्नमाला (हलायुधकोश) एम. फिल. दिल्ली विश्वविद्यालय १९७८; Both done under the supervision of Prof. S.P. narang.

5 Vogel पृ. ३२१ द्र. Narang, S.P. A study of Śāstra — kāvyas (Kavirahasya chapter)

कवि रहस्य[१] तथा अभिधानरत्नमाला दोनों ही क्रमशः समध्वनि वाले धातुओं का तथा शब्दों का सङ्ग्रह है। निश्चित रूप से शब्द सञ्चयकर्ता हलायुध एक होना चाहिए। **सदभिधानहलायुध** से भी अभिधानरत्नमाला की ध्वनि निकलती है।[२]

एक हलायुध ने श्राद्धकल्पसूत्र पर प्रकाश टीका लिखी (११५० के बाद) दूसरा हलायुध ब्राह्मणसर्वस्व, मीमांसासर्वस्व, शैव सर्वस्व एवं पण्डितसर्वस्व का कर्ता था जिसे काणे[३] एवं सुशीलकुमार डे[४] ने कविरहस्य के कर्ता से भिन्न माना है। यह हलायुध दाक्षिणात्य है जो बङ्गाल के हलायुधों से भिन्न है। कविरहस्य के कर्ता के आश्रयदाता कृष्णराज ९५६ ई. के थे जिन का उल्लेख उन्होंने कविरहस्य में किया है।[५]

अभिधानरत्नमाला की व्याख्याएं[६]

१. त्रिभुवनपाल के पुत्र तथा दल्लण के पौत्र महाजड़ ने इस पर व्याख्या लिखी

२. आजड़ की व्याख्या। (क्या महाजड़ और आजड़ एक ही हैं)?

---

1 कविरहस्य-३ लोकेषु शास्त्रेषु च ये प्रसिद्धाः काव्येषु ये सत्कविभिः प्रयुक्ताः। उच्चित्य तांश्चित्तविनोदनाय शब्दानहं धातुभिरुद्धरामि॥ Heller, Ludwig. Halāyudah's Kavirahasya : Göttingen, 1894; Narang, S.P. A study of śāstra-kāvyas in Sanskrit Literature Ph.D thesis (See the Chapter) unpublished Delhi University 1967 Narang, S.P. Grammatical sources of Halāyudha's Kavirahasya, PAIOC. Aligarh, 1967; A comparative concocrdance of various recensions (available with the author - unpublished)

2 Mitra, Rajendra Lal Notices of Sanskrit Manuscripts Vol. II. p.60. इति समाप्तमवाप्तगुणोदयं कविरहस्यमिदं रसिकप्रियम्। सदभिधानहलायुधसंज्ञकद्विजवरस्य कृतिः सुकृतात्मनः

3 Kane, P.V. History of Dharmaśāstra. Vol. I. पृ.२९७,३००, ३०१ एक अन्य हलायुध मिथिला और बंगाल में १०००-११०० के मध्य हुए.(काणे, वही,पृ.२९७)

4 De, S.K. Contribution of Bengal to Sanskrit Litrature Calcutta, १९६०.पृ.६४

5 Altekar, A.S. Rāṣṭrakūṭas and Their times, Poona, 1934. पृ.११५

6 NCC. I. पृ.२९६

३. तिलककृत व्याख्या

हलायुध की अभिधानरत्नमाला का प्रमुख स्रोत अमरकोश है। लगभग ५,००० शब्दों को उसने अमरकोश या समस्रोतों से ग्रहण किया है। लगभग इतने ही शब्दों को हलायुध ने छोड़ दिया है। अधिकतर शब्द सामाजिक परिप्रेक्ष्यों को छोड़ चुके थे।

हलायुध कोष विस्तृत विषयों की विशद जानकारी देता है। हलायुध अपने स्रोत के विषय में स्वयं लिखा है —

इयममरदत्तवररुचिभागुरिवोपालितादिशास्त्रेभ्यः
अभिधानरत्नमाला कविकण्ठ विभूषणार्थमुद्धियते ॥

हलायुध की **अभिधान रत्नमाला** तथा हेमचन्द्र की अभिधान चिंतामणि में प्रभूत समरुपतायें लक्षित होती हैं। प्रतीत होता है दोनों कोषों के स्रोत समान हैं।

अभिधानरत्नमाला की संरचना

इसका प्रथम काण्ड स्वर्गकाण्ड है जिसमें स्वर्ग, देवता, राक्षस, वैदिक साहित्य के पर्याय, शिव, पार्वती तथा उन का परिवार, गणेश, पार्वती, कार्तिकेय; वैष्णव देव और पाञ्चरात्र के पर्याय; ग्रह, कृत्तिका, पक्ष, इन्द्र; प्राकृतिक सत्ताएँ, अर्धदेव, संगीत, पर्वत, विद्या के प्रकार तथा आदरवाची शब्द हैं।

द्वितीय भूमिकाण्ड है जिस में भूमि, प्राकृतिक पदार्थ, आकर ताम्रादिधातु, वनस्पतियाँ और उन के वर्ग; वृक्ष, पशु, पक्षी, नगर, वास्तु, घरेलु वस्तुएँ, भक्ष्य, पेय, स्वभाव के अनुसार तथा वृत्ति के अनुसार मनुष्य वर्ग; ऋषि, राजसेवक, राज्य की संरचना, आयुध, स्त्रियों के प्रकार, पुत्रों के प्रकार, शारीरिक अवयव प्रसाधन, आभूषण, विविध व्यवसाय, कृषि-व्यवस्था चाण्डालादि जातियां, रोग तथा चिकित्सा के द्रव्य परिगणित हैं।

तृतीय काण्ड पातालकाण्ड है जिसमें पातालसम्बन्धी विश्वासों के अतिरिक्त सरीसृप तथा उनके प्रकार; समुद्रादि; समुद्रप्राणी, नदियां, दीर्धिका तथा उनकी उपज तथा कुल्या-व्यवस्था का उल्लेख है।

चतुर्थकाण्ड सामान्यकाण्ड है जिसमें मानवीय एवं नैसर्गिक मनोभाव, रङ्ग; मानव-स्वभाव तथा गतिविधियाँ निरूपित हैं।

पञ्चमकाण्ड अनेकार्थकाण्ड है जिसमें अनेकार्थी प्रमुख शब्दों का संकलन किया गया है

अन्त में कुछ अव्ययों का संकलन भी है।

हलायुध कोश में परित्यक्त शब्द[१]

यद्यपि वैदिक शब्दों को छोड़ दिया है किन्तु सारे वैदिक देवताओं को नहीं छोड़ा। वैदिक शब्दों को ग्रहण नहीं किया है। बहुत से शब्द इसलिये छोड़ दिये गये प्रतीत होते हैं कि उनके कोश अलग से बनने लगे थे यथा एकाक्षर कोश, देशीनाममाला तथा वैद्यक कोश इत्यादि। हलायुध ने व्यापार तौल माप तथा प्रचलित धन छोड़ दिया। कभी २ लगता है - हलायुध कोश बीच २ में से लुप्त है। लंबे २ नये २ अलंकृत शब्दों की ओर झुकाव दिखता है।

छन्द

पिङ्गलसूत्र पर मृत सञ्जीवनी टीका के लेखक हलायुध ने कोशशास्त्र जैसे शुष्क विषय पर भी अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, तोटक, प्रहर्षिणी, भुजंग प्रयात, मन्दाक्रान्ता, रथोद्धता, वंशस्थ, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शालिनी, धृतश्री तथा स्वागता जैसे छन्दों का प्रयोग किया है।

अभिधानरत्नमाला के उद्धरण

राघवकवि ने एकाक्षरकोष में इसे नाम्ना उल्लिखित किया है; हेमचन्द्र के देशीनाममाला में दो उद्धरण[२], सिद्धिचन्द्रमणि की वासवदत्ताविवरण[३], पूर्णसरस्वती की सब कृतियों में उद्धरण[४]; हेमचन्द्र की अभिधान चिन्तामणि के स्रोत के

---

1 सुधा — सामाजिक विकास : अमरकोश से हलायुध तक Delhi Univ. M.Phil Dissertation under the supervision of Prof. Satya Pal Narang, 1979 (Unpublished) English: Social Development from Amara to Halāyudha

2 राघवकविकृत एकाक्षरकोश सम्पा. एकाक्षरनाममालाकोशसङ्ग्रहः पृ.१२ — प्रतापो भागुरिर्दण्डी रसभश्च हलायुधः

3 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. Vol.I. पृ.२७१

4 Unnithiri NVP. Pūrṇa Sarasvatī — As a versatile scholar; Gode, P.K. १९५३:(४२) हस्तलेख में पृ.३३-३५,३८,४१,४२,४४,५१-५३, ६१,६३,६६,६९,७९,८२

रूप में[१] तथा मंख के अनेकार्थकोश के प्रेरणारूप में;[२] अभिज्ञानशाकुन्तल पर राघवभट्ट के द्वारा

कविरहस्य के उद्धरण

महेश्वर ने वामनालङ्कार टीका में; लक्ष्मीधर ने प्राकृतपिङ्गल में तथा भट्टोजि दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में कविरहस्य को उद्धृत किया है।[३] केशवस्वामी ने[४] नानार्थ सङ्क्षेप में इस का उल्लेख किया है।

पिङ्गलसूत्रों पर मृतसञ्जीवनी एवं कविरहस्य में शब्दावली के अन्तः साक्ष्य के आधार पर हैलर[५] ने उनका ऐक्य स्थापित किया है।

मृतसञ्जीवनी का लेखन

पहले वे दक्षिण में (कर्णाटक) में ? रहते थे। कृष्णराज की मृत्यु के बाद मुञ्जवाक्पति के राज्य में धारा में आ गए जहां उन्होंने[६] मृतसञ्जीवनी की रचना की।

पशुपति

व्याख्या (प्राकृतपिङ्गल पर)[७] क्या यह हलायुधकृत व्याख्या है ?

धनञ्जय

राघवकवि ने एकाक्षरकोश में इसे नाम्ना उद्धृत किया है।[८]

---

1 Aufrecht, T. Abhidhāna Ratnamālā, 1861 पृ.VI; Bühler : WZKM. I. पृ.४; Zachariae : GGA. 1894 पृ८१७ तथा ८२२

2 Vogel. पृ.३३४

3 Aufrecht, T. CC. I. पृ८७; II. पृ.१६ सिद्धान्तकौमुदी सम्पा. अच्युतानन्द शास्त्री काशी, १९४८. पृ.२४५ पर / धू के सन्दर्भ में धनोति चम्पकवनानि

4 Vogel. पृ.३४६ से आगे

5 Heller, L. द्र. Halāyudha's Kavirahasya; Narang, S.P. A study of Śāstra Kāvyas शब्द — दात्यूह, खलूरिकादि, कर्णाटीरति / सुरत

6 Heller, L. Halāyudha's Kavirahasya पृ.३२

7 NCC. VII. पृ.१६ NCC. XI. पृ.२५४

8 एकाक्षरकोष सङ्ग्रह (१९६४) पृ.१२ विश्वप्रकाशो गोपाल : शेखरो धनञ्जयः

यह वासुदेव एवं श्रीदेवी के पुत्र थे। इन के गुरु का नाम दशरथ था। प्रायः ११२३ ई. इनका काल माना जाता है। एक मत के अनुसार इन्हें ८०० ई. भी रखा जाता है[१]।

धनञ्जय का नाममाला कोश[२]

धनञ्जय का नाममाला कोश संस्कृत भाषा का एक सुन्दर और व्यवहारोपयोगी आवश्यक शब्दों से समृद्ध ग्रंथ है। महाकवि धनञ्जय ने २०० श्लोकों में ही संस्कृत भाषा के प्रमुख शब्दों का चयन कर गागर में सागर भर दिया है। शब्द से शब्दान्तर बनाने की इनकी अपनी निराली पद्धति है। जैसे पृथ्वी के नामों के आगे **धर** शब्द जोड़ देने पर पर्वत के नाम, मनुष्यों के नामों के आगे **पति** शब्द जोड़ देने पर राजा के नाम, वृक्ष के नामों के आगे 'चर' शब्द जोड़ देने पर बन्दर के नामों का बन जाना आदि।

धनञ्जय[३]

धनञ्जय ने अपने आपको कवि बताया है (सत्कवीनां शिरोमणेः) अन्यत्र अपनी कृति को अपूर्व कहा है। (रत्नत्रयमपश्चिमम्)[४]

महाकवि की सर्वश्रेष्ठ चमत्कारिणी कृति **द्विसन्धान काव्य** ही है। वादिराज सूरि ने पार्श्वनाथचरित के प्रारंभ में **द्विसंधान काव्य** की प्रशंसा करते हुए लिखा है —

अनेकभेदसन्धानाः खनन्तो हृदये मुहुः।
बाणा धनञ्जयोन्मुक्ताः कर्णस्येव प्रियाः कथम्॥

अर्थात् धनञ्जय के द्वारा कहे गये अनेक सन्धान अर्थ वाले और हृदयस्पर्शी वचन कानों को ही प्रिय कैसे लगेंगे जैसे कि अर्जुन के द्वारा छोड़े गये बाण लक्ष्यों के भेदक मर्मभेदी कर्ण को प्रिय नहीं लगते।

---

1 राघवपाण्डवीय की भूमिका, पृ.९-१७

2 श्रीमती सुषमा खन्ना के साहाय्य से

3 **प्रमाणमकलङ्कस्य पूज्यपादस्य लक्षणम्। द्विसन्धानकवे काव्यं रत्नत्रयमपश्चिमम्॥** अर्थात् अकलङ्कदेव का प्रमाण शास्त्र पूज्यपाद का लक्षण व्याकरण शास्त्र द्विसन्धान का द्विसन्धान काव्य ये तीनों अपूर्व रत्नश्रय हैं। यह श्लोक नाममाला के भाष्यकार अमरकीर्ति के सामने था और उन्होंने इसकी व्याख्या भी की। इसमें इनका उपनाम 'द्विसन्धान कवि' सूचित किया गया है।

4 Vogel : पृ.३२७

द्विसन्धान काव्य अपने समय में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। इसका उल्लेख धाराधीश भोजराज के समकालीन आचार्य प्रभाचन्द्र ने अपने प्रमेयकमलमार्तण्ड में किया है। जल्हण (१२वीं सदी) विरचित **सूक्ति मुक्तावली** में राजशेखर के नाम से धनञ्जय की प्रशंसा में निम्नलिखित पद्य उद्धृत है —

द्विसन्धाने निपुणतां स तां चक्रे धनञ्जयः।
यया जातं फलं तस्य सतां चक्रे धनञ्जयः॥

इस श्लोक में राजशेखर ने धनञ्जय के द्विसन्धान काव्य का मनोमुग्धकर—सरणि से उल्लेख किया है।

धनञ्जय कवि द्वारा एक विषापहार स्तोत्र भी बनाया गया है। यह अपने प्रसाद, उत्तेज ओर गाम्भीर्य के लिये प्रसिद्ध है।

काल

इनके सकाल निर्णय के लिये निम्न प्रमाण हैं —

(i) प्रमेयकमलमार्तण्ड आदि के रचयिता प्रभाचन्द्र (११वीं सदी) ने इनके द्विसन्धान काव्य का उल्लेख किया है। अतः ये ग्यारहवीं सदी के बाद के विद्वान् तो नहीं हैं।

(ii) वादिराज सूरि ने (सन् १०३५) पार्श्वनाथ चरित में धनञ्जय और द्विसन्धान का निर्देश किया है अतः ये ग्यारहवीं सदी के बाद के नहीं हैं।

(iii) जल्हण (१२ वीं सदी) ने राजशेखर के नाम से **सूक्ति मुक्तावली** मे जो पद्य उद्धृत किया है वह राजशेखर काव्यमीमांसाकार राजशेखर है। इनका उल्लेख सोमदेव (९६० ई.) के यशस्तिलक चम्पू में पाया जाता है। अतः राजशेखर का समय ई. १० वीं सदी सुनिश्चित है।

(iv) डा. हीरालाल जी ने **षट्खंडागम** प्रथम भाग की प्रस्तावना (पृ. ६२) में यह सूचित किया है कि जिनसेन के गुरु वीरसेन स्वामी ने धवला टीका (पृ. ३८७) में **अनेकार्थ नाममाला** का निम्नलिखित श्लोक प्रमाणरूप में उद्धृत किया है —

हेतावेव प्रकाराद्यैः व्यवच्छेदे विपर्यये। प्रादुर्भावे समाप्तौ च इति शब्दं विदुर्बुधाः॥

यह श्लोक अनेकार्थ नाममाला का है। धवला टीका वि.सं. ८७३ ईसवी ८१६ में समाप्त हुई थी, अतः धनञ्जय का समय ९ वीं सदी के बाद का नहीं हो सकता।

(v) धनञ्जय ने अकलंक देव का उल्लेख **प्रमाणमकलङ्कस्य** श्लोक में किया है। अकलंक का समय ई. की ७ वीं सदी निश्चित है। अतः धनञ्जय ७ वीं सदी के नहीं हो सकते । धनञ्जय ने द्विसन्धान महाकाव्य की रचना ई. ११२३ और ११४० के मध्य की है। उपरोक्त प्रमाणों के आधार से धनञ्जय का समय ८ वीं सदी का अंत और नवीं का पूर्वार्द्ध सिद्ध होता है। जल्हण की **सूक्ति मुक्तावली** में जो ई. १२ वीं सदी की रचना है, राजशेखर के नाम से उद्धृत 'द्विसन्धाने निपुणता' श्लोक काव्यमीमांसाकार राजशेखर का ही हो सकता है न कि प्रबंध कोश के कर्ता राजशेखर का।

कृतियाँ

उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त इन का राघवपाण्डवीय अथवा द्विसन्धानकाव्य रामायण एवं महाभारत की कथा पर आधारित १८ सर्गों में है। इसे गणरत्न महोदधि (११४० ई.) में उद्धृत किया गया है तथा भोज के शृङ्गार प्रकाश में भी उपलब्ध होता है।[१]

नाममाला[२]

इसके अन्य नाम नामावली, प्रमाण नाममाला, धनञ्जयकोश, धनञ्जयनिघण्टु अथवा धनञ्जयनाममाला है। कन्नड के कई अनुवाद उपलब्ध होने के कारण यह कर्णाटक में लोकप्रिय प्रतीत होती है।

नाममाला कोश[३]

---

1 Raghavan, V. Bhoja's Śṛṅgāraprakāśa, पृ.८३८ NCC. IX २१८ तथा NCC. IX. पृ.२१७

2 सम्पा. द्वादशकोश सङ्ग्रह, बनारस, १८६५ तथा ज्ञानपीठ पृ.१-९२; NCC. X. पृ.४५ तथा NCC. IX पृ.२१७

3 नाममाला सभाष्य प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ काशी सन् १९५०; सामान्य विश्लेषण— Vogel, पृ.३२८ तथा कोशशास्त्र के अन्य ग्रन्थ; अन्य नाम — नामावली - धनञ्जय द्र. नाममाला NCC. X. पृ.५१ नाममाला - धनञ्जय, हस्तलेख NCC. X. पृ.४५ NCC. X. पृ.२९५

द्विसन्धान कवि के नाम से प्रतिष्ठित धनञ्जय कवि का समय आठवीं शती का उत्तरार्द्ध तथा नवीं शती का पूर्वार्द्ध माना जाता है। इन्होंने नाममाला नामक संस्कृत कोश की रचना की है।इस कोश के चार भाग हैं नाममाला अनेकार्थ नाममाला, अनेकार्थ निघण्टु तथा एकाक्षरी कोश। नाममाला तथा अनेकार्थ नाममाला भाग निश्चयपूर्वक धनञ्जय द्वारा ही लिखित है। अनेकार्थ निघण्टु में भी पुष्पिका वाक्य में धनञ्जय का स्पष्ट उल्लेख है। एकाक्षरी कोश में यद्यपि धनञ्जय का नामोल्लेख नहीं है परन्तु प्रथम श्लोक से यह उन्हीं की कृति जान पड़ती है। नाममाला कोश २०० श्लोकों का संग्रह है जिनमें संस्कृत भाषा के व्यवहारोपयोगी तथा आवश्यक शब्दों का संकलन किया गया है। इस कोश में शब्दों से नये शब्द बनाने की विधि का वर्णन किया है। कोशकार कहते हैं कि वे केवल अल्पज्ञों के लिये कुछ जानकारी देना चाहते हैं न कि विद्वानों के लिये[१]। अतः शब्दों की सीमितता की ओर ध्यान न दें क्योंकि वाचस्पति यदि स्वयं विषय का प्रतिपादन करें तो भी शब्दों के पारायण की थाह नहीं पा सकते।[२]

उनकी कोश रचना का विशेष प्रयोजन है। नाममाला भाग में उनका प्रमुख ध्येय अपने पर्यायवाची बनाने की पद्धति का विशद वर्णन करना है साथ साथ वे मोटे तौर पर उन विषयों को स्पर्श करते जाते हैं। जिनकी चर्चा शिष्ट समाज में मोटे तौर पर होती है। कोश के आरम्भ में वे वाणी तथा मन से अगोचर परम ज्योति को प्रणाम करते हैं।

सर्वप्रथम वे युग्म के दस पर्यायवाची बताते हैं। तथा जिन मुनि के चरणयुगलों से रक्षा की याचना करते हुए कोश का आरम्भ करते हैं।[३] उसी परम्परा में क्रमशः ऋषि शिष्य और सिद्धान्त के पर्यायवाची बताते हैं तथा प्रणाम करते चलते हैं।

---

1 तथापि किञ्चत् कस्मैचित् प्रतिबोधाय सूचितम्।
बोधयेत्कियदुक्तज्ञो मार्गज्ञः सह याति किम्॥ २०० ॥

2 वक्ता वाचस्पतिर्यत्र श्रोता शक्रस्तथापि तौ।
शब्दपारायणस्यान्तं न गतौ तत्र के वयम्॥१९९ ॥

3 द्वयं द्वितयमुभयं यमलं युगलं युगम्।
युग्मं द्वन्द्वं यम द्वैतं पादयोः पातु जिनयोः॥ २ ॥

इन्होंने अपने कोश को अध्याय या काण्डों में विभक्त नहीं किया है। वे श्लोक के पश्चात् श्लोक में विषय का वर्णन करते चलते हैं। सर्वप्रथम हम पर्यायवाची शब्द बनाने की प्रक्रिया पर कुछ विस्तार पूर्वक दृष्टिपात करेंगे। पृथ्वी के पर्याय[१] विस्तार से बताते हुए बताते हैं कि इन पर्यायों के पश्चात् यदि धर[२] जोड़ दें तो पर्वत के पर्यायवाची बन जाते हैं यथा धरणीधरः मेदिनीधरः भूधरः आदि। यदि इन पर्यायों के पश्चात् **पति** शब्द जोड़ दें तो राजा के पर्याय बन जाते हैं यथा - धरणीपति, भूपति, क्षितिपति आदि। इन्हीं पर्यायों के आगे रुह शब्द जोड़ दें तो वृक्ष के पर्याय बन जाते हैं यथा भूरुहः, क्षमारुहः, धरारुहः इत्यादि।

इसी प्रकार पर्वत के पर्यायवाची बताने के पश्चात् पर्वत मेखला के पर्यायवाची बताते हुए कहते हैं कि मेखला के पर्यायों के पश्चात् **वान** लगाने पर भी पर्वत के पर्याय बन जाते हैं।[३]

वृक्ष के पर्यायवाचियों में **चर** जोड़ देने पर बन्दर के पर्यायवाची शब्द बन जाते हैं।[४] यथा विटपीचरः, वनस्पतिचरः इत्यादि।

वन के पर्यायवाचियों में यदि **चर**[५] जोड़ दें तो शिकारी के पर्याय बन जायेंगे यद्यपि अलग से भी शिकारी के पर्याय दिये गये हैं।[६] पानी के पर्याय

---

1 भूमिर्भूः पृथिवी पृथ्वी गहरी मेदिनी मही।
धरा वसुमती, धात्री क्षमा विश्वम्भराऽवनिः ॥ ५ ॥
वसुधा धरणी क्षोणी क्ष्मा धरित्री क्षितिश्च कुः।
कुम्भिनीलोर्वरा चोर्वी जगती गौर्वसुन्धरा ॥ ६ ॥

2 तत्पर्यायधरः शेलरन्तर्पर्यायपतिर्नृपः।
तत्पर्य्यायरुहो वृक्षः शब्दमन्यं च योजयेत् ॥ ७ ॥

3 दरीमृदचलः शृङ्गी पर्वतः सानुमान् गिरिः।
नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥ ८ ॥
प्रस्थं पर्श्वं तटं सानुर्मेखलोपत्यका तटी।
नितम्बमन्तो दन्तश्च तद्वानपि गिरिः स्मृतः ॥ ९ ॥

4 तत्पर्य्यायचरो ज्ञेयो हरिर्वलिमुखः कपिः।
वानरः प्लवगश्चैव गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥ १२ ॥

5 विपिनं गहनं कक्षमख्यं काननं वनम्।
कान्तारमटवी दुर्गम् तच्चरः स्याद् वनेचरः ॥ १३ ॥

6 पुलिन्दः शबरो दस्युर्निषादो व्याधलुब्धकौ।
धानुष्कोऽथ किरातश्च सोऽरण्यानीचरः स्मृतः ॥ १४ ॥

के पश्चात् **चर** लगाने पर मत्स्य के पर्याय बनते हैं यथा वार्चरः वारिचरः कञ्चरः विषचरः इत्यादि । **प्रद** लगाने पर मेघ के पर्याय बनते हैं यथा पयःप्रदः जीवनप्रदः वाप्रदः आदि । इनके अतिरिक्त अलग से भी मछली, बादल के पर्याय दिये गये हैं । मेघ के पर्याय तडित् पर्यायों के आगे **पति** लगाने पर भी बनते हैं यथा शम्पापति, क्षणरुचिपति आदि । अब पङ्क लीजिये उसमें **जम्** लगाने पर कमल पर्याय बन जायेंगे । सलिलोद्भवम् विषाद्भवम् आदि । इन्हीं के आगे **धि** शब्द लगाने पर समुद्र पर्याय बनेंगे यथा तोयधिः वारिधिः आदि ।[१] कमल पर्यायों में **वती** लगाने दें और कमलिनी के नाम बना लें ।[२] ।

समुद्र के पर्याय बताने से पूर्व नदी के पर्याय बताते हैं और नदी पर्यायों में स्पष्ट है **पति** जोड़ने पर समुद्र के पर्याय बनेंगे ।[३] मनुष्य के पर्यायों के आगे **धवः** एवं **पति** शब्द जोड़ने से राज के पर्याय बन जाते हैं[४] यथा मानवधवः मनुजपति आदि । देह पर्याय के पश्चात् **भवः** पुत्र के पर्याय का निर्देश करते हैं यथा कायभवः शरीराभवः मूर्तिजः आदि ।[५]

किरण एवं तेज पर्यायों के पूर्व **शीत** लगाने पर चन्द्र तथा **उष्ण** लगाने पर सूर्य के पर्याय अलग से बनते हैं[६] यथा शीतयोतिः शीतोर्जः शीतमरीचिमान् उष्णकिरण, उष्णमरीचिमान्, उष्णरश्मि आदि । चन्द्र के पर्याय नक्षत्र पर्यायों में **पति** लगाने पर भी बनते हैं[७] । रात्रि पर्यायों में **कर** लगने पर भी चन्द्रपर्याय

---

1 वार्वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु पाथोऽर्णः सलिलं जलम् ।
सरं वनं कुशं नीरं तोयं जीवनमब्विषम् ॥ १५ ॥
तत्पर्य्यायचरो मत्स्यस्तत्पर्य्यायप्रदो धनः ।
तत्पर्य्यायोद्भवं पद्मं तत्पर्यायधिरम्बुधिः ॥ १६ ॥

2 वही श्लोक सं.२३.

3 वही श्लोक सं. २४,२५

4 मनुष्यो मानुषो मर्त्यो मनुजो मानवो नरः ।
ना पुमान् पुरुषो गोधा धवः स्यात्तत्पतिर्नृपः ॥ २८ ॥

5 देहापघनकायाङ्गं वपुः संहननं तनुः ॥ ३८ ॥
कलेवरं शरीरं च मूर्त्तिः अस्मिन्भवः सुतः ॥ ३९ ॥

6 दीधितिर्भानुरुस्त्रोऽशुर्गभस्तिः किरणः करः
पादो रुचिर्मरीचिर्भास्तेजोऽर्चिगौर्द्युतिः प्रभा ॥ ४५ ॥
दीप्तिर्ज्योतिर्महो धाम रश्मिरुर्जो विभावसुः ।
शीतोष्णप्रायपूर्वाञ्चौ तदन्ताविन्दुभास्करौ ॥ ४६ ॥

7 उडूनि भानि तारर्क्षं नक्षत्रम् तत्पतिः ॥ ४८ ॥

बनेंगे[१] अश्व पर्यायों के पूर्व यदि **सप्त** लगा दें तो सूर्य पर्याय बनेंगे ।[२] दिवस पर्यायों में कर लगा दें तो सूर्य पर्याय बना लें[३] । कुमुद पर्यायों में **विप्रिय** लगा कर भी सूर्य पर्याय बना लें ।[४] तात्पर्य यह कि भाषा को समृद्ध करना बड़ा ही मनोरंजक है । यहाँ यह भी द्रष्टव्य है कि यमुनाजनक, कानीनजनक, यमजनक भी सूर्य के पर्याय[५] हैं ।

गगन पर्यायों में वृद्धि हो सकती है यदि मेघ एवं वायु पर्यायों के पश्चात् **पथ** के पर्याय लगा दें[६] यथा मेघपथः मरुत्पथः, अनिलपथः इत्यादि । आकाश के पर्याय के पश्चात् **चर** शब्द का प्रयोग करें तो विद्याधर के पर्याय बन जायेंगे[७] तथा **ग** शब्द का प्रयोग करें तो पक्षियों के पर्याय बन जायेंगे ।[८] इसी प्रकार मांस के आगे **प्रिय** लगा दें तो राक्षस[९], स्वर्ग पर्यायों के आगे **वास** लगा दें तो देवताओं के नाम[१०], दिशा पर्यायों के आगे **पाल** लगा दें तो दिग्गजों के पर्याय[११], वायु पर्यायों के आगे **पुत्र** पर्याय लगा दें तो भीम तथा हनुमान के नाम[१२], वायुपर्यायों के आगे **सखा** पर्याय लगा दें तो अग्नि पर्याय

---

1 ——— करः ॥ ४८ ॥

2 वही ॥ ५२ ॥

3 दिनं दिवाऽहर्दिवसो वासरः तत्करश्च सः ॥ ५० ॥

4 चक्रवाकाब्जपर्यायबन्धुः कुमुदविप्रिय ।
यमुनायमकानीनजनकः सविता मतः ॥ ५ ॥

5 वही ५१ ; कानीनजनकः के बारे में महाभारत की कथा की ओर संकेत किया जा सकता है ।

6 खं विहायो वियद् व्योम गगनाकाशमम्बरम् ।
द्यौर्नभोऽभ्रोऽन्तरीक्षं च मेघवायुपथोऽप्यथ ॥ ५३ ॥

7 तच्चरः खेचरः — ५४

8 तद्गः — ५४

9 जाङ्गलं पिशितं मासं पलं पेशी च तत्प्रियः ।
यातुधानस्तथा रक्षो रात्र्यादिचर इष्यते ॥ ५५ ॥

10 स्वर्द्यौः स्वर्गोऽथ नाकश्च तद्वासस्त्रिदशो मतः ॥ ५६ ॥

11 कष्ठा ककुब् दिगाशा च दक्षकन्या तथा हरित् ।
तत्पर्यायपरं योज्यं प्राज्ञैः पालगजाम्बरम् ॥ ६१ ॥

12 पवनः पवमानश्च वायुर्वातोऽनिलो मरुत् ।
समीरणो गन्धवाहः श्वसनश्च सदागतिः ॥ ६२ ॥
नभस्वान् मातरिश्वा च चरण्यर्जुवनस्तथा ।
प्रभञ्जनः अस्य पर्यायपुत्रौ भीमाञ्जनात्मजौ ॥ ६३ ॥

बन जाते हैं।[१] अग्निपर्याय के आगे सूनु पर्याय लगाने पर स्कन्द के पर्याय बनते हैं[२] स्कन्द पर्याय के आगे पिता के पर्याय लगाने पर शङ्कर के पर्याय बनते हैं।[३] आकाश पर्यायों के आगे **नदी** पर्याय लगाने पर गङ्गा नदी के पर्याय बन जाते हैं[४] यथा वायुपथतरङ्गिणी, मेघपथसरित्। मार्ग के पर्यायों के पूर्व **त्रि** लगा दें तो भी गङ्गा नदी के पर्याय बन जाते हैं।[५]

ब्रह्मा के पर्याय पूर्वक **पुत्र** लगाने पर नारद के पर्याय बनते हैं[६]। नारायण पर्याय के पश्चात् **पुत्र** पर्याय लगाने पर मन्मथ पर्याय बनते हैं[७] बाणपर्याय पूर्व पुष्प पर्याय होने पर भी मन्मथ पर्याय बनते हैं।[८] शैल, भूमि, लक्ष्मी पति आदि भी नारायण पर्याय हैं।[९] इसी प्रकार चित्त पर्यायों के पश्चात् उद्भव, ज लगाने पर मन्मथ पर्याय बनते हैं[१०] इसी प्रकार मदन पताका **मन्मथ अस्त्र** धन पति जिन के पर्याय बनते हैं। यथा वस्त्र पर्याय पश्चात् दिशा पर्याय लगाने पर

---

1 तत्सखाऽग्निः — ६४

2 तत्सखाऽग्निः शिखी वह्निः पावकश्चाशुशुक्षिणः।
हिरण्यरेता सप्तर्चिर्जातवेदास्तनूनपात् ॥ ६४ ॥
स्वाहापतिहुताशश्च ज्वलनो दहनोऽनलः।
वैश्वानरः कृशानुश्च रोहिताश्वो विभावसुः ॥ ६५ ॥
वृषाकपिः समीगर्भो हव्यवाहो हुताशनः।
तदादिसूनुः सेनानी स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥ ६६ ॥
कार्तिकेयो विशाखश्च कुमारः षण्मुखो गुहः।
शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च स्वामी शरवणोद्भवः ॥ ६७ ॥

3 तत्पिता शङ्करः ..... ॥ ६८ ॥

4 भागीरथी त्रिपथगा जाह्नवी हिमवत्सुता।
मन्दाकिनी द्युपर्यायधुनी. ॥ ७१ ॥

5 त्रिमार्गनामगा गङ्गा — ॥१६२ ॥

6 विधिर्वेधा विधाता च द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः।
पद्मपर्याययोनिश्च पितामहविरञ्चिनौ ॥ ७२ ॥
हिरण्यगर्भः स्रष्टा च प्रजापतिस्सहस्रपात्।
ब्रह्मात्मभूरनन्तात्मा कः तत्पुत्रोऽथनारदः ॥ ७३ ॥

7 तत्पुत्रो मन्मथः ७७

8 वही श्लोक सं. ८०

9 तत्पतिः शैलभूम्यादिधरश्चक्रधरस्तथा ॥ ७६ ॥

10 स्वान्तमास्वनितं चित्तं चेतोऽन्तःकरणं मनः
हृदयं विशिखाऽकूतम् मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥ ८१ ॥

वृषभनाथ ईश्वर के नाम बनते हैं[१]। पाप पर्याय के पश्चात् जयी पर्याय से भी वृषभ पर्याय बनते हैं। सदृश पर्यायों से तुलना की जाती है।[२] कुरुवटी अर्जुन पर्याय है[३] यम पर्याय आत्मन पर्याय युधिष्ठर के नाम हैं।[४]

इस प्रकार पर्याय बनाने की विधा से भाषा में समृद्धि की जा सकती है। साहित्य में इस प्रकार के प्रयोग प्रचुरता से मिलते है तथा श्लेषात्मक प्रयोगो में प्रयुक्त होते हैं। इनके अतिरिक्त जिन विषयों का समावेश किया गया है उनमें जीवन के सभी पक्षों को कहीं कम कही विस्तार से लिया गया है यथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश की विस्तार से चर्चा की गई है, जैन सम्प्रदाय के महानुभावों का विस्तृत वर्णन है। स्त्रियों का विशद वर्णन है। मदिरा-माँस, जुआ, राग रंग, अस्त्र-शस्त्र, वाणी , रथ, युद्ध, भवन, मार्ग, प्रकाश, अंधकार, दूर समीप, बुढ़ापा, जवानी, हर्ष, क्रोध, दया, संदेह, वार्ता आदि तथा मृग हरिण सर्प कुछ जानवर, पाप-पुण्य, दृढ कोमल, नवीन पुराना आदि। तात्पर्य यह कि सामान्य जीवन से सम्बन्धित विषयों का सामान्य ज्ञान दिया गया है।

धनञ्जय ने अमरकोश को आधार मान कर प्रस्तुत कोश की रचना की है — ऐसा वे स्वयं कहते हैं। इसका कलेवर उन्होंने अपने उद्देश्य के अनुसार सीमित कर दिया है। नाममाला के अंतिम श्लोकों में कवि ने उसी प्रकार के शब्द प्रयुक्त किये हैं जिनकी विवेचना उन्होंने अपने कोश में की है।[५]

नाममाला के व्याख्याकार

अमरकीर्ति[६]

महापण्डित अमरकीर्ति ने नाममाला के भाष्य के अंत में पुष्पिका में लिखा है — **इति महापण्डितश्रीमदमरकीर्तिना त्रैविधेनश्रीसैन्द्रवंशोत्पन्नेन शब्द-**

---

1 वस्त्राद्यन्तः दिगाद्यादिसंज्ञितो वृषभेश्वरः ॥ ७ ॥

2 विन्मान्यो विद्यमानश्च गुरुस्थानाम्बुजाननाः।
सिंहादीनि च पर्यायमुपमानेषु योजयेत् ॥ १३७ ॥

3 वही १४५

4 वही १४६.

5 ब्रह्माणं समुपेत्य वेदनिनदव्याजात् तुषाराचल-
स्थानस्थावरमीश्वरं सुरनदीव्याजात् तथा केशवम्।
अप्यम्भोनिधिशायिनं जलनिधिध्वानोपदेशादहो
फूत्कुर्वन्ति धनञ्जयस्य च भिया शब्दाः समुत्पीडिताः ॥ २०३ ॥

6 'नाममाला सभाष्य' सम्पादक मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला - ६

वेधसा कृतायां धनञ्जयनाममालायां प्रथमकांडं व्याख्यातम् इससे इतना ही ज्ञात होता है कि अमरकीर्ति 'त्रैविध' की उपाधि से विभूषित थे और वे सैन्द्रवंश (सेनवंश) में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने अपने को शब्दवेधा की उपाधि से अलंकृत किया है। मंगलश्लोकों में पूज्यपाद अकलङ्क, विद्यानन्दि और समन्तभद्र के साथ ही साथ किसी कल्याण कीर्ति को भी नमस्कार किया है। इन्होंने ग्रंथ के मध्य में जहां आवश्यकता भी नहीं है अपना नाम देने में संकोच नहीं किया है।

अमरकीर्ति नाम के तीन विद्वानों का पता चलता है —

(i) छक्कमोवस्स आदि ग्रन्थों के रचयिता अमरकीर्ति। इन्होंने विक्रम संवत् १२४७ भादों सुदी १४ के दिन 'छक्कमोवस्स' ग्रंथ समाप्त किया था। अर्थात् ये ईसा की १२ वीं सदी के अन्तिम भाग और १३ वीं के आरंभ में विद्यमान थे। ये अमित गति आचार्य की परंपरा में हुए हैं। इनकी गुरु परम्परा यह है — अमितगति, शान्तिषेण, अमरसेन, श्रीषेण, चन्द्रकीर्ति, अमरकीर्ति।

(ii) वर्धमान के प्रगुरु अमरकीर्ति। इनकी परम्परा इस प्रकार है — देवेन्द्र, विशालकीर्ति, शुभकीर्ति, धर्मभूषण, अमरकीर्ति..... धर्मभूषण वर्धमान। वर्धमान ने शकसंवत् १२९५ वैशाख सुदी ३ बुधवार को धर्मभूषण की निषधा बनवाई थी। इस शिलालेख के अनुसार अमरकीर्ति का समय शक १२५० के आसपास सिद्ध होता है। इनके इस समय का समर्थन शक १३०७ में उत्कीर्ण विजयनगर के शिला लेख से भी होता है।

(iii) दशयवन्त्यादि महाशास्त्र के रचयिता वर्धमान के समकालीन विद्यानन्द के पुत्र विशालकीर्ति के सधर्मा अमरकीर्ति। इनके सम्बन्ध में दशभवयादिशास्त्र में लिखा है —

गीयादमरकीर्त्याख्यभट्टारकशिरोमणिः।
विशालकीर्तियोगीन्द्रसधर्मा शास्त्रकोविदः॥
अमरकीर्तिमुनिर्विमलाशयः कुसुमचापमदाचलवज्रभृत्।
जिनमतापहतारिमाश्च यो जयति निर्मलधर्मः गुणाश्रयः॥

अर्थात् शास्त्रकोविद् विमलाशय कामतेजा निर्मल गुण और धर्म के आश्रम तथा जिन मत के प्रकाशक अमरकीर्ति भट्टारक विशालकीर्ति के सधर्मा थे। विशालकीर्ति के पिता विद्यानन्द का स्वर्गवास शक १४०३ सन् १४८१ में हुआ था। यह उल्लेख दशभक्त्यादि महाशास्त्र में विद्यमान है। अतः उनके पुत्र विशालकीर्ति के सधर्मा अमरकीर्ति का समय करीब सत्र ४५० अर्थात् ईसा की १५ वीं शती सिद्ध होता है। दशभक्त्यादिशास्त्र का समृद्धिकाल १४०४ शक अर्थात् १४८२ ई. है।

इन तीन अमरकीर्तियों में **छक्कोमोवस्स** के रचयिता नाममाला भाष्य के रचयिता नहीं हो सकते। उनका काल विक्रम १२४७ के आसपास है जबकि **नाममाला** के भाष्य (पृ.६२) में आशाधर के महाभिषेक से उद्धरण दिया गया है। आशाधर ने अपना 'अनगारधर्मामृत' वि.स. १३०० में समाप्त किया था। अतः प्रथम अमरकीर्ति इस ग्रन्थ के रचयिता नहीं हो सकते।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रस्तुत ग्रंथ के भाष्यकर्ता अमरकीर्ति वि.स. १३०० अर्थात् १२४३ ई. तेरहवीं सदी के पहले के विद्वान् तो नहीं ही हैं। इन्होंने भाष्य में भोज (११ वीं सदी) इन्द्रन्दी (१० वीं सदी) पद्मनन्दी (१२ वीं सदी) सोमप्रभ (१२ वीं सदी) हेमचन्द्र (१२-१३ वीं सदी) आदि के ग्रंथों से भी नामोल्लेख पूर्वक अवतरण दिये हैं। शेष दो अमरकीर्ति पृथक् व्यक्ति तो हैं ही। द्वितीय अमरकीर्ति की प्रशंसा में विजयपुर के शिलालेख में निम्नलिखित श्लोक मिलते हैं —

शिष्यस्तस्य गुरोरासीदनर्गलतोपनिधिः।
श्रीमानमरकीर्त्यार्यो देशिकाग्रेसरः शमी ॥
निजपक्षपुटकवारं घटयित्वानलरोधतो हृदये।
अविचलितबोधदीपं तममरकीर्तिं भगे तमोहरणम् ॥

अर्थात् अमरकीर्ति महान् तपस्वी शान्त और लम्बी समाधि लगाने वाले योगी थे। इस वर्णन से ज्ञात होता है कि ये अमरकीर्ति शास्त्रकार की अपेक्षा योगी और तपस्वी ही अधिक थे। नाममाला भाष्य में जिस प्रकार यशोलिप्सा टपकती है वह एक योगी और तपस्वी में नहीं हो सकती।

तृतीय अमरकीर्ति के वर्णन में शास्त्रेकोविद विशेषण उनके पाण्डित्य का निर्देशन कर रहा है। अतः हमारे प्रकृत ग्रंथ कार दशभक्त्यादिशास्त्र के रचयिता

वर्धमान के समकालीन, विद्यानन्द के पुत्र विशालकीर्ति के सधर्मा अमरकीर्ति हैं। ये सन् १४५० के आस-पास अर्थात् १५ वीं सदी के विद्वान् थे। इस समय का साधक एक प्रमाण यह भी हो सकता है कि इन्होंने कल्याण कीर्ति को नमस्कार किया है। कल्याणकीर्ति का एक **जिनफलोदय** नामक ग्रन्थ मिलता है। उसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि ये भट्टारक ललितकीर्ति के शिष्य थे। कल्याण कीर्ति ने जेठ सुदी ५ शक संवत् १३५० में **जिनफलोदय** समाप्त किया था। अर्थात् सन् १४२८ में यह ग्रंथ समाप्त हुआ था। यदि यही कल्याण कीर्ति अमरकीर्ति के द्वारा स्मृत हुए हैं तो मानना होगा अमर कीर्ति पंद्रहवी सदी के विद्वान् हैं।

अमरकीर्ति विरचित भाष्य में प्रत्येक शब्द की व्याकरण सिद्ध व्युत्पत्ति सूत्रनिर्देशपूर्वक बतलाई गई है। उणादि से सिद्ध हो या अन्य रीति से पर कोई भी शब्द निर्व्युत्पत्ति नहीं रह पाया है। इन व्युत्पत्तियों की प्रामाणिकता के लिए महापुराण, पद्मनन्दि शास्त्र, यशस्तिलकचम्पू नीतिवाक्यामृत, द्विसन्धान-काव्य, बृहत्प्रतिक्रमणभाष्य, महाभारत, सूक्तिमुक्तावली, शब्दभेद, अनेकार्थध्वनि मञ्जरी, अमरसिंह भाष्य, आशाधर, महाभिषेक, नीतिसार, शाश्वत, हैमीनाममाला, आदि ग्रन्थों तथा यश कीर्ति, अमरसिंह, आशाधर, इन्द्रनन्दि, क्षीरस्वामी, पद्मनन्दि, श्रीभोज, हलायुध आदि ग्रन्थकारों को नाम निर्देशपूर्वक प्रमाणकोटि में उपस्थित किया गया है। अनेक व्युत्पत्तियाँ तो अमरकीर्ति की कल्पना के अच्छे उदाहरण हैं—

म्रियन्ते क्षुद्रजन्तवोऽस्य स्पर्शेनेति मरुत् अर्थात् जिसके स्पर्श से क्षुद्र जन्तु मर जाय वह मरुत् है।

न नन्दति भ्रातृजाया यस्यां सत्यां सा ननान्दा जिसकी उपस्थिति में भौजाई खुश न हो वह नाममाला - धनञ्जय नान्दा अर्थात् ननद है।"

यज्ञानां पशुकारणलक्षणामरिः यज्ञारिः अर्थात् पशुयज्ञ का विरोधी महादेव हैं आदि।

व्याख्या अज्ञात[1]

व्याख्या — Moodbidri **कृत**[2]

धनञ्जय — नाममाला

---

1 NCC. X. पृ.२९३

2 NCC. X. पृ.४५

धनञ्जय के उद्धरण

ये नाममाला में अकलङ्क के प्रमाण शास्त्र, पूज्यपाद के शासनशास्त्र तथा अपने द्विसन्धान काव्य (राघवपाण्डवीय) का उल्लेख करते हैं।[१]

धनञ्जय के उद्धरण

इन्हे सुभूतिचन्द्र एवं सर्वानन्द ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।[२] केशवस्वामी[३] ने भी नानार्थ सङ्क्षेप में इसे उद्धृत किया है। धनञ्जय हेमचन्द्र की देशीनाममाला के भी स्रोत हैं रायमुकुट, प्रौढमनोरमा (भट्टोजि) तथा असालति प्रकाश में भी उद्धृत है।[४]

अनेकार्थ नाममाला

अनेकार्थ नाममाला कर कलेवर छोटा है। इसमें केवल ४४ श्लोक हैं। अनेकार्थ के पीछे अभिप्राय यह है कि किसी शब्द का प्रमुख अर्थ ग्रहण कर लिया जाता है तथा उस अर्थ से सम्बन्धित आशय वाले कार्यों को उस शब्द से भी जाना जाता है। यथा

तीर्थं प्रवचने पात्रे लघ्वाम्नाये विदांवरे।
पुण्याख्ये जलोत्तरे महासत्ये महामुनौ॥ ३॥

तीर्थ शब्द की व्युत्पत्ति है तरति तीर्यते वाऽनेन तीर्थम्। एक और उदाहरण देखें —

वाचि वारौ पशौ भूमौ दिशि लोम्नि खौ दिवि।
विशिखे दीधितौ दृष्टावेकादशसु गौर्मतः ॥ २७॥

गच्छतीति गौः

अथवा

चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ वासवे दुर्दुरे हये
मृगेन्द्रे वानरे वायौ दशस्वपि हरिस्मृतः॥ २८॥

---

1 द्र. RASB VI. भूमिका पृ cxl

2 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I. पृ.२१९

3 केशवस्वामी — नानार्थसङ्क्षेप Vogel. पृ.३४६ से

4 सम्पा. द्वादश कोशसङ्ग्रह बनारस, १८७२

अनेकार्थ शब्दों के प्रयोग से काव्य में गहनता आती है तथा उनके ज्ञान से वक्ता या श्रोता उस काव्य का आनन्द ले सकते हैं। सभी कोशकार प्रायः अनेकार्थी शब्दों का अलग से परिचय देते हैं।[१]

अनेकार्थ निघण्टु[२]

अनेकार्थ निघण्टु में १५३. १/२ श्लोक हैं तथा कोशकार कहते हैं कि इसमें उन्होंने कठिन शब्दों का संकलन किया है। शब्दों के अप्रचलित तथा वैशिष्ट्यपूर्ण अर्थों को अनेकार्थ निघण्टु से जाना जा सकता है। एक उदाहरण देखें —

वाग्दिग्भूरश्मिवज्रेषु पश्र्वक्षिस्वर्गवारिषु।
नवस्वर्गु मेधावी गोशब्दमुपलक्षयेत्॥ २॥

एकाक्षरी कोश[३]

इसमें ९ श्लोक हैं। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के विभिन्न अर्थ बताये गये हैं यथा —

अः कृष्णः आः स्वयंभूरिः काम ई श्री रुरीश्वरः ।
अ रक्षणः ऋ ज्ञेयौ देवदानव मातरौ॥ १॥

और भी

गस्तु गातरि गंर्वे गा गी तौ गो विनायके।
स्वर्गे दिशि पशौ वज्रे भूमाविन्दौ जले गिरि॥ ६॥

एकाक्षरी कोश के अन्त में धनञ्जय का नामोल्लेख नहीं है किन्तु प्रथम श्लोक से यह उनकी ही कृति जान पड़ती है। यहाँ भी उन्होंने अमर सिंह का नामोल्लेख किया है।

---

1 सम्पा. नाममाला, १९५० पृ.९३-१०१

2 सम्पा. धनञ्जयकृत नाममाला (दे.) के अन्त में प्रकाशित भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, १९५० (मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला संस्कृत ग्रन्थ संख्या — पृ.१०२-६)

3 सम्पा. नाममाला, १९५० पृ.१९६

अन्य कृतियाँ

द्विरूपकोश[१] **— द्र. नाममाला** (NCC. X.)

निघण्टु समय

प्रकाशित द्वादशसङ्ग्रह बनारस, १८६५

निघण्टुसमुच्चय[२]

यह २५१ पद्यों में २ परिच्छेदों में लिखा है जिस का प्रथम परिच्छेद नाममाला ही है (द्र.)। इस के अन्य नाम हैं प्रमाण नाम माला जो तीन भागों में है :— शब्दसङ्कीर्ण रूप, शब्द सङ्कीर्ण प्ररूप तथा शब्द विस्तीर्णरूप।

प्रमाणनाममाला[३]

इसके प्रणेता धनञ्जय हैं।

पर्यायशब्दरत्न[४] धनञ्जय भट्टाचार्य

यह नाममाला के लेखक से भिन्न है जो कि आन्ध्र के प्रतीत होते हैं।

अजय — द्र. अजयपाल — नानार्थ सङ्ग्रह

इसे हलायुध की व्याख्या में उद्धृत किया गया है।[५] पूर्ण सरस्वती ने अनर्घराघव की पञ्चिका व्याख्या में भी इसे उद्धृत किया है।[६]

क्या यह अजड़ अथवा महाजड़ त्रिभुवनपाल का पुत्र तथा डालै पृथ्विपाल का पौत्र हो सकता है जो ११५०-१४०० ई. के मध्य रहा हो ? अजय एवं अजड का ऐक्य भी विचारणीय है (द्र. अजय तथा अजयकोश / नानार्थसङ्ग्रह)

---

1 NCC. X. पृ.३०२

2 NCC. X. पृ.२१७

3 द्र.NCC. X. पृ.४५; XIII. पृ.३५

4 Vogel पृ.३२७

5 Vogel. पृ.०३२१

6 Unnithiri, N.VP. Pūrṇasarasvatī - As a Versatile Scholar (1986)

यादवप्रकाशकृत वैजयन्ती कोश [१]

महत्त्व

यह पर्यायवाची एवं अनेकार्थी कोष उपलब्ध कोशों में सब से बड़ा है और लगभग ३५०० अनुष्टुप अथवा आर्या छन्दों में लिखा गया है।

अनेक शब्द जिनके वैदिक दृश्य अथवा पृथक् अर्थ हैं, निर्दिष्ट किए गए हैं।

यादव प्रकाश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आचार्य यादव प्रकाश संस्कृत कोशकारों की श्रेणी में प्रमुख स्थान रखते हैं। यादव प्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे। ये तमिलनाडु राज्य के अन्तर्गत **काञ्चीपुरम्** या **काञ्चीवरम्** के निकटवर्ती **तिरुप्पुटकुलि** या **गृध्रसरस** ग्राम के निवासी थे। पहले ये कहर अद्वैतवासी श्री शङ्कराचार्य के मतानुयायी थे। इन्होंने **ब्रह्मसूत्र** पर एक **यादवभाष्य** लिखा था और उसे ये **शाङ्करभाष्य** के साथ-साथ अपने शिष्यों को पढ़ाया करते थे।[२]

यह प्रसिद्ध है कि **तिरुप्पुटकुलि** में स्थित **विजयराघवस्वामी मन्दिर** में दो साधुओं की मूर्तियां हैं, उनमें से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किए हुए अद्वैतवादी आचार्य **यादवप्रकाश** की है, और दूसरी त्रिदण्डधारण किए हुए विशिष्टाद्वैतवादी **रामानुजाचार्य** की है।[३]

काञ्चीपुरम् में स्थित **वरदाचार्य स्वामी** के मन्दिर की भित्ति पर बने एक चित्र में त्रिदण्डधारण किए हुए आचार्य यादवप्रकाश अपनी शिष्यमंडली के साथ चित्रित है।

यादवप्रकाश का समय दशमशती के अंतिम चरण से लेकर एकादशशती का पूर्वार्ध माना जाता है।[४] बालमुकुन्द द्विवेदी यादव प्रकाश का समय ग्यारहवीं शती मानते है।

---

1 डा. अञ्जु सेठ के साहाय्य से ; Bühler, G. WZKM. I. पृ.२

2 वैजयन्ती कोष, प्रस्तावना पृष्ठ १७

3 वैजयन्ती कोष प्रस्तावना पृष्ठ १७

4 उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत शास्त्रों का इतिहास पृष्ठ २९१ द्विवेदी, बालमुकुन्द, संस्कृत कोश उद्भव और विकास पृष्ठ ९४

यादव प्रकाश विशिष्टाद्वैतवेन्दान्त के इतिहास में रामानुजाचार्य के गुरु होने के कारण प्रख्यात हैं तथा सम्प्रदायानुसार रामानुज का जीवनकाल १०१७-११३७ ई. माना जाता है। रामानुज वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य थे। दक्षिण में वैष्णव गुरुओं की दो श्रेणियां थीं आलवार और आचार्य आलवार निर्मल अनुराग और विष्णु के प्रति अटूट आस्था रखते थे वे भजनों की रचना करते थे।[१]

यादवप्रकाश कृतित्व

पिंगलसूत्र - भाष्य

(१) पिंगलसूत्र का सर्वाधिक प्रौढ, नितान्त प्रामाणिक तथा पाण्डित्यमण्डित भाष्य इन्होंने लिखा। इस भाष्य का, पूरा नाम है 'पिङ्गलनागछन्दोविचिति - भाष्य'। इस भाष्य के हस्तलेख उपलब्ध होते हैं यह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ।

(२) **वैजयन्ती कोश**[२] यादव प्रकाश की लेखनी से प्रसूत यह द्वितीय रचना उनकी विद्वत्समाज में ख्याति का कारण हुई। वैदिक शब्दों को लौकिक शब्दों के साथ संकलित कर यादव प्रकाश ने अपनी वेदनिष्ठा का स्पष्ट संकेत किया है।

(३) **यतिधर्मसमुच्चय** :— इस ग्रन्थ में सन्यासियों के कार्यकलापों का परिचय दिया गया है। यह भी हस्तलेखों में प्राप्य है।

लेखक का व्यक्तित्व उसकी कृतियों के माध्यम से ही प्रकट होता है। यादवप्रकाश की विद्वत्ता की सूचना इनकी कृतियों द्वारा प्राप्त होती है।

(४) पिङ्गल नागछन्दोविचिति - भाष्य का वैदिक भाग बहुत पूर्ण तथा उपादेय है। इस भाष्य में यादवप्रकाश ने छन्दविषयक अधिक सामग्री तथा प्रचुर उदाहरणों का चयन किया है। वैदिक छन्दों की सूक्ष्म बातों का विवेचन सांगोपांग है। यादवप्रकाश मन्त्रों तथा ब्राह्मणों के गंभीर अनुसंधाता थे।

---

1 उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, पृष्ठ २९१

2 वैजयन्ती कोष Ed. Opplet, G. Madras, 1893 तथा शास्त्री, हरगोविन्द, भूमिका तथा ओपर्ट के पाठ के पुनर्मुद्रण सहित, वाराणसी, १९७१

शास्त्रीय प्रतिभा

वैजयन्तीकोष उनके विविध-विषयसम्बन्धी ज्ञान का आकर है। इस कोश के अध्यायों से उनकी विद्वत्ता स्पष्टतः प्रकट होती है। इनके ज्ञान को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं —

(१) देवतासम्बन्धी ज्ञान

प्रथम काण्ड के प्रथम अध्याय में स्वर्ग[१] तथा स्वर्गस्थ[२] देवों का वर्णन, लोकपालाध्याय में इन्द्रसहित[३] अन्य लोकपालों का वर्णन यक्षाध्याय में दैत्यो[४] यक्षो का वर्णन है। यह स्वर्गकाण्ड उनके देवता, दैत्यों आदि के ज्ञान के परिचायक है।

(२) नक्षत्रविद्या सम्बन्धी ज्ञान

ज्योतिरध्याय में दिशा[५] दिग्गज[६], चन्द्र[७], सूर्य[८], अन्य ग्रह[९] तथा नक्षत्रों[१०] तथा नक्षत्र[११] के नाम इनके नक्षत्रविद्या सम्बन्धी ज्ञान के परिचायक हैं।

(३) पक्षिविज्ञान सम्बन्धी ज्ञान

खगाध्याय उनके पक्षिविज्ञान सम्बन्धी ज्ञान का सूचक है। इसमें विविध पक्षियों के नाम बताए गए हैं।

---

1 वैजयन्तीकोश १.१.१
2 वैजयन्तीकोश १.१.६-६४
3 वैजयन्तीकोश १.२.१-६०
4 वैजयन्तीकोश १.३.१-१०
5 वैजयन्ती कोश २.१.२
6 वैजयन्ती कोश २.१.८
7 वैजयन्ती कोश २.१.२४,२५,२६
8 वैजयन्ती कोश २.१.३२-३३
9 वैजयन्ती कोश २.१.१०-१५
10 वैजयन्ती कोश २.१.३२,३३
11 वैजयन्ती कोश २.१.३६-४३

(४) भूगोल सम्बन्धी ज्ञान

भूमिकाण्ड में द्वीप[१], भूमि के विविध प्रकार[२] भूमि को नापने के परिमाण[३] (नालिका, क्रोश आदि), पर्वत[४], पर्वत पर उपलब्ध होने वाली धातुएं व रत्नों[५] का वर्णन उनके भूगोल सम्बन्धी ज्ञान का परिचायक है।

(५) औषधि सम्बन्धी ज्ञान

वनाध्याय में वर्णित विविध औषधियाँ व जड़ीबूटियां, वृक्ष उनके ओषधि सबन्धी ज्ञान के परिचायक है।[६]

(६) मानव मनोविज्ञान सम्बन्धी तथा धर्मशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान

मनुष्याध्याय में वर्णित मानव के विविध पर्याय[७] उसके (मानव के) स्वभाव को सूचित करते हैं इससे यादवप्रकाश का मानवमनोविज्ञान सम्बन्धी ज्ञान तथा वर्णन[८] उपवर्णों[९], प्रतिलोमज, अनुलोमज[१०] आदि का वर्णन उनके धर्मशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान की सूचना देता है। ब्राह्मणाध्याय में वर्णित विविध संस्कारों का वर्ण,[११] ब्राह्मण के लिए आवश्यक वस्तुएं[१२] तथा यज्ञ हेतु आवश्यक उपादानों का वर्णन[१३] भी उन्हें धर्मशास्त्र में पारंगत सिद्ध करता है।

---

1 वैजयन्ती कोश कोश ३.१.१०-१४
2 वैजयन्ती कोश ३.१.४२-४७
3 वैजयन्ती कोश ३.१.५३-६३
4 वैजयन्ती कोश ३.१.१-४
5 वैजयन्ती कोश ३.१.११-४४
6 वैजयन्ती कोश, भूमिकाण्ड, वनाध्याय
7 वैजयन्ती कोश ३.५.१
8 वैजयन्तीक कोश ३.५.२
9 वैजयन्ती कोश ३.५.३
10 वैजयन्ती कोश ३.५.८९
11 वैजयन्ती कोश ३.५.२-७
12 वैजयन्ती कोश ३.५.१७-२१
13 वैजयन्ती कोश ३.५.८८-११२

(७) राजनीतिशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान

क्षत्रियाध्याय में सप्ताङ्ग राज्य[१] पर गुण[२] तीन शक्तियाँ[३], अष्टवर्ग[४] सप्त-व्यसन[५] राजा के विविध सहायक[६] सेना[७], सेना में हाथी[८] घोड़े आदि का वर्णन[९] अस्त्र शस्त्रों को वर्णन[१०] उनके राजनीतिशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान का संकेत करता है।

(८) वाणिज्य सम्बन्धी ज्ञान

वैश्याध्याय उनकी वाणिज्य शास्त्र में पारंगता को सिद्ध करता है।

(९) अन्य ज्ञान

(जीवविज्ञान, लोकाचार ज्ञान, क्रियाकलापसम्बन्धी तथा गुण सम्बन्धी ज्ञान) पातालकाण्ड जीवविज्ञान सम्बन्धी ज्ञान, पुराध्याय लोकव्यवहार सम्बन्धी ज्ञान तथा दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं का वर्णन करने से उनकी सजग दृष्टि को सूचित करता है। सामान्य काण्ड विविध क्रियाओं के अनुष्ठान सम्बन्धी ज्ञान को तथा गुणाध्याय विविध गुण सम्बन्धी ज्ञान को स्पष्ट करता है।

अतः यादवप्रकाश विविध ज्ञान से मंडित थे। उन्होंने अपने सम्पूर्ण ज्ञान का प्रयोग इस वैजयन्ती कोश हेतु शब्दसंचय करते समय किया तथा अनेक गुणों से संवलित कोश को विद्वत्समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया।

---

1 वैजयन्ती कोश ३.७.३
2 वैजयन्ती कोश ३.७.६
3 वैजयन्ती कोश ३.७.५
4 वैजयन्ती कोश ३.७.९
5 वैजयन्ती कोश ३.७.११
6 वैजयन्ती कोश ३.७.१६-३०
7 वैजयन्ती कोश ३.७.५५-५९
8 वैजयन्ती कोश ३.७.६०-६२
9 वैजयन्ती कोश ३.७.९०-९४
10 वैजयन्ती कोश ३.७.१५०-१८५

वैजयन्ती — राघवकवि[१] ने एकाक्षरकोष में इस का नाम्ना स्मरण किया है। ज्ञानविमलगणि (१५७३-१६११) ने भी इसका प्रयोग किया।[२]

वैजयन्ती कोश अनेक टीकाकारों में उद्धृत है। महाकाव्यों तथा कोषादिको के संस्कृत व्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी भानुजीदीक्षित सर्वदेव महेश्वर आदि ने **इति यादवः इति वैजयन्ती** लिख कर अपनी व्याख्याओं की पुष्टि के लिए स्थान स्थान पर इस कोश के उद्धरण दिए है।[३] इस कोश के रचयिता आचार्य यादव प्रकाश है।

वैजयन्ती उद्धृत नाम

यादव प्रकाश यादव नाम के अतिरिक्त इसे वैजयन्ती[४], जयन्तिकोशः[५] तथा जयन्तः[६] के नाम से भी उद्धृत किया गया है।

वैजयन्ती उद्धृत

केशवस्वामी के नानार्थार्णव सङ्क्षेप में उद्धृत है।[७]

इसे राघवभट्ट ने अभिज्ञानशाकुन्तल पर यादव कोश नाम से उद्धृत किया है।[८]

यादव नाम से लक्ष्मणभट्ट ने इसे नैषधीयचरित में उद्धृत किया है।[९]

रामाश्रम की सिद्धान्तचन्द्रिका पर सदानन्दगणि ने केवल एक उद्धरण वैजयन्ती नाम से दिया है।[१०]

---

1 सम्पा. एकाक्षरकोष सङ्ग्रह (१९६४) पृ. १२ शब्दार्णवो वैजयन्ती सूर्यो रुद्रश्च यादवः स्मरणीय रहे यहां वैजयन्ती और यादव का पृथक् उल्लेख है।

2 Vogel. पृ. ३३१

3 Oppert, G. सम्पा. भूमिका

4 सिद्धिचन्द्रगणि ने वासदत्ता विवरण में इसे उद्धृत किया है। Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. Vol.I पृ. २७१

5 Gode. P.K. वही._ पृ. ६,२५,३३,३८,४२,४४,४५ (जयन्तिकोश पृ. ३८ पर ; जयन्त तथा जयन्ति कोश) Gode. P.K. वही._ पृ. २७१

6 Gode, P.K. वही. पृ. ६१,७९

7 Vogel. पृ. ३४६ से

8 Gode, P.K. उपर्युक्त पृ. ४२९-४३६

9 Gode, P.K. वही. पृ. ४२५-४२८

10 Gode, P.K. Studies in Indian Litrary History I. p.98

यादव कोश को पूर्ण सरस्वती ने अपनी कृतियों में उद्धृत किया है।[१]

इसे अनर्घराघव की व्याख्या पञ्चिका में उद्धृत किया गया है।[२] महेन्द्रसूरि ने वैजयन्तीकोश नाम से ११ उद्धरण दिए हैं।[३] ज्ञानविमलगणि ने भी वैजयन्त (यादवप्रकाश) का प्रयोग किया है।[४]

वैजयन्ती — स्रोत[५]

इसे पालक्य के राजशास्त्र का, भरत के नाट्यशास्त्र का तथा आपस्तम्बीयगृह्यसूत्र का ज्ञान था।

वैजयन्ती — प्रेरणा

हेमचन्द्र ने **अभिधानचिन्तामणि** के पूरक शब्दों के रूप में वैजयन्ती का प्रयोग किया। सम्भवतः हेमचन्द्र के पूरक कोशों यथा शेषाः, शेषाख्यनाममाला शेषसङ्ग्रहनाममाला तथा शेषसङ्ग्रहनामोद्धार इत्यादि में वैजयन्ती की सामग्री को अन्तर्भूत किया गया।[६]

प्रतिपाद्य

वैजयंतीकोष[७] प्रमुख रूप से दो खंडों में विभाजित है — समानार्थ खंड तथा नानार्थ खंड। समानार्थ खंड के पांच भाग हैं तथा नानार्थ खंड के तीन भाग हैं। समानार्थ खंड के पांच भागों में प्रथम स्वर्ग कांड है इसमें पुनः तीन अध्याय हैं।

---

1 Unnithiri, N.P. Pūrṇasarasvati as a versatile scholar

2 पञ्चिका, पृ.९९, १०८, २२८ Unnithiri - वही.

3 Sharma, Sudha (१९९४) Vogel, पृ.३३१

4 Vogel. पृ.३३१

5 Bühler, G. WZKM. 1. पृ. 3 ; Zachariae, GGA; (Q. Vogel, पृ. ३२४)

6 Vogel. पृ.३३८

7 यादव प्रकाश, वैजयन्तीकोष - सम्पादक शास्त्री हरगोविंद, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी-१९७१

१. **आदिदेवाध्याय** — इस अध्याय में स्वर्ग के पर्याय, देवताओं के नाम एवं गुण व लगभग ७५ हिन्दू देवी-देवताओं तथा उनकी शक्तियों एवं उपकरणों का वर्णन किया गया है।[१]

२. **लोकपालाध्याय** — इस अध्याय में इन्द्र, वह्नि, अपांनपात्, वायु यम नरक, राक्षस, वरुण, कुबेर आदि के पर्याय तथा उपकरण शक्तियों आदि का वर्णन है।[२] इस कोष के पूर्व अन्य कोषकारों ने देवताओं को देवताओं का ही पद दिया है। वैजयन्तीकार ने इन्हें लोकपालाध्याय में स्थानान्तरित कर दिया है।

३. **यक्षाध्याय** — इस अध्याय में यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, अश्विनौ, असुर, मेरु, मन्दाकिनी आदि का वर्णन है।[३]

(२) द्वितीय अंतरिक्ष कांड है इसमें पुनः चार अध्याय हैं।

१. **ज्योतिरध्याय** — इसमें अन्तरिक्ष, सूर्य, चन्द्र तथा अन्य नक्षत्र-तारकों का वर्णन है।[४]

२. **मेघाध्याय** — इसमें मेघों के पर्याय तथा प्रकार हैं।[५]

३. **खगाध्याय** — इसमें पक्षियों का विशद वर्णन है।[६]

४. **शब्दाध्याय** इसमें शब्द के पर्याय तथा प्रकार एवं प्रकृति का वर्णन है।[७]

(३) तृतीय भूमिकांड है। सर्वाधिक शब्दों का संग्रह इस कांड में हुआ है। इस कांड में ९ अध्याय है।

---

1 ६४[१]/ २ श्लोकों के निबद्ध

2 ६० - वही

3 १४२ - वही

4 ९४१ / २ वही

5 ९११ / २ - श्लोकों में निबद्ध

6 ५० - वही

7 ४२ - वही

१. **देशाध्याय** — भूमि के प्रकार तथा विभिन्न राजनैतिक आधार पर भारत के भूमिखण्डों के नाम दिये गये हैं।[१]

२. **शैलाध्याय** — इसमें ४४ १/ २ श्लोकों में पर्वत तथा पर्वतों पर प्राप्त होने वाली वस्तुओं के नाम गिनवाय गये हैं।[२]

३. **वनाध्याय** — इसमें विस्तारपूर्वक वनों के प्रकार, प्राप्त होने वाली वस्तुयें एवं भारत स्थित वनों के नामोल्लेख हैं।[३]

४. **पशुसंग्रह अध्याय** — इसमें ७४ १/ २ श्लोकों में विभिन्न पशुओं के नाम दिये गये हैं।[४]

५. **मनुष्याध्याय** — १२१ श्लोक हैं। पुरुष-स्त्रियों के प्रकार आपसी सामाजिक सम्बन्धों इत्यादि का वर्णन है।[५]

६. **ब्राह्मणाध्याय**[६]

७. **क्षत्रियाध्याय**[७]

८. **वैश्याध्याय**[८]

९. **शूद्राध्याय**[९] इन चारों अध्यायों में चारों वर्णों के मनुष्यों के कर्तव्य, समाज में स्थान आदि तथा वर्ण सङ्कर का उल्लेख है।

(४) चतुर्थ पाताल कांड है। इसमें पुनः चार अध्याय हैं —

१. **सरीसृपाध्याय** — इसमें पातालवासी नागों, जलजन्तु, जलवनस्पति, जल में प्राप्त रत्नों का उल्लेख है।[१०]

---

1 ६२ - वही
2 ४४ १ / २ - वही
3 २३५ - वही
4 ७४१ / २ - वही
5 १२१ - वही
6 २४० - वही
7 २२०.१ / २ श्लोक में निषद्ध
8 १४९ .१ / २ - वही
9 १४१ .१/ २ - वही
10 ६० - वही

२. **जलाध्याय** — इसमें जल के पर्याय तथा विभिन्न जलस्रोतों के नाम दिये गये हैं।[१]

३. **पुराध्याय** — नगरों के प्रकार तथा नामों का उल्लेख है। निर्माण विधि संबंधी शब्दों का भी संग्रह है।[२]

४. **भूताध्याय** — इसमें विभिन्न प्रकार से उत्पन्न होने वाले जीवों, विभिन्न पुरुषों तथा शारीरिक अवयवों का वर्णन है।[३]

(५) पांचवा सामान्य कांड है। इस कांड में पुनः चार अध्याय है।

१. **गणाध्याय** — इसमें विभिन्न मानवसमूहों, गोत्र, विनिमय मुद्राओं आदि सम्बन्धी उल्लेख हैं।[४]

२. **धर्मकर्माध्याय** — मनुष्यों द्वारा किये जाने वाले विभिन्न कार्यों का उल्लेख है।[५]

२. **गुणाध्याय** — इसमें गुण, गन्ध, रंग, षट्रस आदि का वर्णन है।[६]

३. **अर्थवल्लिगाध्याय** — विभिन्न विषयों का संग्रह है।[७]

द्वितीय खंड नानार्थ खंड है। इसमें तीन कांड है। द्वयक्षर कांड, त्र्यक्षरकांड, शेषकांड

(१) द्वयक्षर कांड में पुनः ५ अध्याय हैं —

१. पुल्लिगाध्याय[८]

२. स्त्रीलिंगाध्याय[९]

---

1 ४९ - वही

2 १७० [१]/२ - वही

3 १४६ [१]/२ - वही

4 ६४ [१] / २ - वही

5 ४२ श्लोक में निबद्ध

6 ५९ श्लोक में निबद्ध

7 १४४ - वही

8 ६९ - वही

9 ४६ - वही

३. नपुंसकलिंगाध्याय[१]

४. अर्थवल्लिग[२]

५. नानालिंग[३]

त्रयक्षर तथा शेषकांड में भी इसी प्रकार पांच अध्याय हैं। शेषकांड में १. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः २. अनेकार्थाव्ययाध्यायः ३. अव्ययपर्याया-ध्यायः, ४. लिंगसंग्रहाध्याय, चार और अध्यायों का समावेश किया गया है।[४]

सम्पूर्ण ग्रन्थ की श्लोक संख्या ३२१६ है अर्थात् अमरकोष से द्विगुणित है।

वैजयन्ती कोष में वैदिक शब्दों का भी संग्रह किया गया है तथा कोषकार ने अप्रचलित भी अधिकाधक पर्यायों को ग्रहण करने का प्रयास किया है ऐसा देवता विषय शब्दों का अध्ययन करने के संदर्भ में प्रतीत होता है।

वैजयन्ती की शैली

सक्षिप्त एंव रोचक शैली में लिखित यह कोष विभाजक अव्ययों अथवा निपातों का प्रयोग नही करता। द्वन्द्वों एवं एकशेषों का असमस्त पदों के रूप में अधिक व्याख्येय बनाने के लिए प्रयोग करता है।[५]

वैजयन्ती — विस्तार

४३ अध्यायों में विभक्त यह कोश ६ काण्डों में भी विभक्त है। ये हैं— स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल, सामान्य, द्व्यक्षर, त्र्यक्षर तथा शेष।इसे मुख्यतः पर्यायवाची कोशों की कोटि में रखा जाता है यद्यपि अनेकार्थी शब्द भी इसमें

---

1 ३७ - वही

2 २० - वही

3 १०१ - वही

4 कुल मिलाकर दोनों कांडों में ५६३ १/२ श्लोक हैं।

5 विस्तृत विश्लेषण के लिए Zachariae : Sanskrit Wörtebücher; (सर्वेक्षण GG.A १८९४) पृ. ८३०; Vogel, पृ. ३२४; Kapoor, Anju (१९८२); Oppert तथा हरगोविन्द शास्त्री के संस्करणों की भूमिकाण्ड व देशाध्याय तथा पातालकाण्ड के पुराध्याय के लिये द्र. Ganguly. D.C. IHQ.19. पृ.२१४

उपलब्ध होते है। त्रयक्षरादिशब्द क्रमशः उत्तरोत्तर अक्षरादिक्रम से वर्गीकृत हैं। लिङ्ग में पुंल्लिग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसक, अनेकलिङ्ग शब्द भी अकारादिक्रम से अनुस्यूत हैं। शेषभाग अनेकार्थी शब्दों के अतिरिक्त, अव्यय तथा लिङ्ग के नियमों का ग्रन्थन करता है।

वैजयन्ती कोश के प्रथम भाग में पर्यायों का उल्लेख है। उदाहरणार्थ अग्नि के पर्याय वह्नि, वैश्वानर घासि, कृष्णवर्त्म, समन्तभुक् आदि दिए गए है।[१]

वैजयन्तीकोश का द्वितीय भाग नानार्थभाग है जिसमें एक शब्द के नानार्थ दिये गये हैं -

अथ काण्डैरनेकार्था : प्रोत्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः

द्वयक्षरास्त्र्यक्षराः शेष इति काण्डेषु ते क्रमात्॥

यादवप्रकाश की विशिष्टता यह कि वे पर्याय देने के अनन्तर तत्सम्बद्ध समस्त विषयों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। यथा अग्नि के पर्याय देने के बाद उन्होंने तत्सम्बद्ध अग्निप्रिया, स्कन्धाग्नि काष्ठाग्नि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहाग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, क्रृत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियों का पृथक् पृथक् नामनिर्देश किया है।[२]

संस्कृत में लिङ्गनिर्धारण की एक कठिन समस्या को बुद्धिमत्तापूर्वक हल किया है। कहीं कहीं शब्दों के प्रथमान्त प्रयोग से उनके लिङ्ग का निर्धारण किया है और कहीं कहीं उनके साथ लिङ्गबोध शब्दों का प्रयोग किया गया है। लिङ्ग द्योतक शब्दों का प्रयोग करते हुए ग्रन्थारम्भ में यादवप्रकाश का मत है।

प्रकाश्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च
वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम्।

---

1 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्त्मा समन्तभुक्। जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपा॥ (१.२.१४) दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहितश्व उषर्बुधः शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदर्चिः पावकोऽनलः (१.२.१५) हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः।(१.२.।६)

2 वै.को.१.२.१९-२७

स्त्रीपुन्नपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा
नृस्त्री नृषण्ढष्षण्ढस्त्री निर्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम्[१] **।।**

परिभाषाध्याय में ही यादवप्रकाश ने स्पष्ट किया है कि **क्तिन् प्रत्यय** का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग हेतु किया गया है।[२] स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग व क्लीब शब्दों के लिए उन्होंने यह लिङ्गद्योतक शब्द अपनाए हैं —

स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुलिङ्गे ना पुमानिति
षण्ढाक्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्ढार्थवाचिनः ।
त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।
अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्ढादीतरद्वयम् ।।[३]

वैजयन्ती कोश में विषयानुसार शब्दचयन की पद्धति दृष्टिगोचर होती है। शब्दों के चयन हेतु इस कोश में कई विभाग किए गए हैं और उन विभागों में ही उस विभाग से सम्बन्धित शब्दों का चयन किया गया है — जैसे प्रथम भाग में (पर्याय भाग में) स्वर्गकाण्ड के आदिदेवाध्याय में देवताओं व उनके परिवारों का उल्लेख है। लोकपालाध्याय में लोकपालों के शब्दों का संग्रह है। भूमिकाण्ड के वनाध्याय में विविध वृक्षों व औषधियों के नामो का संग्रह है तथा पशुसंग्रहाध्याय में विविध पशुओं के नामों का संग्रह है। इसी प्रकार ब्राह्मणाध्याय में तत्सम्बन्धी शब्दों का ही संचयन किया गया है।द्वितीय भाग (नानार्थभाग) में भी शब्दसंचय विषयानुसार किया गया है।

यादव प्रकाश की यह पद्धति पूर्णतः युक्तियुक्त है। उस समय समानार्थक एवं नानार्थक दोनों पद्धतियाँ प्रचलित थीं। अतः दोनो पद्धतियों को समन्वितरूप से अपने कोश में प्रयुक्त कर यादवप्रकाश ने बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। विषयानुसार शब्दचयन की पद्धति द्वारा विषय को समग्ररूपेण समझना सुकूर हो जाता है। एवमेव लिङ्गद्योतक शब्दों द्वारा शब्द का लिङ्ग आसानी से समझा जा सकता है।

---

1 वै.को., परिभाषाध्याय (२-३)

2 वै.को. परिभाषाध्याय (४)
"विन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम्"

3 वै.कौ. परिभाषाध्याय ६,७

वैजयन्तीकोश का शब्दावली को योगदान

यादव प्रकाश बहुमुखी प्रतिभा से मंडित कोशकार थे। उन्होंने अपने कोश हेतु अमरकोश को स्रोत रूप में लिया परन्तु अपने युग की परिस्थितियों के सन्दर्भ में उन्होंने अनेक नए शब्द संस्कृत शब्दावली को प्रदान किए हैं। ये वे शब्द हैं जो अमरकोश, नाममाला व हलायुधकोश में प्राप्त नहीं होते हैं। वे शब्द इस प्रकार हैं —

धनश्रेणी स्थाणु गिरिकर्णिका, सर्पभृता, दक्षा, क्षान्ति, क्ष्रि, ग्मा, हेमा, अब्धि-वस्त्रा, नगाधारा, गिरिस्तनी, कीलिनी, पेरा, बीजसू, रत्नसू, स्वसू[१] इलावृत्त, केतुमाल[२], कुरुवर्ष[३], जम्बूद्वीप, यवद्वीप, मलयद्वीप, शंखद्वीप, कुशद्वीप, वराहद्वीप, सिंहलद्वीप, स्वर्णद्वीप[४] चीनः सरम्भरः विहण्डाः, हुरुष्कराः, सम्भालाः, लम्पाकाः, मुरुण्डा, तोक्षारः, जालन्धराः, तैतुला, टर्कवाह्लीकाः, काश्मीरतुरुष्क, कुंभालकाः, सोवीराः, मुद्गरकाः, भौरिकाः, बङ्गा, व्रतसाल्वाः, पाण्ड्याः, कुन्तलाः, उपहालकाः, चोलाः, दण्डकाः, केरलाः, कुल्याः, सेतुजाः, कुलकालकाः, इषीकाः, हहालाः, दशार्णाः, मालवाः, मेकलाः, भोजाः, कोसलाः, साल्वाः, कुसराः, सैरा, जाङ्गलाः[५] वर्धकिहस्तः[६], अर्धहस्तकः[७], नालिका, पितृनल्व[८], क्रोश, गण्यूति[९], कुहीर, कुहारा, बन्धाकि, फलकि, प्रपा-त्यद्रि[१०], सुदारु[११], अक्ली[१२],रोचनी रसनेत्री, महासना[१३], विगन्धिका[१४],

---

1 वैजयन्तीकोश ३.१.१-४
2 वै.को. ३.१.७
3 वै.को. ३.१.९
4 वै.को. ३.१.१०-१९
5 वै.को. ३.१.२३-४०
6 वै.को. ३.१.५६
7 वै.को. ३.१.५८
8 वै.को. ३.१.५९
9 वै.को. ३.१.६२
10 वै.को. ३.२.१-२
11 वै.को. ३.२.४
12 वै.को. ३.२.६
13 वै.को. ३.२.११
14 वै.को. ३.२.१२

श्रीमकुट, ारुब्ड, ारत्नीवन,अग्निबीज, त्नक्षर, म्र्षिकारम्भ, ोणुक्षरटजकाञ्चना[१], त्रापुष, चन्द्रभीरु, यवीयस, सुभीत, बङ्गजीवन[२], समोलूक, नागमरिज, इन्द्रनील, महानील[३], काटिका, कक्ष्यक, कुन्दिल, वार्क्ष, महाटवी, तृणाटवी[४], भूरुट, करालिक, अगच्छ, जर्ण, रुक्ष, पुलाकी[५], पुरु, निर्यास[६], छल्ली, किनाटक[७], शुङ्गा[८], माढि, मणीचक्र[९], कामाङ्ग, आकन्द, अङ्गनाप्रिय, वेल, करक[१०], मघलालस लावली[११], त्रिपर्णक[१२], काञ्चनार[१३], रचक, वराम्ल[१४], महाशल्का, दूष्याङ्गी, मधुकुक्कुटी, वृकाम्लिका[१५], मल्लिकाकुसुमप्रिय[१६], मुचुलिन्द, एलक[१७], न्युब्ज, मधुच्छद कार्ष्यक[१८], कर्णपूरक[१९], अश्मरीरिषु[२०], कतक, मधु-

---

1 वै.को.३.२.१९-२०,२१
2 वै.को.३.२.२३-२४
3 वै.को.३.२.३०,४०
4 वै.को.३.२.१-४
5 वै.को.३.३.५
6 वै.को.३.३.११
7 वै.को.३.३.१३-१४
8 वै.को.३.३.१७
9 वै.को.३.३.१८
10 वै.को.३.३.२५
11 वै.को.३.३.२६
12 वै.को.३.३.२९
13 वै.को.३.३.४८
14 वै.को.३.३.३३
15 वै.को.३.३.३४
16 वै.को.३.३.३५
17 वै.को.३.३.३६
18 वै.को.३.३.३७,३८
19 वै.को.३.३.४०
20 वै.को.३.३.४१

स्रव[१], गौरशाक[२], कर्पराल[३], विषपुष्पक कार्कद, कण्टकीति[४], महालोघ्र[५], विल्व[६], कालनिर्यास, देवधूप[७], कच्छूदार[८], मुरुङ्गी[९], काष्मर्य, गोपभद्रा, कृष्णवृन्तिका[१०], प्लक्षक[११], हलीमक[१२], शुक्लपुष्प, चिरबिल्वक[१३], अलम्बक[१४], सुयमावनी[१५], सुरपर्णिका[१६] विन्तूडी, विन्वा, कपिप्रिया, शक्तिनारी[१७] अपदरोहिणी[१८], तिरीटका[१९], लताकोलि, गिरिकोलि[२०], गोप-घण्टा, जलकोलि, नरकोलि, सृगालकोलि[२१], तूलफला, त्रिसारा, सुरसाथ[२२],

---

1 वै.को. ३.३.४२
2 वै.को. ३.३.४४
3 वै.को. ३.३.४६
4 वै.को. ३.३.५०
5 वै.को. ३.३.५२
6 वै.को. ३.३.५२
7 वै.को. ३.३.५३
8 वै.को. ३.३.५४
9 वै.को. ३.३.५६
10 वै.को. ३.३.५७
11 वै.को. ३.३.५९
12 वै.को. ३.३.६०
13 वै.को. ३.३.६१-६२
14 वै.को. ३.३.६४
15 वै.को. ३.३.६७
16 वै.को. ३.३.७०
17 वै.को. ३.३.८१
18 वै.को. ३.३.८४
19 वै.को. ३.३.८७
20 वै.को. ३.३.८८
21 वै.को. ३.३.८९
22 वै.को. ३.३.९१,९२,९३

शफरी, श्लक्ष्णपत्रक[१], धातुपुष्पिका[२], शणपुष्पिका[३], षरुका जलजम्बुका[४], तृङ्घ्नी, काकोली[५], चोटलिङ्गक ऋऽटषेणी[६], वाटपुष्पी[७], भीरुपर्णी[८], वृषपर्णी[९], पटुन्विका[१०], तुमुलाक्षक[११], कपिक्रोड[१२], देवमाली, गोधामाली, काकमाली[१३], प्रलोही[१४], रामदपूग, लतापूरा, भूपूग[१५], पारीन्द्र श्वेतपिंगल, हलीक्ष्ण, कूटरु, मृगहिंसकः चुलुकः, मेलमेहिनः, जलप्रिय, तलेक्षण, कुभुख, स्थूलनाल, वसुप्रजा, षडकक्रीडनक, आसनिक, दीर्घरोम, वर्कधूतर्क वाघ्राणल[१६], अश्वारि, जलात्मा गदुदस्वरः हेरम्ब, कृष्णशृङ्गक, कटाह, दंशलालिक, हंसकालीसुत, प्लावी, भीरुचेता, मरुक, निरञ्जन, तृणसंवर, राजीभान, मृदुशृङ्ग, गर्दभाभास[१७], अक्षताडन[१८], अगृहीतदिश[१९], अग्निकण्टिका[२०],

---

1 वै.को. ३.३.९४
2 वै.को. ३.३.९७
3 वै.को. ३.३.९८
4 वै.को. ३.३.१०३
5 वै.को. ३.३.११२
6 वै.को. ३.३.१८५
7 वै.को. ३.३.१२७
8 वै.को. ३.३.१४२
9 वै.को. ३.३.१४३
10 वै.को. ३.३.१४९
11 वै.को. ३.३.१७६
12 वै.को. ३.३.१७०
13 वै.को. ३.३.१८४
14 वै.को. ३.३.१८९
15 वै.को. ३.३.२१८-२१९
16 वै.को. ३.४.१-८
17 वै.को. ३.४८-१६
18 वै.को. ३.९.१३७
19 वै.को. ३.७.२१९
20 वै.को. ३.६.१४

अग्निहोत्रहक्णी[१], अग्रद्रव संहति[२], अङ्गारशाकट[३], आदाली[४], आन्तरालिक[५], अपाण्डुफल[६], आहिण्डिक[७], इत्वास[८], इन्द्रमह[९], उत्तमोत्तभिक[१०], उदरत्राण[११], उद्बन्धयवृषभ[१२], उराह[१३], उल्बणक[१४], उष्ट्रधूमपुच्छि[१५], ऋक्षगन्धिका[१६], और्ध्वरश्यक[१७], और्वशेय[१८], ककुदावर्त[१९], कणकुक्कुट[२०], कण्ठकुणिका[२१], कपिलोहक[२२], कर्णिकारल[२३], कर्तनभाण्ड[२४], कलशीनक[२५],

---

1 वै.को.३.६.१००
2 वै.को.३.८.१४७
3 वै.को.३.६.१३२
4 वै.को.३.३.१६२
5 वै.को.३.५.११९
6 वै.को.३.३.१६६
7 वै.को.३.३.४४
8 वै.को.३.३.१९९
9 वै.को.३.३.६९
10 वै.को.३.३.७२
11 वै.को.३.७.१५४
12 वै.को.३.६.१२२
13 वै.को.३.७.१५४
14 वै.को.३.९.८२
15 वै.को.३.३.१२६
16 वै.को.३.७.१०१
17 वै.को.३.९.८२
18 वै.को.३.३.१२६
19 वै.को.३.३.१९६
20 वै.को.३.६.१७
21 वै.को.३.६.१५१
22 वै.को.३.७.९७
23 वै.को.३.५.३४
24 वै.को.३.९.११७
25 वै.को.३.२.२७

क्लशोदधि[1], काकाणन्ती[2], काचमालिका[3], कापटिक[4], कारकुत्सीय[5], कालकिञ्च[6], कालकुण्डक[7], काश्क्राकट[8], किसिंट्टक[9], कुट्टमित[10], कृत्रफला[11], कुलिङ्गाटी[12], कुशवट[13], कृत्तिकापिञ्जर[14], कृतकोटिकवि[15], कृष्णकोहल[16], केणवायुध[17], कोलिंण्ट[18],कोलीघ[19], क्षुद्रनीवृत[20], क्षोरकार[21], खलेपाली[22], खलूरिका[23], गजविदिभटा, गण्डमालहन्, गुर्मुटिका, गत्वर्त,

---

1 वै.को.३.७.१८२
2 वै.को.३.३.१८०
3 वै.को.३.९.४६
4 वै.को.३.७.२७
5 वै.को.३.१.३८
6 वै.को.३.५.८
7 वै.को.३.५.२९
8 वै.को.३.८.२०
9 वै.को.३.७.१०९
10 वै.को.३.९.९५
11 वै.को.३.८.६०
12 वै.को.३.८.३५
13 वै.को.३.६.१४९
14 वै.को.३.७.९८
15 वै.को.३.६.१७९
16 वै.को.३.९.५८
17 वै.को.३.७.१३४
18 वै.को.३.४.६६
19 वै.को.३.६.१७८
20 वै.को.३.१.४१
21 वै.को.३.७.११७
22 वै.को.३.८.३१
23 वै.को.३.७.१९४

गृण्डिव, गौकरीवेन्धन, गोरक्षतण्डुल, घटिकालवण, घिर्मिण, धृतलेखनी चञ्चटक, चित्राङ्घ्रि, घेल्लाण, छन्नपथ, छादिषेय, छिन्नपुच्छक, जर्त्द, जललम्बिका जातराजि, ज्योतिरानृण्य, झिङ्लिल्ल, तरक्षु, तम्पा, तलपोट, ताम्बूल करङ्किका तार्णलोम, तीरतङ्किका, तूर्यकालभुज, दमण्डक, दारुतक्षणी, दीर्घनिवंश, दृशीकु, द्रोणिक, धर्म-भाण्व, धुर्यावकर्तिक, घुक्षिम, नन्दीचारी, नन्दीमुखी, नागदन्तक, नागोदरी, निधानका, निलिम्पिका, निशुम्भना, निष्टङ्क, नीलिङ्गी, नृपार्हक, पञ्चवीरोहित, पद्मकालनिन्, परि-कोणा, परिवी, पर्युदञ्चन, पलिपादक, पाटलिङ्गिका, पाण्डुसोपाक, पारिकाङ्क्षिक, पारियाणिक, पालुखञ्जन, पिचिण्डिका, पिच्छनद्ध,पिण्ठीक, पुरञ्जक, पृथुशालिका,

प्रक्षराङ्गी, प्राक्पादरज्जु, प्रियनादिका, बुरुल, भद्रमन्द्र, भृशङ्गत, भ्राणञ्जक, भन्दुपाल, भषिघटी, महाकन्द, महाग्रीव, महाघोण्टा, महावुस, महाविल, भार्गर, मातुलनिका, मुचुटी, मुण्डितिका, मुण्ढायोजन, मुनिपिष्टकिन, भेथिक, भेलामणि, भेलामन्द, भोकल्य, यतस्रुच, यन्त्रमुक्त, यशःपटह, याज्यापुट, यावशादन, युगपार्श्वक, योगाञ्जि रक्तशालि, रथगरुत, रथवारक, राज्यलोल्य, रिङ्खोलन, रुण्डक, रुद्रा, रुक्षवालुक रोहणद्रुम, लवणलायिका, लवेटिका, लिपिसन्नाह, लोचमालक, वनको-द्रव, वराहकर्णक, वरुणकुचूषक, वशामख, वहित्रकर्ण, वार्भिक, विप्रशेषित, विरुत-कोद्रव, विशून्यलवण, विश्वहर्यक, वृक्तबर्हिस्, वृश्चिकच्छदा, वोरुखान, शुण्डापान, शेखालीक, सुललिक ।

इस प्रकार अनेक नए शब्द यादव प्रकाश ने शब्दसम्पदा को समृद्ध किया है ।

वैजयन्तीकोश में ऐसे अनेक शब्द दृष्टिगत होते हैं जो विविध भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तनों के कारण इस कोश में आ गए हैं ।

भौगोलिक परिवर्तन के कारण

वैजयन्तीकोश में भारत का भौगोलिक वर्णन इस प्रकार किया गया है—

द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति
नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥
तेन हेमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत्
हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥
इलावृत्तं सौमरेवं सुमेरुं परितो हि तत्
भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥

वर्णवेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ
उदकं तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत्॥[१]

दीपों का वर्णन अमरकोश में प्राप्त नही होता। नाममाला व हलायुध में भी इसका उल्लेख नहीं प्राप्त होता परन्तु वैजयन्तीकोश में जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, यवद्वीप, मलयद्वीप, शङ्खद्वीप, कुशद्वीप, वराहद्वीप, सिंहलद्वीप का वर्णन प्राप्त होता है यथा —

जम्बूद्वीप : कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः
लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना
प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः
मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धि क्षीरोदः कलशोदधिः
अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्रदक्षिणाः
एको वैद्युत्वतो नाम विद्युतवान् यत्र पर्वतः
मालं मैनं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट्
अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा
अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि
शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि[२]

अन्य कई छोटे द्वीपों का भी उल्लेख वैजयन्तीकोश में प्राप्त होता है।[३]

पर्वत वर्णन में अन्तर लक्षित होता है। अमरकोश में लोकालोक, हिमवान, निषध, विन्ध्य, माल्यवान्, पारियात्रक, गन्धमादन, हेमकूट का उल्लेख है।[४]

धनञ्जय की नाममाला में किसी भी पर्वत का नामोल्लेख नहीं मिलता केवल पर्वत के पर्यायवाची ही वहां दिए गए हैं —

तत्पर्यायधरशैलः ——-।

दराभृदचलः शृङ्गी पर्वतः सानुमान् गिरिः
नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च शिखरिः त्रिककुन्मरुत्।[५]

---

1 वैजयन्ती कोश ३.१.५-८

2 वैजयन्तीकोश ३.१.१०.

3 वै.को.३.१.१९-२०

4 अमरकोश, भूमिकाण्ड, शैलवर्ग १,२,३

5 नाममाला ७-८

हलायुधकोश में भी केवल पर्वत के पर्यायों का संग्रह है किसी भी पर्वत विषय में कोई वर्णन नहीं है।[१]

अमरकोश में उपलब्ध पर्वतों के अतिरिक्त निम्नलिखित पर्वत वैजयन्तीकोश में अधिक मिले हैं।

हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः
माल्यवांस्तु प्रस्रवणो हिमवाँस्तु हिमाचलः
रजताद्रिस्तु कैलासो हराद्रिर्महितश्च सः।[२]

सम्भवतः प्राचीन साहित्य में उपलब्ध होने वाले पर्वतों में से जिनका उल्लेख अमरकोश ने नहीं किया अथवा नई सूचना के आधार पर वैजयन्तीकोश ने संकलन किया।

पर्वत पर अनेक धातुएँ एवं मणियाँ उपलब्ध होती हैं। अमरकोश में मनशिशला, गैरिक - इन धातुओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

धातुमनः शिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः[३] **।**

नाममाला में स्वर्ण, रजत, मौक्तिक का उल्लेख मिलता है।

हेमं चाष्टपदं स्वर्णं कनकार्जुनकाञ्चनम्
सुवर्णं हिरण्यं भर्मं जातरूपं च हाटकम्
तपनीयं कलाधौतं कार्तस्वरशिलोद्भवम्।
रुप्यं, रजतं गुलिका शुक्तिज मौक्तिकं तथा[४] **॥**

हलायुधकोश में गैरिक, ताम्र, आरकूट, कांस्य, लोह, सीसक, बङ्ग (टिन) रजत, स्वर्ण, मरकतमणि, पद्मराग, वैदूर्य, सूर्यकान्त, रत्न का वर्णन उपलब्ध होता है।[५]

वैजयन्तीकोश में अभ्रक, शिलाजतु, चन्द्रकान्तमणि, विद्रुम, हीरक, इन्द्रनीलमणि, महानीलमणि, माणिक्यों का वर्णन प्राप्त होता है।[६]

---

1 हलायुधकोश द्वितीयकाण्ड १६५

2 वैजयन्तीकोश ३.२.४,५

3 अमरकोश, भूमिकाण्ड, शैलवर्ग ८

4 नाममाला, ९३, ९४

5 हलायुध, द्वितीयकाण्ड १७०-१७६

6 वैजयन्तीकोश, भूमिकाण्ड, शैलाध्याय, १४, १५, ४०, ४४

राजनीतिक परिवर्तन के कारण

कोश में यह परिवर्तन के कारण राजा के विशेषणों के सन्दर्भ में, विभिन्न सहायकों की संख्या में वृद्धि में तथा आयुधों के नामों में परिवर्तन द्वारा लक्षित होता है।

अमरकोश, धनञ्जय की नाममाला तथा हलायुधकोश इन तीनों कोषों में राजा के पर्याय दिए गए है।[१] परन्तु वैजयन्तीकोष में वे पर्याय तो हैं साथ ही साथ भूशक्र, भूभृग, नरेन्द्र शब्द अतिरिक्त हैं। वह उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों के कारण सम्भव है। अमरकोश, नाममाला व हलायुध में राजा को भूशक्र, भूभृग, नरेन्द्र नहीं कहा गया। राजा को देवराज इन्द्र के साथ नहीं जोड़ा गया परन्तु वैजयन्ती के समय तक यह बात जनसामान्य में प्रचलित हो गई होगी कि राजा धरती पर इन्द्रावतार है। इसके प्रमाणरूप में यह कहा जा सकता है अमर के समय की सप्ताङ्गराज्य की कल्पना में सातों अंग एक दूसरे के पूरक थे

स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्ग कोशो बलं सुहृत्
परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते।[२]

लेकिन वैजयन्ती के समय में राजा सप्ताङ्ग में श्रेष्ठ माना गया।

स्वाम्यमात्यसुहृदकोशराष्ट्रदुर्गबलानि च
सप्ताङ्गमुच्यते राज्यं तत्र मूर्धा नृपः स्मृतः॥[३]

राजा स्वयं शासनाध्यक्ष होता है परन्तु शासन के कार्यों को वह अकेला नहीं चला सकता। अनेक सहायकों की सहायता से वह कार्य करता है। इन सहायकों, परामर्शदाताओं की संख्या समय के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। वैजयन्तीकोष में ज्योतिषी हेतु निगणक व आदेशी[४] शब्दों का प्रयोग है। दूत हेतु मन्त्रज्ञ[५], वणिगभिक्षु, लिङ्गी, कृषीवल वार्तिक, रभू[६]। इन शब्दों के प्रयोग

---

1 अमरकोष, भूमिकाण्ड, क्षत्रियवर्ग १; नाममाला १०; हलायुध ४२१, ४२२

2 कामन्दकीय नीतिसार (४-१)

3 शुक्रनीतिसार (१-६१)

4 वै.को. क्षत्रियाध्याय

5 वै.को. क्षत्रियाध्याय

6 वै.को. क्षत्रियाध्याय

हैं। **यद्यपि** अमर, नाममाला, हलायुध में भी ज्योतिषी, दूत आदि के लिए पर्याय दिए हैं परन्तु वैजयन्ती में ये शब्द अतिरिक्त हैं जो उस काल में इन सेवकों की विशिष्टता सूचित करते हैं।,

कई नए पद भी वैजयन्ती में वर्णित हैं जो अमर, नाममाला, हलायुध में नहीं है। वे हैं —

दण्डपाल[१], पुररक्ष, धीकर्मिक[२], चोरिक, दण्डपाशिक, प्रदेष्टा[३], भाण्डागारिक[४], कार्पटिक, घाण्टिचातिक, सञ्चारिका विचारिका;।

शत्रु के लिए **जिघांसु** शब्द अतिरिक्त है जो वास्तव में ही शत्रु की प्रवृत्ति को सूचित करता है। शत्रु सदैव मारणेच्छुक ही रहता है। शत्रु के लिए ही असहन, दूषक, प्रतिपक्ष विपक्षक

अपराध के लिए खसृम

हाथी, रदी, गर्ज, दन्तावल, महाकाय महामृग, शूर्पककर्ण, मदवृन्दृ कुषी, कम्बु, आदि शब्द अतिरिक्त हैं।

सामाजिक परिवर्तन के कारण

वैजयन्तीकोश के मनुष्याध्याय में अनेक जातियों व उपजातियों एवं वर्णसंकरता का वर्णन है जो अमरकोश नाममाला व हलायुधकोश में प्राप्त नही।

उपवर्णास्तु, संङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्यजातयः
एकवर्णाः सुवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जतिाः।[५]

व्याभिचारसुत, आयोगवी भृज्जकण्ठी खषी, परजकी तीवर, सिद्रण्डी कारावती, वरुटी तथा **एते ब्राह्मणपुत्रा स्युः माना योनिसमुद्भवा**[६] कहते हुए वर्णसंकरता का वर्णन है।

---

1 वै.को. क्षत्रियाध्याय

2 वै.को. क्षत्रियाध्याय

3 वै.को. क्षत्रियाध्याय

4 वै.को. क्षत्रियाध्याय

5 वै.कोश ३.५.२-३

6 वै.कोश ३.५.११

व्रात्यपूर्व, क्षत्रपूर्व, क्षत्रपूर्व विप्रकुण्ड, क्षत्रकुण्ड शूद्रकुण्ड[१] पुल्कस, कैवत[२] पेलव, जम्भक[३] भारुष[४]

शब्द वैजयन्ती कोश में अतिरिक्त हैं जो सामाजिक परिवर्तन के कारण ही इस कोश में आ गए होगें।

वैजयन्ती कोश में न्याय-व्यवस्था संबंधी शब्दों में भी आधिक्य दृष्टिगत होता है। यथा मृषासाक्षी, प्रतिभूर्लग्नक, संदशित, अभिशस्त, वसु क्षारिक।

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि वैजयन्तीकोश में प्राप्त नए शब्द भौगोलिक, राजनैतिक व सामाजिक परिवर्तनों को लक्षित करते हैं।

साहसांक विक्रमादित्य का संसारावर्त

विश्वप्रकाश ने साहसांक का नाम्ना परिगणन किया है।[५] ज़खारिया ने शब्दकल्पद्रुम V. पृ. ३४४ के आधार पर विक्रमादित्य और साहसांक को एक ही माना। परन्तु फॉल इसे ठीक नहीं मानते। दोनों कृतियों में वायु के पर्याय भिन्न हैं। अमरकोष पर भानुजि दीक्षित का भी यही अभिमत है[६]

विक्रमादित्य का धर्म

अंश १६ में जम्बू नदी का वर्णन है जिसके आधार पर फॉगल इसे हिन्दू मानता है।[७]

मुझे प्रतीत होता है कि विक्रमादित्य जैन रहा होगा तथा संसारावर्त उसका अन्वर्थ दार्शनिक विशेषण रहा होगा। जैन धर्म के अनुसार पुद्गल संसार में

---

1 वै.कोश ३.५.६२-६३

2 वै.को. ३.५.९१

3 वै.को. ३.५.८५

4 वै.को. ३.५.१०३

5 विश्वप्रकाश, १९११ - भूमिका हारावली V २७५
शब्दार्णव उत्पलिनी संसारावर्त इत्यपि।
कोशा वाचस्पतिव्याडिविक्रमादित्यनिर्मिताः॥ Vogel पृ. ३०८

6 Birwe, R. JAOS. ८५.पृ.५२४ Birwe, R. JAOS. ९३.पृ.४६६

7 Vogel. पृ.३०८

घूमता रहता है[१] जिसे संसारावर्त विशेषण से विक्रमादित्य ने अभिव्यक्त किया है। यह उसके विनम्र एवं आत्मक्षुद्रता का सूचक है।

स्रोत

कुछ अंश वाचस्पति के शब्दार्णव तथा अन्य व्याडि की उत्पलिनी में उपलब्ध होते हैं जो इस के स्रोत बने अथवा उन्हीं स्रोतों से गृहीत थे जिन का प्रयोग वाचस्पति तथा व्याडि ने किया।[२] (द्र. वाचस्पति, व्याडि)

विक्रमादित्य का संसारावर्त

पुरुषोत्तमदेव ने हारावली में विक्रमादित्य के कोश का उल्लेख किया है।[३]

बिर्वे इस में अल्पाच्तरम् का अतिक्रमण मान कर इसे कालक्रम के अनुसार निश्चित करते हैं।[४]

व्याकरणशास्त्र में विशेष अभिप्राय से अल्पाच्तरम् का अतिक्रमण होता है परन्तु कालक्रम की विचारधारा शास्त्रीय न होकर आधुनिक है। अतः बिर्वे का यह अभिमत काल्पनिक सा प्रतीत होता है।

शैली

फॉगल[५] के अनुसार यह पर्यायवाची कोश रहा होगा। इसमें अनेक आकरों से रत्न एकत्रित किए गए (समलसत्खानिरत्नवान्)

संसारवर्त के उद्धरण

इसे सदानन्दमणि ने रामाश्रम की सिद्धान्तचन्द्रिका पर उद्धृत किया है।[६]

---

1 द्र. जैनेन्द्र सिद्धान्तकोश — आकाश गति, पुद्गल तथा अन्य सन्दर्भ असैम अनन्तखुत्तौ पुग्गलपरियत्त संसारे द्र. Narang, S.P. SPAIOC Baroda, १९९८

2 Vogel, पृ. ३०८ बिर्वे के अंश - २,८,११,१८,६,१९,३३ तथा ३३

3 विक्रमादित्य का एक भी पूर्ण पद्य उपलब्ध नहीं होता।

4 बिर्वे ने ५८ उद्धरणों से २६ टुकड़े निकाले हैं।

5 पृ.३०८

6 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I पृ.९९

भोज[१]

भोज के सरस्वतीकण्ठाभरण के टीकाकार **आजद** के अनुसार भोज ने ८४ ग्रन्थ लिखे। प्रभावकचरित में इसे व्याकरण, शब्दालङ्कार, दैवज्ञ, तर्कशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, राजसिद्धान्त, तरुशास्त्र, वास्तुशास्त्र, अङ्क, शकुन, अध्यात्म, स्वप्न सामुद्रिक, प्रश्नचूडामणि, अर्थशास्त्र तथा मेघमाला का कर्ता भी माना जाता है।[२] ऑफ्रेन्ट के अनुसार एक ग्रन्थ भी भोज के द्वारा लिखा हुआ नहीं था।[३]

नाममालिका — भोजनिघण्टुकृत भोजदेव ने ३ अध्यायों में पर्यायवाची कोश की रचना की।[४]

नाममालिका भोज[५]

भोज — काव्यशास्त्र[६]

भोज — काल[७]

काव्यात्मक रचनाएं[८]

भोज के उद्धरण

भोजराज केशवस्वामी के नानार्थ सङ्क्षेप में उद्धृत हैं।[९] अनर्धराघव पर पञ्जिका में पूर्ण सरस्वती ने भी इन्हें उद्धृत किया है।

---

1 Aufrecht, T.CC. भोज

2 प्रभावकचारित चन्द्रप्रसूरिकृत श्लोक ७५-७८

3 Kulkarni, E.D. Śālihotra of Bhoja, Poona, 1953 पृ. XVIII

4 NCC. X. पृ.४६

5 Kulkarni, E.D. 2

6 भोज. विश्लेषण एवं अनुसन्धानों के लिए द्र. Kane, P.V History of Sanskrit Poetics; De, S.K. Sanskrit Poetics (हिन्दी में भी अनूदित)

7 Ganguly, D.C. History of Paramar dynasty, Dacca, 1933; Raychundhri, H. Dynastic History of Northern India. Calcutta, 1936

8 Warder : Indian Kavya Literature VI, 1992. Sections 4204, 4206, 4299, 4307 तथा 4501 से (4506 श्रृङ्गार मञ्जरी)

9 Vogel. पृ.३४६ से Unnithiri, N.V.P. Pūrṇasarasvati — As a Versatile Scholar. p.116 on Anargharāghava

भोज – जीवनी

परमारवंश के धारा के राजा भोज जो संस्कृत कवियों एवं शास्त्रकारों के आश्रयदाता थे। लगभग १०१८ से १०६० ई. तक राज्य करते रहे। इन के साथ अनन्त कृतियाँ जोड़ी जाती हैं।[१]

हेमचन्द्र

बारहवीं शताब्दी में सारा उत्तर भारत विदेशी आक्रमणों से त्रस्त था, हेमचन्द्र धार्मिक, साहित्यिक एवं शाब्दिक कार्यक्रमों में व्यस्त थे। एक ओर वे सर्वधर्मसमन्वय उत्पन्न कर रहे थे दूसरी ओर विविध प्रदेशों से विविध विद्वानों एवं आचार्यों द्वारा लाए गए शब्दों का अपने कोशों में संकलन कर रहे थे। इन्हीं दृष्टियों से कलिकाल-सर्वज्ञ हेमचन्द्र का कोशशास्त्र एवं व्याकरणशास्त्र को योगदान सर्वोत्कृष्ट कहा जा सकता है। जब हस्तलेख जलाए जा रहे थे हेमचन्द्र उन्हें अपनी कृतियों में सुरक्षित करने की चेष्टा कर रहे थे। समकालिक एवं प्राचीन सब धर्मों के दाय एवं विचारधारा को हेमचन्द्र ने अपनी कृतियों में संजोया जिस के लिए उन्हें **कलिकालसर्वज्ञ** की उपाधि से विभूषित किया गया।

हेमचन्द्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हेमचन्द्र का जीवन सोमप्रभ के कुमारपालप्रतिबोध[२], प्रभावकाचार्य के प्रभावकचरित[३], मेरुतुङ्ग के प्रबन्धचिन्तामणि[४], राजशेखर के प्रबन्धकोश[५], कुमारपाल चरितसङ्ग्रह[६] तथा पुरातनप्रबन्धसङ्ग्रह[७] में उपलब्ध होता है। उनका नाम चाङ्गदेव था जो मोढ परिवार के श्रेष्ठी चाचिग के पुत्र थे जो धुन्धुक के वासी थे। उनकी माता का नाम पाहिनी / चाहिनी था। पाहिनी

---

1 Raghavan, V. Bhoja's śṛṅgāra prakāśa, 1963 (Revised 1978); हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध है अनु. पी.डी. अग्निहोत्री, १९८१.

2 सम्पा. मुनिजिनविजय, बड़ोदा, १९२०

3 सम्पा. मुनिजिनविजय, कलकत्ता, १९४०

4 सम्पा. मुनिजिनविजय, शान्तिनिकेतन, १९३३

5 सम्पा. मुनिजिनविजय, शान्तिनिकेतन, १९३५

6 सम्पा. मुनिजिनविजय, कलकत्ता, १९५६

7 सम्पा. मुनिजिनविजय, कलकत्ता, १९३६

के भाई ने उसे देवचन्द्रसूरि से मिलाया जिन्होंने उसे १०९३ ई. में जैनमत में प्रवेश करवाया तथा ११०९ ई. में सूरि पद पर प्रतिष्ठित करके उसका नाम हेमचन्द्र रखा।

हेमचन्द्र ने प्रशंसात्मक शब्दों में सिद्धराज जयसिंह की भूरि प्रशंसा की जिससे प्रसन्न होकर सिद्धराज की मलय पर विजय पाने के उपरान्त हेमचन्द्र से मित्रता हो गई। सिद्धराज के अनुग्रह पर हेमचन्द्र ने उसी के नाम पर सिद्धहैमव्याकरण की रचना की तत्पश्चात् हेमचन्द्र ने सिद्धराज के साथ रैवतक, सिंहपुर, साङ्कलीग्राम आदि तीर्थस्थानों का भ्रमण किया। द्व्याश्रयकाव्य की रचना भी जयसिंह के शासनकाल में ही हुई थी।

सिद्धराज की कुमारपाल से शत्रुता के कारण हेमचन्द्र ने कुमारपाल को अपने हस्तलेखों में छिपाकर उसकी रक्षा की जिससे कुमारपाल ने राज्य प्राप्त करने के बाद स्वयं को हेमचन्द्र का सेवक बनने की उद्घोषणा की।

जैनधर्म के समर्थक हेमचन्द्र से ब्राह्मण ईर्ष्या एवं शत्रुता करते थे जिससे अपना बचाव हेमचन्द्र हास्य वार्ता तथा वाद विवाद करके करते थे।

जयसिंह और कुमारपाल दोनों के शासनकाल में ही हेमचन्द्र ने जैन धर्म का प्रवर्तन किया। जैन धर्म के प्रवर्तक होने के साथ-साथ हेमचन्द्र मानवता को भी स्वीकार करने वाले व्यक्ति थे। ११७२ ई. में कुमारपाल के शासनकाल मे इनकी मृत्यु हो गई।[१]

---

1 विविध कथाओं एवं आख्यानों के लिए द्र. Bühler, G. The life of Hemacandrācārya (मूल जर्मन) अंग्रेजी अनुवाद पटले, मणिलाल, शान्तिनिकेतन, १९३६ ; Kane and De (Poetics); उपर्युक्त प्रबन्ध, शास्त्री, नेमिचन्द्र ,आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन, एक अध्ययन, वाराणसी १९६३; मुसलगांवकर, वी.बी. आचार्य हेमचन्द्र, भोपाल, १९७१, Narang, S.P. Hemacandra's Dvyāśrayakāvya. A literary and Cultural study, Delhi, 1972; Vogel पृ.३३८ हैमस्मृति (सम्पा. कुमारपाल देसाई) हेमचन्द्राचार्य जन्म शताब्दी महोत्सव समिति, अहमदाबाद, १९८९ (दृष्टिपथ में नहीं आई) **हेमचन्द्र : विविध पक्षों पर निबन्ध — क्षेत्र :** व्याकरण, प्रमाणमीमांसा, काव्यशास्त्र, कोषशास्त्र, साहित्य, दर्शन, प्राकृत, अपभ्रंश, मौलिकता मुक्तक, चरित, समकालिक राज्यव्यवस्था तथा उत्तराधिकार है वाङ् वि. १९९०; **देवतावाची शब्द** फक्का, सुषमा, देवतावाची शब्दों का विकास - संस्कृत कोषों के आधार पर एम.फिल् लघुशोधप्रबन्ध (unpublished) Delhi University 1978 done under the supervision of Prof. S.P. Narang.

कृतियाँ

कोश

हेमचन्द्र - कोषकार के रूप में

हेमचन्द्र ने अपने पूर्ववर्ती अनेक कोशों को, विशेष रूप से गौड़[१] वासुकि व्याडि, धनपाल, वाचस्पति[२] तथा भामह के कोश, जो देशीनाममाला के स्रोतों में से एक था।तथा हलायुध को अपनी कृतियों के लिए प्रेरणास्रोत एवं स्रोत बनाया।[३] हेमचन्द्र के ग्रन्थ अनेक पूर्ववर्ती लेखकों के नामोल्लेख के कारण कालक्रम के निर्धारण के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

अभिधानचिन्तामणि / नाममाला हेमचन्द्रकृत[४]

प्रतिपाद्य

हेमचन्द्र बहुत जागरूक कोषकार प्रतीत होते हैं। इन्होंने व्यवहार में आने वाले अधिकांश शब्दों को संगृहीत किया है तथा अपने से पूर्व विद्यमान लगभग

---

1 Vogel, पृ.३५७

2 Böhtlingk, Otto. Ed. Abidhānacintāmaṇi - Preface p.VII

3 Abhidhānaratnamālā Ed. Aufrecht, 1861 p.vi Bühler : WZKM I. p.4; Zachariae : GGA 1894 pp.817, 822;

4 हस्तलेखों के लिए द्र.NCC. I. पृ.२९२-२९३
हेमचन्द्र कोशशास्त्र का योग Shelat, Bharata, K Lexicographical Contribution of Ācārya Hemacander है. वाङ्.वि.पृ.१०७-११६ अतिरिक्त हस्तलेखों के लिए NCC. X. पृ.४६-४७ सम्पा. आटो ब्यूहटलिंग तथा चार्ल्ज रिउसेण्ट पीटर्जबर्ग,१८४७; कलकत्ता,१८७७; अभिधानसङ्ग्रह बम्बई,१८९६ (पुनर्मुद्रित); यशोविजय ग्रन्थमाला संख्या ४१,४२ भावनगर,१९१५,१९२० सम्पा. Indexed by V. Miśra. Calcutta, १८०७-१८०८ (together with Anekārthasaṅgraha); षट्कोशसङ्ग्रह में, काशी, १८७३-७४ में; Bhattacharya, N.C. कलकत्ता,१९०७-०८ (बङ्ग अनुवाद सहित);Kaślkar, V.J. Bombay, 1924-25 (रत्नप्रभा,शेष,शिलोञ्छ तथा सुधाकलश की एकाक्षर नाममाला सहित); सागरनन्दसूरि- सूरत, १९४६ (शेष, शिलोञ्छ, लिङ्गानुशासन, निघण्टुशेष, सुधाकलश का एकाक्षरनामवाला, पुरुषोत्तमदेव का द्विरूपकोश (शब्दभेदप्रकाश सहित); हरगोविन्द शास्त्री (मणिप्रभा हिन्दी व्याख्या) सहित,वाराणसी, १९६४ द्र. अभिधान चिन्तामणि अथवा नाममाला See also A.R. IX 287-322; जैनसिद्धान्त भास्कर VII. ii p.79

८०० वर्षों के कोषों एवं साहित्य को अपना आधार बनाया है।[१] हेमचन्द्र के कोष की रचना शैली हलायुध की अपेक्षा अधिक विकसित तथा वैज्ञानिक है।[२] एक ही पद्य में अधिकाधिक पर्याय देने का प्रयत्न किया है।[३]

अभिधान चिंतामणि — यह समानार्थी कोष है तथा पांच कांडों मे विभक्त है।

प्रथम देवाधिदेव कांड है। सर्वप्रथम शब्दों के विभिन्न पर्याय तथा रूढ़ बन जाने के कारण दिये गये हैं तत्पश्चात् जैन देवी देवताओं का विस्तार से वर्णन दिया गया है।[४]

द्वितीय देवकांड है। सर्वप्रथम स्वर्ग के पर्याय, देवता पद के पर्याय, नक्षत्र तारागण, समुद्र, समय, ऋतु अन्तरिक्ष, मेघ, दिशा आदि के पर्याय, इसके पश्चात् हिन्दू देवी-देवताओं - इन्द्र, अश्विनौ, विश्वकर्मा, यम, वरुण, कुबेर, यक्ष किन्नर, शिव, दुर्गा, स्कन्द, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु बलदेव, लक्ष्मी, मदन, बुद्ध (बुद्ध को पुनः हिन्दू देवी-देवताओं में सम्मिलित किया गया है) वाक, जैन साहित्य, वेदान्त, वेदांग आदि के पर्याय दिये गये हैं। संगीत, वाद्यकला, रस विवेचन, अन्य मानसिक एवं चारित्रिक गुण एवं विकार, अभिनेताओं, राजपरिवार एवं सामान्य परिवारों के आपसी सम्बंधों का विशद विवेचन किया गया है।[५]

तृतीय मर्त्यकांड है। इसमें विस्तारपूर्वक मनुष्यों के पर्याय, विभिन्न चारित्रिक गुण, विभिन्न आधारों पर मनुष्यों की सामाजिक स्थिति आदि का निरूपण किया गया है। खाद्यान्न, रसायन, वस्त्र, मनुष्य की संवेगिक विशेषताओं, मनुष्य से सम्बन्धित क्रियाओं एवं वस्तुओं आदि के नामों का संग्रह है।[६]

---

1 गांधी, भगवान लालचन्द्र, अभिधान चिंतामणि, प्रस्तावना, पृ.३

2 Aufrecht, Th. - Halāyudha's Abhidhāna Ratanmālā, Preface, p.6

3 उदाहरणार्थ विष्णु देवता के पर्यायों में एक श्लोक २/२१४ में विष्णु देवता के २३ पर्याय दिये गये हैं।

4 ८६ श्लोकों में निबद्ध

5 ३३६ वही

6 ५९८ वही

चतुर्थ तिर्यक् कांड है। इसमें पृथ्वी, जनपद, देश के विभिन्न भागों के नाम, खनिज, रत्न, आदि के नाम संगृहीत हैं। इसी कांड में जल, विभिन्न जलस्रोत एवं प्रणालियां, वायुकायः, वनस्पतिकायः के नाम तथा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय विभिन्न जीवों का वर्गीकरण स्थलचराः तथा खचराः विभागों में किया गया है।[१]

पंचम कांड नरक कांड है। इसमें नरक तथा नरक सम्बन्धी यातनाओं आदि का वर्णन है।[२]

षष्ठ सामान्य कांड है जिसमें जगत् जीव, आत्मा जन्म आदि दार्शनिक तत्त्व शब्द, ध्वनि आदि अन्य अमूर्त पदार्थों एवं मानसी भावनाओं, इच्छाओं गुणों तथा लोक व्यवहार का वर्णन किया गया है।

इस प्रकार सम्पूर्ण अभिधान चिंतामणि १५४२ श्लोकों में निबद्ध है।

अभिधानचिन्तामणि — सामान्य विचार

इसमें हेमचन्द्र ने रूढ, यौगिक एवं मिश्र शब्दों को संगृहीत किया है। इसका आधार है व्युत्पत्तिरहित शब्द यथा आखण्डल; गुण से अन्वित यथा नीलकण्ठ; क्रिया से सम्बद्ध यथा स्रष्टृ तथा सम्बन्ध से युक्त यथा मनु से मानव। विरोधी शब्दों को नञ्, इतरादि से भी अभिव्यक्त किया गया है यथा सितेतर अथवा असित। मिश्रों का विभाजन परावृत्तिसह तथा परावृत्त्यसह (यथा गीर्वाण) के आधार भी किया गया है। शब्दों का वर्गीकरण देवाधिदेव, देव, नर, तिर्यञ्ची, एकेन्द्रिय (= पृथिवी, अम्बु, तेजस्, वायु तथा मही से उत्पन्न होने वाले) तदनन्तर द्वि (कृमि); त्रि (पीतक) तथा चतुरिन्द्रियों (लूतादि) का संनिवेश किया गया है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रियों एवं नैरयिकों का उल्लेख है। नारक तथा साधारण के पश्चात् अव्ययान्त साधारण शब्दों को संगृहीत किया गया है। देवाधिदेव काण्ड जैन तीर्थङ्करों से प्रारम्भ होता है जो प्रायः जैन देवशास्त्र का अनुकरण करता है। ये नाम प्रायः अमरकोश में उपलब्ध नहीं होते। तीर्थङ्करों अथवा शलाकापुरुषों के अनन्तर उन की माताओं, वाहनों, देहलक्षण, आहार, देवों से सम्बन्ध, धर्म से सम्बन्ध तथा साधनाओं का उल्लेख है। धर्मोपदेष्टा,

---

1 ७ श्लोकों में निबद्ध है।

2 ७ वही

उपाध्याय, पाठकादि आचार्यों एवं शिष्यों के व्रतों का सङ्ग्रह उपलब्ध होता है। देवकाण्ड में सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारा, ग्रह - उनके लक्षण, स्वरूप तथा काल वाची शब्द हैं। काल चक्र का विभाजन जैन सिद्धान्तों के अनुसार अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी आदि विपरीतवृत्तियों के संयोजन से किया गया है। सामान्य काल का विभाजन लोक से गृहीत है। तदनन्तर मेघ, दिक्, प्रदिक् — उनके स्वामी, पत्नियां तथा वाहनादि के संग्रह हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि हेमचन्द्र के संग्रह के स्रोत अमरकोश से अधिक हैं तथा इनमें पौराणिक, तान्त्रिक तथा आगमिक साहित्य का संकलन भी किया गया है। सम्भवतः ८०० वर्ष की नामावलि परम्परा का आश्रय भी हेमचन्द्र ने लिया हो।

बौद्धसाहित्य के शब्द निस्सन्देह हेमचन्द्र ने संगृहीत किए हैं।

हेमचन्द्र के अभिधानसङ्ग्रह के स्रोतरूप अनेक कोशों के अतिरिक्त बृहत् व्याकरण परम्परा भी थी — विशेषरूप से सिद्ध हैम शब्दानुशासन की बृहद्वृत्ति जिस में अनेक तन्त्रों के शब्द संगृहीत किए जा रहे थे। अमरकोश के समान हेमचन्द्र ने भी अपने पूरे सङ्ग्रह का अभिधानचिन्तामणि में प्रयोग किया।

मर्त्यकाण्ड में लोक में प्रचलित अनेक शब्द जो लाक्षणिक भी थे, अन्तर्भूत कर लिए गए। इस सूची में भृत्यों के शब्द परिगणित किए जा सकते हैं जहां डिङ्गर इत्यादि लौकिक शब्द भी हैं। माया जो जैन दर्शन में निषिद्ध थी, के शब्दों की शृंखला संगृहीत कर दी गई। खाने पीने के जो शब्द कई स्थानों से आए थे, अभिधानचिन्तामणि में उपलब्ध होते हैं।[१] इनमें भिस्सटा, मस्तु, आणविलेपि, तरला, कृसर, त्रिसर, पोलिका, पौलि, निष्ठान, तेमन, करम्भ, पिष्टवर्ति, चिक्कस, मत्स्यण्डी, फणित, पेयूष, भटित्र, भरूटक, पिच्छिल, विजिविल, विज्जल, गुडेरक, गाडोल, कवक, गण्डोल इत्यादि आते हैं।

---

1 तु. शास्त्री, नेमिचन्द्र हेमचन्द्रकृत शब्दानुशासन का अध्ययन १९६३ तथा Narang Satya Pal. Hemacandra's Dvyāśrayakāvya. A literary and Cultural study Delhi, 1972; **शर्मा मञ्जु** - त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित का सांस्कृतिक अध्ययन (अप्रकाशित शोधप्रबन्ध), दिल्ली १९७८

महान् राजाओं के साथ समकालिक परमार्हत राजर्षि कुमारपाल का नाम भी ग्रथित है जो इस बात का संकेत है कि अत्याधुनिक शब्दों का संग्रहण अभिधानचिन्तामणि में किया जा रहा था। राज्यव्यवस्था के सभी समकालिक शब्द भी संगृहीत हैं जो मध्यकालीन व्यवस्था के अनुसंधान के लिए उपादेय हैं पर उन का कम प्रयोग किया गया है। तिर्यक्काण्ड में पृथिवीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय तथा वनस्पतिकाय का विभाजन भी जैन दर्शन से अनुप्राणित प्रतीत होता है।

वैदिक देवशास्त्र को गौण मानकर हुए उसे सामान्य काण्ड में रखा गया है।

अभिधानचिन्तामणि — तकनीक[१] यौगिक शब्दों में स्वस्वाभिसम्बन्ध यथा भूपाल, भूधन; जन्यजनक सम्बन्ध यथा आत्मज, आत्मरुद्ध; धार्यधारणसम्बन्ध यथा वृषध्वजः तथा पिनाकपाणि; योज्ययोजकसम्बन्ध यथा अमृतभुज्; पतिकलत्रभावसम्बन्ध यथा शिवकान्ता, शिववधू; सख्यसम्बन्ध यथा श्रीकण्ठसख, वाह्यवाहकसम्बन्ध यथा वृषगामी, वृषासनः; जातेयसम्बन्ध यमस्वसा; आश्रयाश्रयिसम्बन्ध द्युसदन, दिवौकस; वध्यवधकभावसम्बन्ध यथा पुरद्वेषी, पुरारि।[२]

देश्यशब्दः — यथा पूलिका, पोलिका, पोलि, पूषिका, पूपली, लड्डुक, चोटी, शाटी, तरवारि, निरसणी, चालनी।

व्याख्याएं[३]

— स्वरचित व्याख्या

— अवचूरि (अज्ञातलेखक)

— अज्ञातकर्तृत्व

— कुशलसागरगणि कृत

---

1 Shelat Bharati, K. है.वाङ्.वि.पृ.१०८-१०९; Ghai, Ved Kumari वही.पृ.१२८

2 अन्य सम्बन्धों के लिए — द्र.Ghai, Ved Kumari है.वाङ् वि.पृ.१२९

3 NCC. I. पृ.२९३;Vogel. पृ.३३८; आफ्रेख्ट् पुण्यविजय राघवन्,जिनरत्नकोश (वेलङ्कर) आदि की ग्रन्थ सूचनाओं के आधार पर

— व्युत्पत्तिरत्नाकर - देवसागरगणिं अथवा देवविमलगणिकृत

इनके गुरु अञ्चलगच्छ के रविचन्द्र पण्डित थे जो कल्याणसागर सूरि की छत्रछाया में थे (१६१३-१६६१ ई.)

— नरेन्द्रसूरिकृत

— नामसारोद्धार - वल्लभगणिकृत

(द्र.सारोद्धार)

यह कृति लेखक की बृहत् रचना नामनिर्णय, जिसकी रचना जोधपुर में ई. १६६७ में हुई, से संकलित है। इस का अन्य नाम सारोद्भारवृत्ति भी है।[१]

ये खरतगच्छ निवासी ज्ञानविमल पाठक के शिष्य थे। इनकी गुरुवंशावली में जिनचन्द्रसूरि तथा जिनसिंहसूरि हैं। (१५५५-१६२० ई.)

— शुभविजय गणि कृत

— साधुरत्नकृत

— महेन्द्रसूरिकृत[२]

व्याख्याकार

— विविक्त नाम सङ्ग्रह - भानुचन्द्रगणिकृत

यह मुख्यतः शब्दों की व्युत्पत्तियों पर बल देता है।[३] अकबर ने उपाध्याय उपाधि से इनका सम्मान किया।[४]

अभिधान चिन्तामणि का बृहत् रूप बृहदभिधानचिन्तामणि — अप्रकाशित[५] है।

हेमचन्द्र के पूरक ग्रन्थ

सम्भवतः हेमचन्द्र के शिष्य / प्रशिष्य जो पाटण में रहते थे तथा अनेक भागों से जैनधर्म के सन्दर्भ से वहां पधारते थे, विविध भाषाओं, विशेषतः

---

1 NCC. X. पृ.४६

2 वही

3 Vogel. पृ.३३७

4 द्र. भानुचन्द्रगणिचरितम्

5 NCC. I. p.293

स्थानीय भाषाओं, प्रचलित कोषों यथा वैजयन्ती तथा अनेक लुप्त कोशों को हेमचन्द्र के मूल ग्रन्थों के परिशिष्ट अथवा मिलते जुलते नामों के रूप में जोड़ते जाते थे।

इस प्रकार के कोश शेषाः, शेषाख्यनाममाला, शेषसङ्ग्रहनाममाला तथा शेषसङ्ग्रहनामोद्धार इत्यादि नामों से प्रचलित हो गए। ये उसके पूरक ग्रन्थों के रूप में अथवा स्वतन्त्र ग्रन्थों के रूप में प्रसिद्ध हो गए। कई कोशकार इन्हें अपने गुरु हेमचन्द्र के नाम से भी जोड़ने लगे यथा महेन्द्रसूरिकृत अनेकार्थ-कैरवकौमुदी।[१]

अभिधानचिन्तामणि के पूरक

अभिधानचिन्तामणि (नाममाला) शेष सङ्ग्रह[२] (परिशिष्ट)

इस पर वल्लभमणि द्वारा प्रणीत शेषसङ्ग्रहसारोद्धार नाम की एक टीका भी उपलब्ध है।[३]

शिलोञ्छनाममाला तथा उस पर श्रीवल्लभ की वृत्ति[४] अथवा

अभिधानचिन्तामणिशिलोञ्छ

जिनदेवमुनीश्वरकृत[५]

अज्ञातकर्तृक शेषसङ्ग्रहनाममाला — हेमचन्द्र की अभिधानचिन्तामणि पूरक[६]

शेषसङ्ग्रहनामोद्धार - हेमचन्द्र की अभिधानचिन्तामणि का पूरक[७]

---

1 द्र. Vogel. पृ.३३८ तथा Sharma, Sudha (1994)

2 सम्पा. अभिधान सङ्ग्रह बम्बई, १८९६; पुनर्मुद्रित दिल्ली, १९८१. संख्या ७, पृ. १-८

3 NCC. I. 294

4 सम्पा. विनयसागर, अहमदाबाद, १९७४

5 सम्पा. अभिधानसङ्ग्रह (पुनर्मुद्रित) दिल्ली, १९८१ संख्या - ११ पृ. १-५

6 Vogel पृ. ३३८

7 वही

हेमचन्द्रकृत अभिधान चिन्तामणि के पूरक ग्रन्थ[१]

अभिधानचिन्तामणिनाममालाबीजकानि (अप्रकाशित) तथा अभिधानचिन्तामणिसूची[२]

अभिधानचिन्तामणि — अनुकरण

पञ्चवर्गसङ्ग्रहनाममाला - शुभशीलगणिकृत

ये मुनि सुन्दसूरि के शिष्य थे। (१३७९-१४४६ ई.)। इसमें न केवल अभिधानचिन्तामणि का अनुकरण है

अपितु हेमचन्द्र के अनेकार्थसङ्ग्रह से भी सामग्री गृहीत है।[३]

अनेकार्थध्वनिमञ्जरी

यह हेमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध है[४] द्र. महाक्षपणक

नानार्थकोश[५]

द्र. अनेकार्थसङ्ग्रह

अन्य नाम

अनेकार्थकोश[६]

नानार्थशब्दानुशासन[७]

---

1 NCC I. पृ.२९४ (हस्तलेख) इस पर वल्लभगणिकृत शेष सङ्ग्रहन्सारोद्धार व्याख्या भी उपलब्ध है।
(NCC. I. पृ.२९४)

2 इस सूची व निर्माता मैथिल विद्याकर मिश्र है (NCC. I. पृ.२९४)

3 Vogel. पृ.३३९

4 NCC. I. पृ.२२२

5 सम्पा. (द्र.) अभिधानचिन्तामणि; (प्रथम संस्करण) शुद्धियां - Zachariae, T. Beitrāge Zur Indishen Lexicographie, पृ.७८; षट्कोशसङ्ग्रह, १८८४; Zachariae, with extracts from comm. by Mahendra Sūri; अभिधानसङ्ग्रह,१८९३ (पुनर्मुद्रित - दिल्ली) १९८१ पृ.१-६९ Hoshing, J. Index by G. Pandey & Joshi, J. Benaras, 1929; Jinendra Vijayagaṇi, 1972; विश्लेषण:Sharma, Sudha (1994)

6 NCC. X पृ.३६

द्र. अनेकार्थसङ्ग्रह

अनेकार्थसङ्ग्रह - उद्धरण

इसमें माघ के शिशुपालवध तथा बाण के हर्षचरित के उद्धरण मिलते हैं।[१]

अनेकार्थकैरव[२]

अनेकार्थकैरवकौमुदी[३]

कैरवाकर कौमुदी[४]

अनेकार्थशेष

यह हेमचन्द्र के नाम से हस्तलेखों में ज्ञात है। सम्भवतः अव्ययों पर पूरक ग्रन्थ अनेकार्थशेष ही यह ग्रन्थ हो।[५]

अनेकार्थसङ्ग्रह — व्याख्या

उपसर्ग वृत्ति — सिद्धिचन्द्रगणिकृत द्वितीय व्याख्या है।[६]

अनेकार्थसङ्ग्रह — पूरक

अनेकार्थसङ्ग्रहशेष — जिन प्रभसूरिकृत[७] १२९२-९३ ई.

निघण्टु शेष[८]

---

8 NCC. X पृ.३८

1 सुधा शर्मा (१९९४) ने Böhtlingk, Sternbach, Ghatage के सुभाषित तथा अन्य कोषों के आधार पर एवं सत्यपाल नारङ्ग की सद्यः प्रकाश्यमान संस्कृतकाव्यपादानुक्रमणिका के आधार पर अनेक उद्धरण ढूंढे हैं।

2 सम्पा. M/S सोमचन्द दी. शाह बुकसैलर्स & Publish पालिताना (गुजरात) हर्षपुष्पजैनग्रन्थमाला

3 द्र.Sharma, Sudha (1994)

4 द्र. अनेकार्थकैरवकौमुदी महेन्द्रसूरि कृत

5 Raghavan, V. NCC. I पृ.२२२

6 वेलणकर ह.दा. जिनरत्नकोश, I, पृ.१०

7 वेलणकर, ह.दा. जिनरत्नकोश I पृ. ३१ ये लघुखरतरगच्छ के निवासी थे।

यह अभिधानचिन्तामणि में वनस्पतिकाय का पूरक ग्रन्थ है। यह वृक्ष, गुल्म, लता, शाक, तृण तथा धान्य - इन छः काण्डों में विभक्त है।

तकनीक

इस निघण्टु में अनेक प्रकार की वनस्पतियों का संकलन है।

विविध वृक्षों के पर्यायों का इस में संकलन है जिनमें उन की संरचना, नाम, स्थानीय नाम, विशेषताएँ, काव्यात्मक विशेषताएँ संकलित हैं। इस में एकार्थ, नानार्थ तथा देश्य शब्दों का संकलन है। प्रायः औषधों के गुणों का उल्लेख नहीं है। कभी २ नाम से यथा शोफघ्नी - गुण दृष्टिगत होते हैं। वृक्षों के विभिन्न [१] पर्यायों के लिए द्रष्टव्य।

निघण्टु शेष — हेमचन्द्र[२]

अनेकार्थकैरवकौमुदी में महेन्द्रसूरि द्वारा उद्धृत निघण्टु जिस में प्रायः औषधों का वर्णन है और जो अभी तक पहचाना नहीं जा सका। हेमचन्द्र कृत निघण्टुशेष भी हो सकता है।

ये शब्द प्रमुखतः द्राविडी, कोलवल्ली, सूक्ष्मैला, ब्रह्मदास, सतुरक्त, कुरुबक, कुरण्टक तथा कुचन्दन हैं।

यह निघण्टु किसी द्रविड़ का भी हो सकता है।

निघण्टु शेष का प्रभाव

८-९ वीं शताब्दी के लेखक के ग्रन्थ रुग्विनिश्चय[३] पर्यायमुक्तावली अथवा मुक्तावली निघण्टु शेष से प्रभावित हैं।

हैमलता — उद्धरण

---

8 सम्पा. अभिधानसङ्ग्रह, १८९६ (पुनर्मुद्रित, १९८१) संख्या ९ पृ. १-१३; पुष्पविजय अहमदाबाद, १९६८ (श्रीवल्लभ की टीका सहित); सागरान्दसूरि - सूरत - १९४६ (द्र. अभिधानचिंतामणि)

1 द्र. Shelat, Bharti, K. है. वाङ् वि. पृ. १११-११३ तथा द्र. Panse, Ujjwala Proc. Seminar. dict. Pune. पृ.४७-५५ विशेष रूप से सप्तमी - विभक्ति का प्रयोग; व्याख्याकार श्रीवल्लभगणि की व्याख्याएं अभिधानचिन्तामणि की नामसारोद्धार पर उपलब्ध होती हैं द्र.Vogel पृ. ३४५

2 Sharma, Sudha (1994) पृ.२०६

3 Winterni HIL. III ; पृ.५५०, अन्य प्रभाव के लिए द्र.Narang S.P. Addenda to Sanskrit Kośa Researches; Proc. Seminar dict. Pune, Panse, Ujjwala: pp.48-49

सिद्धिचन्द्रगणि ने वासवदत्ताविवरण में इसे उद्धृत किया है।[१]

हैमलता[२]

हेमचन्द्र का कोश

हैमनाम से अभिज्ञानशाकुन्तल पर राघवभट्ट ने[३]; नैषधीय चरित पर लक्ष्मणभट्ट ने[४] तथा रामाश्रम एवं पर सिद्धान्त चन्द्रिका पर सदानन्दगणि ने[५] इसे 'हेमचन्द्रः' कहकर उद्धृत किया है।

एकाक्षरनामकोशसङ्ग्रह[६]
एकाक्षरनाममाला

इस के अन्यनाम एकाक्षरीनाममाला अथवा एकाक्षरी निघण्ट अथवा हेमनावलि हैं।

एकाक्षरनामकोशसङ्ग्रह

यह अनेकार्थ सङ्ग्रह का भाग है।[७]

एक स्वर काण्ड[८]

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. I. पृ.२७१

2 उद्धृत Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I, 1953. (४२) हस्तलेखों के पृ.६,६४

3 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol. I, १९५३ पृ.४२९-४३६ (सोलह उद्धरण)

4 वही. पृ.४२५-४२८

5 वही. पृ.९९ (दो उद्धरण)

6 प्रकाशित - एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह (१९६४). पृ.५६.
विश्लेषण : Sharma, Mithlesh (1988) पृ. ६-१०; Narang, S.P. Haimavimarśah. Gujarat University seminar on Hemacandra (1989) - Proceedings
हस्तलेख — द्र.NCC. III. पृ.५९

7 सम्पा. एकाक्षर नाम कोषसङ्ग्रह, १९६४ (द्र. Sharma, Mithlesh (१९८८)

8 द्र. Narang, Satya Pal. Some Observations on the

इसमें १६ श्लोक हैं जिन में २ सामान्य एवं शेष इसकी तकनीक पर हैं। देवनागरी क्रम से यह स्वर एवं व्यञ्जनों का देता है। अधिक अर्थ होने पर प्रायः यौगिक का परित्याग कर दिया जाता है। हेमचन्द्र किसी भी स्रोत से अर्थ एकत्र करने के पक्ष में नही। वह शुद्ध परम्परा का संरक्षण करते है।

इनका कोश सुधाकलशमुनि के कोश से ६० %, महीपसचिव से ५८% तथा कालिदास-व्यास से ५२% मिलता है। शब्दशः साम्य महीपसचिव से ३३%; श्रीधर सेनाचार्य से तथा महेश्वर से ३०% है।[१] इस प्रकार हेमचन्द्र ने गुजरात परम्परा का अनुकरण किया है।

देशीनाममाला[२]

इसके अन्य नाम देशीशब्दसङ्ग्रह अथवा रत्नमाला (अथवा) रायणावलि हैं।

देशीनाममाला — विभाजन

यह आठ वर्गों में विभाजित है जिनमें कुल ७८३ आर्या छन्द है। संस्कृत कोशों के अनुसार यह भी स्वर, कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, अन्तःस्थ तथा ऊष्मों में विभाजित है।

इसका अन्य वर्गीकरण एकार्थ एवं अनेकार्थ के सिद्धान्त पर है;[३] प्रायः देशी शब्दों अथवा अर्थों का संकलन है।

देशीनाममाला तथा प्राकृत

Anekārthasaṁgraha of Hemacandra. है. वाङ्वि. पृ. 97-106 Topics are : extent, technique, questions, meaning comparison / comparative statistical accounts

1 Narang, Satya Pal. है.वाङ्.वि.पृ.१०३

2 हस्तलेखों के लिए IA. II. 1873, पृ.१८ NCC. IX. पृ.१६७-६८; १२४१ ई. के पाटण हस्तलेख के लिए द्र. NIA .I .पृ. ५५८-६१। इसके भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए :— Bhyani, H.C. Studies in Hemacandra's DeśīnāmaMālā. वाराणसी, १९६६; देशीनाममाला — सम्पा. व्याख्या न्यायावतारवृत्ति अथवा रत्नावलि; प्रकाशित Banerjee Muralidhar. Pt. I. Calcutta, 1933. Narang S.P. Hemacandra's Dvyāśrayakāvya p. 8 Vogel. पृ.३२३

3 देशीनाममाल तथा Vogel. पृ.३१९-२०

इसे पिशेल ने अपनी प्राकृत-भाषाओं की तुलनात्मक व्याकरण में अन्तर्भूत किया।[१]

देशीनाममाला तथा डोगरी में कुछ शब्द डोगरी से साम्य रखते हैं जैसे मण्डिल्लो भण्डे; किड्डो = किड्डा; खल्ला = खल्ल; खड्डा = खड्ड; झोटी = झोटी; घग्घर = घग्गरा[२]

स्रोत

हेमचन्द्र की देशीनाममाला के स्रोत स्वरूप प्रयुक्त कोश अभिधानचिह्न (?) (उदूखल की व्याख्या सहित), गोपाल, देवराज, द्रोण, धनपाल, पादलिप्त, राहुलक तथा शीलाङ्क थे। प्राकृत कवि अवन्तिसुन्दरी तथा सातवाहन; सम्भवतः काव्यशास्त्री भरत, भामह, कालाप अथवा कातन्त्र वैय्याकरण भी इसके स्रोत थे। हलायुद्ध (द्र.) भी इसके प्रेरणास्रोत थे।

इसमें पुराने प्राकृत कवियों के उद्धरण भी उपलब्ध होते हैं। कई स्थानीय शब्द आहित्थ, लल्लक्क, विड्डिर, जो महाराष्ट्र एवं विदर्भ के हैं, उपलब्ध होते हैं।

हेम एवं विश्वप्रकाश

हेमचन्द्र ने नानार्थ भाग महेश्वर से लिया है।[३]

हेमचन्द्र एवं विश्वप्रकाश का सम्बन्ध — द्र. विश्वप्रकाश

देशीनाममाला — अनुक्रमणी

---

1 Pischel, R. Grammatic der Prakrit Sprachen. strassburg, 1900 पृ. 39 (इसके अंग्रजी तथा हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध हैं।)
अनेक प्रकार के शब्द जिनमें अरबी और फारसी के शब्द भी है। द्र. Ramanuja swami. सम्पा. की भूमिका, Vaidya. P.L. (भूमिका) तथा विस्तृत भाषा वैज्ञानिक अध्ययन Bhyani, H.C. Studies in Hemacandra's Deśīnāmamālā. Varanasi 1966.

2 Ghai, Ved Kumari H.C. as a lexicographer है.वाङ् वि.पृ.१२३

3 Ghai, Ved Kumari है.वाङ्.वि.पृ.१२६

प्राकृत एवं संस्कृत का संमिश्रित कोश जो देशीनाममाला पर आधारित है हस्तलेखों में उपलब्ध होता है।[१]

देशीनाममाला हेमचन्द्र[२] — अनुक्रमणी

विमल द्वारा अकारादिक्रम से युक्त

देशीनाममालावर्णानुक्रम[३] — अनुक्रमणी

व्याकरण

(सिद्ध)शब्दानुशासन[४] - वृत्ति, बृहद्वृत्ति व्याकरणढुण्ढिका, लघुवृत्ति, लघुवृत्ति चन्द्रिका तथा बृहन्न्यास

यह नया व्याकरण सिद्धराज जयसिंह की प्रेरणा से लिखा गया जिस में लेखक ने प्रायः सभी व्याकरणों को अन्तर्भूत करने की चेष्टा की। संज्ञाओं को सरल किया गया और वैदिक व्याकरण तथा स्वरप्रक्रिया को छोड़ दिया गया।

---

1 वेलणकर - जिनरत्नकोश पृ.१८१ तथा Vogel पृ.३४४

2 NCC. IX. पृ.१६८

3 NCC. IX. पृ.१६८

4 सम्पा. यशोविजय बनारस, १९०५; हिमांशुविजय मुनि, अहमदाबाद, १९३४; विजय लावण्यसूरि, बरोद, १९५६; तुलना एवं स्रोतों के लिए द्र. i नेमिचन्द्र शास्त्री — आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन एक अध्ययन. वाराणसी, १९६३. व्याकरणात्मक अध्ययन के अतिरिक्त इसमें सांस्कृतिक अध्ययन भी है।
ii मुसलगांवकर वी.बी. आचार्य हेमचन्द्र - भोपाल, १९७१ प्रो. सत्यपाल नारंग के निर्देशन में अनेक विद्यार्थियों ने एम्. फिल् दिल्ली विश्वविद्यालय से किया है। महेन्द्रपाल — कृदन्त, पूनम शर्मा - तिङन्त; नीलम — सुबन्त; नारंग सत्यपाल - The Psychological category of Sanskrit Kāraka on the basis of Hemacandra Sāmmanasya 1994. इस के अतिरिक्त है. वाङ्.वि.पृ.१-१२ Bhate Saroja; पृ. 13-22, Laddu, S.D; (Kāraka) पृ. 23-25 Tripathi Dipti; pp.144-152; Chandra, K.R. Vararuci vs. Hemacandra, pp. 161-177; Bhatt, Vasant. K. On method of explanation of forms (Rūpākhyānapaddhatiḥ) pp.144-152; Jāni, Jayadev On Paribhāṣas pp.216-23; Viśvanātha Śāstrī : paribhāṣas & predecessors pp.224-238 and Bhyani, H.V. Prakrit and Apabhraṁśa. pp.314-322

प्राकृत को भी संस्कृत का अभिन्न अङ्ग मानते हुए इसके अन्त में प्राकृत व्याकरण तथा प्राकृत ढुण्ढिका का निर्माण हुआ। संस्कृत व्याकरण को व्यवहारिक बनाने के लिए सब प्रयत्न किए गए। कीलहार्न इसे मध्यभारत का सर्वोत्तम व्याकरण मानते है।

इसके अतिरिक्त उनके उणादिसूत्र तथा उसकी वृति अथवा विवरण; धातुपाठ तथा उसकी वृत्ति, धातुपारायण और उसकी वृत्ति, धातुमाला, बालभाष्यव्याकरणसूत्रवृत्ति, भ्वादिसत्तावचूरि, लिङ्गनिर्देश; लिङ्गानुशासन, उसकी बृहट्टीका, विवरण, विवृति तथा लिङ्गानुशासनविवरणोद्धार भी उपलब्ध होते हैं।[१]

छन्दोनुशासन तथा इसकी वृत्ति

इसमें अनेक छन्द हैं जो पूर्ववर्ती छन्दों को आगे बढ़ाते हैं। प्राकृत छन्दों का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है जो मृग्य है।[२]

महेश्वरकृत विश्वप्रकाश

विश्वप्रकाशकोश

महेश्वर द्वारा **विश्वप्रकाशकोश** की रचना ११ शताब्दी में की गई। सर्वानन्द ने (११५९ ई. में) बंगाल में तथा हेमचन्द्र ने (११७५ ई. में) गुजरात में अपने ग्रन्थों में महेश्वर का उल्लेख किया है। यह ग्रंथ अपने रचना काल में ही काफी प्रसिद्ध हो गया था।

राघवकवि ने एकाक्षरकोश में इसका नाम्ना पण्डितकवि के रूप में स्मरण किया है।[३] श्वेताम्बर ज्ञानविमलगणि ने भी इस का उल्लेख नाम किया है।[४]

---

1 द्र.उद्धरण - Narang S.P. Dvyāśrayakāvya etc. pp.9-10 जहाँ सामग्री विविध हस्तलेखों एवं स्रोतों से संकलित है।

2 सम्पा.Velankar, H.D. Bombay, १९६०; तुलनात्मक प्रयोग के लिए द्र. Bhattacharya, Sivaprasad. Jottings on Sanskrit Metrics Calcutta, 1963; Muktaka on the basis of Chandonuśāsana भामाणी, हरिवल्लभ - है.वाङ्.वि.१९९०.पृ.३३७-३४२

3 सम्पा.एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह (१९६४) पृ.१२ **विश्वप्रकाशो** गोपालः शेषकरो धनञ्जयः

4 Vogel. पृ.३३१

इस कोश का महत्त्व कोशशास्त्र के विकास के लिए बहुत अधिक है।[१]

महेश्वर

इनके पिता का नाम श्री ब्रह्म, पितामह का नाम केशव अथवा कृष्ण था। यह अपने वंश को हरिचन्द्र तक ले जाते हैं जो राजा साहसांक के राजवैद्य थे। इन्होंने चरकसंहिता पर भी एक व्याख्या लिखी। इनके अन्य पूर्वज श्रीकृष्ण गाधिपुर के राजवैद्य थे।[२]

महेश्वर का काल

इस का निर्माणकाल शक.सं.१०३३ (= ११११-१२ ई.) हस्तलेखों के आधार पर निश्चित है।[३]

विश्वप्रकाश तथा हेमचन्द्र पर लिङ्गानुशासनविवरण का सम्बन्ध

फ्रैंके के आधार पर पी.के. गोडे ने इन का सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की परन्तु कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पाए।[४]

विश्व एवं मेदिनी

मेदिनीकार विश्वप्रकाश की आलोचना करता है। अतः उससे पूर्व तेरहवीं शताब्दी ई. में होना चाहिए।[५]

महेश्वर — विश्वप्रकाश तथा मंख

द्र. मंख — अनेकार्थकोश

Zachariae — Beitrage. पृ. ७१ Vogel. पृ. ३३४

---

1 Vogel. पृ.३२९

2 Vogel, C. Vāgbhaṭa's Aṣṭāṅgahṛdayasaṁhitā, Wiesenbaden, 1965 पृ. 14

3 Vogel. पृ.३२९;Patkar 1981 रामानलव्योम[illegible]शाककालेऽभिलक्षते

4 Franke, Otto. Hemacandra's Liṅgānuśāsana. Göttingen, 1886. पृ. XIV; Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. I. पृ. 61

5 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.२८१-२८९

महेश्वर की कृतियां

महेश्वर की कृतियां पदार्थरत्नमाला[१] या पर्यायरत्नमाला, महाभारतसंग्रह, रघुवंशव्याख्या, साहित्यदर्पण टीका तथा अमरविवेक हैं।

एकाक्षरकोश[२]

साहसांकचरित

विश्व प्रकाश के अतिरिक्त इन्होंने साहसांकचरित भी लिखा जो अद्यावधि उपलब्ध नहीं है।[३]

विश्वप्रकाश[४] —नाम

इस कोश के अन्य नाम विश्वकोश, शब्दभेदप्रकाश तथा अनेकार्थध्वनि मञ्जरी भी हैं।[५]

स्रोत

नाम पारायण का आश्रय लेते हुए स्रोत के रूप में उन्होंने राजकोश भोगीन्द्र, कात्यायन, साहसांक, वाचस्पति, व्याडि, विश्वरूप, अमर अथवा अमल मंगल, शुभाङ्क, भागुरि तथा वोपालित को उद्धृत किया है।[६]

वर्गीकरण

कोश से पूर्व एक मुखखण्ड है जिस का कर्तृत्व सन्दिग्ध माना जाता है। इस के दो परिच्छेद है — अनेकार्थ-शब्द तथा अनेकार्थाव्यय। विभाजन

---

1 Śāstrī, P.P.S. Author Index of Sanskrit Manuscripts, Madras, 1940. पृ.६०

2 सम्पा. एकाक्षर कोशसङ्ग्रह (१९६४) पृ. १३९ विश्लेषण के लिए द्र. Sharma, Mithlesh (1988) पृ.१०-१२

3 Vogel. पृ.३३०

4 सम्पा. षट्कोशसङ्ग्रह, काशी १८७३-७४; शीलस्कन्ध स्थविर तथा रत्नगोपाल भट्ट, (चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ ३७) बनारस;१९११, तेलुगु व्याख्या सहित - M.A Śāstrī, Kotipalli, 1913

5 Śāstrī, P.P.S. Tanjore Manuscripts, p.3893; Śāstrī, Haraprasad. A Descriptive Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts. Vol. I. Pt. I No.107. पृ.३३-३४

6 Patkar, M.M. History of Sanskrit Lexicography 1981 पृ.७५ विश्वप्रकाश, बनारस, १९११ की भूमिका Vogel. पृ.३३०

क से क्ष के अन्त्यानुक्रम से है तथा तदनन्तर १ से ६ मात्राओं की गणना में अभिवर्धनक्रम से।[१] आफ्रेक्ट के अनुसार कृत् तथा उणादिप्रत्यय पहले रखे गए हैं।[२]

मेदिनीकार ने विश्वप्रकाश में अनेक दोष दिखाए हैं (द्र. मेदिनी)

विश्व

इसमें प्रारम्भ एवं अन्त में कुछ लौकिक छन्द यथा इन्द्रवज्रा, उपजाति तथा वसन्ततिलका का प्रयोग भी है।[३]

विश्वप्रकाश-पूरक-शब्दशेखर प्रकाश[४] चार निर्देशों में शब्दभेद, ओष्ठ्य दन्तौष्ठ्यवकारभेद, ऊष्मभेद तथा लिङ्गभेद में यह ग्रन्थ विभक्त है।

इस पर ज्ञान विमलगणि ने जो खरतरगच्छ के श्वेताम्बरी जैन थे, इस पर व्याख्या लिखी जो अनेक गुत्थियों को सुलझाती है। इन्हें बीकानेर के राजा राजसिंह (१५७३-१६११ ई.) का राजाश्रय प्राप्त था। यह भानुमेरुगणि के शिष्य थे। इनकी व्याख्या में शब्दों की संरचना, निरुक्ति, लिङ्ग एवं अर्थ का निर्देश है। इसके उद्धरणों में विश्वप्रकाश, भागुरि, वैजयन्त (यादवप्रकाश) व्याडि, शाश्वत तथा पथ्यापथ्यनिघण्टु प्रमुख हैं। हेमचन्द्र से कोश का साम्य है।

विश्वप्रकाश — उद्धृत

रामाश्रम की सिद्धान्तन्द्रिका पर सदानन्दगणि ने इसे उद्धृत किया है। उस के तीन उद्धरण उपलब्ध होते हैं।[५] विश्वप्रकाश नाम से एक उद्धरण मिलता है। (पृ.९९) वर्णरत्नकार ने इस के कोश का उल्लेख किया है।[६]

---

1 मुखखण्ड.१-२३; Vogel. पृ.३३०

2 Aufrecht, T. CC. I पृ. 188

3 Vogel. पृ.३२९

4 Patkar, M.M. IHQ. १९ पृ.१७९ Vogel, पृ. 331

5 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.९९ तथा पृ.२६६ (हस्तलेख के पृ.५,६,११-१४,१६,२२,२५,३५,३६,४९,५४,५६,५९, ६१ तथा ७० पर)

6 Chatterjee, S.K. (1928); Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, I. पृ.२८१-८९

गोकुलनाथ उपाध्याय ने काव्यप्रकाश की विवरण टीका में इसे उद्धृत किया है।[१]

मेघदूत पर कृष्णपति ने इसे अनेक बार उद्धृत किया है जो प्रायः विश्व-प्रकाशकोश से साम्य रखते हैं।[२] इसे अभिज्ञानशाकुन्तल पर राघवभट्ट[३] तथा विश्व / विश्वकोष के नाम से नैषधीयचरित पर लक्ष्मणभट्ट[४] ने उद्धृत किया है।

पूर्णसरस्वती ने अनर्घराघव की पञ्चिका व्याख्या में इसे उद्धृत किया है।[५] श्री वल्लभगणि की सारोद्धार में भी एक विश्वटीका के उद्धरण मिलते हैं।[६]

सिद्धिचन्द्रगणि ने वासवदत्ताविवरण में विश्व के नाम से उद्धरण दिए हैं।[७] यह राक्षसटिप्पण के हस्तलेखों पर भी उद्धृत है।[८]

श्रीधरसेन

अभिधानमुक्तामाला द्र. तिब्बतीकोश

मुक्तावली द्र. तिब्बतीकोश

श्रीधरसेन — काल

फॉगल इस का काल १३ वीं शताब्दी ई. का पूर्व भाग मानते हैं।[९] कुछ विद्वान् इस का काल किसी भी प्रमाण के अभाव में १४ वीं शताब्दी ई. में

---

1 सम्पा. बद्रीनाथ झा, वाराणसी शक सं १८८२. पृ. १९

2 Narang, S.P. Meghadūta Studies. पृ. ३४-३७, ४०, ४१

3 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I पृ. ४२९-३६ (प्रायः ३१ उद्धरण)

4 वही. पृ. ४२५-२८

5 Unnithiri, NVP. Pūrṇasarasvatī : A Versatile Scholar

6 Vogel. पृ. ३३०

7 Gode, P.K Studies in Indian Literary History. I. पृ. २७१.

8 वही.

9 Vogel. पृ. ३४८

मानते है।[१] । इसमें कुछ पंक्तियाँ पुरुषोत्तमदेव के त्रिकाण्डशेष से तथा अन्य महेश्वर के विश्वप्रकाश से गृहीत हैं। अतः यह १२ वीं शताब्दी के पूर्व का नहीं हो सकता।

श्रीधरसेन का काल उसके कर्तृव्य एवं अभिज्ञा पर निश्चित होना चाहिए। एक श्रीधरसेन शिलालेखों में वलभी के राजा के रूप में आते हैं। यह व्याकरणशास्त्र के प्रिय थे अतः उन्होंने भट्टिकाव्य के रचयिता भट्टि को संरक्षण प्रदान किया। शिलालेखों में उन्हें श्री एवं सरस्वती का एकाधिवास्य बताया है।[२] उन्होंने बौद्धों को भी संरक्षण प्रदान किया था जो बाद में वलभी से लुप्त हो गए।[३] सम्भव है उन्होंने यह कोश जो समकालिक लोकप्रिय विषय था, लिखवाया और बौद्ध इसे अपने स्थानान्तरण के साथ ही ले गए।

बौद्धों का सम्बन्ध निश्चित रूप से संस्कृत काव्यसमीक्षा विशेष रूप से व्याकरणात्मक उदाहरणों से था जैसे कि भामह के काव्यालङ्कार से सिद्ध है।[४] ये बौद्ध कोशों के अतिरिक्त व्याकरणशास्त्र अथवा दोनों पर बल देते रहे यथा और लिखते रहे चन्द्रगोमिन्। सम्भवतः वे इस सारी परम्परा को तिब्बत[५] ले गए और नए कोशों का निर्माण किया।

अतः यह श्रीधरसेन छठी शताब्दी ई. के भी हो सकते हैं।

श्रीधरसेन की कृतियां

विश्वलोचनकोश अथवा मुक्तावली[६]

श्रीधरसेन ने अनेकार्थककोश जिसमें २४५३ पद्य हैं, की रचना की। इसके शब्दविन्यास अकारादिक्रम से तथा द्वितीय वर्ण ककारादिक्रम से रखे

---

1 जैन साहित्य का बृहत् इतिहास

2 Narang, Satya Pal. Bhaṭṭi-kāvya : A study, 1969. पृ21 (Date) where inscriptions are quoted. Sharma, Mithlesh (1988), पृ.१

3 Lamotte, E. *Histoire du Buddhisme Indiens* 1958. पृ.५९९

4 काव्यालङ्कार I. २० काव्यान्यपि — VI. ६२.सालातुरीय —

5 Vogel. पृ.३४९ Lokesh Chandra. The Amarakosha in Tibet.

6 सम्पा. हिन्दी टीका सहित. न. शर्मा, बम्बई, १९१२ जैन साहित्य का बृहत् इतिहास ५, पृ. ९२; Vogel. पृ. ३४८-४९ Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. I. पृ.५७; Vogel. NAWG. १९७६.पृ.३०७

गए हैं। क्षान्त वर्ग को क् में अन्तर्भूत न करके पृथक् रखा गया है। अव्यय वर्ग भी अलग है।

मुनि धरसेन समस्त शास्त्रों के ज्ञाता तथा राजाओं के विश्वासपात्र थे। पूर्ववर्ती कोशों का अध्ययन कर के उन्होंने इस कोश का प्रणयन किया।

यह सुन्दरगणि के धातु रत्नाकर में उद्धृत है। गोडे ने इस की अभिज्ञा की चर्चा की है परन्तु कोई निष्कर्ष नहीं निकला। उन्होंने इस का काल १३५०-१५५० ई. निर्धारित किया है।[1]

शिलालेखों में वल्लभी के चार राजा थे जिन में से सम्भवतः श्रीधरसेन ने भट्टि को राज्याश्रय दिया।[2] उसकी व्याकरण (कोशों के प्रति भी) रुचि हो सकती है। क्या उसने तो इस विश्वलोचन का निर्माण नहीं किया या उसके नाम से यह प्रचलित हो गया हो यह अन्वेष्टव्य है।

एकाक्षरी नानार्थ काण्ड[3]

दिगम्बर धरसेनाचार्य ने इस कोश की रचना की। इसमें ३५ पद्य हैं। क से क्ष पर्यन्त वर्णों का अर्थनिर्देश प्रथम २८ पद्यों में है और स्वरों का अर्थनिर्देश बाद के ७ पद्यों में।

पञ्चनामदत्त — नामलिङ्गानुशासन अथवा भूरिप्रयोग

ये सौपद्म व्याकरण के लेखक हैं तथा इनके पिता का नाम दामोदर और पितामह का नाम श्रीदत्त था।[4]

---

1 Gode, Studies in Indian Literary History I. पृ.५७-६३

2 Narang, S.P. Bhaṭṭi-kāvya : A study, Delhi, 1969 (date)

3 जैन साहित्य का बृहत् इतिहास,५,पृ.९४

4 NCC. X. पृ.४८ कृतियों के लिए द्रष्टव्य Belvalkar, S.K. Systems of Sanskrit Grammar. पृ.१११ से; मीमांसक इतिहास प्थम - ५८ तथा द्वितीय - २७१; JASB (NS›) XI, १९१५,पृ.३८८ तथा युधिष्ठिर व्याकरण शास्त्र का इतिहास प्रथम-५८ तथा द्वितीय-२७१;JASB (NS.), XI १९१५ पृ.३८८ तथा काणे, History of Dharmaśāstra. I. पृ.७११ श्रीदत्त ने पृषोदरादि की वृत्ति १३७४ ई. में समाप्त की; काल ३५०-१४०० ई.

पद्मनामदत्त — कृतियां[१]

इन की कृतियों में आचारचन्द्रिका, आनन्दलहरी पर टीका, उणादिवृत्ति, पृषोदरादि वृत्ति, यङ्लुग्वृत्ति, गोपालचरित, छन्दोरत्न, धातुकौमुदी, **नामलिङ्गानुशासन** अथवा भूरिप्रयोग, परिभाषावृत्ति, प्रयोगदीपिका, शिशुपालवध पर व्याकरण, सुपद्म तथा पञ्चिका हैं।

पद्मनामदत्त का यह भूरिप्रयोग अमरसिंह के नामलिङ्गानुशासन से मिलता जुलता है। इस नामानुशासन में लगभग ३७३० शब्द हैं जो महेश्वर से साम्य रखते हैं।

इसके स्रोतों में विश्वप्रकाश, कुछ अमरकोशटीकाएं, त्रिकाण्डशेष, उज्ज्वलदत्त की उणादिवृत्ति, हारावली तथा मेदिनीकोश हैं।

नारायण शर्मन् की अमरकोश पञ्चिका; रामनाथ विद्यावाचस्पति के त्रिकाण्डविवेक, भट्टोजि दीक्षित की प्रौढमनोरमा तथा लोकनाथ चक्रवर्ती[२] की मनोरमा में इसके उद्धरण मिलते हैं।

मकरन्ददासकृत परमानन्दीयनाममाला

परमानन्दीय नाममाला — मकरन्ददास कृत

गड़मल कायस्थ के पुत्र परमानन्द (जो उनका सम्भवतः विशेषण हो) ने निर्माण किया।

यह मथुरा के चिरवारीयक कायस्थ परिवार से सम्बद्ध हैं। इनके किसी पूर्वज ने साहि सिकन्दर से यवनपुर को छुड़ाया जो १४८९-१५१७ ई. में सम्भव है। इन का काल इसी के समकाल होना चाहिए।[३]

---

1 NCC. XI. पृ.१२८

2 Aufrecht, T. ZDMG. 28 पृ. १२२ तथा १२३; CC. I. पृ. १६४ Vogel. पृ.३५१

3 सम्पा. Kulkarni, E.D. DCRI. पूना १९७१ तथा एकाक्षरनामको'ा सङ्ग्रह १९६४ NCC. XI. पृ.१८५ Vogel. पृ.३५६

परमानन्दीय नाममाला[१]

इसके तीन भाग हैं। नाममाला, अनेकार्थसङ्ग्रह तथा लिङ्गानुशासन। इसमें अ से क्ष एकाक्षरी भी हैं। दूसरे भाग में अन्य कोशों के समान देवताओं के, आकाश, कालबौद्धजैनदर्श न तथा विज्ञान, वाक् संगीत तथा नृत्यादि शब्द। कुछ देशी शब्द भी इसमें उपलब्ध होते हैं।

परमानन्दीयनाममाला — अनेकार्थसङ्ग्रह

इसमें भी अकारादि से अनेकार्थी शब्दों का संकलन है जो एक मात्रा से छः मात्रा तक क्रम से है। आदि का ब व में अन्तर्भूत है।

अन्तिम भाग लिङ्गानुशासन है।

परमानन्दीय के स्रोत[२]

इसके स्रोत हैं -विश्वप्रकाश, अमरसिंह तथा हेमचन्द्र।

परमानन्दीय के छन्द

अनेक प्रकार के लौकिक छन्द यथा उपजाति, शालिनी, इन्द्रवंशा, द्रुत-विलम्बित, भुजङ्गप्रयात, स्रग्विणी, वसन्ततिलका, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, आर्या, आर्यागीति तथा उद्गीति

हर्षकीर्तिकृत — शारदीयाख्य नाममाला[३]

(द्र. अनेकार्थनाममाला)

नाममाला — हर्षकीर्ति

द्र. शारदीयाख्या नाममाला

अमरकोश[४] सहजकीर्तिकृत

१७ वीं शताब्दी में ६ काण्डों में निर्मित

---

1 Vogel. पृ.३५६

2 Vogel. पृ.३५६-३५७

3 Vogel. ZDMG. SUPHL 2 (?) पृ.४२६ तथा German Scholars in Indis. II. १९७६. पृ. ३३४ S.P.N क्या कश्मीर में बनाए जाने के कारण अथवा महाक्षपणक के अनुकरण के कारण इस का नाम शारदीयाख्य पड़ा ?

4 NCC. X. पृ.४२

सहजकीर्ति — सिद्धशब्दार्णव

इसमें छः काण्ड हैं जिसमें से प्रथम एवं द्वितीय का भाग प्रकाश में आया है।[१]

इस कोष में शब्दों का संकलन अन्य कोषों के समान है। संचय हेमचन्द्रकृत अभिधानचिन्तामणि से परित्यक्त शब्द है।

सहजकीर्ति

यह खरतरगच्छ के हेमनन्दन के शिष्य थे जिनका काल १६००-१६५० ई. है। इन्होंने लगभग छः व्याख्याएं तथा तीस कृतियां लिखी जो मुख्यतः भक्ति गीतिकाव्य के रूप में हैं।[२] कोशों में सिद्धशब्दार्णव ही ज्ञात है।

राघव आपा खाण्डेकर[३]

इनका वास पहले पारहोल दुंग (पारोल) में था फिर यह पुणताम्बे चले गए।

राघव आपा खाण्डेकर काल

इनका काल १७५८-१८३० ई. के बीच है।[४] यह अच्युतराय मोदक (नासिकवासी) के समकालिक थे।[५]

राघव आपा खाण्डेकर-कृतियां

कोशावतंस के अतिरिक्त उन्होंने **खेटकृति** का निर्माण पुणतम्बे में १८१० के बाद किया। यह ग्रन्थ ज्योतिष एवं गणित का है। इसी प्रकार के ग्रन्थ हैं पंचांगार्क तथा पद्धतिचन्द्रिका। कृष्णाविलसबन्ध उनकी तृतीय कृति है।[६]

---

1 सम्पा. Panse, M.G. with Sanskrit, English Index. Poona, 1965; Vogel. पृ.३६१-३६२

2 नाहटा, अगरचन्द. जैनसिद्धान्तभास्कर १६, पृ.९९

3 सम्पा. कोशावतंस खण्डेकर एस.ए. (प्रथमगुच्छक मात्र) पूना, १९४५ इन के वंश एवं कृतियों के लिए द्र. Gode, P.K. ABORI. XXIV पृ. २७-४४ (१९४३) द्वितीय गुच्छ के कुछ उद्धरण निर्णयसागर प्रेस से प्रकाशित अमरकोश (१९०६) की भूमिका में मिलते हैं। यह नानार्थकोशरीति से लिखा गया है। द्वितीयस्तत्र नानार्थकोशरीत्या प्रकीर्तितः

4 कोशावतंस पर P.K. Gode की भूमिका

5 Gode, P.K. JSVOI Tirupati

6 सम्पादन पर P.K. Gode की भूमिका; दयावामन पोतदार की भूमिका

कोशावतंस — शैली

भट्टिकाव्य की शैली में शब्दों को श्लोकों में उदाहरण स्वरूप रखा है जो विद्यर्थियों के लिए प्रायोगिक रूप से बहुत उपादेय है।

राघव आपा खाण्डेकर कोशावतंस स्रोत

विश्व तथा धनञ्जयादि कोशों का आश्रय लेकर उसने इस कोश का निर्माण किया।

अनेकार्थध्वनि मञ्जरी[१] पुण्य स्तम्भ के राघव आपा खण्डेकर कृत।

अन्य कोश

पर्यायवाची अन्य कोश

निघण्टु, शब्दसङ्ग्रह, नाममाला, नामसङ्ग्रह, अभिधान, नाम इत्यादि से अभिहित

अगस्त्यनिघण्टु[२] **अथवा शब्दसङ्ग्रह — अगस्त्यकृत**

अपूर्वनाममाला[३]

अभिधान — अज्ञातकर्तृक (कोश)

इसे सिद्धिचन्द्रगणि ने वासवदत्ताविवरण पर उद्धृत किया है।[४]

अभिधानकार[५]

इसे क्षीरस्वामी ने अमरकोष पर टीका में उद्धृत किया है।

अभिधानकोश[६]

---

1 ABORI XXIV. पृ.२९

2 GPS. 1895 [= S.P.V. Ranganathswami-Grantha Pradarshani Series Nizagapatnam; Also NCC. I. p. 22

3 अप्रकाशित - विश्वकोश के आधार पर NCC. I. पृ.२५६

4 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.२७१

5 दे.ZDMG भाग २८, पृ.१०४ तथा पूना संस्करण, पृ.५०

6 Kavīndracārya List. 2134. NCC. I & पृ.२९२ (अनुपलब्ध)

अभिधानकोश — (अज्ञातकर्तृक) [१]

अभिधानचूडामणि [२] **(अज्ञातकर्तृक)**

अभिधानमाला [३] **— अज्ञातकर्तृक**

उद्धृत - रायमुकुट तथा भट्टोजिदीक्षित

अभिधानरत्नकोश — (अज्ञात / हलायुध)

इसे अनर्धराघव की व्याख्यापञ्चिका में पूर्णसरस्वती ने उद्धृत किया है। [४]

अभिधानरत्नाकर [५]

योगेश्वर के भागवत पर वासनाभाष्य में उद्धृत। कुमारसम्भव की व्याख्या में कायस्थ गोपाल ने भी इसे उद्धृत किया है।

अभिधान विवेक [६]

अभिधानसङ्ग्रह

अभिधानसङ्ग्रह [७] **अज्ञातकर्तृक**

अभिधानसमुच्चय [८]

सोहलवीं शताब्दी के अन्तिमचरण में उड़ीसा के चिन्तामणि मिश्र द्वारा प्रणीत। लेखक ने इसे अपने वाङ्मयविवेक में उद्धृत किया है।

अमरमाला (कोश)

इसे पुरुषोत्तम तर्कालङ्कार ने अपने अमृतोदय में उद्धृत किया है।

---

1 NCC. I. P.292

2 अप्रकाशित NCC. I. पृ.२९४

3 NCC. I. p.295-296

4 Unnithiri, NVP. Pūṇa sarasvatī — A Versatile scholar, पृ.१५०-१५१

5 NCC. I. पृ.२९६

6 NCC. I. पृ.२९६

7 NCC. I. पृ.२९६

8 NCC. I. पृ. २९६ PAIOC. XII. पृ. २९८

अमरमाला — (कोश) [१]

इसे उज्ज्वलदत्त ने उणादिसूत्र वृत्ति पर उद्धृत किया है।

अमरलता (कोश)

इसे जगद्धर ने मालतीमाधव IX.३४ पर उद्धृत किया है।[२]

अमरविद्या (कोश) [३]

अमरसङ्ग्रह (कोश)

वासुदेव के पुत्र अमरचन्द्रशर्मन कृत

गोपाल — कोशकार

द्र. प्राकृतकोश

जटाधरकोश[४]

यह रघुपति पुत्र जटाधर कृत है।

अपवर्ग नाममाला अथवा **पत्रवर्गपरिहार नाममाला**

यह कोष जिनवल्लभ तथा जिनदत्तसूरि के शिष्य जिनभद्रसूरि का है।[५]

लेखक का अन्य नाम पञ्चवर्गपरिहार नाममाला भी है जो सम्भवतः १२ वीं शताब्दी ई. में लिखी गई,[६] इस कोश में पांच वर्ग (क-म) तक के वर्णों को छोड़कर य, र, ल, व, श, ष, स, ह (यदि; शब्दों का संकलन है।

नाममाला[७] **दण्डीकृत**

---

1 NCC. I. पृ. ३३५

2 NCC. I. पृ.३३५

3 NCC. I. पृ.३३५

4 NCC. Vol. ७,पृ.१४५ द्रष्टव्य - अभिधानतन्त्र.NCC, Vol. १ पृ.२९४६. NCC. X. पृ.४८

5 अप्रकाशित दे. PAIOC. VII. पृ.१४NCC. I. पृ.२५३

6 जिनरत्नकोश पृ. २७७

7 NCC. X. पृ. ४५

राघवकवि ने इसे महाकवियों में परिगणित किया है।[१] इसका उल्लेख राघव की नानार्थमञ्जरी में भी है[२] दण्डी की अवन्तिसुन्दरीय का उल्लेख अप्पयदीक्षित की नामसंग्रहमाला में मिलता है।[३]

नामकोष[४]

महिमसिंहगणि द्वारा लिखित व्याख्या सुखबोधिका में उद्धृत

नाममञ्जरी[५] — नन्ददासकृत

नामप्रपञ्च[६]

इसे रायमुकुट ने अमरकोश पर उद्धृत किया है

नाममाला[७]

अथवा नाममालानिघण्टु

नाममाला[८] अज्ञातकर्तृक

इसे भास्करराय ने ललितासहस्रनाम पर, गोमठ रङ्गनाथ ने श्रीसूक्तभाष्य में; भट्ट सोमेश्वर ने काव्यप्रकाश पर संकेत में; क्षीरस्वामी और रायमुकुट ने अमरकोश पर[९], वामन, हेमचन्द्र तथा मेदिनीकार ने उद्धृत किया है।

अभिधान[१०] **रामशर्मन् कृत**

यह कोश पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि पर आधारित है

नाममातृकानिघण्टु[११] — वरदराजकृत

---

1 सम्पा. एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह.पृ.१२ — प्रतापो भागुरिर्दण्डी रसभश्च हलायुधः

2 Vogel. पृ.३५३

3 Vogel. पृ.३६१

4 NCC. X. पृ.४२

5 NCC. X. पृ.४४

6 ZDMG. 28 (1874) पृ.११४ NCC. X. पृ.४४

7 NCC. X. पृ.४४

8 NCC. X. पृ.४४

9 ZDMG. 28. पृ.११४

10 अप्रकाशित. NCC. I. पृ.२९२

11 NCC. X. पृ.४४

नाममाला[१] **— श्री यादव कृत**

अभिधानमाला[२] **— सर्वानन्द कृत**

नाममाला[३] **— साधुकृत**

नाममञ्जरी[४]

हनुमान कृत यह पांच तरंगों में है और त्रिविक्रम को उद्धृत करती है ।

नामानुशासन

अमरकोश पर सर्वानन्द की टीकासर्वस्व में उद्धृत[५], अमरकोश पर रायमुकुट ने भी इसे उद्धृत किया है।[६]

निघण्टु

इस निघण्टु को वासवदत्ताविवरण में सिद्धिचन्द्रगणि ने उद्धृत किया है ।[७]

निघण्टु[८]

यह वैदिक निघण्टु से पृथक् कोश है । महेन्द्रसूरि से अनेकार्थ-कैरवकौमुदी में इसके पांच अंश उद्धृत किए हैं । स्थानीय शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है, कि यह पश्चाद्वर्ती कोश है । इस कोश का लेखक कोई द्रविड हो सकता है क्योंकि द्राविडी तथा कोलवल्ली का इसमें प्रयोग किया गया है । सूक्ष्ममैला, ब्रह्मदास सतुरक्त, कुरुबक इत्यादि शब्दों से यह वैद्यक निघण्टु प्रतीत होता है । इसका अन्वेषण मृग्य है ।

---

1 NCC. X. पृ.४६

2 NCC. X. p. 295 (TSS. 51. p.5)

3 NCC. X. पृ. 46

4 NCC. X. पृ. 44

5 TSS. edn. II.6; III. 204

6 ZDMG. 28 (1874) पृ.114 NCC. X. पृ. 50

7 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol. I. 1953, पृ. 151-167

8 Sharma Sudha, (1994) पृ. 206

तृतीय अध्याय

अनेकार्थकोश

शाश्वतकृत अनेकार्थसमुच्चय[1]

शाश्वतकोश भी अमरकोश के समान प्राचीन कोश है जो प्रायः अनेकार्थों का संकलन करता है।

यह कोश पांच भागों में विभक्त है (१) एक श्लोक में व्याख्येय, (२) अर्धश्लोक में व्याख्येय, (३) पादश्लोक में व्याख्येय, (४) पूरक (५) अर्धश्लोक अथवा पादश्लोक में व्याख्येय अव्यय। एक भाग में द्व्यर्थकशब्द।

शब्दों का क्रम यदृच्छा से है और पर्यायवाची भी अलग २ कर दिए गए हैं।

इस का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिपत्ति है।

शाश्वत का काल

अनेकार्थ समुच्चय कोश की रचना शाश्वत ने की है। इनका समय ईसा की छठी शताब्दी माना जाता है। श्री के.जी. ओक ने बताया है कि शाश्वत ने अमर के पूरे पद उद्धृत किये हैं अतः ये अमर के पश्चाद्वर्ती हैं।[2]

शाश्वत कालिदास से भी परिचित थे। कालिदास ने रघुवंश ४ में ललामन् शब्द का प्रयोग किया है अमरकोष में यह नहीं दिया गया है पर शाश्वत ने ललाम तथा ललामन् दोनों का प्रयोग किया है।[3]

---

1 सम्पा. Zachariae, T. Berlin, 1882; Oak, K.G. Poona, 1918 तथा Zachariae : *WZKM. 35 Beitrage.* p.70 Keith A.B. A History of Sanskrit Literature, Vogel पृ.३१८-३१९ इसका दूसरा नाम नानार्थकोश भी है। हस्तलेखों के लिए द्र. NCC. X. पृ.३६

2 Oak. K. G. Anekārthasamuccaya of Śāśvata - Intro.

3 शाश्वत-अनेकार्थसमुच्चय श्लोक ८०

उद्धृत

इसे सुभूतिचन्द्र तथा सर्वानन्द ने अमरकोश पर; सिद्धान्तचन्द्रिका पर सदानन्दगणि ने; राघवभट्ट ने अभिज्ञानशाकुन्तल पर, विदग्धवल्लभा ने वासवदत्ता; पर सिद्धिचन्द्रगणि ने वासवदत्ताविवरण[१] पर; केशव स्वामी ने नानार्थसङ्क्षेप में उद्धृत किया है। यह वर्णरत्नाकर में उद्धृत है[२] तथा एकाक्षरी कोशकार राघवकवि ने इसका नाम्ना उल्लेख किया है।[३] मङ्ख ने भी इसे स्रोत के रूप में स्वीकार किया है।[४] महेन्द्रसूरि ने अनेकार्थकैरवकौमुदी में शाश्वत के नाम से तीन उद्धरण दिए हैं।[५] विक्रमनगर के श्वेताम्बर जैन ज्ञानविमलगणि ने भी महत्वपूर्ण कोशों में उसे परिगणित किया है।[६]

महाक्षपणक

महाक्षपणक जीवनी

परम्परा में यह विक्रमादित्य की सभा के एक सदस्य माने जाते हैं।[७]

महाक्षपणक — देश

यह कश्मीर के थे। इन की अभिज्ञा के विषय में केवल यही कहा जा सकता है कि उणादिसूत्रवृत्ति में उद्धृत उज्ज्वलदत्त के क्षपणक यह अथवा कोई अन्य भी हो सकते हैं।

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol. I. पृ.२१९ से ९९;४२९-४३६,२६६,२७० से २७१

2 Chatterjee, S.K. (1928)

3 सम्पा. एकाक्षरकोशसङ्ग्रह (१९६४) पृ. १२ —— अजयः शाश्वतश्चैते उच्यन्ते पण्डितः पुरा Vogel, पृ.३४६ से

4 Zachariae : Beitrage — पृ.७१ Vogel. पृ.३३४

5 Sharma, Sudha (1994) क्या यह मङ्खकृत उपलब्ध कोश में से है

6 Vogel, पृ.३३१

7 द्र.विक्रमादित्य

क्षपणक — काल

उसे राघवभट्ट ने अभिज्ञानशाकुन्तल की टीका में; अनेकार्थमञ्जरी के नाम से राक्षसटिप्पण में[१]; वल्लभदेव की रघुवंश की व्याख्या में[२] उद्धृत किया गया है। अतः यह ९२५ ई. से पूर्व रहे होंगे।

अनेकार्थध्वनिमञ्जरी[३]

यह कोश महाक्षपणक के द्वारा प्रणीत है। इस कोश के अन्य नाम हस्तलेखों में अनेकार्थमञ्जरी मिले हैं। हस्तलेखों के पाठ में वैषम्य है।[४]

महाक्षणक : अनेकार्थध्वनिमञ्जरी का प्रभाव

इसने कई पश्चाद्वर्ती कोशों को इस क्षेत्र में अनुप्राणित किया। गदसिंह अथवा दुर्गसिंह तथा हर्षकीर्ति इन से अनुप्राणित हुए। उन्होंने हस्तलेखवंशानुक्रम से आ रहे इस कोश को जो कालक्रम से भ्रष्ट हो चुका था, संजोया और अपने नाम से प्रसिद्ध कर लिया।[५]

महाक्षपणक - हर्षकीर्ति -प्रभाव

गदसिंह अथवा दुर्गसिंह के समान हर्षकीर्ति (द्र.) इससे प्रभावित हुए और उन के पाठ को यथाशक्ति अपने अनुकूल बनाया।[६]

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. I· पृ.४२९-४३६; BORI. १८९१-९५ के ५५५ हस्तलेख में (Gode)

2 Festschrift. M. Winternitz पृ. ८९-९१ Gode, P.K. वही पृ. १०९-१११ The date Of Mahākṣapaṇakaś Anekārthamanjari इसे गणरत्नमहोदधि (११४० ई.) से पूर्व रखा जाता है वल्लभदेव के ९२५ ई. में होने के कारण यह उससे पूर्व रहे होंगे। वल्लभदेव के काल के लिए १९११, पृ. IX Hulzch : Kālidāsa's Meghaduta of Kumārasambhava with the Comm. of Vallabhadeva, Ed. Srimannarayanamurthy DMG; Palet, Gautam. ed. Ahemdabad.

3 सम्पा. जयपुर, १९०८; द्वादशकोशसङ्ग्रह. वाराणसी, १८६५-६६ तथा १२२९; संस्कृतकोशयुग्मम् कराची, १८६७-६८; Vogel: पृ.३१९ जो इन्हें बेकार बताते हैं। अन्य सन्दर्भों के लिए बरुआ. ए. नानार्थसङ्ग्रह, कलकत्ता, १८८४

4 NCC. I. p.221

5 Vogel. पृ. ३२० विशेषतः पादटिप्पणी - ५३, द्र. नानार्थध्वनिमञ्जरी - गदसिंह NCC. X. पृ. २९३ तथा ध्वनिमञ्जरी - गदसिंहकृत NCC. IX. पृ. ३१०

6 Vogel. पृ. ३२०

अनेकार्थध्वनिचिन्तामणि[१] — अज्ञात

अनेकार्थ नामसारोद्धार[२]

यह अनेकार्थध्वनिमञ्जरी का भाग है।

एकाक्षरी कोश[३] यह महाक्षपणक कृत कोश है।

अजयपाल[४] **— नानार्थसङ्ग्रह**

नानार्थसङ्ग्रह

नानार्थसंग्रह की रचना अजयपाल ने की। इनका समय लगभग ११४० ई. है।[५] अजयपाल बौद्धमतावलंबी तथा बंगदेशीय प्रतीत होते हैं। कोश के आरंभ में शास्ता की स्तुति की है। अपने कोश में व तथा ब में कोई भेद नहीं किया है।[६]

यह कोश ११४० से पूर्व का है क्योंकि वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में इसे उद्धृत किया है।[७]

नानार्थ संग्रह कोश में लगभग १८०० शब्दों के नानार्थ संकलित किए गये हैं तथा आदि अक्षरों के आधार पर शब्दों को वर्गीकृत किया गया है। शब्दों का संग्रह पद्यों में है। क्ष वर्ग को स्वतंत्र माना है तथा अंत में दिया गया है। एक शब्द विभिन्न लिंगों में होने पर उसकी गणना पृथक् की गई

---

1 NCC.I. २२१

2 NCC. I. पृ.२२२

3 NCC. III. पृ.५७
क्षपणक — एकाक्षर कोश
द्र. पुरुषोत्तमदेव

4 NCC. X. पृ. ३८ प्रकाशित T.R. Chintamani मद्रास विश्वविद्यालय, १९३७ Vogel : द्र.३२५-२६ (द्र. अजड)

5 Raghavan, V. - New Catalogus Catalogurum, Vol.I.

6 Chintamani, T.R. Ed. - Nānārtha Saṁgraha, Madras University Sanskrit Series - 10, 1937, preface, p.10 : Vogel, पृ.३२५

7 NCC. I. p.81.

है। इस कोश का संस्कृत साहित्य के इतिहास की दृष्टि से विशेष महत्व है। इस कोश को कई लेखकों ने उद्धृत किया है।[१]

अजयपाल उद्धृत

राघवकवि के नानार्थ मञ्जरी[२] में; मेदिनीकर के नानार्थशब्दकोश[३] में तथा केशवस्वामी के नानार्थार्णवसङ्क्षेप में भी यह उल्लिखित है।[४]

राघवकवि ने एकाक्षरकोश में इसे महान् कोशकारों में परिगणित किया है।[५]

इसे केशवस्वामी के नानार्थ सङ्क्षेप में नाम्ना उद्धृत किया गया है।[६]

यह कोशकार के नानार्थसङ्ग्रह के कोश से भिन्न है। श्रीहर्ष के अमरखण्डन में यह उद्धृत है।[७]

यह कोश रामचन्द्र की सिद्धान्त चन्द्रिका की सदानन्दगणि की व्याख्या में (१७४३ ई.) उद्धृत है।[८] अन्यत्र भी एक हस्तलेख में इसके दो उद्धरण उपलब्ध होते हैं।[९] यह सम्भव है कि अजय एवं अजयकोश एक ही हों क्योंकि गुजरात में हेमचन्द्र तथा महेन्द्रसूरि की अनेकार्थकैरवकौमुदी में इसके दो उद्धरण उपलब्ध होते हैं।[१०] केशवस्वामी के नानार्थसङ्क्षेप में अजयपाल का नाम्ना उल्लेख उपलब्ध होता है।

---

1 Raja, Kunhan - Nānāratha Saṁgraha of Ajayapāla, forward p.6

2 Vogel. पृ. 354

3 वही.पृ.३४८

4 वही.पृ.३४७

5 सम्पा.एकाक्षरनामकोशसङ्ग्रह (१९६४) पृ.१२ अजयः शाश्वतश्चैते उच्यन्ते पण्डितैः पुरा

6 Vogel. पृ.३४६ से

7 JOR Madras. V. p.26 NCC. I. p.81

8 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. Vol. I. १९५३ पृ.९९

9 वही.पृ.२६६

10 Sharma, Sudha (1994), पृ. 207.

ज्योतिरीश्वर शेखरकवि[१] ने वर्णरत्नाकर (१३००-१३२५) में इस कोश को उद्धृत किया है। इसे अभिज्ञानशाकुन्तल पर राघवभट्ट ने भी उद्धृत किया है।[२]

विश्वनाथ के कोशकल्पतरु में नाम्ना उल्लिखित[३] है।

अजयपाल तथा शाश्वत

बहुत से शब्दों के अर्थ शाश्वतकोश से मिलते जुलते हैं।[४]

नानार्थशब्दरत्न — कालिदास

द्र. एकाक्षरनाममाला

धरणिदास

धरणिकोश[५]— धरणीदासकृत इसका अन्य नाम अनेकार्थसार भी है। यह ११५९ ई. से पूर्व प्रणीत है।

धरणिदास — देश

व के स्थान पर ब शब्द के प्रयोग के आधार पर फोगल इन्हें पूर्वभारत का मानते हैं यद्यपि विल्सन ने उन्हें कन्नोज का ब्राह्मण बताया था।[६]

धरणिदास — कवि के रूप में[७]

विल्सन के अनुसार उन्होंने काशीबिरुदावली नामक एक प्रशस्ति लिखी।

---

1 Chaterjee, S.K. (1928)

2 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol. I. पृ.२८१-२८९ तथा राघवभट्ट के लिए पृ.४२९-४३६

3 Vogel. पृ.३६३; यह उद्धरण गौण कोशग्रन्थों से भी हो सकता है। Vogel. पृ.३६३ पादटिप्पणी

4 Vogel. पृ. 326

5 सम्पा.Kulkarni, E.D. भाग १ Poona, 1968

6 Vogel. पृ.३२६

7 Wilson, H.H. Collected Works V London, 1865

अनेकार्थसार

अनेकार्थसारकोश की रचना धरणिदास ने की है। शब्दों के अन्तिम वर्ण तथा संख्या के आधार पर उनका चयन किया है।[१] मेदिनीकार, रायमुकुटमणि, उज्ज्वलदत्त तथा सर्वानन्द ने इन्हें उद्धृत किया है।[२] इनके अतिरिक्त गदसिंह ने भी इसे उद्धृत किया है।[३]

स्रोत

स्वतन्त्र ग्रन्थों के अतिरिक्त बहुत सी पंक्तियों का साम्य अमरसिंह एवं शाश्वत से है जो उन का स्रोत हो सकते हैं।[४]

वासवदत्ता पर विदग्धवल्लभा ने भी इसे उद्धृत किया है।[५] अभिज्ञान-शाकुन्तल पर राघवभट्ट[६] ने तथा सदानन्द गणि ने रामाश्रम की सिद्धान्तचन्द्रिका पर इसे उद्धृत किया है[७]।

इसे वर्णरत्नाकर (१३००-१३२५ ई.) ने उद्धृत किया है।[८] सिद्धिचन्द्रमणि ने वासवदत्ताविवरण में भी इसे उद्धृत[९] किया है।

मङ्ख की जीवनी

कोशकर्ता मङ्ख सम्भवतः श्रीकण्ठचरित का लेखक ही है जो काश्मीर के

---

1 क्ष को ह के पश्चात् एक स्वतन्त्र रूप मे स्थापित किया है तथा मूलशब्दों के साथ स्त्रीवाची शब्दों को गणना के लिए छोड़ दिया गया है।

2 Raghavan, V. - NCC. Vol. I; Vogel. पृ. 326

3 ZDMG. 28 (1874) 113

4 Vogel. पृ.३२७

5 Gode, P.K. वही.पृ.२७० से

6 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History भाग-१ पृ.४२९-४३६

7 वही.पृ.९९ (एक उद्धरण)

8 Chatterjee, S.K. 1928; Gode, P.K. Studies in Indian Literary History भाग.I पृ.२८१-२८९

9 Gode, P.K. वही.पृ. २७१ इसके ११ उद्धरण यहां मिलते हैं।

राजा जयसिंह के राज्य में (११२८-११४९ ई.) विदेश मन्त्री था।[१] यह रुय्यक का शिष्य था और रुय्यक ने इसे उद्धृत भी किया है।

मंख का अनेकार्थकोश[२]

मङ्ख — अनेकार्थकोश

इस की संरचना महेश्वर के विश्वप्रकाश की तरह है। इस में अनेक शब्द एवं अर्थ प्रथम बार ग्रथित हुए हैं।[३]

मङ्ख — स्रोत

इसके स्रोतों मे भागुरि, कात्य, हलायुध, हुग्ग, अमरसिंह, शाश्वत तथा धन्वन्तरि निघण्टु हैं।[४]

मङ्ख की कोश प्रविधि[५]

---

1 Stein M.A. Tr. Rājataraṅgiṇī introduction, p.12; Kreyenborg, I. Der XXV Gesang des Śrīkaṇṭhacaritam des Maṅkha (Thesis) Münster 1929. पृ. ११ (Q Vogel); Warder : Indian Kāvya Literature Lienhard, Siegried. A History of Classical Poetry Sanskrit-Pali, Prakrit, Wiesbaden, 1984; Bhatt, B.N. Śrīkaṇṭhacaritam : a study Baroda, 1973 **काल के लिए** Mandal, B.C The date of Maṅkha's Śrīkaṇṭhacaritam. JOIB. 26 (१९७७) पृ.३८५ से

2 सम्पा. Zachariae. T Vienna 1893 (व्याख्या के अंशों सहित), पुनर्मुद्रित वाराणसी १९७२ कोश के विस्तृत विवरण के लिए Zacheriae, T. Epilegomena zu der Ausgabe des Maṇkhakośa SKAW. 141. 5 wien, 1899

3 Zachariae : Beitrage; पृ. ७१ Vogel. पृ.३३४

4 मङ्खकोश V. 3 Zachariae, T. *Epileomena Zu der Ausgabe des Maṇkhakośa. SKAW.* 141.5. wein. 1899 (पृ.१६) उपलब्ध अप्रयुक्त शब्द (पृ.२२) तथा व्याख्या में उपलब्ध अप्रयुक्त शब्द (प्र.४५); टीका का कर्तृत्व (पृ.३४) तथा उद्धरण. पृ.४६ (Q. Vogel)

5 द्र.Keith : History of Sanskrit Literature पृ.४१४ Vogel, पृ.३३४

मङ्ख के उद्धरण

सुधा शर्मा[१] ने इन उद्धरणों का पुनरन्वेषण किया और २९ उद्धरणों को ढूंढ लिया। लगभग एक दर्जन उद्धरण व्याख्या में उपलब्ध हो गए। शेष अभी भी अन्वेष्टव्य हैं। एक उद्धरण महेन्द्रसूरि ने मङ्ख अथवा दुर्ग के नाम से दिया है जो लिङ्ग सम्बन्धी है।[२]

मङ्ख तथा महेन्द्र

मङ्ख का महेन्द्र पर बहुत अधिक प्रभाव दृष्टिगत होता है।[३]

मङ्ख तथा महेश्वर का विश्वप्रकाश

(द्र.) इस की संरचना उपर्युक्त कोश के समान है। केवल कुछ ही शब्द इसमें प्रथम बार आए हैं।

मङ्खकोश[४] प्रभाव

कोशशास्त्र पर इसका प्रभाव गुजरात के अनेकसङ्ग्रह के व्याख्याकार अनेकार्थकैरवकौमुदी के व्याख्याकार महेन्द्रसूरि पर बहुत अधिक हुआ।[५]

मङ्ख का प्रभाव

इस का प्रभाव केरल तक भी हुआ क्योंकि वैय्याकरण कवि वासुदेव ने युधिष्ठिरविजयकाव्य में भी इस का प्रयोग किया।[६] इस का प्रभाव जगद्धर भट्ट की स्तुतिकुसुमाञ्जलि की राजानक रत्नकाण्डकृत व्याख्या पर भी हुआ।[७]

---

1 Sharma, Sudha, (1994) पृ.२०९-२११

2 वही.पृ.२०९ यह वैयाकरण दुर्ग भी हो सकता है।

3 साम्य के लिए द्र.Zachariae : Beitrage, पृ.७०; सम्पा.शाश्वत का अनेकार्थ समुच्चय (द्र.), बर्लिन, १८८२ पृ.XIII; Vogel, पृ.३३५

4 Sharma, Sudha (1994)

5 Sharma, Sudha (1994

6 Vogel पृ.३३५; वासुदेव के कर्तृत्व विशेषतः वासुदेवविजयम् के विश्लेषण के लिए द्र. Narang, S.P. A study of Śāstrakāvyas in Sanskrit Literature (unpublished thesis: Delhi university, 1967); संस्कृत के व्याकरणात्मक काव्य - परमेश्वरानन्द शास्त्री स्मृति ग्रन्थ

7 Vogel, पृ.३३५

मङ्ख — पर्यायीकोश

फोगल के अनुसार मङ्ख ने अवश्य ही नामकोश का निर्माण किया होगा।[१] परन्तु यह केवल कल्पनामात्र है।

केशवस्वामी[२]

कृष्ण पुरदेव का पुत्र तथा भावस्कन्द का शिष्य था।

मङ्ख के अनेकार्थ की व्याख्या

मङ्ख के शिष्य अथवा स्वयं मङ्ख द्वारा यह कोश प्रणीत है। महेन्द्रसूरि ने अनेकार्थकैरवकौमुदी में इसे उद्धृत किया है[३]।

केशवस्वामी — आश्रयदाता

टी. गणपति शास्त्री[४] तथा रामावतार शर्मा ने केशवस्वामी के आश्रयदाता के विषय में विचार नहीं किया।[५] वी. कृष्णामाचार्य ने राजराज चोळगङ्ग के साथ इस के आश्रयदाता की अभिज्ञा की है।[६]

इसका निर्माण राजराजदेव की प्रेरणा से हुआ[७]। इस नाम के चार राजा हुए - (१) राजराज मुम्मळी चोळ; (२) राजराज चोळगङ्ग; (३) राजराज द्वितीय तथा (४) राजराज तृतीय; प्रथम दो राजराज कुट्टोतुङ्ग द्वितीय के पुत्र थे (१०७०-११२० ई.) तृतीय राजराज (११४६-११७३ ई.) **कुट्टोतुङ्ग द्वितीय** (११७८ से १२४६) का पुत्र था। चतुर्थ राजराज तृतीय (१२१६-१२६० ई.) कुट्टोतुङ्ग तृतीय (११७८ से १२१६ ई.) का पुत्र था।[८]

---

1 Vogel. पृ.३३५

2 NCC. X. पृ.३८ प्रकाशित TSS. 23, 1913

3 Zacheaie अनेकार्थ सङ्ग्रह भूमिका. पृ.४

4 शास्त्री टी. गणपति. नानार्थसङ्क्षेप TSS 23, 29, 31 Trivandrum, 1913 (पुनर्मुद्रित - त्रिवेन्द्रम्, १९९०) की भूमिका

5 सम्पा. कल्पद्रुकोश, GOS. बडोदा, १९२८. पृ.XXXIX

6 उद्धृत. Vogel. पृ.३४६

7 नानार्थार्णव संक्षेप I. 20

8 Duff, (Mebel. Chronology of India; Sastri, K.A. Nilakanta: The Cholas Madras, 1955; Vogel, पृ.३४६

केशव — अनेक

अनेक कोशकार केशव ज्ञात हैं जिन के विषय में सुनिश्चित रूप से कहना कठिन है। एक केशव कुमारसम्भव की शब्दामृतटीका में उद्धृत हैं; दूसरे मेघदूत पर चारित्रवर्धन की व्याख्या में तथा तीसरे रघुवंश की विशेषार्थबोधिका में गुणविजयगणि द्वारा उद्धृत हैं।[१]

केशवकोश[२]

इस का कर्ता अज्ञात है

केशवकोश[३]

इसे अप्पयदीक्षित तृतीय की तन्त्रसिद्धान्तदीपिका में उद्धृत किया गया है।[४]

केशवकोश[५]

नामानुशासन केशवकृत विश्वकोश [६]

नामकल्पद्रुम — केशवदैवज्ञ द्र. कल्पद्रुकोश[७]

कल्पतरु — केशव द्र. कल्पद्रुकोश[८]

केशवस्वामी नानार्णव संक्षेप - विभाजन

यह छः काण्डों में विभाजित है जो क्रमशः एकाक्षरकाण्ड, द्व्यक्षरकाण्ड त्र्यक्षरकाण्ड, चतुरक्षरकाण्ड, पञ्चाक्षरकाण्ड तथा षडक्षरकाण्ड कहलाते हैं। हलन्त प्रतिपादिकों से निष्पन्न शब्द उन्हीं प्रतिपादिकों में अन्तर्भूत हैं यद्यपि 'ई' प्रत्यय

---

1 NCC. V. पृ.५८

2 NCC. V. पृ.६३

3 NCC. V. पृ.६३ JOR Madras. II. पृ.२५०

4 NCC. V. पृ.६३

5 वही

6 NCC. X. पृ.५०

7 NCC. X. पृ.४२

8 सम्पा.GOS. Baroda, LXII, LX. १९२८,१९३२

लगने से उनके अक्षरों की मात्रा अधिक हो जाती है। एकाक्षरों का विभाजन पुँल्लिग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा नानालिङ्गो में है। द्वयक्षरकाण्ड में स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, वाच्यलिंग तथा नानालिंग यही क्रम बाकी काण्डों पर घटित होता है।

यह वैजयन्तीकोश से मिलता जुलता है और इसमें वैदिक शब्दों का बाहुल्य है।

नानार्थार्णवसङ्क्षेप — स्रोत

व्याकरण, केशवशास्त्र तथा अन्य साहित्य के बृहत् क्षेत्र को इसने उद्धृत किया है। अनेकार्थ कोशों में यह सब से बड़ा है। इसने अजयपाल, अमरदत्त, अमरसिंह, भागवृत्ति, भागुरि, भोजराज, धनञ्जय, हलायुध, जयादित्य, कात्य, क्षीर-स्वामी, माध्वाचार्य, रभसपाल, सज्जन, शाकटायन, शाश्वत, वैजयन्ती तथा वररुचि को उद्धृत किया है। इसे अनेक बार मल्लिनाथ ने भी अपनी व्याख्याओं में उद्धृत किया है।[१]

केशवस्वामीकृत नानार्थार्णव संक्षेप

इसे गणरत्नमहोदधि में वर्धमान (११४० ई.) ने उद्धृत किया है। सर्वानन्द ने टीकासर्वस्व में इसे अनेक बार उद्धृत किया है।

व को ब में बदलना इस की विशेषता है जिस से यह जन्मना बङ्ग निवासी प्रतीत होता है।[२] धर्म से यह बौद्ध प्रतीत होता है।[३]

केशव[४]

इन के कोश को मल्लिनाथ ने किरातार्जुनीय ९.७७ पर उद्धृत किया है। यह कल्पद्रुकोश तथा नानार्थार्णवसंक्षेप के कर्ता से भिन्न हैं।

---

1 Vogel. पृ.३४६ से

2 Vogel. पृ.३२५ शब्द हैं - वत्स, वरतक, वल्गुक, वल्लभ, विटप, वितस्ति तथा वृत्त इत्यादि। अन्य बङ्ग से प्रभावित शब्द हैं - बाष्प, गर्बर, बिम्ब, बुध

3 Vogel. पृ.३२५

4 कल्पद्रुकोश की भूमिका पृ.XLIV

केशव अथवा केशवभट्टाचार्य

इन्हें श्रीहर्ष ने अमरखण्डन पर तथा कल्लोल भट्ट ने शब्दालिङ्गार्थ-चन्द्रिका में उद्धृत किया है। यह भी कल्पद्रुकोश तथा नानार्थार्णव संक्षेप के कर्ता से भिन्न हैं।[१]

कल्पतरु[२] — कोश

इसे अमरकोश की व्याख्या में उद्धृत किया गया है। राघवन् के अनुसार यह कल्पद्रुकोश भी हो सकता है।

केशव

यह अमरकोश पर नारायणं की व्याख्या में उद्धृत है।[३] कर्पूरीय शिवदत्त की स्वकीय कोश शिवप्रकाश व्याख्या में भी उद्धृत हैं।

केशव — उद्धरण

इसे अनर्घराघव पर पञ्चिका[४] में तथा मालती माधव पर रसमञ्जरी में उद्धृत किया गया है।

मेदिनीकोश अथवा नानार्थशब्दकोश

इसके लेखक का नाम मेदिनीकार था जो १२००-१२७५ ई. में बङ्गाल में हुए। यह प्राणकर के पुत्र थे जिन्होंने षट्शतगाथाकोश का निर्माण किया।[५]

---

1 Raghavan, V. NCC. V. पृ.५८-५९, Amaramaṇḍana, Poona, 1949, पृ.५,६,९ (भूमिका); Kalpadrukośa — Introduction

2 द्र.JOR Madras. VI. पृ.२४८,२६०; NCC. III. पृ.२३३.द्र.कल्पद्रुकोश तथा कल्पतरु

3 NCC. V. पृ. ५८; Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. III. पृ.४५

4 अनर्घराघव पर पञ्चिका. पृ.१७, २४, ११७, ११९, १९२ मालतीमाधव पर रसमञ्जरी (पृ.४३८) Unnithiri, NVP. Pūrṇasarasvati

5 सम्पा. मुखोपाध्याय, एस. मेदिनी अथवा नानार्थशब्दकोश, कलकत्ता, 1869; Pandey, G. Calcutta, 1872-73; Jivanand Vidyasagar Calcutta, 1872 2nd edn. 1897; Kashi Sanskrit Series, 41, Banaras, 1916; Hoshing Jagannath Śāstrī Varanasi 3rd edn. 1968 Patyal, Hukam Chand The Medinīkośa (or the Nāṇārthakośa) Vis-a-vis the Principles of Lexicography in Proc. Seminar Dict Pune पृ.१३-१८ हस्तलेख द्र. NCC. X. पृ. ३८

मेदिनी काल

विण्टरनित्स[१] इसका काल (४ वीं शताब्दी मानते हैं।

पं रामावतार शर्मा ने इसे उद्धृत करने वाले प्रमाणों के आधार पर समस्या का पुनर्विचार किया।[२]

गोडे इसे १२००-१२७४ ई में विश्वप्रकाश की आलोचना के आधार पर मानते हैं।[३]

मेदिनीकोश / मेदिनीकर

द्र. मेदिनी कोश

नानार्थशब्दकोश अन्य नाम

इसके अन्य नाम नानार्थकोश, मेदिनी कोश तथा अनेकार्थ शब्दकोश भी हैं।[४]

मेदिनी — स्रोत

ये कोश हैं — उत्पलिनी, शब्दार्णव, संसारावर्त, नाममाला, भागुरि, वररुचि, शाश्वत, वोपालित, रन्तिदेव, अमर, शुभाङ्क, हलायुध, गोवर्धन, रभसपाल, रुद्र, अमरदत्त, अजय, गंगाधर, धरणिकोश, हारावली, त्रिकाण्डशेष, रत्नमाला, विश्वप्रकाश, वाग्भट, माधव, वाचस्पति, धर्म, व्याडि, तारापाल, विश्वरूप, विक्रमादित्य, कात्यायन, वामन, चन्द्रगोमिन् तथा पाणिनि, पुराण तथा काव्य[५]

---

1 Wintenttz HIL III. १९६७ पृ.४६०

2 Sharma, Ramavatar Introduction to Kalpadrukośa पृ.XL

3 Gode, P.K. Some New Evidence for In Date of the Lexicon Medini (Between A.D. 1200 and 1275: Studies in Indian Literary History. I. पृ.२८१-२८९

4 Sharma, Mithlesh, (1988) पृ.१६-१८
Patkar, M.M. (1981) पृ.९८.

5 Patkar, M.M. (१९८१) पृ.९८; पद्मनाभदत्त की पृषोदरादिवृत्ति (१३७५ ई.) में भी मेदिनी उद्धृत है (Vogel) Patyāl, H.C. Proc. Seminar Dict. Pune. पृ.१४

नागेन्द्र

प्रशस्ति में कवि ने एक नागेन्द्रकृत कोश को उद्धृत किया है जो इस का स्रोत हो सकता है।[१]

मेदिनीकोश — शैली

प्रायः २४०० पद्यों में प्रणीत है। इसमें शब्दों का वर्गीकरण अन्त (यथा कान्त, खान्त) के आधार पर है। ये वर्ग स्वरों की संख्या यथा एक, द्वि, त्रि, चतुः = इत्यादि पर आधारित हैं।

मेदिनीकोश का विभाजन[२]

शब्दवर्ग में नाम् एवं विशेषण हैं इसमें ३३ वर्ग है तथा उपर्युक्त शैली (द्र. शैली) से विभक्त हैं।

इसमें क्षान्तवर्ग के स्थान पर हान्तवर्ग है। यह प्रत्येक वर्ग में भी अकाराद्यन्त का अनुसरण करता है। क्षान्तों को षान्तों में रखा गया है।

मेदिनीकोशकार ने विश्वप्रकाश के वर्गीकरण में कुछ सुधार किया है।[३]

मेदिनी — उद्धृत

इसे वर्धमान, मल्लिनाथ, रायमुकुट, पद्मनाभदत्त, जगद्धर, राघवभट्ट, आनदलहरी पर रामचन्द्र; रामायण पर लोकनाथ ने मनोहरा में; शिवदाससेन ने चक्रदत्तसङ्ग्रह पर तत्त्व चन्द्रिका में; हरिराम ने कातन्त्रव्याख्या में ; रामनाथ विद्यावाचस्पति ने त्रिकाण्डविवेक में; हरगौरी स्तोत्र-टीका में; लक्ष्मण भट्ट ने नैषधीयचरित[४] पर; कायस्थ गोपाल ने कुमारसम्भव की व्याख्या में ; सुजन ने

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, I. पृ.६३ पादटिप्पणी श्लोक -६

2 Patyal, H.C. Proc. Seminar Dict. Pune पृ. १४-१७

3 Patyal, H.C. Proc. Seminar Dict Pune पृ.१५ पूर्वापर कोशों से कुछ शब्दों की तुलना, पाठ इत्यादि द्र. Patyal, H.C. op. cit. p.16-17 इन में घाटगे कोश (१९७३); अमरकोश, अनेकार्थकोश, अभिधानरत्नमाला, वैजयन्ती, तथा विश्वप्रकाश हैं।

4 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.२८१-२८९;४२५-४२८;२७०

शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका में ; विदग्धवल्लभा ने वासवदत्ता (सुबन्धुकृत) पर; निगूढपदबोधिनी में नारायण ने; चतुर्भुज मिश्र तथा अर्जुनमिश्र ने विराटपर्वन् की व्याख्या में उद्धृत किया है ।

मेदिनीकार[१] — उद्धृत

इसे वर्णरत्नाकर ने उद्धृत किया है । सदानन्दगणि ने रामाश्रम की सिद्धान्तचन्द्रिका पर इसे उद्धृत किया है ।[२]

कृष्णपति[३] ने तथा चारित्रवर्धन[४] ने मेघदूत पर उद्धृत किया है

मेदिनी कोश तथा महेश्वर का विश्वप्रकाश

मेदिनीकोश महेश्वर के विश्वप्रकाश (१११९-१२ ई.) से साम्य रखता है ।

मेदिनीकार अथवा मेदिनीकर की एकाक्षरनाममाला[५]

इनके पिता का नाम प्राणकर अथवा प्राणधर था । वे बङ्गाल के कायस्थ थे और उनका काल १२०० - १२७५ ई. का है । यह कोश महाराज शाहराज के एकाक्षरी नाममाला से भी मिलता जुलता है ।[६]

महीप / महीपसचिव अनेकार्थ

महीपसचिव — जीवनी

इनके पिता का नाम सोम तथ माता का नाम सौभाग्यदेवी था । वे वीरदास के मन्त्री थे अतः उन्हें महीपसचिव कहा जाता है ।[७]

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, I. पृ. २८१-२८९; Chatterjee, S.K. (1928)

2 वही. पृ. ९१ (४ उद्धरण)

3 Narang, S.P. Meghadūta studies, पृ. 34

4 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ. २८१-२८९

5 सम्पा. एकाक्षर नामकोषसङ्ग्रह (१९६४); Sharma, Mithlesh (१९८८), पृ. ३०-३१

6 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.१६-१८; Patkar, M.M.1981. पृ.९८

7 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.२६-२७

महीपसचिव का काल

स्टाईन इन का काल १३७४ ई. बताते हैं।[१] हेमचन्द्र को उद्धृत करने के कारण निश्चय से वह उन के पश्चाद्वर्ती हैं १०७८-११७५ ई.

पाटकर[२] के अनुसार सोमभव के पुत्र महीप का काल ११७५ तथा १४३४ ई. के मध्य है।

कृतियाँ

अनेकार्थतिलकनाम

इस का दूसरा नाम नानार्थतिलक भी है।

महीप - अनेकार्थतिलक - लोकोपयोगी

इसमें शब्दों का संयोजन लोकोपयोगी एवं व्यावहारिक प्रयोग के लिए किया गया है।

महीप - अनेकार्थतिलक - प्रयोजन

इसका मुख्य प्रयोजन कवियों का काव्य-निर्माण है।[३]

प्रत्येक काण्ड में उसने पृथक् प्रयोजन बताने की भी चेष्टा की है।[४]

अनेकार्थतिलक — विभाजन[५]

यह चार काण्डों में विभाजित है और प्रत्येक काण्ड शब्दों की संख्या यथा एकाक्षर, द्व्यक्षर, त्र्यक्षर तथा सङ्कीर्ण (चार तथा अधिक मात्राओं) पर आधारित है।

अनेकार्थ तिलक — तकनीक

इसमें प्रविष्टियां अकारादिक्रम से रखी हैं। अम् तथा ऋ स्वरों के अन्त में दिए गए हैं। क्ष को स्वतन्त्रवत् स्वीकार किया गया है। ज्ञ को ज् तथा ञ् के मध्य रखा गया है।

---

1 Stein : Catalogue of Jammu and Kashmir Manuscripts. पृ.५२, Patkar, M.M. (१९८१) पृ.१०६

2 सम्पा.Deccan college Post-Graduate and Research Institute पूना, 1947 (Sources of Indo Aryan Lexicography)

3 अनेकार्थतिलक १.२ कवीन्द्रकुमुदानन्दकन्दोद्गमसुधाकरः रम्योऽनेकार्थसङ्ग्रहः

4 द्र.वही.१.४५;३.१;९.२९० इत्यादि

5 Shete, Suvarna. Proc. Seminar Dict. Pune. पृ.६९ से

व तथा ब् को सम्मिश्रित कर दिया गया है। यह अन्य कोशों के प्रभाव अथवा ध्वनियों के स्थानीय उच्चारण के कारण भी हो सकता है।

शब्दों का चयन अनेक क्षेत्र यथा ऋक्, कठ, व्याकरण, नाटक, रूपक, वेदान्त न्याय, विविध कलाओं, छन्दस् तथा आयुर्वेद इत्यादि शास्त्रों से किया गया है।

इतना होने पर भी यह कोश लोकप्रिय नहीं हो पाया।[१]

अनेकार्थतिलक — स्रोत

इसकी अनेक पङ्क्तियों का साम्य हैम तथा मेदिनीकोश से है जो प्रत्यक्ष अथवा समान स्रोतों से गृहीत होने के कारण हो सकता है।

महीप ने कोशकारों एवं वैय्याकरणों की कृतियों का प्रयोग किया है जिनमें पाणिनि, ऐन्द्र अहीन्द्र, भागुरि, भोज, भेद (?) हेमचन्द्र तथा अमर हैं।[२]

महीपसचिव

एकाक्षरकोश (द्र. एकाक्षरीकोश)

राघवकवि

इन की अन्य कृतियां उतररामायण चम्पू, नानार्थमञ्जरी, निर्णयोद्धार, मद्राचलचम्पू तथा वादावलिव्याख्या हैं।[३]

राघवेकृत — नानार्थ मञ्जरी[४]

यह कोश बहुत भाग में नानार्थरत्नमाला से मिलता जुलता है। इसमें १००६ श्लोक है।

---

1 विस्तार के लिए द्र.Shete, Suvarna : Proc. Seminar. Dict. Pune पृ.६९-७८

2 अनेकार्थतिलक - ४.२१२

3 Śāstrī, P.P.S. Author Index of Sanskrit Manuscripts in the Govt. Orient. MSS. Lib Madras. १९४०.पृ.६६

4 सम्पा. Sharma, Krishnamuorthy, K.V. Poona, 1954; एकाक्षरीनाममाला पृ. १२; Vogel पृ. ३५३-५४; Sharma Mithlesh (1988) पृ.१३ (विश्लेषण - एकाक्षरी)

इस कोश के लिए राघव ने विश्वप्रकाश, गोपाल, त्रिकाण्डशेष के कर्ता पुरुषोत्तम, धनञ्जय, शब्दार्णव, वैजयन्ती, सूर्य, रुद्र, यादवप्रकाश, प्रताप, भागुरि, दण्डी, रभसपाल, हलायुध, सुभूतिचन्द्र, हरि, विष्णु, वररुचि, अमरसिंह, उत्पल, अजयपाल तथा शाश्वत का उल्लेख किया है।[१] स्वरों के पश्चात् शब्दों के अभिवृद्ध क्रम से ककारादिक्रम से कोश विन्यस्त है। ळ और क्ष अन्त में आते हैं।

नानार्थरत्नामाला — इरुगपदण्डाधिनाथ[२]

यह कोश इरुगपदण्डाधिनाथ द्वारा निर्मित है। यह हरिहर - द्वितीय के राज्यकाल में हुए। इन के अन्य नाम इरुगदण्डेश, इरुगपदण्डाधिनाथ, निरुपम-दण्डाधिनाथ तथा भास्कर विवुध भी हैं। अपने विषय में इन्होंने लिखा है कि मैं राजा हरिहर का द्वितीयान्तःकरण हूं तथा राज्यकार्य एवं प्रजा की रक्षा करता हूं। मेरी कुशाग्र बुद्धि पर राजा प्रसन्न होता है।[३] इरुग, इरुगप गृह के पर्याय हैं। अतः यह गृहमन्त्री प्रतीत होते हैं।

---

1 उद्धरण के लिए - द्र.कोशों की संख्या अन्य हस्तलेख - नानार्थमञ्जरी .द्र.NCC. X. पृ.२९३

2 हस्तलेख.NCC. X. पृ.३७ हस्तलेख NCC. X. पृ.२९३ सम्पा.Madras, 1856, 1858, (Grantha), 1870; Telugu Comm. Madras, 1879; with Anekārthasamuccaya, Poona, 1929; Critical edition. Deccan College, Poona, 1954 (Q. NCC. X. पृ.३७) व्याख्या - वन्द्यभट्टकृत NCC. X. पृ.३ ७ इनके पिता दण्डनाथ बैचप्प हरिहर तथा विजयनगर के बुक्क के मन्त्री थे। - इनके हस्तलेखों के लिए द्र.NCC. II. पृ258 South Indian Inscriptions, I १५२ (पृ.१५६)- तथा Epigraphica Indica VII
पृ.११५-११६

3 द्वितीयमन्तः करणं राज्ञो हरिहरस्य यः राज्यकार्यं प्रजारक्षां द्वयं धत्ते कुलव्रतम्। भारं हरिहराधीशो भुवः कूर्मादिदुर्वहाम् बुद्धौ कुशाग्रसूक्ष्मायां यस्य विन्यस्य मोदते। व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व द्र.Poona edition, 1954 (भूमिका)

इसके अन्य नाम इरुगप, इरुग[१], इरु, दण्डेश, दण्डिनाथ तथा भास्कर के नाम से भी जाने जाते हैं।[२] उनके पिता का नाम मायण[३] दण्डाधिनाथ बैचप्प तथा भाई सायण था।

नानार्थरत्नमाला — संयोजन

इसमें छः काण्ड हैं। एकाक्षरकाण्ड, द्व्यक्षरकाण्ड, त्र्यक्षरकाण्ड, चतुरक्षर काण्ड, सङ्कीर्ण काण्ड तथा व्ययकाण्ड सङ्कीर्णकाण्ड में पञ्चाक्षर, षडक्षर तथा सप्ताक्षरादि पदों का संग्रह है। इनमें कुछ शब्द लाक्षणिक भी है। यह ग्रन्थ प्रायः अनुष्टुप् छन्द में है। स्वरान्त शब्दों में उपान्त्य के आधार पर द्व्यक्षरादि शब्दों का विन्यास किया गया है। लिङ्गनिर्देश भी साथ २ किया गया है। कई बार उपान्त्य विन्यास वैज्ञानिक नहीं है। यथा धुर् शब्द रकारान्त में न होकर धकारान्त में न्यस्त है।[४]

दण्डनाथ — इरुगप[५]

इन का कोश अभिज्ञानशाकुन्तल पर राघवभट्ट ने उद्धृत किया है।

एकाक्षरकाण्ड[६]

इसके अन्य नाम एकाक्षरनिघण्टु अथवा एकाक्षररत्नमाला भी हैं। यह इरुगप दण्डनाथ के नानार्थरत्नमाला का प्रथम अध्याय है।

एकाक्षरकाण्ड

इन्होंने एकाक्षरकोश का पृथक् निर्माण भी किया।[७]

---

1 Patkar (1981), पृ.११२

2 NCC. II. पृ.२५९

3 Patkar (1981) पृ. ११४ विश्लेषण Sharma, Mithlesh (1988) पृ.२४-२६

4 द्र. शर्मा, श्रीराम, नानार्थ रत्नमालायां स्वीकृतो मार्ग उच्यते Proc. Sem. Dict. Pune
पृ.६०-६१

5 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History_ पृ.४२९-४३६

6 द्रष्टव्य NCC. II. p.259.
NCC. III. पृ.५६

7 द्र.Sharma, Mithlesh

इस एकाक्षर काण्ड की विशेषताओं का उल्लेख भी हुआ है।[१]

इरुपदण्डाधिनाथ एवं राघव

अर्थों एवं कोश की दृष्टि से राघवकवि का कोश इस कोश से मिलता है।[२]

हर्षकीर्तिकृत अनेकार्थमाला

अनेकार्थनाममाला अथवा अनेकार्थशत — इस के कर्ता हर्षकीर्ति हैं।[३]

हर्षकीर्ति

गदसिंह अथवा दुर्गसिंह के समान हर्षकीर्ति ने भी महाक्षपणक की अनेकार्थध्वनिमञ्जरी के पाठ को सुधार कर अपने कोश में देने की चेष्टा की।[४]

नामसङ्ग्रहमाला अप्पयदीक्षितकृत[५]

राघवन् के अनुसार कोशकार अप्पयदीक्षित लोकप्रसिद्ध अप्पयदीक्षित से भिन्न है।[६]

नाममाला सङ्ग्रह कोश

यह अप्पयदीक्षित द्वारा प्रणीत है।[७] यह कोश रघुवंश पर चक्रवर्ती के द्वारा उद्धृत है। दण्डी की अवन्तिसुन्दरीय तथा नाट्यशास्त्र पर दिवाकर इसमें उद्धृत है।

---

1 इस कोश के अन्य कोशों के साथ अर्थ प्रयोग एवं कारणों के लिए द्र.Narang, S.P. Determination of Meaning in Monosyllabic Lexicons. Smt. Kamlesh Kumari Kulshreshtha comm. Vol. 1992. पृ.६६-७९

2 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.२५

3 NCC. I. पृ.२२२

4 Vogel, पृ.३२०

5 NCC.X. पृ.४९
द्र.NCC. I. Revised. पृ.२५९

6 NCC. I. Revise पृ.२५९

7 NCC. I. पृ259 os. Annals of Oriental Research University of Madras, V. लेखक के विषय में दे.NCC. I. पृ.२५० अनेक अप्पयदीक्षित

नामसङ्ग्रह माला — अप्पयदीक्षित[१]

अप्पयदीक्षित

इनके पिता का नाम रङ्ग राजाध्वरिन् था। यह अच्चान दीक्षित के पौत्र थे। यह भारद्वाजगोत्र के थे और काञ्चीपुरम् के वासी थे। इन का काल प्रायः १५४९-१६१३ ई. माना जाता है।

यह कोश लगभग २५० श्लोकों में है जिसमें गद्य भी सम्मिश्रित है। पुराणों के अतिरिक्त यह रभसकोश, अमर, अमरशेष, हलायुध, यादवप्रकाश, महेश्वर, केशवस्वामी तथा वामनबाणभट्ट के कोशों को उद्धृत करता है। पर्यायपदमञ्जरी भी इस में उल्लिखित है।[२]

शब्दरत्नप्रदीप[३]

इस कोश का काल एवं कर्ता सुनिश्चित नहीं है। आन्तरिक साक्ष्यों से प्रतीत होता है कि वह जैन है क्योंकि जैनों के अनेक सिद्धान्तों तथा वर्गीकरण से वह परिचित है।

इसमें अनेकार्थ, परिभाषात्मक शब्द तथा अव्ययों का संकलन है। इसका अन्य विभाजन अधिकारों में श्लोकाधिकार, अर्धश्लोकाधिकार तथा पादाधिकार में भी है।

प्रायः जितने शब्दों का अर्थ दिया जाना है उन की पुनरुक्ति की जाती है। लिङ्ग भेद होने पर सलिङ्ग पुनरुक्ति होती है।

परिभाषात्मक शब्दों में प्रायः — परिभाषाएं हैं जो प्रसिद्ध शास्त्रों के अतिरिक्त सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र से संगृहीत हैं।

पञ्चम मुक्तक में केवल अव्यय हैं।[४]

---

1 NCC. X पृ.२९४

2 Raghavan, V. Annals of Oriental Research (उद्धृत); V. Krishnamacarya; तथा Vogel. पृ.३६१ यह कोष अद्यावधि अप्रकाशित है।

3 सम्पा. हरिप्रसाद शास्त्री, जोधपुर, १९५६ Hota, Kashinath Proc. Seminar Dic. Pune. 83-96

4 अन्य विस्तार के लिए द्र. Hota, Kashinath Lexical Priciples of Śabdaratnapradīpa in Proc. Nat Sem. Dict. Pune पृ.८३-८६

अनेकार्थ —अज्ञात

कुछ अज्ञात अनेकार्थी कोशकार

इसे सिद्धिचन्द्रगणि ने वासवदत्ता विवरण में उद्धृत किया है।[१]

नानार्थकोश — असगकवि[२]

इस कोश का केवल उल्लेख प्राप्त होता है।[३]

दुर्गसिंह / गदसिंह

पश्चाद्वर्ती कोशशास्त्रियों यथा गदसिंह दुर्गसिंह को अनेकार्थ ध्वनि मञ्जरी ने प्रेरित किया।[४]

ध्वनिमञ्जरी — कोश[५]

इसे मुरामिश्र ने शब्दशब्दार्थमञ्जूषा पर ढौका में उद्धृत किया है। क्या यह गदसिंह का कोश है?

ऊष्मविवेक — गदसिंह

इसमें ११२ पद्यों में ऊष्मों का भेदक तत्व है।[६]

अनेकार्थ[७]

अनेकार्थकाण्ड[८]

अनेकार्थकोश अथवा मेदिनी कोष

लेखक के पिता का नाम प्राणधर था।

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, Vol.I पृ.२७१

2 NCC. X.पृ.३५

3 शाह, अंबालाल प्रे. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास भाग ५. वाराणसी, १९६९ पृ.९३

4 द्र.Vogel. पृ.३२० गदसिंह - नानार्थध्वनिमञ्जरी NCC.X.पृ.३८

5 NCC. IX. पृ.३१०

6 सम्पा. व्याख्या सहित झा, परमेश्वर. दरभंगा. १८९०-९१

7 NCC. I. p.220 unpublished

8 NCC. I. p.220

अनेकार्थ कोश

सुभूतिचन्द्र ने अमरकोश की व्याख्या पर इसे उद्धृत किया है।[१]

अनेकार्थचतुर्थ — अज्ञात[२]

अनेकार्थदीपिका

यह कोश किरातार्जुनीय II. ५९ पर मल्लिनाथ द्वारा उद्धृत है। NCC.I.

अनेकार्थनाममाला[३] — अज्ञातकर्तृक

अनेकार्थनाममाला अथवा अनेकार्थ शत[४]

इसमें प्रायः १२० श्लोक हैं और फॉगल इसे सम्पादित कर रहे थे।

अनेकार्थरत्नकोश — अज्ञात

इसके लेखक अञ्चलगच्छ के निवासी थे।[५]

अनेकार्थरसमञ्जरी — अज्ञात[६]

अनेकार्थवृत्ति

इसे गुणविजयगणि ने रघुवंश की व्याख्या विशेषार्थोद्बोधिका में उद्धृत किया है।[७]

अनेकार्थसार — द्र. धरणिदास

नानार्थसङ्ग्रह — ऊरि नृसिंह

हस्तलेख NCC. X. पृ.२९३

---

1 JOR. Madras, VIII, p.374

2 NCC. I. p.220

3 NCC. I. पृ. 222

4 Vogel. पृ. 359

5 जैनग्रन्थावली.पृ.३०९ NCC. I. पृ.२२२

6 NCC. I. पृ.२२२

7 BORI. D. XII. ii. 569 NCC. I. पृ222

नानार्थसङ्ग्रह[१]

— उरिनृसिंह

— गोपाल

नानार्थकोश

हस्तेलख NCC. X. पृ.३५

नानार्थकल्पद्रुम व्याख्या — क्रमदीश्वर[२]

नानार्थसन्दिग्धार्थविचार[३] — गदाधर कृत

गोपाल[४] — कोशकार

नानार्थसङ्ग्रह का इन्होंने निर्माण किया।

यह प्राकृत का कोशकार है जिस का प्रयोग हेमचन्द्र ने देशीनाममाला में किया है। राघव की नानार्थमञ्जरी ने भी इस का प्रयोग किया है[५] यह कोई संस्कृत-कोष भी हो सकता है।

नानार्थशब्दरत्न — कालिदास[६]

भोज के राज्य में १०१८-६० ई.

कुलुम्बाचार्य कृत नानार्थशेखर[७]

यह कोशकार सुजन की शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका पर उद्धृत है।

नानार्थ — अज्ञातकर्तृक

इसे वासवदत्ता पर विदग्ध वल्लभ ने उद्धृत किया है।[८]

---

1 NCC. X. पृ 38

2 NCC. X. पृ.३५

3 NCC. X. पृ.३८

4 NCC. VI. पृ.१३२, देशीनाममाला, भूमिका पृ.३५३

5 Vogel. ३५३

6 Vogel. पृ372 (द्र.कालिदास)

7 NCC. IV. पृ.२४८; ō. Adyar Library Bulletin VII. i. 1943. पृ.४२

8 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol. I. पृ. २६३-२८०

नानार्थकोश[१]

अमरकोश पर रायमुकुट ने उद्धृत किया है।

नानार्थकोशसङ्ग्रह[२]

नानार्थार्णव सङ्क्षेप[३] **अज्ञात**

नानार्थकोश — पुरुषोत्तम

कल्पद्रुकोश — भूमिका. lix NCC. X. पृ.३६

नानार्थशब्दानुशासन — मण्डनमिश्र[४]

नानार्थशब्दकोश — मथुरेश[५]

द्र. शब्दरत्नावली

राघव — नानार्थमञ्जरी

द्र. Vogel. पृ.३५३

सज्जन

इसे केशव ने नानार्थार्णवसङ्क्षेप में उद्धृत किया है।[६]

श्रीनाथकृत अनेकार्थमञ्जरीकोश[७] **(नानार्थरत्नकोश)**

इसके लेखक श्रीनाथ हैं।

सदाशिव शर्मन्[८] **— नानार्थकोश**

---

1 ZDMG. 28(1874) पृ.११४
2 NCC. X. पृ.३६
3 NCC. X. पृ.३८
4 NCC. X. पृ.३८
5 NCC. X. पृ.३८
6 Vogel. पृ.३४६ से
7 NCC. I. पृ.२२२
8 NCC. X. पृ.३६

समयसुन्दरकृत अनेकार्थ रत्नमञ्जूषा

इसके लेखक समयसुन्दर हैं।[१]

सिद्धिचन्द्र कृत अनेकार्थवृति

यह वृत्ति सिद्धिचन्द्र द्वारा प्रणीत है।[२]

अनेकार्थनाममाला[३]

यह विनयसागरकृत है

---

1 सम्पा. सेठ देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्ड सीरिज़,८१

2 जैनग्रन्थावली पृ.३०९

3 NCC. I. पृ.२२२

चतुर्थ अध्याय
एकाक्षरकोश

एकाक्षरी कोशों में अर्थ का विकास

यह अब भी कठिन समस्या है कि एकाक्षरी शब्दों में देवतापरक अर्थ मूल कौन सा था। प्रत्येक सम्प्रदाय अपने २ सम्प्रदाय के अनुकूल इन का निर्धारण करने की चेष्टा कर रहा था। (द्र. आगम)[१]

एक ही शब्द अन्य देवों के पर्यायों के रूप में प्रयुक्त हो रहा था तथा अन्तः परिवर्तन करने की चेष्टा करता था।[२]

देवताओं के अर्थ का परिवर्तन उनके अवतार, वाहन, अस्त्र, वस्त्र, अंग, वास, पान तथा परिवार में हुआ।[३]

एकाक्षरी कोशों में व्याकरण सम्बन्धी अर्थों का विकास सूत्रों के माध्यम से, उनके शब्दों , अर्थों तथा उदाहरणों के माध्यम से भी हुआ।

धातुओं का साम्य एकाक्षरी के साथ होने से अथवा उन के अर्थों के पर्यायों के माध्यम से भी हुआ।

प्रातिपदिक, ध्वनियों, विस्मयबोधक शब्द, अर्थों, सम्बोधन, प्रश्न, समास तथा वाक्यविन्यास के माध्यम से।[४]

---

1 Sharma, Mithlesh, 1988 पृ. ३८-८०, Narang, S.P. Determination of meaning in mono-syllabic Lexicons. Smt. Kamlesh Kumari Kulshreshtha Comm. Vol. 1992. पृ. ६६-७९

2 वही.पृ.८१-१२२

3 वही.पृ.१२३-२०५

4 वही.पृ.२०६-२४१

ध्वनियों से अर्थ की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त लाक्षणिक प्रयोग भी इस का कारण बने । अप्रसिद्ध विपरीतार्थक, अनुनासिक तथा ध्वनि की अन्य प्रवृत्तियाँ भी कारण बनी ।[१]

लेखनकला और अर्थपरिवर्तन

प्राचीन लिपियों के लेखन-प्रकार के अनुकरण पर भी एकाक्षरी-कोशों के अर्थों का परिवर्तन हुआ । सम्भवतः चित्रात्मक लिपियां भी इस के लिए निमित्त बनी हों ।[२]

अभिधानकदम्बक (तान्त्रिक कोश) [३]

अमरचन्द्र

अमरचन्द्र — एकाक्षर नाममालिका[४]

यह वायडगच्छ के शिष्य जिनदत्तसूरि के द्वारा लिखा हुआ है । गुजरात के राजा वीसलदेव वाघेल के राज्याभिषेक (१२४३-६१ ई.) से पूर्व लिखा गया । उसे राजदरबार में बुलवाया गया था ।[५]

इसके अन्य नाम अमर, अमरचन्द्रकवि तथा अमर कवीन्द्र है । सूर्योदय के वर्णन के कारण उन का उपनाम वेणीकृपाण भी रखा गया ।[६]

अमरचन्द्र — कृतियां[७]

इनकी कृतियां बालभारत, काव्यकल्पलता, कविशिक्षा, छन्दोरत्नावली, मुक्तावली, कलाकलाप, पद्मानन्द महाकाव्य, श्रीजितेन्द्रचरित, एकाक्षरनाममाला तथा एकाक्षर नाममालिका है । विश्वाभिधानदि पूर्वोचार्यों के आधार पर यह लिखा गया ।

---

1 वही.पृ.२४२-२७२

2 उदाहरण Sharma, Mithlesh, 1988 पृ.२७३-२८१

3 अप्रकाशित — NCC. पृ.२९२

4 सम्पा. Tripathi, S.N. Banaras, 1950 (धनञ्जय की नाममाला सहित), एकाक्षरनाममालाकोषसङ्ग्रह.पृ.८०(द्र.) जिनदत्तसूरि; Vogel. पृ.३६९

5 Krishnamachariar M. HCSL. पृ.१९९

6 Krishnamacharinar, M. HCSL. पृ.१९९-२००

7 Aufrecht, T. CC. I. पृ.३३२

एक अन्य कृति स्यादिशब्दसमुच्चय भी इन की कृति मानी जाती है।[१]

आगम परम्परा

अनेक आगमों ने अपनी अपनी परम्परा के अनुरूप एकाक्षरी शब्दों का तथा बीज शब्दों का अर्थ निर्धारण किया।[२]

भास्करराय ने ललितासहस्रनामभाष्य (दे.श्लो.५) में अनेक आगम परम्परा के कोशों को उद्धृत किया है दे. अग्निपुराणीय कोश (श्लोक.५६) ललितासहस्रनामभाष्य पर भास्करराय

आगमार्थसङ्ग्रह[३]

यह आगमों के अर्थ का सङ्ग्रह कोश हो सकता है।

एकाक्षरकोश[४] — मन्त्रपरम्परा

यह सम्भवतः रुद्रयामल से लिया गया मन्त्र है।

एकाक्षरनिघण्टु — शिवागम द्र. आगम

एकाक्षर —इरुगपदण्डाधि. द्र. नानार्थरत्नमाला

एकाक्षर —द्वयक्षरनिघण्टु[५]

एकाक्षरनामकोश[६]

इसे महिमासिंहगणि ने मेघदूत पर अपनी व्याख्या में उद्धृत किया है।

एकाक्षरनिघण्टुमाला[७]

इसे हेमाद्रि ने रघुवंश पर उद्धृत किया है। इसका नाम एकाक्षरमाला भी है।

---

1 जैन साहित्य का बृहत् इतिहास ५.पृ.९४

2 दे. चौधरी — पाञ्चरात्रागम दे. अहिबुध्न्यसंहिता कोशों के आधार पर Narang S.P. Determination of meaning in monosyllabic lexicons. द्र. अभिधानकदम्बक, आगमार्थसङ्ग्रह, एकाक्षरकोश, मातृकाकोश

3 NCC. II. पृ.१५

4 NCC. III. पृ.५७

5 NCC. III. पृ.५८

6 NCC. III. पृ.५८

7 NCC. III. पृ.५९

एकाक्षरनिघण्टु — अज्ञातकर्तृत्व

इसे आत्मानन्द ने अस्यवामस्यसूक्त पर उद्धृत किया है[१]

एकाक्षरनिर्णय — अज्ञातकर्तृकत्व[२]

एकाक्षरमालानिघण्टु[३] — एकाक्षरमातृका कोश

एकाक्षर विधान[४] — अज्ञातकर्तृत्व

एकाक्षरावली[५]

एकाक्षरीकोश[६]

इसके विषय में कोई जानकारी नहीं है। इस नाम का एक ग्रन्थ अस्यवामीयसूक्त पर आत्मानन्द की स्वव्याख्या मे उद्धृत है। इसे ज्योतिर्विदाभरणव्याख्या में भावरत्न ने उद्धृत किया है। यह विष्णुस्तोत्र की एक अज्ञातकर्तृक व्याख्या में तथा विज्ञानभैरव में भी उद्धृत है।

इसके अन्य नाम एकाक्षरनाममाला, एकाक्षरनिघण्टु एवं एकाक्षररत्नमाला भी मिलते हैं।

एकाक्षरीनाममाला[७]

इसके अन्य नाम एकाक्षरकोश, एकाक्षरनिघण्टु और एकाक्षररत्नमाला मिलते हैं परन्तु इनके कर्तृत्व के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती।

यह अमरचन्द्र कृत एकाक्षरीकान्त और एकाक्षरी सिंह के नाम से भी मिलता है।

एकाक्षरनिघण्टु

द्र. **आगम** तथा **मातृका**

---

1 NCC. III. पृ.५९

2 NCC. III. पृ.५९

3 NCC. III. पृ.५९

4 NCC. III. पृ.६०

5 NCC. III. पृ.६०

6 हस्तलेखों के लिए द्रष्टव्य NCC. III. पृ.५ ६

7 NCC. III. पृ.५८

एकाक्षराभिधान द्र. वररुचि — एकाक्षरनाममाला

एकाक्षरनिघण्टु द्र. वररुचि-एकाक्षरनाममाला

ऐन्द्र निघण्टु — द्र. वररुचि एकाक्षरनाममाला

दुर्गसिंह

इनकी कृति नानार्थध्वनिमञ्जरी है। नानार्थाभिधान गदासिंह कृत भी माना जाता है।[१]

द्र. दुर्गसिंह, गदसिंह

द्विरूपकोश[२] — एकाक्षरी

एकाक्षरी — द्र. आगम

एकाक्षरी कोश

धनञ्जयकृत — द्र.धनञ्जय

नाममाला[३] — एकाक्षरी

एकाक्षरीनानार्थकाण्ड — धरसेन विश्वलोचनकोश

द्र. धरसेन

कालिदास

एकाक्षर नाममाला — कालिदासकृत

यह प्रह्लादपुर के दामोदर के पुत्र थे और इन्हों ने १५९३-९४ से पहले यह कोश लिखा। यह बीकानेर हस्तलेख के आधार पर है।[४]

कालिदास ईश्वरकृष्ण[५]

इनके साथ अन्य कृतियां निम्नलिखित मानी जाती हैं।

---

1 NCC. IX. पृ.७६;NCC. I. द्वितीय संस्करण पृ.२२१;V, 291

2 NCC. IX. पृ.२०९

3 NCC. X. पृ.४५

4 Vogel. पृ.३७०

5 NCC. IV. पृ.६९,७१;द्र.कालिदासनिघण्टु (जो अष्टादश लघुनिघण्टुओं का संग्रह है)

— **एकाक्षरनामामाला**

— **नानार्थशब्दरत्न**

इस पर एक तरला नाम की व्याख्या है जो निचुलकवि की मानी जाती है। निचुल कवि योगिचन्द्र भी कहे जाते हैं तथा भोजराज से अनुप्राणित हैं।

यह मेघदूत की १.१४ मल्लिनाथकृत व्याख्या पर आधारित है जहां इनके काव्य का एक अन्वर्थ श्लोक भी उद्धृत है।

— रत्नकोश

— शब्दरूपावलि

— **नानार्थशब्दरत्न** — कालिदास[१]

व्याख्या — तरला — योगिचन्द्र निचुलकवि (भोज का समकालिक)

मुक्त पद मञ्जरी

यह (ईश्वर कृष्ण) कालिदासकृत मानी गई है।[२]

एकाक्षरनाममाला[३]

यह संभवतः कालिदास कृत है।

कालिदास व्यास[४] — एकाक्षरकोष

पण्डितमनोहर — एकाक्षरकोश[५]

इस कोश का काल ज्ञात नहीं है। यह ३१^{१}/२ श्लोकों में ग्रथित है।

---

1 द्र.NCC. IV. पृ.६९ NCC. X. पृ.३८

2 NCC. XIII. पृ ५५ ; ईश्वरकृष्ण एवं कालिदास के ऐक्य पर — Mainkar T.G. द्र. Narang S.P. Kālidāsa Bibliography १९७६ तथा Mainkar, T.G. Sāṁkhya Kārikā

3 NCC. III. पृ.५८

4 Vogel. पृ.३७० Sharma, Mithlesh (1988) पृ.३१

5 सम्पा. एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह पृ.१२०

अर्थों की तुलना करके मिथलेश शर्मा ने सिद्ध किया है कि इस कोश का महाक्षपणक, वररुचि, पुरुषोत्तमदेव तथा अमरचन्द्र से बहुत साम्य है।[१]

पुरुषोत्तम देव (द्र.) एकाक्षरनाममाला[२] प्रमारणकवीन्द्र

यह संभवतः प्रमारणकवीन्द्र कृत है।

एकाक्षरकोश[३] यह प्राणकृष्ण से सम्बद्ध है।

भरतमल्लिक

एकवर्णार्थसङ्ग्रह[४] भरतमल्लिक अथवा भरतसेनकृत

यह गौराङ्गमल्लिक के पुत्र थे जो वैद्य हरिहार खां के परिवार के थे (१७९० ई.)।यह गौरांगमल्लिक पुत्र भरतसेन द्वारा ६१ श्लोकों में अनेकाक्षरकोश है।

कृतियाँ

इनकी कृत्तियां हैं — उपसर्गवृत्ति, **एकवर्णार्थसंग्रह**, कारकोल्लास, किरातार्जुनीय टीका, कुमारसम्भवटीका, घटकर्परटीका, द्रुतबोधव्याकरण और उसकी व्याख्या द्रुतबोधिनी, **द्विरूपध्वनिसंग्रह**, नलोदयटीका, नैषधीयचरित टीका, मुग्धबोधिनी, अमरकोष पर टीका, मेघदूतटीका तथा वैद्यकुलतत्त्व, शिशुपालवध टीका सुखलेखन[५]।

---

1 Sharma, Mithlesh (1988), पृ.३६

2 NCC. III. पृ.५८

3 NCC. III. पृ.५७

4 सम्पादित IHQ. XXXVI. i. pp.30-4; जीवनी के लिए द्र. अमरकोष पर मुग्धबोधिनी Vogel. पृ.३७१ जीवन एवं कृतियों पर जिन में एकवर्णार्थसङ्ग्रह भी है - Aufrecht. T.CC. पृ. 390, 396 Jani, A.N. A critical study of the Naiṣadhīyacarita. पृ. 135; Narang, S.P. Bhaṭṭi-kāvya: A study. पृ.२८-२९

5 De, S.K. OH. III. i Jan - June 1955. पृ.१५-२८; Narang, S.P. Kālidāsa Bibliography - See Meghadūta, Kumārasambhava, commentaries, Krishnamachariar, M. HCSL.

एकाक्षरी कोश[१] —भास्करपण्डितकृत

यह कोश भास्कर पण्डित कृत है। इसमें पुरुषोत्तम से सम्बद्ध कोश के समान पंक्तियां मिलती हैं।

द्र.मकरन्ददास कृत परमानन्दीयनाममाला

मकरन्ददास परमानन्दनन्दन कृत परमानन्दीयनाममाला

इस एकाक्षरीकोश के लेखक के पिता का नाम गढमल था। इनके गुरु का नाम चिदानन्दस्वरूप गोस्वामी था जिस का उल्लेख उनके कोष में मिलता है।

इन्होंने विश्वप्रकाश, अमर तथा हेमचन्द्रादि के कोशों का गहन अध्ययन किया

इसे सूक्तिमुक्तावलि में उद्धृत किया गया है।[२] जगन्नाथ के नमस्कार से उनकी उड़ीसावासी होने की भी सम्भावना है। इन का काल ज्ञात नहीं।

एकाक्षरी कोश — महादेवकृत[३]

एकाक्षरकोश — महाक्षपणककृत[४]

ग्रन्थकार ने आरम्भ में ही आगमों, अभिधानों, धातुओं और शब्दशासन से इस एकाक्षरनामाभिधान का संकलन किया। ४१ पद्यों में क से क्ष तक के व्यञ्जनों के अर्थप्रतिपादन के बाद स्वरों के अर्थों का निर्देश है।

अनेकार्थध्वनिमञ्जरी के अतिरिक्त इन का एक एकाक्षरकोष भी है।[५] इस का दूसरा नाम एकाक्षरार्थसंलापः भी है।

---

1 NCC. III. पृ.५७; Vogel. पृ.३६९

2 Krishnamachariar, M. HCSL. पृ.१२

3 NCC. III. पृ.६०

4 सम्पा. एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह; जैन साहित्य का बृहत् इतिहास.५, पृ.९४

5 सम्पा. एकाक्षर नाम कोष सङ्ग्रह, १९६४ पृ.६६; विश्लेषण के लिए द्र. Sharma, Mithlesh. (१९८८) पृ.५-६ (अप्रकाशित) इन से जुड़ी अन्य कृतियों के लिए द्रष्टव्य- NCC. IV विश्लेषण के लिए Pavolini, P.E. GSAI ५. पृ.१७५ (उद्धृत Vogel. पृ.३२०)

महाराजशाहराज - एकाक्षरी

महाराजशाह - एकाक्षर नाममाला

यह कोष शब्दरत्न समन्वय कोश के अन्तर्गत है। इन का काल १६८४-१७१२ ई. था और इन्होंने इस काल में तञ्जोर पर शासन किया। उन्होंने शाहजीपुरम् नाम का ग्राम अनुदान में दिया और अपनी कृतियों के संकलन के लिए विद्वानों के आवास का प्रबन्ध किया।[१]

कृतियां —

एकाक्षरनामामाला के अतिरिक्त उन्होंने शब्दार्थसङ्ग्रह, अष्टपदी, चन्द्र-शेखरस्वरविलासनाटक तथा शब्दरत्नसमन्वयकोश की रचना की

महाराजशाहराज तथा मेदिनीकार

इनकी एकाक्षरनाममाला का साम्य मेदिनीकार से है।[२]

महेश्वर — एकाक्षरकोश

द्र. महेश्वर : विश्वप्रकाश

महीपसचिव - एकाक्षरकोश[३]

एकाक्षरकोश[४]

यह कोश महेश्वर कृत है।
(द्र. विश्वप्रकाश तथा महेश्वर)

मातृकाकोश[५]

---

1 Winternitz, M. HIL. III. ii. पृ.४६१; Patkar, M.M. History of Sanskrit Lexicography. १९८१,पृ.१५३ से;Sharma, Mithlesh (1988) पृ.३०

2 Sharma, Mithlesh (१९८८) पृ.३१

3 सम्पा. एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह (१९६४) पृ.८९ विश्लेषण Sharma, Mithlesh (1988) पृ.२६-२८ महीपसचिव के लिए द्र. अनेकार्थतिलक

4 NCC. III. पृ.५७

5 Avalon, A. Tantrik texts, I Calcutta London, 1913 (1937) Vogel. पृ.३६९

मातृकानिघण्टु — महीदास अपरनाम महीधर कृत[१]

एकाक्षरकोष[२]

यह महीधर कृत है। इसका एक अन्य नाम मातृकानिघण्टु भी है।

मातृका तथा एकाक्षरनिघण्टु

यह शिवागम के सर्वोपयोगिकरत्व का प्रथम तथा द्वितीय अध्याय है। क्रमशः ये ६४ तथा ३१ १/२ श्लोकों में है।[३]

एकाक्षरशब्दमाला — माधवकृत[४]

माधव का अन्य नाम करनाटक सिंहासन स्थापनाचार्य था[५] जो सुप्रसिद्ध वैदिक भाष्यकार हैं। भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न मायण या मायणार्य के सुपुत्र तथा सायण के यह भाई थे। वे हरिहरराजा[६] अथवा विजयनगर के राजा बुक्क के मन्त्री थे। माधव ने **एकाक्षरशब्दमाला** में अपने आप को हरिताल का मन्त्री बताया है। बाद में यह विद्यारण्य के नाम से भी प्रसिद्ध हुए। इन का काल १३३६-१३५६ ई. के आसपास का रहा होगा। उनकी मृत्यु १३८७ ई. में हुई।

---

1 सम्पा. द्वादशकोशसङ्ग्रह वाराणसी १८६५-६६; एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह पृ. १०४ लेखक के लिए द्र. Aufrecht CC. I. पृ.४४४

2 NCC. III. पृ.५७

3 जैनों में भी इस प्रकार के ग्रन्थ प्रचलित थे। Leumann, E. ICO pt.3 पृ.५५९ Vogel. पृ.३७० यन्त्रलेखन पद्धतियां जो इस प्रकार के बीजाक्षरों का न्यास करती हैं जैनों में प्रसिद्ध हैं।

4 सम्पा.एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह पृ.३८ विश्लेषण : Sharma, Mithlesh (1988) पृ. २१-२३ माधव के विषय में Kunhan Raja JOR. 5. पृ. ३१६; Venkatasubbiah. JOR. १० पृ.११५; Joshi, A.C. AIOC. II. पृ. 249. Upadhyaya, Baldev, Sāyaṇa (in Hindi); Patkar, M.M. PO.8, पृ.११८ हरिहर II की कृति के विषय में - Raghavan, V. ALB. I. पृ.८९; Vogel. पृ.३७०

5 Krishnamacharair, M. HCSL. पृ.२१३

6 Patkar, M.M. १९८१.पृ.१०३; Krishnamachariar, M. HCSL. पृ.२१३

राघव — कृतियां

वैदिक कृतियों[१] के अतिरिक्त उन्होंने एकाक्षरशब्दमाला, कालनिर्णयकारिका या कालमाधवकारिका, कालनिर्णयसङ्ग्रहश्लोक, माधवकारिका, लघुमाधव तथा पाणिनि पर आधारित धातुवृत्ति भी लिखी। देव्यपहारस्तोत्र, रामोल्लास, त्रिपुरविजय, शृङ्गारमञ्जरी, उद्धरणमाला, महागणपतिस्तोत्र तथा गौरीनाथस्तोत्र भी इनके लिखे माने जाते हैं।[२]

नाममाला अथवा एकाक्षररत्नमाला — माधवकृत[३]

अन्य नाम

इसके अन्य नाम एकाक्षरशब्दरत्नमाला एकाक्षररत्नमाला, माधवरत्नमाला तथा माधवकोश भी हैं।[४]

भाग

यह तीन कांडों — स्वरकाण्ड व्यञ्जनकाण्ड तथा संयुक्ताक्षरकाण्ड में विभक्त है। इस के प्रारम्भ में देवस्तुति तथा प्रत्येक काण्ड के अन्त में हरिताल का उल्लेख है।

उद्धृत

इसे मेदिनीकार तथा रायमुकुट ने उद्धृत किया है।[५]

एकाक्षररत्नमाला[६]

इसे लक्ष्मण पण्डित ने अद्वैतसुधा में उद्धृत किया है
यह माधव के एकाक्षर शब्दमाला का दूसरा नाम है।[७]

मेदिनीकार — एकाक्षर

द्र. मेदिनीकोश

---

1 वैदिक कृतियों के लिए द्र. Gonda, J. Vedic Literature (1975) पृ. ४१-४२

2 Krishnamachariar, M. HCSL. पृ.२१३

3 NCC. III. पृ.६०, पृ.४६

4 NCC. III. पृ.५९-६०

5 NCC. III. पृ.५९-६०

6 Gode, P.K. Studies in India Literary History. भाग तृतीय पृ.५१

7 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.२१-२३

एकाक्षराभिधान — रन्तिदेवकृत[१]

इस कोश का एक उद्धरण प्राप्त होता है।[२]

राघवकवि — एकाक्षरकोष[३]

यह कोष इरुगपदण्डाधिनाथ के कोष से शब्दशः मिलता है। सम्भवतः इसी कोष से सामग्री ली गई है।[४]

एकाक्षरी कोश[५] — वनमाली कृत

वररुचि — कृतियां — एकाक्षरकोष

पतञ्जलि ने **वाररुचम्** काव्य का भी उल्लेख किया है।[६] इनकी कृतियों में एकाक्षरकोष भी है।[७]

वररुचि — एकाक्षरकोश (द्र. एकाक्षरकोश)

एकाक्षरनाममाला — नाम

इसके अन्य नाम ऐन्द्रनिघण्टु (जो दक्षिण भारतीय हस्तलेखों में उपलब्ध होता है) एकाक्षराभिधान तथा **एकाक्षरनिघण्टुकम्** भी है।[८]

एकाक्षरनाममाला — तकनीक

उन्होंने कोष का प्रारम्भ व्यञ्जनों के अर्थों तथा अन्त स्वरों के अर्थों से किया है।[९]

---

1 NCC. III. पृ.६०

2 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I 1953, पृ.९६-१००

3 द्र.नानार्थमञ्जरी

4 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.३५

5 NCC. III. पृ.६०

6 Krishnamacharya HCSL. पृ. ३७

7 Aufrecht, CC. I. ५५५१;II. पृ.११७

8 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.४

9 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.४

उद्धृत

त्रिरत्नभाष्य में वररुचि को उद्धृत किया गया है।[१]

वररुचि एवं पुरुषोत्तमदेव

वररुचि के **एकाक्षरनाममाला** का पाठ कुछ पाठान्तरो को छोड़ कर शब्दशः मिलता है।[२]

एकाक्षरीनाममाला / एकाक्षरीरत्नमाला[३]

यह विश्व-शम्भू कृत एकाक्षर निघण्टु या एकाक्षरनामावली कोश है।

एकाक्षरनिघण्टु[४] — रामभद्रमखी

इस का लेखक रामभद्रमखी है तथा इस पर एक व्याख्या भी उपलब्ध होती है। इस का एकाक्षरकोश होना सन्दिग्ध है।

एकाक्षरनाममालिका — विश्वशम्भु[५] कृत

एकाक्षरकोश[६] — वेणीमाधव न्यायरत्न

यह गौरीशंकर की व्याख्या के साथ वेणीमाधव न्यायरत्न कृत कोश है।

एकाक्षरनिघण्टु[७] — बोपकृत (?)

कोश — शम्भुदासकृत

क्या यह शम्भुकृत एकाक्षरी कोश है ?

---

1 Aufrecht, T. CC. I. पृ.५५१

2 NCC. III. पृ.५६-५७ तुलना - Sharma, Mithlesh (1988) पृ.३

3 NCC. III. पृ. ५८-५९ यह एकाक्षरकोश (पृ. ११-४३) के साथ सूर्योदय प्रेस शोलापुर, १९०८ से प्रकाशित है।

4 NCC. III. पृ.५९

5 NCC. III. p.58 सम्पा. संस्कृतकोशयुग्म कराची १८६७-६८; Sholapur 1908 (मराठी सहित); कुछ विचार Vogel. पृ. ३७०

6 NCC. III. पृ.५७ प्रकाशित कलकत्ता, १८७४

7 NCC. III. पृ ५९

8 NCC. Vol. V. पृ ९६

एकाक्षरनाममाला

शान्तवीर दीक्षितेन्द्रकृत[१]

एकाक्षरनाममाला

सदाचार्यकृत[२]

एकाक्षरनाममाला[३] — सुधाकलश

वह जैन थे और राजशेखर के शिष्य थे। इनका काल लगभग १३५० ई. का है।

इस के अतिरिक्त उन की अन्य कृतियां **संगीतोपनिषद्** तथा **संगीतोपनिषद्सार** है (१३५० ई.)।[४]

सुधाकलश — उद्धृत

उपाध्याय समयसुन्दरगणि ने सं. १६४९ में रचित अष्टलक्षार्थी अर्थरत्नावली में इस कोश का नामनिर्देश किया है और उद्धरण दिया है।[५]

सौभारि

एकार्थनाममाला अथवा मातृकानाममाला तथा द्व्यक्षरनाममाला (१५८२-८३ से पूर्व)।[६]

---

1 NCC. III. पृ.५९

2 NCC. III. पृ.५९

3 द्र. Sharma, Mithlesh (1988) पृ.२०-२१ सम्पा. एकाक्षरनामकोशसङ्ग्रह पृ.६२

4 Aufrecht, T. CC. I. पृ.७२५ सम्पा. अभिधानचिन्तामणि बम्बई, १९२४ तथा सूरत १९३३. Sāgarānanda Sūri 1946 इसके अन्य हस्तलेखों के लिए द्र. PAIOC. VII. पृ.१४

5 जैन साहित्य का बृहत् इतिहास भाग - ५ पृ.९५

6 द्र. Sharma, Mithlesh (1988), पृ. २८-२९ Vogel. पृ. ३७० सम्पा. Kulkarni, E.D. Poona, 1955

द्व्यक्षर नाममाला[१] **— सौभरि**

इस के अन्य नाम **एकाक्षरीनाममाला** भी हैं।[२] इसका अन्य नाम द्व्य-क्षरकाण्ड है।[३]

एकाक्षरी मातृकानाममाला - सौभरिकृत

एकाक्षरकोश[४]

यह कोश हरि कृत है।

हर्षकीर्ति —

यह महाक्षणपक की **अनेकार्थध्वनिमञ्जरी** से प्रभावित थे। द्र. महाक्षपणक की अनेकार्थध्वनिमञ्जरी

हर्षकीर्ति

द्र. शारदीयाख्यनाममाला

एकाक्षर नाममाला — हिरण्यनाभकृत[५]

---

1 NCC. IX. पृ. २१५

2 द्र. एकार्थनामगाला - सौभरि NCC. III; सम्पा. पूना, १९५५. एकार्थनाममाला पृ. १-१२

3 सम्पा. Kulkarni, E.D. Poona, 1955; एकाक्षरनामकोष सङ्ग्रह (१९६४) पृ. ३७

4 NCC. III; पृ. ५७

5 NCC. III. पृ. ५९

अध्याय पञ्चम

अन्य कोश विधाएं

उद्देश्य — कविप्रयोजन तथा काव्य

(द्र.) प्रस्तावना में

सुभाषित कोश

अनेक प्रकार के सुभाषित सङ्ग्रहों यथा सूक्तिमुक्तावली, सुभाषितावलि, सुभाषितरत्नकोश के अतिरिक्त नाम्ना यथा सुभाषितकोश अथवा कर्पूरप्रकार कथाकोश भी उपलब्ध हैं।

कोश — कथा

द्र. जैनों के **कथाकोश** NCC. III.

द्विरूपकोश

इसका अन्य नाम है द्विरूपाक्षरकोश।[१] सम्भवतः द्व्यर्थकोश भी यही है।[२]

अनुक्रमणिका

बालरामायणपद्यानुक्रमणिका[३]

कुवलयानन्दपद्यानुक्रमणी

इस अनुक्रमणी के प्रणेता राम हैं।[४]

दशनिघण्टु[५] — अज्ञातविषय

---

1 NCC. IX. पृ. 209

2 NCC. IX. पृ. 147

3 NCC. XIII. पृ. 291

4 NCC. IV. पृ. 253

5 NCC. VIII. पृ. 345

पञ्चविंशतिकोश

काव्यवृत्तिरत्नावली के कर्ता नारायण ने इस का प्रयोग किया है।[१]

पदचन्द्रिका — मयूरकृतकोश[२]

बाण, मयूर, मुरारि तथा श्रीहर्ष के कोशों के लिए द्र.[३]

काव्यशास्त्र एकावली

एकावली कोश एकावली अलंकार का कोश है[४]।

अर्थान्तरन्यासकोश — सङ्कलन[५]

अष्टाध्यायी सूत्रकोश[६] **— व्याकरण**

इस के लेखक लक्ष्मीनारायण व्यास हैं।

विषयकोश व्याकरण अष्टाध्यायी

अष्टाध्यायी सूत्रसारकोश[७] अथवा पाणिनीय **सूत्रसारकोश**[८] इसी विधा का कोश है।

शब्दभेद / अनेकरूप कोश

शब्दभेदप्रकाश — महेश्वर

ऐसे शब्दों का कोश है जिन के दो या अधिक रूप हैं। (द्र. महेश्वर) Vogel. Art. 17

शब्दभेद अथवा शब्दरत्नाकर — साधुसुन्दरगणिकृत

---

1 NCC. XI. पृ. 54

2 NCC. XI. पृ. 97

3 Keith — पृ.४१२ Vogel. 304

4 सम्पा.कोशरत्नाकर भाग.१ पृ.२१-२६,१८७०.

5 NCC. I. p.389

6 NCC. I. पृ. 471

7 NCC. I. पृ. 471

8 NCC. XII. पृ. 17

यह खरतरगच्छ के साधुकीर्ति उपाध्याय के शिष्य थे जिन का धातुरत्नाकर (१६२३-२४ ई.) में १०११ श्लोकों में लिखा गया।

शब्दभेदप्रकाश — भट्टोजिदीक्षित

यह सुप्रसिद्ध लोकप्रिय वैय्याकरण — लक्ष्मीधर भट्ट के पुत्र हैं। १६-१७ वी. शताब्दी के भानुजि दीक्षित इन के पुत्र हैं।[१]

द्विरूपकोश

द्र. पुरुषोत्तमदेव

द्विरूपाख्यकोश[२] — शुकदेवशर्मन् कृत

इसका अन्य नाम है द्विरूपाक्षरकोश।[३] सम्भवतः द्व्यर्थकोश भी यही है[४]

द्विरूपकोश — अज्ञातकर्तृक

इसे व्यवहारतत्व[५] में रघुनन्दन (१५१५-४५ ई.) ने उद्धृत किया है। रायमुकुट, मल्लिनाथ, भट्टिकाव्य पर भरतसेन तथा भानुजि ने भी इसे उद्धृत किया है।[६]

द्विरूपकोश — श्री हर्ष

---

1 भट्टोजिदीक्षित के लिए द्र.Cardona, G. Pāṇini: Survey of Research (See Bhaṭṭoji Dīkṣita; Belvalkar, S.K. Systems of Sanskrit Grammar; Mīmāṁsaka, Yudhiṣṭhira : व्याकरणशास्त्र का इतिहास; वर्मा, सत्यकामः व्याकरण शास्त्र का इतिहास Bali Suryakant : Bhaṭṭojidīkṣiṭa, Delhi. Renou, L. Durghaṭavṛtti (Introduction) and introduction to Wachkernagel : *Altindische Grammatik* . **I 1957 (Reprint) काल के लिए** : Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. I. पृ. 52; Vogel. पृ. 371

2 NCC. IX. पृ. 210

3 NCC. IX. पृ. 209

4 NCC. XII. पृ. 147

5 सम्पा.Serampore. II. 125. द्र. JASB. (NS) XI (1915), 367

6 NCC. IX पृ. 209

फागेल (पृ.३७२) के अनुसार यह श्रीहर्ष नैषधीयचरित के लेखक से भिन्न है।

द्विरूपकोश — श्रीहर्ष — लघुसंस्करण

इस का एक लघुसंस्करण ५७ श्लोकों का है।[१]

द्विरूप ध्वनिसङ्ग्रह[२]

गौराङ्ग मल्लिक के पुत्र भरतसेनकृत

द्वयक्षरनाममाला[३]

द्वित्रिचतुः पञ्चरूपकोशाः — विविध रूप

हीर के पुत्र श्रीहर्ष द्वारा प्रणीत ये कोश हैं। श्रीहर्ष नैषध के लेखक हैं। सम्भव है ऐसे कोशों का निर्माण एक ही शब्द द्वारा अनेक सन्दर्भों के लिए किया गया हो। द्र. द्विरूपकोश - श्रीहर्षकृत[४]

पञ्चरूप कोश[५]

कोश - व्याकरण

ध्वनि

वर्णदेशना — पुरुषोत्तमदेव (द्र. पुरुषोत्तमदेव)

वर्णदेशना[६] **— कोश**

पञ्चाशद्वर्णबीजानि[७]

---

1 Vogel पृ.३७२ प्रकाशित द्वादशकोषसङ्ग्रह — वाराणसी, १८६५-६६ जहां इस कोश का कुछ भाग पुरुषोत्तमदेव के नाम से है। NSP शीर्षक शब्दभेदप्रकाश (द्र. अमरखण्डन)

2 NCC. IX. पृ. 210 Ed. Banerjee, S.C. ABORI. 45 पृ.४९

3 NCC. IX. पृ. 215

4 हस्तलेखों के लिए द्र. NCC. IX. पृ.३१०; प्रकाशित. तेलुगु लिपि में मैसूर; Bombay - रूपभेदप्रकाश

5 NCC. XI. पृ. 49

6 NCC. XII. पृ. 147

7 NCC. XI. पृ. 75

पञ्चाशद्वर्ण नवरत्नमाला[१]

वर्णप्रकाश - कविकर्णपूर

यह त्रिपुरा अथवा तिप्पेर के राजा अमरमाणिक्य (१५७७-८१ ई.) का प्रधानमन्त्री था। यह ग्रन्थ उसके पुत्र के लिए लिखा गया। इसमें ज / य; ण / न; ब / व तथा श / ष / स का परिवर्तन प्रदर्शित है।[२]

पञ्चवर्ग परिहारनाममाला[३] — जिनभद्रसूरि द्र. अपवर्ग नाममाला

जकारभेद[४]

यह पुरुषोत्तमदेव कृत कोश है। जिसका एक अन्य नाम जकारशकारभेद भी है।

णत्वभेद[५]

इसके कर्ता माध्वाचार्य हैं।

४ वर्ग कारिका-सकारभेद / शकारभेद[६] **/ शब्दभेदप्रकाश**[७]

४ वर्गकारिका — पुरुषोत्तमदेव — व्याकरण, कोष[८]

एकाक्षरवकारशकारादिभेद[९]

रुषविवेक[१०] **व्याकरण, कोश**

यह महेश्वर कृत कोश है।

ऊष्मविवेक — गदसिंह

द्र. दुर्गसिंह / गदसिह

---

1 NCC. XI. पृ. 75

2 Vogel. पृ.३७२

3 द्र.NCC. I. Rev. edn. p.253 NCC. XI. पृ.५३ (द्र.जिनभद्रसूरि)

4 NCC. Vol. VII. पृ. 122

5 NCC. VIII. पृ. 13

6 NCC. XII. पृ. 147

7 सम्पा. द्वादशकोशसङ्ग्रह, बनारस, १८६५

8 NCC. XI. पृ. 251

9 NCC. III. पृ. 80

10 NCC. III. पृ. 4

अनेकार्थ (नानार्थ) ध्वनिमञ्जरी

ऊष्मविवेक — गदसिंह

यह ऊष्मों के भेद का वर्णन करता है। इसमें ११२ श्लोक हैं।[१]

ऊष्मविवेक[२] — व्याकरण / कोश

यह गदसिंह कृत कोश है इसे रायमुकुट ने अमरकोश पर तथा शिवराम ने वासवदत्ता ६ पर उद्धृत किया है।

अमरकोश १.१.१.५ पर रामनाथ कृत त्रिकाण्डविवेक नामक व्याख्या में उल्लिखित है।

ऊष्मविवेक — द्र. दुर्गसिंह

नानाभिधानमञ्जरी

ऊष्मविवेक[३]

व्याकरण — अङ्कनिघण्टु

अङ्कनिघण्टु

अङ्कसंज्ञा अथवा अङ्काभिधान (रामानन्दतीर्थकृत) भी इसी प्रकार का ग्रन्थ है।

अङ्कनिघण्टु[४]

इस प्रकार के कोश उन शब्दों एवं पर्यायों का संकलन करते हैं जो एक से नौ तथा शून्य को अभिव्यक्त करता है।

एकाद्यक्षरनाममाला[५]

व्याकरण — नाम

नामलिङ्ग

---

1 सम्पा. झा, परमेश्वर, दरभङ्गा १९८०

2 द्रष्टव्य - ZDMG. 28 (1874) 123. NCC. III. पृ. 4.

3 द्रष्टव्य - ZDMG 28 (1874) 111. NCC. III. पृ. 4.

4 NCC. I. p.60 इसी प्रकार का कोश है अङ्कनिर्णय (विद्या चन्द्रात्मजकृत) दे. वही अङ्कयन्त्र कथन तथा अङ्कयन्त्रकल्प भी इसी प्रकार के ग्रन्थ हो सकते हैं।

5 NCC. III. पृ. 70

यह वररुचि, व्याडि तथा भागुरि का उल्लेख करता है।[१]

पदनिघण्टु — कोश[२]

वैभक्तिककोश — कृष्णकवि

यह राजा लक्ष्मण तथा रानी मल्लिक के पुत्र थे। इन्होंने १७६५ अथवा १७८१ ई. में ११ अध्यायों तथा ११११ श्लोकों में इस का निर्माण किया।[३]

पदार्थ कौमुदीकोश

पदार्थ कौमुदीसार कोश[४]

पदसङ्ग्रह अथवा पदनिघण्टु — कोश[५]

व्याकरण समास

द्वन्द्वादि कोश—व्याकरण[६]

कोश

व्याकरण — अव्यय

कोशों के सन्दर्भों से प्रतीत होता है कि विविध विषयों से जुड़े हुए कोश (यथा अर्थान्तरन्यासकोश) व्याकरण से भी जुड़े हुए थे। ये कोश निरुक्त में प्रतिपादित नाम, आख्यात, उपसर्ग तथा निपातों से अथवा अव्ययों से भी जुड़े हुए थे। द्र. अव्यय कोश। अव्ययपाठ[७] अव्ययप्रकरण, अव्ययवृति, अव्यय सङ्ग्रहनिघण्टु, अव्ययानि इसी के प्रमाण है।

अव्ययानेकसङ्ग्रह, अव्ययार्णव (शब्दार्णव पर आधारित नानार्थ); अव्ययार्णव, अव्ययार्थकोश (रामर्षि अव्ययार्थमञ्जरी नाम्नी व्याख्या सहित) इत्यादि अप्रकाशित ग्रन्थ भी इन की पृथक् विधा के कोशों को प्रमाणित करते हैं।[८]

---

1 NCC. X. पृ. 48

2 NCC. XI. पृ.९८

3 Vogel. पृ. 372

4 NCC. XI. पृ. 104

5 NCC. XI. पृ. 102

6 NCC. IX. पृ. 189

7 NCC. I. पृ. 430

अव्यय कोश

इस नाम के दो ग्रन्थ - एक अज्ञात तथा एक द्वारकानाथ न्यायभूषण कृत उपलब्ध होते हैं।[१]

अव्ययकोश[२] — महादेवकृत

इसमें ७५ श्लोक हैं।

अव्ययार्णव[३] **— जयभट्टकविराजकृत**

यह शब्दार्गव पर आधारित है, इसमें तीन भाग हैं।

अख्यातानुक्रमणी[४]

माख्यातकोश — व्याकरण द्र. आख्यातचन्द्रिका

— आख्यातकोश[५] —व्याकरण

— आख्यातकोश — व्याकरण द्र. आख्यातचन्द्रिका

आख्यातरत्नकोष[६] **व्याकरण**

महोपाध्याय सरङ्गकृत

क्रिया निघण्टु अथवा धातुप्रयोगकारिका

यह १०१ पद्यों में राजा वीरपाण्ड्य द्वारा प्रणीत है।[७]

---

11 NCC. I. पृ. 430-431

1 NCC. I. पृ. 430 सम्पा. कलकत्ता, १८९९

2 सम्पा. द्वादशकोशसङ्ग्रह वाराणसी १८६५ — तथा १८७२

3 Vogel. पृ.३७१

4 प्रकाशित परिशिष्ट ऋग्वेदानुक्रमणी - माधवभट्टकृत Madras University Sanskrit Series, 2; JOR. Madras V. 316 से, X. 256 से Annals of Orient. Res. University of Madras. Vol. I, II

5 NCC. II. पृ.7, 8 आख्यातचन्द्रिका — भट्टमल्लकृत

6 NCC. II. पृ.8

7 सम्पा. तेलुगु लिपि में मैसूर

रसचन्द्र — क्रियाकोश

यह भट्टमल्ल की कृति का संकलन है।[१]

धातुकोश[२] — घनश्यामकृत

व्याकरण — उणादिकोश

उणादिनाममाला-शुभशीलगणिकृत[३] तथा **उणादिनिघण्टु-कौण्डिन्यगोत्र** के दक्षिणामूर्ति के पुत्र वेङ्कटेश्वरकृत (१६८४-१७१२ ई.)

औणादिकपदार्णव[४]—व्या. उणादि

इसके लेखक पेरुसूरि है। ५ पादों में उणादि शब्द तथा उनके व्युत्पन्न शब्द ग्रथित हैं।

औणादिकपदार्णव - पेरुसूरि

इन के पिता का नाम वेङ्कट था। इन के गुरु वासुदेव अध्वरिन् अथवा वासुदेव दीक्षित थे। के.के. राजा[५] उन्हें उज्ज्वलदत्त एवं महादेव के मध्य मानते हैं। राघवन् इन्हें तञ्जोर के राजा साहाजि, शरभोजि तथा तुक्कोजि के समकालिक मानते हैं।[६]

निजविनोद — महादेववेदान्ती का उणादिकोश[७]

निजविनोद — महादेव वेदान्ती

यह स्वयंप्रकाशानन्द अथवा सच्चिदानन्द (१६९३ ई.) के शिष्य थे इसमें पांच अध्याय एवं ७३९ श्लोक हैं।[८]

---

1 Vogel. पृ.३०४

2 प्रकाशित JSML of th Sar. Mah. Libr. XXVI. 2 & 3

3 NCC. II. पृ.२९३

4 सम्पा.Chintamani, T.R. मद्रास विश्वविद्यालय १९३९

5 Raja, K.K. Uṇādikośa of Mahādeva Vedāntin, मद्रास,१९५६

6 वही, भूमिका - Raghavan, V. पृ.३ इनके काल क्रमशः १६८४-१७१२ ई.; १७१२-२८ ई. तथा १७२८-३६ ई. हैं। (Vogel. पृ.३७३)

7 भूमिका Raja, K.K. Madras University Series, 1956

8 Vogel. पृ.३७३

कोश - व्याकरण उणादिकोश[१]

— वेदान्ती महादेव (१६९४ ई.)[२]

— शिवराम त्रिपाठी[३]

उणादिकोश अथवा लक्ष्मीनिवासाभिधान

रामशर्म तर्कवागीश कृत - उणादिकोश स्वोपज्ञटीका सहित

यह दो भागों में ५११ तथा २९५ श्लोकों में लिखा गया। इन का काल १७ वीं. -१८ वीं. शताब्दी ई. था। राधाकान्त देव ने शब्दकल्पद्रुभ में इस का बहुत प्रयोग किया है।[४]

बोपदेव व्याकरण सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। इसके व्याख्याकार राम तर्क वागीश हैं।[५]

उणादिनिघण्टु — वेङ्कटेश्वर अथवा शाब्दिकविद्वत्कविप्रमोदक

कौण्डिन्यपरिवार के दक्षिणापूर्ति के यह पुत्र थे। इन के गुरु का नाम रामभद्र माखन् था जो साहजी के राज्य में (१६८४-१७१२ ई.) में तञ्जोर में कार्य करते थे।

इन का कोश पांच अध्यायों में तथा ७२० श्लोकों में संकलित है।[६]

उणादिप्रत्ययान्तशब्दकोष अथवा लक्ष्मी निवास[७] — शिवराम त्रिपाठी कृत

यह कृष्णराम के पुत्र तथा त्रिलोकचन्द्र के पौत्र थे। अपने लक्ष्मीविलास (नक्षत्रमाला पर) इन्होंने नागोजिभट्ट के परिभाषेन्दुशेखर को उद्धृत किया है। आफ्रेख्ट इन्हें अठारहवीं शताब्दी ई. में रखते हैं।[८]

यह पांच अध्यायों में निर्मित है।

---

1 सम्पा. दयानन्द सरस्वती-वेदान्तप्रकाश, अजमेर, १८९६-१९१५

2 सम्पा. मद्रास विश्वविद्यालय, १९५६

3 प्रकाशित बनारस, १८७३

4 द्र. Aufrecht, T. Ujjvaladatta's comm. on Uṇādisūtras, Bonn, 185९ पृ.XXI; CC. I. पृ.१७६ Vogel. पृ.३७३

5 NCC. II. पृ.293

6 Vogel. पृ.३७३

7 सम्पा. षट्कोशसङ्ग्रह काशी, १८७३-७४

8 CC. I. पृ.६५२

उणादिनाममाला — शुभशीलगणि

यह मुनिसुन्दरसूरि के तथा लक्ष्मीसागरसूरि के शिष्य थे। इन का वास तपागच्छ में था तथा १५ वीं श. ई. में इन का स्थितिकाल है।[१]

यह छः अध्यायों में अभिधान-चिन्तामणि (हेमचन्द्रकृत) का अनुसरण करता है।

पञ्चवर्गसङ्ग्रहनाममाला[२] — शुभशीलकृत; तपागच्छ के मुनिसुन्दरसूरिकृत

कारक

व्याकरण

कारककोश अथवा विभक्त्यर्थविवरण — शिवानन्द गोस्वामीकृत

यह बीकानेर में अनूपसिंह के राज्यकाल में प्रणीत हुआ।[३]

परिभाषा

व्याकरण

परिभाषा कोश —

लक्ष्मीनारायण व्यासकृत[४]

वेदाङ्ग (कोष)

नामलिङ्गानुशासन[५] — वेदाङ्ग अज्ञातकर्तृक

छन्दकास (दः कोश ?)[६] **अज्ञातकर्तृक**

छन्दकोश[७] **अज्ञातकर्तृक**

---

1 Vogel. Art. 21 तथा पृ. 372

2 NCC. XI. पृ. 53

3 NCC. III. पृ. 272

4 NCC. XI. पृ. 220

5 NCC. X. पृ. 48

6 NCC., Vol.VII पृ. 93

7 NCC, Vol.VII पृ. 93

छन्दः कोश[१] (जैन) अज्ञातकर्तृक

छन्दः कोश[२]

यह नागपुरीय तपागच्छ के हेमतिलक के शिष्य रत्नशेखरसूरि कृत जैन प्राकृत छन्दःशास्त्र है।

प्राकृत छन्दः कोश[३]

यह लगभग ७३ श्लोकों में प्रणीत है।

छन्दोनिघण्टु[४]

प्राकृतादि, पालि कोश (अकारादिक्रम)

अभिधान (अभिमान) चिह्न

द्र. उदूखल

अवन्तीसुन्दरी[५]

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।

अभिधान चिन्ह (अभिमानचिह्न)

उदूखलकृत

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[६] यह अभिधानचिह्न की व्याख्या है।

उद्दालक — प्राकृत

इन का कोश हेमचन्द्र की देशीनाममाला का स्रोत बना।

---

1 NCC, Vol.VII पृ. 93

2 NCC, Vol.VII. पृ. 93

3 द्र. छन्दः कोश NCC. VII. पृ.93. (रत्नशेखरसूरिकृत) इस पर चन्द्रकीर्तिसूरि की व्याख्या के लिए द्र.NCC. VII. पृ.९३ अतिरिक्त हस्तलेखों के लिए द्र.NCC. XIII. पृ.133

4 NCC. Vol.VII पृ.102

5 देशीनाममाला

6 देशीनाममाला

देशीकोश

यह प्राकृत का कोश गद (गज) सिंह द्वारा निर्मित है। इस के अन्य नाम हैं —

देशी कोशनामार्थ तथा देशी नाममाला[१]

प्राकृत कोश[२]

प्राकृत कोश — गदसिंह कृत[३]

दुर्गसिंह / गदसिंह

द्र. नानार्थाभिधान मञ्जरी

कालाप अथवा कातन्त्र

सम्भवतः यह प्राकृत कोश था जो हेमचन्द्र की देशीनाममाला का स्रोत बना।[४]

गोपाल — प्राकृतकोश

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[५] इसके कोश का उल्लेख राघवकवि ने किया है।[६] (द्र. एकाक्षरीकोश)

देवराज — प्राकृत कोश

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[७]

देशीशब्दकोश

सम्पा. आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञ

---

1 NCC. IX. पृ. 167

2 NCC. XIII. पृ. 132

3 NCC. XIII. पृ. 133

4 देशीनाममाला

5 देशीनाममाला, I. २५; ३१; ४५; II. ८२; III.४७; NCC. VI. पृ. 131; ABORI. VIII. pp.65-66

6 एकाक्षरकोषसङ्ग्रह पृ. १२

7 देशीनाममाला

London (Raj), १९८८ इन का संकलन जैन कृतियों के आधार पर किया गया है।

देशीकोश[१]

प्रादेशिक शब्दों का कोश जिसे रायमुकुट एवं भानुजि ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।

देशीयराजशेखरकोश[२]

देशीशब्दरत्नावली

देशीशब्दसङ्ग्रह

देश्यनिघण्टु

इस के अन्य नाम देश्यनिर्देश निघण्टु है तथा कर्ता हैं राजचन्द्र[३] कल्पद्रुकोश की भूमिका में निर्दिष्ट रामचन्द्र भी यही हो सकते हैं।[४]

द्रोण — प्राकृत कोश

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[५]

धनपाल

इनके पिता का नाम सर्वदेव, दादा का नाम देवर्षि तथा भाई का नाम शोभनमुनि था जिसने शोभनस्तुति अथवा तीर्थेश्वरस्तुति लिखी। मेरुतुङ्ग (प्रबन्धाचिन्तामणि) के अनुसार वह भोजराज के आश्रित थे। इन्हें सीयक तथा वाक्पति ने भी आश्रय दिया।[६] मध्यप्रदेश में संकाश्य से वह धारा आ गए।

धनपाल — उद्धृत देशीनाममाला में हेमचन्द्र ने तथा अमरकोश पर भानुजि ने इसे उद्धृत किया है।

---

1 NCC. IX. पृ. 167

2 NCC. IX. पृ. 168

3 NCC. IX. पृ. 168

4 कल्पद्रुकोश — भूमिका पृ. lvii

5 देशीनाममाला

6 NCC. III. पृ.३७;NCC. IX. पृ.२२२;Vogel पृ.३२२
NCC. IX. पृ.२२२

कृतियां

कोशवाकर धनपाल की अन्य कृतियां है —

तिलकमञ्जरी[१] : —

इसके पद्य सूक्ति मुक्तावली में उद्धृत हैं।

पायलच्छिनाममाला[२] अथवा प्राकृतलक्ष्मी (९७२ ई. में निर्मित) **शोभनस्तुति** अथवा **तीर्थेशस्तुति** (शोभनकृत) पर व्याख्या[३]

धनपाल — प्राकृतकोश

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[४] क्योंकि इस के ५ उद्धरण देशीनाममाला में नहीं मिलते अतः यह भिन्न कोष होना चाहिए[५]। धनपाल — दो रामानुजस्वामी[६] ने दो धनपालों के होने की सम्भावना की उद्‌भावना की है जिसे फॉगल नहीं मानते। धनपाल कृत-पाइलच्छी = प्राकृतलच्छी

यह २७९ आयाओं में पर्यायवाची कोश है जिसे उन्होंने अपनी बहिन सुन्दरी के लिये ९७२-९७३ ई. में बनाया। यह एक नाममाला है जिसमें देशी शब्द भी उपलब्ध होते हैं। इसमें क्रियाविशेषण, क्रियाएँ, निपात, प्रत्यय, तत्सम तथा तद्‌भव शब्द उपलब्ध होते हैं जो संस्कृत कोशों के अनुकरण पर ग्रथित हैं।[७८]

---

1 प्रकाशित काव्यमाला,८५

2 प्रकाशित भावनगर,१९१६; तथा Bühler : *Beitrage zur Kunde der Indogermanischen Sprachen. IV.* पृ.७० से

3 प्रकाशित.काव्यमालागुच्छक.VII. पृ.१३२

4 देशीनाममाला

5 Vogel. पृ.३२३

6 सम्पा.Bühler, Göttingen, १८७९; भावनगर,१९१६-१७विक्रमविजयमुनि - पाटण, १९४६-४७; दोशी, ब.ज. बम्बई, १९६० इस की श्लोकसंरचना के लिए द्र. Vogel. पृ.३२२
सामान्य — Vogel. पृ.३२२-३२३

7 देशीनाममाला

8 देशीनाममाला की भूमिका

पाइलच्छी - द्र. धनपाल

प्राकृतनामलिङ्गानुशासन[१]

प्राकृतपदकोश.[२]

यह संस्कृत-प्राकृत कोश है

पादलिप्त

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[३]

प्राकृतकोश — द्र. धनपाल

भरत

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[४] क्या यह भरत नाट्यशास्त्र का लेखक था अथवा कोई स्वतन्त्र प्राकृत नाटकों अभिनेताओं की परम्परा — यह सुनिश्चित नहीं। भरत का नाट्यशास्त्र निश्चितरूप से हेमचन्द्र को ज्ञात था। नाट्यशास्त्र कोशकारों के लिए प्रेरक था।[५]

कविराजशेखरकृत[६] नानादेशीकोश

राहुलक

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[७]

शीलाङ्ग

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था।[८]

---

1 द्र. NCC. XIII. पृ.134

2 NCC. XIII. पृ.134

3 देशीनाममाला

4 देशीनाममाला

5 Vogel. पृ.३२४ हेमचन्द्र की भरत के साथ विविध पक्षों की तुलना के लिए द्र. Upadhyay, A.M. The Kāvyānuśāsana of Hemacandrācārya - A critical study, Ahmedabad, 1987

6 NCC. X. पृ.35

7 देशीनाममाला
Vogel. पृ.३२२

8 देशीनाममाला

सातवाहन

यह कोश हेमचन्द्र की देशीनाममाला के लिए स्रोत बना।

सातवाहन[१]

यह हेमचन्द्र की देशीनाममाला का एक स्रोत था। इसे **गाथासप्तशती** के लेखक से जोड़ा जा सकता है।

देशीनामाला — हेमचन्द्र

(द्र. हेमचन्द्र)

पालिकोश

पालिवचन[२]

यह पालि का कोश है।

प्रभाव — पालि

अभिधानप्पदीपिका — मोग्गलानकृत

बारहवीं शताब्दी के अन्त में पुलत्थिपुर में जेतवन बौद्धविहार में इस पालि कोश का निर्माण हुआ। १२०३ पद्यों में उनके पर्याय, नानार्थ तथा अव्ययों का यह संकलन है।

भारतीय भाषाओं के एवं विदेशी कोश — सामान्य विचार

संस्कृत कोशशास्त्र ने जहां अनेक शास्त्रों के अपने कोश बनाए वहीं भारतीय एवं विदेशी भाषाएं भी इस से अछूती न रहीं। पाणिनि व्याकरण के समान अमरकोश तथा अन्य कोशों का देशी कोशों पर प्रभाव हुआ। आज भी भारतीय भाषाओं में उन विधाओं की कमी प्रतीत होती है जिन्हें संस्कृत

---

1 देशीनाममाला Sohoni, S.V. Kālidāsa, Hāla Sātavāhana and Chandragupta II. JBRS. Vol. XLI. Pt.2 पृ. 229; Narang S.P. Kālidāsa — Bibliography No. 2992. सोहनी मेघदूत में हालाम् से हाल के द्वारा प्रोक्त सातवाहन कृत गाथासप्तशती को मानते हैं तथा मेघदूत के स्नेहानाहुः को गाथासप्तशती से मिलाने की चेष्टा करते हैं। सम्भवतः गाथासप्तशती की प्राकृत को ही हेमचन्द्र ने अपना स्रोत बनाया हो।

2 NCC. XII. पृ.75

कोशशास्त्र ने निर्मित किया। अमर के अतिरिक्त वररुचि, भागुरि, हलायुध तथा शाश्वत आदि कोश आधुनिक भारतीय भाषाओं के प्रेरणास्रोत रहे।

आज के भारतवर्ष के लिए हैं आदर्श राजनिघण्टु अथवा राजव्यवहारकोश जो तञ्जोर में मराठा शासन में अन्तर्व्यवहार के लिए मराठी, तेलुगु, फारसी तथा संस्कृत में बनाए गए। अनेकभाषाओं के अथवा भारतीय भाषाओं के समन्वितकोश राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक हैं।

बौद्ध देशों में बौद्धदर्शन एवं अन्यसिद्धान्तों के लिए कोशशास्त्र आवश्यक था। प्रतीत होता है कि बौद्ध आचार्य जिन्होंने अमरादि जैसे बौद्ध कोशों का भारत में निर्माण किया अपने साथ विदेशों में ले गए और उन्हीं के आधार पर अन्य कोशों का पल्लवन हुआ (द्र. श्रीधरसेन) इन देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ कोश कला भी पनपी। व्यवहारकोश के समान समन्वित कोशों का निर्माण भी हुआ (द्र.) जिन से संस्कृत, तिब्बत, मञ्जु, मङ्गोल तथा चीनी के कोश भी बने। यह भी आधुनिक भारतीय धार्मिक ऐक्य के लिए आदर्श है।

संस्कृत कोश शास्त्र को चीनी, जावा, तिब्बती, तुर्की, नेपाली, फारसी तथा सिंहली भाषाओं ने भी अपनाया जहां मुगल सम्राटों ने संस्कृत को राजाश्रय प्रदान किया वहां संस्कृत विद्वानों ने जिन में अद्भुत विश्लेषणात्मक शक्ति थी, फारसी, तथा तुर्की भाषाओं के व्याकरण एवं कोशों का निर्माण किया। कृष्णमिश्र के पारसीकप्रकाश में पाणिनि के आधार पर धातुओं का विभाजन (ग्यारह गणों) में अद्भुत है। फारसी के धातुओं का विभाजन फारसी वैय्याकरणों ने केवल दो भागों में किया है। आज भी फारसी के व्याकरण का अध्यापन करने के लिए यह अद्वितीय है यद्यपि इस का प्रचार फारसी विद्वानों में नहीं है। मैं फारसी का भी छात्र होने के कारण यह दावा कर सकता हूं। गणित एवं ज्योतिष कोशों ने भी फारसी को समृद्ध किया।

उपयोगी कोश — तुलनात्मक

राजनिघण्टु अथवा राजव्यवहारकोश

रघुनाथपण्डितकृत

यह नारायण के पुत्र थे तथा शिवाजी (१६७४-८०) के मन्त्री। इन्होंने राज्यव्यवस्थात्मक शब्द मराठी, तेलुगु फारसी तथा संस्कृत में बनाए

यह दस भागों में विभक्त है। सम्भवतः **तञ्जोर** में मराठा शासन के लिए तथा सुचारु अन्तर्व्यवहार के लिए इसका निर्माण किया गया। इसके निर्माता सम्भवतः विशाखदत्त के मुद्राराक्षस के व्याख्याकार ढुण्ढिराज थे।[१]

आधुनिक भारतीय भाषाएं कोश

आन्ध्र

आन्ध्रनामानुशासन[२]

आन्ध्रनामसङ्ग्रह

आन्ध्रभाषाभूषण

कन्नड

अभिधान - अभिनव मङ्गराजकृत[३]

यह संस्कृत - कन्नड़ कोष है जिस का निर्माण शक १३२० (१३८९-९९ ई.) में हुआ। अभिधान परम्परा के अनुरूप इस का विभाजन भी स्वर्ग, भूमि, पाताल, सामान्य विषय तथा पर्यायवाची शब्दों में हुआ है।

वस्तुकोश — संस्कृत कन्नड़[४]

इस के निर्माता नागवर्मन् वेण्णमय्य तथा पोळकब्बे (अथवा पोटिकब्बे) के पुत्र थे।

इन्होंने अपनी सामग्री वररुचि, हलायुध, भागुरि, शाश्वत तथा अमरकोषादि से गृहीत की। इसके लेखक कोई जैन थे जिनका काल १०७०-११२० ई. में हुआ।

---

1 Vogel. पृ.३८०

2 NCC. II. पृ.121

3 Kittel, F. IA. I. पृ. 345; Rice, L. JRAS. NS. 15. पृ. 313 Vogel. पृ. 379

4 Vogel. पृ. 379

काश्मीर कोश

काश्मीरकोशः[१]

इसे कृष्णपति ने मेघदूत पर उद्धृत किया है।

मलयालमकोश

नानार्थ निघण्टु[२]

संस्कृत — मलयालम कोश

विदेशी भाषाएं — कोश

चीनी कोश

चीनी

द्र. समन्वित कोश

चीनी - संस्कृत कोश

Han - fan - Chi- yao

इस कोश का निर्माण सम्राट् K'ang - hsi (१६६२ ई.-१७२३ ई.) के आदेश पर हुआ। इसका उद्देश्य बौद्ध शब्दों का विषय के आधार पर वर्गीकरण करना था।[३]

समन्वितकोश

अनेकभाषिक कोश

संस्कृत-तिब्बत-मञ्जु-मङ्गोल-चीनी

यह बौद्ध शब्दावली का महाव्युपत्ति से संगृहीत कोष है। इस का निर्माण पेकिंग में सम्राट *Ch'len-lung* (१७३६-९५ ई.) के आदेश से किया गया।[४]

जावाकोश

संस्कृत-जावा कोश अज्ञातकर्तृक

---

1 Narang, S.P. Meghadūta Studies, पृ. 48

2 NCC. XI. पृ. 111

3 Vogel. पृ.३८२-८३

4 Vogel. पृ.३८३ (विस्तृत सन्दर्भ)

यह संस्कृत-कवि कोश है जो पुरानी जावा साहित्य को पढ़ने के लिए उपादेय है।[१]

तुर्की कोश

तुर्कीनाममाला[२]

यह तुर्की भाषा पर कोश है जो अभी तक दृष्टि में नही आया।

तारुष्की नाममाला — प्रताप भट्ट

यह प्रतापभट्ट की लिखी मानी जाती है।[३]

तारुष्कीनाममाला[४] किसी जैनद्वारा प्रणीत

तिब्बतीकोश

प्रज्ञा =

Dri-bral nor- bui meloṅ - Saskya monk bstan - dzinrgyal-mthan कृत

इस कोश का निर्माण भारतीय कोशशास्त्र के १४ अङ्गों सहित जिसमें व्याकरण, छन्द भी अन्तर्भूत है, के साथ किया गया। १७७१ ई. में *Rig-gnas-phel-rgyasglin* के बौद्ध विहार में राजा दर्गे के आदेश से किया गया। यह महाव्युत्पत्ति, अमरकोष तथा श्रीधरसेन की मुक्तावली का प्रयोग करता है।[५]

श्रीधरसेन — अभिधानमुक्तामाला

---

1 Kern, H. Actes du Congres International des Orientalistes VI. भाग ३.पृ.१

2 NCC. VIII. पृ.196

3 Vogel. पृ.३८०

4 Vogel. पृ.३८०

5 Lokesh Chandra, The Amarakoṣa in Tibet, New Delhi, १९६५;Vogel. पृ.३८२

इस का प्रयोग तिब्बती कोश *No - mithsar - nos - bui* .... में किया गया।[१] (द्र. श्रीधरसेन)

श्रीधरसेन — मुक्तावली

इस का प्रयोग तिब्बती कोश प्रज्ञा (*Dri - bral nor* .....) में किया गया।[२] द्र. श्रीधरसेन

तिब्बती

द्र. समन्वितकोश

तिब्बती

इस कोश का नाम *Sgra mdoi skor* है जो संस्कृत व्याकरणादि (जिस में कोशशास्त्र भी है) से सम्बद्ध है। यह संस्कृत से तिब्बती में अनूदित है। इस का अन्य नाम *Tanjur. Sgra mdoi skor* भी है। यह अठारहवीं शताब्दी के मूल से पुनर्मुद्रित है।[३]

तिब्बती

इस कोष का नाम *Sgra Sbyor bam po gnis pa, Dag yig za ma tog* तथा *Dag yig Li sii gur Kha - n* है। Sgra Sbyor ... मध्यव्युत्पत्ति के नाम से भी ज्ञात है। इस के अन्य लेखक *Zwa-lu-Lotśa-ba Chosskyo-n-bzan-po Dag yig za ma tog; Skyogs - ston - bzan - op Dag yig za ma tog; Skyogs - ston Lo-tśa-ba* (सोलहवीं शताब्दी के) भी हैं।[४]

संस्कृत-नेपाली कोश[५] — अज्ञातकर्तृक

---

1 Vogel. पृ.३८२

2 Lokesh Chandra : The Amarakoṣa in Tibet. New Delhi, 1965; Vogel. पृ.३८२

3 प्रकाशित. Delhi Karmapae Choedhey, Gyalwae Sungrab Partin Khạng, 1985 (Q. The university of California Catalogue) गिरीश नारंग द्वारा प्रेषित

4 सम्पा.Rinchen Tondup Tongspon, 1973 (Q. The university of California Catalogue) — गिरीश नारंग द्वारा प्रेषित

5 सम्पा. तथा जर्मन अनुवाद Conrady, A. *ZDMG*. ४७.पृ.५३९

यह सम्भवतः काठमाण्डू में १४५०-१७५० ई. के मध्य लिखा गया। २६५ श्लोकों में विभक्त यह कोश **अमरकोशवत्** विषयों का संकलन करता है।[१]

नेपाली

Bri - gun Bka - brgyud pa

यह कोश उत्तरपश्चिम नेपाल के लिमि से प्राप्त हस्तलेखों का पुनर्मुद्रण है। इसके फलक पर नाम है *Phags Bod skad gñis brda grel da- n m- non brjod khag bcas.* इसके अन्य लेखक हैं *Chos-kyi-grags-pa, Bri-gu-n Rig-dzin* (१५९५ ई. में जन्मे),*Dkon-mchog-phrin-las-bza-n-po Bri-gu-n-Che-tstha-n.* इसमें व्याकरण तथा कोशशास्त्र का इतिहास भी है।[२]

फारसी

पारशिक प्रकाश[३]

पारसीक कोश[४] अथवा प्रकाश

इसमें फारसी के शब्द संस्कृत व्याख्यायित हैं।

पारसीनाममाला

यह संस्कृत — फारसी कोश है[५]

पारसीकनाममाला अथवा शब्दविलास इसका निर्माण हरिब्राह्मण (सलक्षमन्त्री) ने किया।[६]

पारसीक प्रकाश[७]

---

1 Vogel. पृ.३८०

2 सम्पा. D. Tsondu Senghe 1985 (Q. Univ. of California Catalogue प्रेषित - गिरीश नारंग

3 NCC. XII. पृ. 37

4 NCC. XII. पृ. 38

5 NCC. XII. पृ. 38

6 NCC. XII. पृ. 38

7 NCC. XII. पृ. 33

इसके कर्ता कविकर्णपूर हैं।

रसीकप्रकाश अथवा कोश कृष्णदास कृत[१]

यह अकबर १५५६-१६०५ के संरक्षण में निर्मित हुआ।

इसने फारसी व्याकरण नहीं पढी। केवल सुनी हुई फारसी का अमरकोषादि के आधार पर संकलन किया।[२] व्याकरण का विभाजन भी अष्टाध्यायी के आधार पर किया जो अधिक वैज्ञानिक है।

पारसीशब्दार्थकोश[३]

पारसीसङ्ग्रह[४]

पारसीकप्रकाश विनोद[५]

व्रजभूषणानन्द कृत यह मालजित् वेदाङ्गराय की कृति पारसीप्रकाश का अनुकरण है। इसका प्रणयन १६५९-६० ई. में हुआ और इसमें गणित की गणनाएं है जो ज्योतिष से सम्बद्ध हैं।

पारसी प्रकाश — मालजित, मल्लजित् वेदाङ्ग — रायकृत गुजरात के श्रीस्थल के यह लेखक तिगलाभट्ट के पुत्र तथा रत्नभट्ट के पौत्र थे। शाहजहाँ के साम्राज्य में (१६२८-५८ ई.) में इन्होंने संस्कृत-फारसी-अरबी कोष का निर्माण किया। यह ग्रहविद्या तथा नक्षत्रों से सम्बद्ध था। यह हिन्दुओं की तिथियों को मुस्लिम तिथियों में परिणत करने के लिए प्रणीत किया गया।[६]

---

1 सम्पा. बनारस, १८६६; वेबर, ए. *Abhandlungen der Bayeischen Akademie der Wisseschaften* **3 Berlin, 1887. 1866-67** Varanasi, १९६५; **तथा भट्टाचार्य, विभूतिभूषण विवरण मुस्लमानों का संस्कृत को योगदान, सागर विश्वविद्यालय, विस्तार के लिए द्र.** B.C. Law Comm. Vol. II. पृ. 179; Indian Antiquary, 1912 पृ.४४ से

2 पारसीकप्रकाश.७

3 NCC. XII. पृ. 38

4 NCC. XII. पृ. 39

5 Vogel पृ. 381

6 Vogel. पृ. ३८०-८१ (भण्डारकर की हस्तलेखों की रिपोर्ट के आधार पर)

पारसीक नाममाला / शब्दविलास[१]

इसके निर्माता सलक्ष मन्त्री थे।

इसका निर्माण हरिभ्रम अथवा हरिब्रह्मन् जो गुजरात में ईलवर्ण अथवा ईलदुर्ग के राजा थे की प्रार्थना पर हुआ। यह १३६५ ई. में निर्मित हुआ।

मङ्गोल — द्र. समन्वितकोश

मञ्ज द्र. समन्वितकोश

यवनीनाम माला — द्र. तौरुष्की नाममाला

यवननाममाला — द्र. तोरुष्की नाममाला

यवननाममाला — विद्यानिलयकवि (१३६४-६५) [२]

अन्य कोश

पुराण, दर्शन (वेदान्त, बौद्ध, जैन, मीमांसा, न्याय), भूगोल, गणित, ज्योतिष, संख्या, रत्न

पुराणकोश एवं अनुक्रमणियां

अग्नि पुराणीयकोश

ललितासहस्रनाम पर भास्करराय (श्लो.५६) द्वारा उद्धृत दे. आगम परम्परा

गरुड पुराणसूचिका[३] **अनुक्रमणी**

पद्मपुराणसूची[४]

---

1 Shah, V.P. Sambodhi I. पृ.२९ Vogel. पृ.३८०

2 Vogel. पृ.३८० पाटि.

3 NCC. V. पृ.३२४

4 NCC. XI. पृ.१३५

वेदान्त कोश

अङ्गसागर — अङ्गकोश

शालग्रामकृत (वेदान्त)[१]

बौद्धकोश

आचारसङ्ग्रह[२] — बौद्धों का आचारकोश, श्रीघ्नकृत

यह अनुपलब्ध है परन्तु तिब्बती इस की श्रमणेरटीका (जयरक्षित कृत) उपलब्ध होती है।

तिब्बत में[३]

विद्वान् तिब्बत साधु तथा भारतीय पण्डित जो तिब्बत बुलाए जाते थे इकट्ठे बैठते थे तथा व्याकरण एवं कोशशास्त्र जैसे विषयों का विवेचन करते थे। उन्होंने निम्नलिखित क्षेत्रों में कोशों का निर्माण किया —

अ — महाव्युत्पत्ति

आ — अमरकोश एवं कामधेनु का तिब्बती में अनुवाद

इ — श्रीधरसेन की अभिधान मुक्तामाला

ई — मञ्जुघोष का अभिधानवचनकोश

उ — मञ्जुनाथ का शतसहस्रशासन

ऊ — आगमधर जिनध्वज की प्रज्ञा

महाव्युत्पत्ति

इसका निर्माण राजा Khri-Ide-Stron-btsan 815-36 ई. के आदेश से जिनमित्र, सुरेन्द्रबोधि शिलेन्द्रबोधि, दानशील तथा बोधिमित्र; तिब्बत के रत्नरक्षित, धर्मशील, ज्ञानसेन, जयरक्षित, मञ्जुश्रीवर्मन् तथा रत्नेचन्द्रशील के साहाय्य से हुआ।

---

1 NCC. I.

2 NCC. II. पृ.२८-२९; Proc. AIOC. १९५३ पृ.२३-२४; वही.पृ.२४३-२४६; Proc. AIOC भुवनेश्वर, भाग.२ (?) पृ.१०९-११८

3 द्र. Gangopadhyay, Mrinalkanti. Proc. Nat. Sem. Dict. Pune पृ. 93 से

इस का मुख्य उद्देश्य संस्कृत के शब्दों के तिब्बती समशब्द एकत्रित करना था। इसके मुख्य प्रतिपाद्य बौद्धों के सिद्धान्त थे।[१]

महाव्युत्पत्ति का अनुकरण

No-mthsar nor bui- do- śal of Thse-riṅ-ibaṅ-rgyal (१६९७-१७६३) (संस्कृत ?) के द्वारा १५,००० शब्दों के कोश का निर्माण किया गया। इस का निर्माण तिंब्बत संस्करण के महाव्युत्पत्ति से, मध्यव्युत्पति से, अमरसिंह के अमर कोश से, सुभूतिचन्द्र की कामधेनु, श्रीधरसेन के अभिधान मुक्तामाला तथा कोशेतर साहित्य से किया गया।[२]

महाव्युत्पत्ति[३] अथवा व्युत्पत्ति बौद्ध

तिब्बती — *Bye-brg-tu-rtogs-par-byed-pa*

धर्मकोश तथा धर्मकोशसङ्ग्रह यह नेपाल में बौद्ध शब्दावलीका कोश है।[४] अज्ञातकर्तृक टीका, अनामी व्याख्या पञ्चासामि थेर कृत; व्याख्या संवण्णम (अज्ञातकर्तृका) लेखक कीतिसिंह-सूर राजा (१३५१ ई.) के राज्य में एक प्रशासक था।

अभिधानाप्पदीपिका — व्याख्याएं[५]

1 Vogel. पृ.३८२; *NAWG.* १९७६.पृ.३२०; Lokesh Chandra: The Aṃarakoṣa in Tibet, New Delhi, १९६५, अन्य सन्दर्भ - Vogel. पृ.३८२
मुझे इस भाषाआ का ज्ञान नहीं है।

2 Vogel. पृ.३८२;NAWG. १९७६.पृ.३२०; Lokesh Chandra: The Aṃarakoṣa in Tibet, New Delhi, १९६५, अन्य सन्दर्भ - Vogel. पृ.३८२

3 वस्तार के लिए द्र. Gangopadhyay, Mrinalkanti. Proc. Nat. Sem. Dict. Pune. पृ. 93-96 तथा तिब्बती-कोश

4 NCC. IX पृ.२४२ .

5 Malashekhra, G.P. Pāli Literarture of Ceylon. Lọndon, 1928. p.189; NCC. I. p.295

अभिधानप्पदीपिका[१]

अमरकोश की संरचना के आधार पर। इसका प्रणेता लङ्का के **थेर नवो मोग्गल्लन** हैं जो बारहवीं शती के अन्त में हुए।

धर्मकोश — बौद्ध

धर्मसङ्ग्रह — नागार्जुन (द्वितीय शताब्दी ई.) [२]

धर्मशरीरसूत्र[३]

धर्मसङ्ग्रह पर आधारित — चीनी तुर्किस्तान से

धर्मसङ्ग्रहनामसंख्यासूत्र

धर्मसङ्ग्रह पर आधारित[४]

धर्मकोश

बुद्ध के नामों पर आधारित[५]

मञ्चू, हिन्दी, संस्कृत, तिब्बत तथा मंगोल से

जैनकोश (स्तोत्र)

जयश्रयङ्क जिनस्तोत्ररत्नकोश[६]

यह मुनिसुन्दरसूरि कृत है। इसका अन्य नाम जिनस्तोत्ररत्नकोश भी है।

मीमांसा

न्यायकोश[७] **आपदेवकृत**

जैमिनिकोशसूत्र अथवा **जैमिनीनिघण्टु**

---

1 सम्पा. कोलम्बो, १८६५, १८८३, १९००. Guj. pur. Mandir, १९२३.

2 सम्पा. Kasawara, K. Oxford (१८८५). पुनर्मुद्रित वैद्य, पी.एल. महायानसूत्रसङ्ग्रह - दरभंगा, १९६१ पृ. ३२९

3 Vogel. पृ. ३७८

4 Reconstructed F. Weller. Leipzg, १९२३

5 द्र. Vogel. पृ. ३७८-३७९ पादटिप्पणी तथा सम्पादित संस्करणों के लिए मुझे इन भाषाओं का ज्ञान नहीं है।

6 NCC. Vol.7, पृ. 193

7 NCC. X. पृ. 245

जैमिनिकोशसूत्र को वररुचि ने **लिङ्गविशेषविधि** में उद्धृत किया है।[१] इस का अन्य नाम **जैमिनीनिघण्टु** भी है जिस का[२] कर्तृत्व जैमिनी से जोड़ा जाता है।

न्यायकोश[३] —अज्ञातविषय

न्यायरत्नकोशवादार्थ — न्याय

द्र. रत्नकोश

न्यायकोश[४] — भारतीयदर्शन

भीमाचार्य झलकीकर — आधुनिक

सम्पा. बम्बई, १८७५, १८९३ अनेक संस्करण BORI. पूना

भूगोल

त्रिभुवनकोश[५]

यह सम्भवतः तीन भुवनों के भौगोलिक स्थानों का कोश हैं।

शिल्प

ज्ञानरत्नकोश[६] **— शिल्प से सम्बद्ध**

यह अपराजितपृच्छ का अंश है।

धर्मशास्त्र

आचारसङ्ग्रह[७] **—धर्मशास्त्र**

— रत्नपाणि

— हरिहर पण्डित

---

1 NCC. VII. पृ. 309

2 NCC. VII. पृ. 310

3 NCC. X. पृ245

4 NCC. X. पृ.२५९

5 NCC. VIII. पृ. 256.

6 NCC. VII. पृ. 334

7 NCC. II. पृ. 29

— पद्मनन्दिन्

यह कोश के समान हो सकता है आचारसागर, आचारसार भी उपलब्ध है।

नानादेशीसङ्ग्रहकार[१] — धर्मशास्त्र

पराशरस्मृति (विषय) सूची[२]

धर्मशास्त्रानुक्रमणिका[३]

धर्मशास्त्रोद्धृतवचनानि[४]

दायविभाग श्लोकः[५]

दायमन्त्रश्लोकः[६]

न्यासानुक्रमणिका[७]

विविध न्यासों की अनुक्रमाणिका

गणित

नाममाला — हरिदत्त[८]

द्र. गणितनाममाला

हरिदत्त

हरिदत्त ने गणित अथवा ज्योतिषनाममाला लिखा। यह श्रीपति के पुत्र कण्डूलपरिवार से सम्बद्ध हैं।[९]

---

1 NCC. X. पृ. 35; PO. XXI. पृ. 68.

2 NCC. XI. पृ. 214

3 NCC. IX. पृ. 267

4 NCC. IX. पृ. 267

5 NCC. IX. पृ. 29

6 NCC. IX. p. 9

7 NCC. X. पृ. 289

8 NCC. X. पृ. 46

9 द्वादशकोषसङ्ग्रह, वाराणसी, १८६५-६६ तथा १८७२-७३; Vogel. पृ. ३७८ फारसी के एतद्विषयक कोशों के लिए (द्र.फ़ारसीकोश)

ज्योतिषकोश

नक्षत्रनिघण्टु[१]

इसके अन्य नाम हैं नक्षत्रकोश, नक्षत्राभिधान

नक्षत्रादिनिघण्टु[२]

यह नक्षत्र ग्रह, राशि, लग्न, अङ्क तथा छन्दः संख्या पर एकत्रित सङ्ग्रह है।

नक्षत्रनिघण्ट्वादि[३]

ग्रह अभिधान — ग्रहशास्त्र (?)[४]

अज्ञातकर्तृक

पद्मकोश[५] — ज्योतिष

ग्रहकोश[६] — ग्रहशास्त्र

अनुक्रमणिका — ज्योतिष

आर्यभटीय विषयानुक्रमणिका[७]

गणितनाममाला[८] अथवा **ज्योतिषनाममाला**

१३२ पद्यों में प्रणीत ज्योतिष कोश के प्रणेता हरि अथवा हरिदत्त हैं। जिनके पिता श्रीपति कण्डुलवंश के थे। कोष १२८ श्लोकों में है।

---

1 द्र.NCC. IX. पृ.३१४ हस्तलेखों के लिए.NCC. IX. पृ.३१५

2 NCC. IX. पृ. 319

3 NCC. IX. पृ. 315

4 NCC. VI. पृ. 244

5 NCC. I. 321

6 प्रकाशित - बङ्गाली अनुवाद सहित कोशचन्द्रिका पृ.४६-४८ ढाका, १८९३

7 NCC. II. पृ.१७२

8 हस्तलेखों के लिए द्र. NCC. V. पृ. २६२; सम्पा. द्वादशकोशसङ्ग्रह, बनारस, १८६५; Vogel. पृ.३७८

जातकपद्मकोश[१]

इसका एक नाम ताजिकपद्मकोश भी है।

जातकरत्नकोश[२]

यह जैनेन्दु कृत है।

आचारसङ्ग्रह[३] परमेश्वर कृत धर्मशास्त्र / ज्योतिष

यह कोश के समान हो सकता है।

आचारसङ्ग्रह[४] — ज्योतिष

यह कोश के समान हो सकता है।

ज्योतिर्निघण्टु अथवा **ज्योतिषनिघण्टु**[५]

ज्योतिषपद्मकोश[६]

सम्भवतः यह **पद्मकोश** में से ज्योतिष सामाग्री का संकलन हो।

ज्योतिषरत्नकोश[७]

भट्ट त्रिविक्रम के पुत्र तल्लकृत ज्योतिष सम्बन्धी यह कोश है।

ज्योतिष — कोश

कुछ कोश नक्षत्र, अङ्क, संख्या राशि तथा ग्रहों के साथ भी जुड़े हुए हैं।[८] इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं —

---

1 NCC. Vol.7 पृ.२२०

2 NCC. Vol.7.पृ.२२३

3 NCC. II. पृ.२८

4 NCC. II. पृ.२८

5 NCC. VII. पृ.३५४

6 NCC. VII. पृ.३६२

7 NCC. VII. पृ.३६३

8 Vogel. पृ.३७८; प्रकाशित तर्कपञ्चानन, शा कोषरत्नाकर ढाका,१८७०; तर्करत्न, ग कोषचन्द्रिका, ढाका १८९३ (बंगाली अनुवाद सहित); भट्टाचार्य, ग.व. कोशसङ्ग्रह कलकत्ता १९०७-१९०८ तथा १९२४-२५

निश्चित वस्तुओं अथवा विचारों के कोश

संख्याकोश

वस्तुविज्ञानरत्नकोश - अज्ञातकर्तृक

इसका अन्य नाम रत्नकोश भी है। इसमें एक सौ सूत्र हैं तथा उनके व्याख्यान हैं। जैन दर्शन के अनेक तत्त्व इसमें उपलब्ध होते हैं। इस का प्रभाव सिंहली भाषा पर भी हुआ।[१]

रत्नकोश

रत्नकोश — अज्ञातकर्तृक

यह भी एक जैन कोश है जिसका प्रतिपाद्य ज्ञात नहीं है।[२]

रत्नकोश — अज्ञातकर्तृक

रत्नकोश को कृष्णपति ने मेघदूत में उद्धृत किया है।[३] (द्र. रत्नकोश)

वैद्यक

अभिधान मञ्जरी[४] — अज्ञातर्कृतक

अभिधानरत्नमाला[५] अथवा षड्सनिघण्टु (वैद्यक)

अभिधानरत्नमाला[६] अथवा षड्रसनिघण्टु (वैद्यक)

वैद्यक कोश यह कोश मल्लिनाथ द्वारा शिशुपालवध I. १२. XVI. १८ पर उद्धृत है।

अभिनवनिघण्टु[७] (वैद्यक)

---

1 Vogel. पृ.३७४

2 Aufrecht,T. CC. I. (२) पृ.३५२; Vogel. पृ.३७४

3 Narang, S.P. Meghadūta Studies पृ. 35; Proc. Nat. Seminar. dict. Pune. पृ. 118

4 NCC. I. p.295

5 प्रकाशित तेलुगुलिपि में मद्रास १८८१. इसे शिशुपालवध १.१२ तथा १६.१८ पर मल्लिनाथ ने उद्धृत किया है (NCC. I. पृ.२९५)

6 सम्पा. तेलुगुलिपि में मद्रा. १८८१ तथा १९२८

7 सम्पा. बम्बई, १९०० इण्डिया आफिस (प्रकाशित ग्रन्थ) १९३८, पृ.१८

अभिनवकृत वैद्यनिघण्टु[१] (जैन)

निघण्टुसार — वैद्यक[२]

इसके लेखक अशोक मल्लराज हैं।

अश्विनी निघण्टु[३]

इसे बासवराज ने वासवतन्त्र में उद्धृत किया है।

अष्टाङ्गनिघण्टु

यह वैद्यक शब्दावली सङ्ग्रह है।[४] इसी नाम को एक अन्यग्रन्थ अष्टाङ्ग सङ्ग्रह पर आधारित है[५]

अभिधानचूडामणि[६] अथवा **निघण्टुराज** अथवा **राजनिघण्टु** (वैद्यक)

इसके लेखक ईश्वरसूरि के पुत्र तथा आमृतेशनन्द के शिष्य काश्मीरनिवासी नरहरि अथवा नरसिंहपण्डित है। यह ग्रन्थ स्मृत्यर्थसार में उद्धृत है।

औषधिकोश

यह मराठी तथा गुजराती समशब्दों सहित प्रकाशित है।[७]

औषधि नाममाला अथवा **नामावली** अथवा **वैद्यनाममाला**[८]

औषधीनाममाला[९] औषध्यादिनामावलि

---

1 जैनसिद्धान्तभास्कर.IV (ii) p.117. NCC. I. p.298

2 NCC. I. पृ. 433

3 NCC. I. पृ. 444

4 NCC. I. पृ. 459

5 NCC. I. पृ. 459 एक हस्तलेख में तेलुगुअर्थ हैं तथा दूसरे में तमिल। तमिल अर्थों वाला वाग्भटकृत माना गया है।

6 सम्पा. N. Purandore आनन्दाश्रम में पूना १८७६. (मराठी, कन्नड़ एवं हिन्दी सहित)

7 प्रकाशित अहमदाबाद, १८९९

8 NCC. III. पृ. 106

9 NCC. III. पृ. 107

शब्दरत्नप्रदीप अथवा **रत्नप्रदीप**[१]**-निघण्टु** - कल्याणदास

यह नामदेव के पुत्र तथा लक्ष्मीधर के पौत्र थे। १३ वीं शं. ई. के अन्त में वे राजागोपाल के समकालिक थे।

इनके कोष में अकारादि आद्यक्रम से अ से क्ष ग्रथित है।

शब्दरत्नप्रदीप — द्र. वैद्यक *Written Half* / Hota, Kashinath Proc. Semi. dict. Pune पृ. ८३-९६

काशी राम — शब्दरत्नप्रदीप[२] रत्नप्रदीपनिघण्टु भी यही हो सकता है।

प्रथ्यापथ्यविबोध - वैद्यक

केयदेवपण्डित सपुत्र शार्ङ्गदेवकृत[३]

पथ्यापथ्य निघण्टु[४]

खरतगच्छ के श्वेताम्बर जैन ज्ञानविमलगणि द्वारा लिखित यह विवृति है। यह भानुमेरुगणि के शिष्य थे। विक्रमनगर अथवा बीकानेर के राजा राजसिंह (१५७३-१६११) के समकालिक थे।

इस व्याख्या में अनेकों उद्धरण उपलब्ध होते हैं जिनमें से विश्वप्रकाश, भागुरि, वैजयन्त (यादवप्रकाश), व्याडि, शाश्वत तथा पथ्यापथ्यनिघण्टु प्रमुख हैं।

निघण्टु — वैद्यक केयदेवकृत[५]

के (कै) य देव[६]

भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न पद्मनाभ के पौत्र तथा शार्ङ्ग देव के पुत्र केयदेव ने वैद्यक के निम्नलिखित कोशों का निर्माण किया —

नामरत्नाकर - जिसका पथ्यापथ्यविबोधक की भूमिका में भी उल्लेख किया गया है।

---

1 Vogel. पृ. ३७५-३७६

2 NCC. IV . पृ. १३९

3 द्र. विद्यालङ्कार, अ. आयुर्वेद का बृहत् इतिहास पृ. ४२६

4 Vogel. पृ. 331

5 NCC. X. पृ. ३०२

6 NCC. V. पृ. ४२-४३

— **निघण्टु** अथवा केयदेव निघण्टु

— **पथ्यापथ्यविबोधकः** यह वैद्यक एवं स्वास्थ्य का वैद्यक कोश है

— **प्रयोगसार**[१]

नैषध नाममाला[२] (वैद्यक) — केशवरामव्यासकृत

यह २३९ पद्यों में संगृहीत है। इस के गुजराती समशब्द भी उपलब्ध होते हैं।

नाममालि[३] — गोवर्धन (नाथ) कृत

अन्यत्र इस का नाम गोवर्धननिघण्टु भी है।

नामावली

गोवर्धननाथ की शब्दावली[४]

निघण्टु —गरुड़पुराण से

यह गरुड़पुराण के अध्याय २०२, २०४ तथा २०८ में उपलब्ध है तथा ८६ से ९५ श्लोकों में है।[५]

द्रव्यगुणसङ्ग्रह — चक्रपाणिदत्तकृत

यह लोध्रवलि परिवार के थे तथा नरदत्त के शिष्य थे, बंगाल के राजा नयपाल (१०३८-५५) के यह समकालिक थे।

निश्चलकर ने इस पर (१४५९-७६ ई.) में बंगाल के सुलतान बर्बक शाह के राज्य में व्याख्या लिखी।[६]

---

1 वही, पृ.४३ तथा J. Ass R.S. XIV. 1960. पृ.९८

2 NCC. III. पृ.१०५-१०६

3 NCC. VI. पृ.१८३

4 NCC. X. he=. 51

5 Birwe, R. ABORI Diamond Jubiliee Vol. पृ. ४७. इस का अनुवाद चल रहा है (Vogel. पृ.३७७-३७८)

6 सम्पा. Sen, D.N. Calcutta, १८७१ विद्यासागर जी. कलकत्ता. १८७७; १८७७; हिन्दी अनुवाद सहित — मिश्र ज. बम्बई, १९२५

शब्दचन्द्रिका — चक्रपाणिदत्त

इस का प्रयोग शब्दकल्पद्रुम में किया गया।

ओषधिनिघण्टु — वैद्यक

इसके कर्ता रवीनुनन्द के पुत्र चन्द्रनन्दन हैं। इस का अन्य नाम गणनिघण्टु भी है। इसे अमरकोश पर क्षीरस्वामी ने उद्धृत किया है।[१]

गणनिघण्टु

चन्द्रनन्दन द्वारा प्रणीत वैद्यक की शब्दावली।[२]

चन्द्रनन्दन[३]

इन का काल दसवीं शताब्दी ई. से पूर्व है क्योंकि ढल्लण ने इसे उद्धृत किया है। कश्मीर में इसे महानन्दन के पौत्र, रविनन्दन के पुत्र ने शुकदेव की प्रेरणा पर लिखा

चिन्तामणि[४]

यह **चिन्तामणिग्रन्थ** और **चिन्तामणिनिघण्टु** के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह बसवराज कृत बसवतन्त्र में उद्धृत है।

पथ्यापथ्यानिघण्टु — अज्ञातकर्तृत्व

— त्रिमल्ल कृत

— देवपण्डितकृत

— श्रीमुखकृत

— त्रिमल्लभट्टकृत

यह त्रिपुरान्तकनगर के ब्राह्मण थे जिनके पिता का नाम वल्लभभट्ट और पितामह का नाम सिङ्गण्यभट्ट था। यह १५ वीं शताब्दी ई. में हुए।

---

1 NCC. III. पृ. 96

2 NCC. V. पृ. 239

3 NCC. VI. पृ. 355

4 NCC. Vol.7, पृ. 57

१५ अध्यायों में १०१ श्लोकों में यह ग्रन्थ लिखा गया।

व्याख्या — इस पर एक व्याख्या द्रव्यदीपिका लिखी गई जिस के लेखकर कृष्णदत्त हैं।[१]

पथ्यापथ्यनिघण्टु[२]

दिव्यनिघण्टु[३]

दिव्यरत्नाकरनिघण्टु[४]

द्रव्यमुक्तावली[५]

द्राविडार्थदीपिका[६]

यह संस्कृत वैद्यक निघण्टु तथा वनस्पतियों के **तमिल** समानान्तर शब्दों का कोश है।

नामनिघण्टु

देवराजयज्वन् ने निरुक्तभाषा में उद्धृत किया है।[७]

निघण्टुनाममाला — धन्वन्तरि[८]

---

1 सम्पा. काशी १८६९-७० इत्यादि; मदनपाल की मदनविनोद सहित प्रकाशित कृष्णलाल - बम्बई १८९४-९५; शालिग्राम वैश्य - बम्बई, १८९६-९७; विश्लेषण Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, III. (१९५६) पृ.४६; Vogel. पृ. ३७७

2 NCC. XI. पृ.९५ द्र. विद्यालङ्कार, अ. आयुर्वेद का बृहत् इतिहास - पृ. ३१४

3 NCC. IX. पृ50

4 NCC. IX. पृ. 51

5 Wintenitz M. HIL. III. 550

6 NCC. IX. पृ. 185

7 NCC. X. पृ. 48

8 NCC. X. पृ. 302

मंख द्वारा प्रयुक्त[१]

धन्वन्तरिनिघण्टु — उद्धृत[२]

इसे अमरकोश पर क्षीरस्वामी ने, भावप्रकाश में, निघण्टुराज में तथा तिथि निर्णयप्रदीप में भट्टोजिदीक्षित ने उद्धृत किया है।

धन्वन्तरिनिघण्टु[३]

धन्वन्तरिनिघण्टु

इसके अन्य नाम द्रव्यावलीनिघण्टु, धन्वन्तरीयद्रव्यावलीनिघण्टु अथवा निघण्टुनाममाला है। यह तीन संस्करणों में उपलब्ध होता है।[४] महेन्द्रभोगिक के द्रव्यावलीनिघण्टु का प्रारम्भ भी इस जैसा है।[५]

धन्वन्तरिकोश = **धन्वन्तरि निघण्टु**

अभिधानचूडामणि अथवा **निघण्टुराज** अथवा **राजनिघण्टु**

नरहरि अथवा नरहरि पण्डितकृत। इनके पिता का नाम ईश्वर सूरि था। यह अमृतेशानन्द के शिष्य थे। काश्मीर के सोमानन्द की शिष्य परम्परा में थे[६]।

निघण्टु — वैद्यक[७]

तथा उससे युक्त अन्य कोश

निमि

मधु के विभिन्न प्रकारों पर क्षीरस्वामी ने अमर पर उद्धृत किया है

---

1 Vogel. पृ.३३४,द्र. Patki, Rajni. Proc. seminar. dict. Pune पृ.६३-६७

2 NCC. IX. पृ.२२९

3 सम्पा. नरहरि के राजनिघण्टु सहित—N. Purandare, आनन्दाश्रम,३३,१८९६; हिन्दी अनुवाद सहित शालिग्राम बम्बई,१९०० (बृहद्वैद्यकग्रन्थ धन्वन्तरि); तेलुगुलिपि में — मद्रास,१९२० तिब्बती अनुवाद Vogel. पृ.३७४

4 हस्तलेखों के विवरण के लिए द्र.NCC. IX. पृ.२२८-२२९

5 NCC. IX. पृ.२२९

6 सम्पा. आनन्दाश्रम पूना,१८९६. उद्धृत - स्मृत्यर्थसार; NCC. p.294

7 NCC. X. पृ. 115-117
TSS. II. पृ.२४२; III. पृ. २४४; NCC. X. पृ.१३२

पर्यायार्णव

नीलकण्ठ मिश्र द्वारा ५ तरङ्गों में प्रणीत[१]

इसे श्रीहर्ष ने अमरखण्डन में तथा वेङ्कटराय ने शब्दकल्पतरु में उद्धृत किया है।

पर्यायरत्नमाला[२] — अज्ञात

इसे सुभूति चन्द्र तथा सर्वानन्द ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।

पर्यायरत्नमाला[३]

पर्यायमुक्तावली अथवा **मुक्तावली**[४]

यह हेमचन्द्र के निघण्टुशेष पर आधारित है।

पर्यायमुक्तावली[५]

पार्वतीनाथकृत

अभिधानमञ्जरी कृत भिषगार्य[६]

अभिधानचन्द्रिका[७]

इसके लेखक भीमसेन हैं। इसकी भूमिका बहुत अधिक **धन्वन्तरिनिघण्टु** से उद्धृत है।

ओषधिनिघण्टु[८] — वैद्यक

इस का अन्य नाम मदनविनोदनिघण्टु भी है जिसे दिल्ली के पास कामठा (?) के शासक मदनपाल ने १३७४ ई. में लिखा। एक हस्तलेख में मलयालम भी ग्रथित है।

---

1 प्रकाशित आनन्दाश्रम, १८९६

2 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.२१९

3 NCC. XI. पृ.२३९

4 NCC. पृ.२३९

5 NCC. पृ.२३९

6 सम्पा.V.G. २.१९४२ वैद्यसारथिग्रन्थावलि, कोटय्यनगरी,

7 NCC. p.292

8 NCC. III. पृ.९६.द्र.मदनविनोद

मदनविनोद

यह वैद्यक का निघण्टु है।[१] यह १३७४ ई. का है।[२]

द्रव्यावली[३]

इस के अन्य नाम निघण्टु नाममाला, अथवा **द्रव्यावलीसमुच्चय** हैं जिस के लेखक कृष्णभोगिक के पुत्र महेन्द्रभोगिक हैं।

पर्यारत्नमाला — माधवकर — काल — विण्टरनित्स के अनुसार इस का काल ८-९ वी शताब्दी ई. है[४] यह इन्द्र के पुत्र थे यह सर्वानन्द के टीकासर्वस्व में उद्धृत हैं।[५]

पर्यायरत्नमाला — माधवकरकृत[६] द्र. रत्नमाला तथा राजवल्लभ (NCC. अप्रकाशित)

द्रव्यगुण - माधवकविकृत

यह वोपदेव के सिद्धमन्त्र प्रकाश में उद्धृत है।[७]

इसमें २९ अध्याय हैं।

पर्यायरत्नमाला

महेश्वरमिश्रकृत

यह शब्दकल्पतरु तथा श्रीहर्ष के अमरखण्डन में उद्धृत है।[८]

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. १९५३ पृ.१५१-१६३ पर उद्धृत

2 Winternitz M. HIL. III. 550

3 NCC. IX. पृ.१६५

4 Winternitz, M. HIL. III. पृ.५५५

5 Vogel. पृ.३७४

6 सम्पा. Vitsarkāra, Calcutta. १८९१-९२ चौधरी, तारापद. पटना, १९४६ NCC. XI. पृ.२३९ (हस्तलेख) C. Bhattacharya, Calcutta, १९३४-३५ (बंगाली अनुवाद सहित) विश्लेषण Meulenbeld, J. The Mādhavanidāna and its Chief commentary. Leiden, 1974. पृ.१०

7 Vogel. पृ.३७५

8 NCC. XI पृ.२३९

द्रव्यगुणविचार[१] — कोश ?

रत्नाकरकृत

द्रव्यगुणादेशनिघण्टु[२] **द्रव्यनिघण्टु**[३]

निघण्टुसार — राघवनानार्थमञ्जरी

औषाधिनामावली[४] — राधाकृष्णकृत

यह आयुर्वेद औषधियों का अकारादिक्रम से निबद्ध कोश है।

राजनिघण्टु[५] **— वैद्यक**

इन्द्रकोश[६] —रामचन्द्रभट्टकृत

ओषधालङ्कार[७]

यह कोश संस्कृत एवं मराठी में है जिसके लेखक रामानन्द हैं। इस का अन्यनाम औषधालङ्कार भी है।

अष्टाङ्गहृदयनिघण्टु[८]

यह वैद्यक शब्दावली है जो अष्टाङ्गहृदय से सम्बद्ध है। इस का लेखक वाग्भट माने गए हैं।

---

1 NCC. IX. पृ. 179

2 NCC. IX. पृ. 180

3 NCC. IX. पृ. 181
Vogel पृ. ३५८ राघवभट्ट द्र. नाममाला राघवभट्ट एकाक्षरकोष NCC. X. पृ. ३०२ तथा राघवकवि

4 द्र. मधुसूदन

5 उद्धृत Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I. १९५३. पृ. १५१-१६७

6 NCC. II. पृ. 250

7 NCC. II. पृ. ९६ द्र. औषाधालङ्कार पृ. १०६

8 NCC. I. पृ.४६५. कर्तृव्य के लिए द्र. ABORI . XXVIII. i-ii. पृ. ११६ से; शर्मा प्रियव्रत — वाग्भटविवेचन वाराणसी, १९६८

अष्टाङ्ग हृदय निघण्टु — वाग्भट

गोडे इसे ७५०-१०५० ई. के बीच मानते हैं।[१]

अभिधान मञ्जरी[२] — विष्णुसूनुकृत

पथ्यापथ्यनिघण्टु

इस के लेखक १५ वीं शताब्दी के विश्वनाथसेन सपुत्र गौरी नरसिंह हैं।[३]

वैद्यसिद्धौषनिघण्टु[४]

यह भी श्रीलङ्का से सम्बद्ध है और विद्यार्थियों के अध्यापन के लिए प्रयुक्त होता है।

अभिधानरत्नमाला

द्र. शिवकोश

शिवकोश[५] — शिवदत्त

बनारस के निवास तथा कर्पूर परिवार के शिवदत्त के पिता का नाम चतुर्भुज था।

यह कोष ५४० श्लोकों में लिखा गया। इस का काल १६७७-७८

व्याख्या — इस पर शिवप्रकाश नाम की स्वोपज्ञवृति लिखी गई। यह कोश अन्त्यानुक्रम से अकारादिक्रम में है।

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ.१५१-१६७ Same as ABORI. XXVII. (?)

2 NCC. I. p.295

3 प्रकाशित — तेलुगु लिपि में आयुर्वेदाश्रम - सं.२, तथा मद्रास,१९११.द्र.वेदालङ्कार अ. आयुर्वेद का बृहत् इतिहास .पृ.३१४

4 Vogel. पृ. 377

5 सम्पा.Harshe, R.G. Poona, 1952. विश्लेषण- Vogel. पृ.३७७काल के लिए द्र. Gode, P.K. Studies in Indian Literary History 1956, पृ.४३

पर्यायमञ्जरी

बोधिग्राम के श्रीकण्ठनन्दन कृत

सरस्वतीनिघण्टु

यह मूलतः **श्रीलङ्का** से सम्बद्ध है[१]

निघण्टु — सुषेणकृत[२]

गुणसङ्ग्रह

रायकबालक परिवार के सोड्ढल द्वारा संगृहीत है। यह असोढ के शिष्य थे।[३] यह १२ वीं श. ई. के थे।

पर्यायमुक्तावली

बंगाल के हरि-चरण सेन द्वारा लिखित इसमें २३ विभाग हैं। यह माधवकार की कृति पर आधारित है।[४]

---

1 सम्पादनों के लिए Vogel. पृ. ३७७

2 NCC. X. पृ.३०२

3 NCC. VI. पृ. ३३; विश्लेषण :- शर्मा, पी. वी. ABORI, ५२, पृ. १४१

4 NCC. XI. पृ. 239. सम्पा. उडिया लिपि में कटक १८७५, १९०७; Choudhury JBRS. XXXI (31) (1847) Sup. i-iv Patna, 31.

षष्ठ अध्याय

नामसंकलनपरम्परा

सामान्यविचार अनेक धर्मों / सम्प्रदायों तथा व्यक्तियों ने देवताओं अथवा मानवों की विविध गणना के अनुसार संकलन किया है जो कोश रूप में स्वीकृत हो सकता है।

निघण्टु — उद्धृत

इसे **वासवदत्ता** विवरण में **सिद्धिचन्द्रगणि** ने उद्धृत किया है।[१]

लघुनिघण्टु - चामुण्डा

चामुण्डा (डिक) लघुनिघण्टु[२]

इसके रचयिता **कृष्णराज वोडेयार** तृतीय हैं। इसकी व्याख्या ग्रहणदर्पण के नाम से मिलती है।

देवीपञ्चविंशतिनाम[३]

षट्त्रिंशन्नाम — देवी

देवीषट्त्रिंशन्नामस्तोत्र[४]

तीर्थङ्करनामावली

पञ्चभरतैरावतक्षेत्रस्य त्रिकालतीर्थङ्करनामावली[५]

मन्त्रपरम्परा

---

1 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History Vol.I पृ. २६३-२८०, परन्तु यह यही निघण्टु है, यह ज्ञात नहीं।

2 NCC. Vol.७, पृ.२१ द्रष्टव्य - NCC. Vol.4, पृ.३४९ b

3 NCC. IX. पृ.१३७

4 NCC. IX. पृ.१५३

5 NCC. XI. पृ.३९

पञ्चाशन्नामन्[१]

पञ्चबाणनवनाथादिनामानि[२]

अष्टोत्तरशतनाम परम्परा

विट्ठलनाथ दीक्षित इस के लेखक हैं। इस परम्परा में स्तव, स्तोत्र, ज्योतिष, दान, दिव्य देश, धर्मालोकमुख (बौद्धों का), न्याय, विविध क्षेत्र, तीर्थ (सम्पा.) विशेषणादि विषय हस्तलेखों में उपलब्ध होते हैं।[३]

परमेश्वराष्टोतरशतनामावलि

चिदम्बराष्टोत्तरशतनामावलि[४]

यह देवी-देवताओं के लिये है। ये देवी-देवता **चिदम्बरेश्वर** कहलाते हैं।

चिदम्बरसम्मेलनाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र[५]

चिदम्बरसम्मेलनाष्टोत्तरशतनामावलि[६]

नटेशाष्टोत्तरशतनामावली[७]

पद्मनाभाष्टोत्तरशतनामावलि[८]

द्र. अनन्तपद्मनाभाष्टोतरशतनामावलि

नृसिंहाष्टोत्तरशतनामवलि[९]

---

1 NCC. XI. पृ.७५

2 NCC. XI. पृ.३७

3 NCC. I. पृ. 477-478
NCC. XI. पृ. 193

4 NCC. Vol.7. पृ. 51

5 NCC, Vol.7, पृ. 51

6 NCC. Vol.7 पृ. 51

7 NCC. IX. पृ. 325

8 NCC. XI.

9 NCC. XI. पृ. 216

दामोदराष्टोत्तरशतनामस्तोत्र[१]

अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र[२]

पद्मपुराण से संगृहीत

अष्टोत्तरशत्तनामपरम्परा — आञ्जनेय

— आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनाम[३]

आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामावलि

दिव्याष्टोसरशतनाम[४] (दक्षिणामूर्ति)

गद्दुर्वष्टोत्तरशतरत्नमाला[५]

यह कृष्ण शास्त्रीकृत है।

चैतन्याष्टोत्तरशतनाम (स्तोत्र)[६]

यह वासुदेव सार्वभौम कृत है। यह वृन्दावन, १९१२ से प्रकाशित है।

पराष्टोत्तरशतनामस्तोत्र[७]

देव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र[८]

देवीकालीनामाष्टशतक[९]

अष्टोत्तरशतनामावलि — इन्द्राक्षी की इन्द्राक्ष्यष्टोत्तरशतनामावलि[१०]

देवीशिवाष्टोत्तरशतनामावलि[११]

---

1 NCC. XI. पृ. 24.

2 NCC. IX. पृ. 143

3 NCC. II. पृ.४२; प्रकाशित IO Ptd. Books 1938. पृ.१२४

4 NCC. IX. पृ. 51

5 NCC. Vol.7, पृ. 130

6 NCC. Vol.7, पृ. 80

7 NCC. XI. he=. 215

8 NCC. IX. पृ. 163

9 NCC. IX. पृ. 133

10 NCC. II. पृ. 257

11 NCC. IX. पृ. 153

देवीपञ्चशती नामावलि[१]

देवीपञ्चाशती स्तोत्र

सहस्त्रंनामपरम्परा

विष्णु

सहस्त्रनाम परम्परा

विष्णुसहस्त्रनाम तथा उन की व्याख्या पद्धति प्रचलित हुई द्र. आनन्दतीर्थशिष्य व्याख्या[२]

शिव

चिदम्बर, नटेश, शिव, परमदिव्यशिव, सदाशिव

सहस्त्रनामों की परम्परा

दे. शर्मा, रामकरण — शिवसहस्त्रनाम

चिदम्बरसहस्त्रनाम (स्तोत्र)[३]

यह शिवार्य कृत है।

चिदम्बरसहस्त्रनामावलि[४]

चिदम्बरेशसहस्त्रनामस्तोत्र[५]

चिदम्बरेशसहस्त्रनामस्तोत्र[६]

यह आकाशभैरवकल्प से उद्धृत है।

नटेशनामसहस्त्रस्तोत्र[७] अथवा चिदम्बरेश्वरसहस्त्रनाम स्तोत्र (आकाशभैरव कल्प से)

---

1 NCC. IX. पृ. 137

2 NCC. II. पृ. 105

3 NCC. Vol.7, पृ. 51

4 NCC. Vol.7 पृ. 51

5 NCC. Vol.7. पृ. 51

6 NCC. Vol.7. पृ. 52

7 NCC. IX. पृ. 325

शिवसहस्रनाम — महाभागवतउपपुराणम्[१] से

शुक्ल यर्जुवेद (माध्यन्दिनशाखा) शतरुद्रियमन्त्र[२]

शिव — नामों का कोश[३]

शिवसहस्रनाम[४]

शिवपुराण में उपलब्ध

शिवसहस्रनाम

वायुमहापुराण[५] से

शिवसहस्रनाम

ब्रह्ममहापुराण[६] से

शिवसहस्रनामाष्टकम्[७]

यह शिव के सहस्रनामाष्टकों का संकलन करता है जो महाभारत और पुराणों से गृहीत हैं।

---

1 सम्पा. पुष्पेन्द्रकुमार. दिल्ली, १९८३. ६७.१-१२५ (पृ. २७८-२८६); पुनर्मुद्रित शि.स.न.अ.पृ. २४०-२५३ (Version-8) ऋग्वेद. X. ११४,३-५ शिव के नाम पुनर्मुद्रित अंग्रेजी अनुवाद सहित शि.स.न.अ.पृ. २५४-२५५ (परिशिष्ट - एक)

2 पुनर्मुद्रित शि.स.न.अ.पृ. २५६-२७३ (अंग्रेजी अनुवाद सहित) परिशिष्ट — द्वितीय

3 अंग्रेजी सहित - सम्पा. शि.स.न.अ.पृ. २७४-३१५ अकारादिक्रम से

4 शिव महापुराण. सम्पा. पुष्पेन्द्र कुमार, दिल्ली, १९८१ IV. ३०.१-१३१; पुनर्मुद्रित शि.स.न.अ.पृ. १७२-१८२ (Version - 6)

5 सम्पा. Sharma, Rajendra Nath. Delhi, १९८५. I. ३-. १७९-२८४ पुनर्मुद्रित शि.स.न.अ.पृ. २००-२२७

6 सम्पा. Sharma, Rajendra Nath. Delhi, १९८५. ३८.१.१०० पुनर्मुद्रित. शि.स.न.अ.पृ. २२८-२३९ (Version - 7)

7 Ed. Sharma Ram Karan. Delhi, 1996 Abbreviation शि.स.ना.अ. = शिवसहस्रनामाष्टकम्

शिवसहस्रनाम

यह महाभारत अनुशासनपर्व में उपलब्ध होता है।[१]

शिवसहस्रनाम

लिङ्गपुराण का भाग[२]

शिवसहस्रनामस्तोत्र[३]

शिवसहस्रनामावलि — पद्मपुराण से संगृहीत

परमदिव्य शिवसहस्रनाम[४]

परासहस्रनामस्तोत्र[५]

सदाशिवसहस्रनामस्तोत्र — वेदसार शिव (सदाशिव) सहस्रनाम[६]

गणेश

परमदन्त, उच्छिष्टगणेश

परमदन्तसहस्रनामस्तोत्र

---

1 महाभारत (अनुशासन पर्व) 17.30-150 critically ed. by R.N. Dandekar. BORI. Poona, 1966; महाभारत गीता प्रेस गोरखपुर १३.१७३१-१५३; शि.स.ना.अ. पृ. १-१४; नीलकण्ठी सहित शि.स.न.अ. पृ. १७-५४ गीताप्रेस गोरखपुर. पुनर्मुद्रित हिन्दी अनुवाद सहित शि.स.न.अ. पृ. ५५-९०; Version-5 शान्तिपर्व Critical Ed. परिशिष्ट - २८; गीताप्रेस गोरखपुर १२.२८४.६८-१८० पुनर्मुद्रित शि.स.न.अ. पृ. १८३-१९९;

2 लिङ्गपुराणम् (शिवतोषिणी सहित) Delhi, 1989. १.६५.५४-१६८ तथा १.९८. २७-१५९. पुनर्मुद्रित शि.स.न.अ. पृ.९१-१२७ (Version 2) पृ. १२८-१७१ (Version-3)

3 NCC. XI. पृ.१४४-१४५

4 NCC. XI. पृ १६९

5 NCC. XI. पृ.२१५

6 NCC. XI. पृ.१४६-१४७
NCC. XI. पृ.१६९

उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तव[१] इस नाम का एक अन्य हस्तलेख भी है[२]

वीरभद्र

वीरभद्रसहस्रनामस्तोत्र[३]

पद्मपुराण से संगृहीत

विष्णु

विष्णु, नृसिंह

विष्णुसहस्रनामस्तोत्र[४]

पद्मपुराण से संगृहीत

नृसिंहसहस्रनामावलि[५]

मार्कण्डेय पुराण से

नृसिंहसहस्रनामावली[६]

भैरव

आपदुद्धारबटुकभैरवसहस्रनाम[७]

आपदुद्धारबटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र[८]

आञ्जनेय

आञ्जनेयसहस्रनामस्तोत्र

---

1 सम्पा. वी. राघवन् मद्रास, १९५९

2 NCC. II. पृ. 286

3 NCC. XI. पृ. 144-145

4 NCC. XI. पृ. 144-145

5 NCC. X. पृ. 209

6 NCC. X. पृ. 302

7 NCC. II. पृ. 122

8 NCC. II. पृ. 123

— आञ्जनेयसहस्रनामावलि[१]

(तेलुगु लिपि में प्रकाशित मद्रास, १९०५)

सहस्रनाम

देवी, दुर्गा, चामुण्डाशाकम्भरी, छिन्नमस्ता, जगदम्बा, तारा, पद्मावती (जैन), अष्टादशविद्या (तन्त्र), त्रिपुरा, परा, रेणुका, लक्ष्मी, गङ्गा, नर्मदा

देवीसहस्रनामावलि[२]

सहस्रनामस्तोत्र

दुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्र[३] (कुलार्णवतन्त्र से)

दुर्गासहस्रनाम[४]

i. मार्कण्डेयपुराण से

ii. कुलार्णवतन्त्र से

iii. पाराशरसंहिता से

iv. विश्वसारतन्त्र से

v. स्कन्दपुराण से

चामुण्डावनशाकम्भरीसहस्रनाम[५]

इसके अन्य नाम वनशाकम्भरीसहस्रनाम एवं चामुण्डाशङ्करीसहस्रनाम भी मिलते हैं। यह स्कन्द पुराण के हिमवत्खण्ड से उद्धृत है।

चामुण्डासहस्रनामन्[६]

छिन्नमस्तासहस्रनाम[७]

---

1 NCC. II. पृ. 41

2 NCC. IX. पृ. 153

3 NCC. IX. पृ. 77

4 NCC. IX. पृ. 84

5 NCC. Vol.7, पृ. 21

6 NCC. Vol.7, पृ. 21

7 NCC. Vol.7. पृ. 121

जगदम्बासहस्रनाम[1]

तारायाःतकारादिसहस्रनाम[2]

पद्मावतीसहस्रनामस्तोत्र — जैन[3]

सहस्रनामपरम्परा / तन्त्र

अष्टादशविद्या सहस्रनाम[4]

इसे मृत्युञ्जयतन्त्र से लिया गया है।

त्रिपुरा (बालभैरवी सहस्रनामस्तोत्र))(रुद्रयामल से)[5]

परासहस्रनामस्तोत्र

रेणुकासहस्रनामस्तोत्र[6] **— पद्मपुराण से संगृहीत**

लक्ष्मीसहस्रनाम[7] **— पद्मपुराण से संगृहीत**

गङ्गासहस्रनामस्तोत्र

स्कन्दपुराण काशी पूर्वार्ध से

नर्मदासहस्रनाम[8]

परशुराम

परशुरामसहस्रनामन्[9] **— अग्निपुराण से**

---

1 NCC. Vol.7, पृ. 125

2 NCC. Vol.8, पृ. 158

3 See Jhaveri, M.B. Comparative and Critical Study of Mantraśāstra, पृ.३१४-१५;NCC. XI. पृ. 155

4 NCC. I. पृ. 467

5 NCC. XIII.

6 NCC. XI. पृ. 143

7 NCC. XI. पृ. 143

8 NCC. IX. पृ. 373

9 NCC. XI. पृ. 199

परशुरामसहस्रनामावलि[१]

गुरुपरम्परा

जगद्गुरुपरम्परानाममाला[२]

विट्ठलसहस्रनामस्तोत्र[३]

पद्मपुराण से संगृहीत

देशिकसहस्रनाम[४] **— गोपालदेशिककृत**

चैतन्य

चैतन्यसहस्रनामस्तोत्र[५]

यह रूपगोस्वामिन् कृत है।

परमहंससहस्रनाम[६]

जैन

सहस्रनाम परम्परा

इस परम्परा में जैनों ने भी अर्हत् के सहस्रनामों का योगदान करके पर्यायों को एकत्रित किया जो कोश का कार्य करते हैं।[७] इन पर व्याख्याएं भी लिखी गईं।

---

1 NCC. XI. पृ.१९९

2 NCC. Vol.7, पृ. 130

3 NCC. XI. पृ. 144-145

4 NCC. IX. पृ. 167

5 प्रकाशित - १ कलकत्ता,१८७०,२. कटक. १९०७,उड़िया लिपि में।
NCC. Vol.7, पृ. 79

6 NCC. XI. पृ.१७४

7 NCC. I. पृ.३९४ अर्हत्सहस्रनामस्तोत्र अथवा अर्हन्नामसहस्र जिसे १६५१ ई.में देवविजयगणि ने लिखा तथा लेखक कृत व्याख्या। द्र. कपाडिया का शोभन के स्तुतिचतुर्विंशतिका की भूमिका पृ.५७-५८

चिक्कसहस्रनाम[1]

सहस्रनामपरम्परा — जिन

आशाधरसहस्रनामस्तुति जो जिन सहस्रनामस्तोत्र से प्रसिद्ध है।[2]

अष्टोतरसहस्रपरम्परा

इस परम्परा में १००८ जिननाम, नामावलि, ज्योतिष (कामधेनुपद्धति), ताजिक, दशा, दशाक्रम, दशाचक्र, दशान्तर्दशाप्रत्यन्तर्दशा, प्रकरण; तथा स्तवन (प्रायः अप्रकाशित) उपलब्ध होते हैं।

परमेशाष्टोतरसहस्रनाम[3]

---

1 NCC. Vol. 7, पृ.३३

2 NCC. II. पृ.१९६

3 NCC. XI. पृ. 188

सप्तम अध्याय

(१) अज्ञात कोशकार (उद्धरणों से)

काव्यों (श्लेष) के व्याख्यास्वरूप ग्रन्थ

इनमें कोशों को उद्धृत किया गया है तथा कई कोशों का व्याख्यास्वरूप निर्माण भी हुआ। अच्युतकृत युधिष्ठिरविजयव्याख्या[१] में इस प्रकार के सन्दर्भ उपलब्ध हो सकते हैं। मेघविजय उपाध्यायकृत सप्तसन्धानकाव्य; राघव पाण्डवीय, राघवनैषधीय की व्याख्याओं में भी यह प्रवृति लक्षित होती है। जैन परम्परा में प्रसिद्ध लक्षार्थीकाव्य भी इसी परम्परा का है।

अज्ञात

इसे कृष्णपति ने मेघदूत पर उद्धृत किया है।[२]

अभिधानमाला[३]

इस कोष को रायमुकुट एवं भट्टोजि तथा सर्वानन्द ने उद्धृत किया है।

अमर मङ्गल — इसे महेश्वर तथा केशव ने कोश प्रणेता के रूप में उल्लिखित किया है।

अमल मङ्गल

इसे कोश का प्रयोग विश्वप्रकाश ने किया है।[४] (द्र. अमरमङ्गल)

अमरसङ्ग्रह (कोश)[५]

उद्धरण[६]

---

1 अप्रकाशित NCC. I. p.72

2 Narang, S.P. Meghadūta Studies. पृ. 27

3 NCC. I. पृ. 295

4 विश्वप्रकाश, वाराणसी, १९११ भूमिका

5 NCC. I. पृ.३३५

6 NCC. I. पृ.३७१ गणरत्नमहोदधि (एजलिङ्ग संस्करण) पृ.११९ में अरुणदंत्त नाम से उद्धृत है। द्र.JOR Madras, VI. पृ. 247, 252; NCC. I. पृ. 273.

यह एक वैयाकरण एवं कोशकार है जिसे रायमुकुट एवं विद्याविनोद नारायण ने अमरकोश पर तथा वल्लभ ने शिलोञ्छ नाममाला पर अरूणदास के नाम से उद्धृत किया है। यह कोशकल्पतरू में भी सन्दर्भित हैं।

आनन्दकवि[१]

वररुचिकोष की व्याख्या के आद्यश्लोकों में उल्लिखित एककोशकार

आलमकोश[२] — अज्ञातकर्तृक

उग्र[३]

हेमचन्द्रकृत अभिधानचिन्तामणि पर अपनी व्याख्या शिलोञ्छनाममाला पर वल्लभगणि ने उद्धृत किया है।

उत्तररत्न — कोश

इसे उज्ज्वलदत्त ने उणादिसूत्रवृत्ति पर उद्धृत किया है।[४]

उत्पलमाला — कोश

व्याख्या - दीपिका गोविन्दभट्टकृत इसे श्रीहर्ष के अमरखण्डन में उद्धृत किया गया है। शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका (सुजनकृत) पर कल्लोल भट्टाचार्य ने अपनी व्याख्या पर इसे उद्धृत किया है।[५]

उपाध्यायसर्वस्व[६]

इस वैयाकरण - कोशशास्त्री को रायमुकुट ने अमरकोश पर व्याख्या में तथा सर्वानन्द ने अमरकोशव्याख्या में उद्धृत किया है।

---

1 NCC. II. पृ. 98

2 NCC. II. पृ. 187

3 NCC. II. पृ. 282

4 NCC. II. पृ. 307

5 द्र.JOR Madras V पृ.११,१२,२३,३५, सम्पा. अमरमण्डन - डेक्कन कालेज, पूना, भूमिका पृ.८, ९, ALB VII. पृ.४१ हस्तलेख नोटस्

6 NCC. IX. पृ.१९७;TSS. II. पृ.१९७;III. पृ.२७७;NCC. II. पृ.३८२ तथा NCC. IX. पृ.१७

एकपर्याय

इसे कृष्णपति ने मेघदूत पर उद्धृत किया है।[१]

कण्ठभूषणालङ्कार — कोश

यह कोश टीकासर्वस्व[२] तथा रायमुकुट की अमरकोश पर टीका में उद्धृत है।

कलिङ्ग[३] — कोशकार

इसे अमरकोश की टीकासर्वस्व में उद्धृत किया गया है। इसे १२ बार रायमुकुट ने (अमर पर)[४]; नारायण ने[५] तथा उज्ज्वलदत्त ने उणादिसूत्रों पर उद्धृत किया है। इसी का ही अन्य नाम कलिङ्गदत्त है।[६]

कश्चित् — अज्ञात

कृष्णपति ने मेघदूत पर उद्धृत किया है।[७]

कोश — अज्ञात

इसे राघवभट्ट ने अभिज्ञानशाकुन्तल पर उद्धृत किया है।[८]

कोषः — अज्ञात

इसे नैषधीयचरित पर लक्ष्मणभट ने उद्धृत किया है।[९]

---

1 Narang, S.P. Meghadūta Studies, पृ.३७

2 TSS. II. पृ.३५६; *ZDMG*. २८ (१८७४), पृ.१११; NCC. III. पृ.१२७

3 TSS. II. पृ.३०७

4 IHQ. XVII. पृ.४६९, ४७०

5 JOR. Madras. XII. पृ.७

6 उणादिसूत्र कलकत्ता संस्करण पृ.७४

7 Narang, S.P. Meghadūta Studies, पृ. 34

8 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History I. पृ. 429-436

9 Gode, P.K. Studies in Indian Literary History, पृ. 425-428

कान्तालीय[१] **— कोशकार**

कुमुदाकर[२] **— कोशकार**

इसे शिशुपालवध की चन्द्रशेखर कृत व्याख्या में उद्धृत किया गया है। अमरकोश की एक अज्ञात व्याख्या में भी यह उद्धृत है। (द्र. कुसुमाकर)

कुसुमाकर — कोशकार

इसे अमरकोश की एक **अज्ञातकर्तृक** व्याख्या में उद्धृत किया गया है।[३] (द्र. कुमुदाकर)

कोमल कोश सङ्ग्रह[४] — अज्ञातकर्तृक

इसे अनेक कोशों से संगृहीत किया गया है।

कोश — अज्ञात

इसे सिद्धिचन्द्रगणि ने **वासवदत्ताविवरण** में उद्धृत किया है।[५]

कोश — अज्ञात[६]

इसे लक्ष्मणभट्ट ने नैषधीयचरित की व्याख्या में उद्धृत किया है।

कोश — अज्ञात[७]

इसे मेघदूत की व्याख्या पर कृष्णपति ने उद्धृत किया है।

कोशग्रन्थ[८]

---

1 NCC. III. पृ. 341

2 NCC. IV. पृ. 227; द्र. JOR Madras VI. पृ. 249, 262

3 NCC. IV. पृ. 259; JOR Madras. VI. पृ. 249, 262

4 NCC. V. पृ. 94

5 Gode. P.K. Studies in Indian Literary History Vol. I. पृ. 263-280

6 Gode. P.K. Studies in Indian Literary History Vol. I. 1953 पृ. 425-428

7 Narang, S.P. Meghadūta Studies, पृ. 27

8 NCC. V. पृ. 96

अनेक कोश जिनके कर्ता अज्ञात अथवा सन्दिग्ध हैं हस्तलेखों में उपलब्ध होते हैं। प्राचीन भण्डारों के इन हस्तलेखों में संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, तथा अंग्रेज़ी जैसे कोश भी उपलब्ध हैं।

कोशरत्न[१]

यह श्री हर्ष के अमरखण्डन में उद्धृत है। क्या यह दिवाकरभट्ट का सर्वार्थशिखामणि कोशरत्न है ?

कोशसार

इसे वासवदत्ता पर शिवराम ने उद्धृत किया है।[२] कालीवर शर्मन् कृत चन्द्रकोश[३]

गङ्गदेव

यह टीकासर्वस्व में उद्धृत है।[४]

गणनिघण्टु — कोशकार[५]

गोपदत्त — कोशकर्ता

अमरकोश पर टीकासर्वस्व में उद्धरत हौ[६]

गोपालित

यह विश्वप्रकाश में कोशकार के रूप में उल्लिखित है।[७] गोपाल एवं गोपालित एक है — यह कहना कठिन हौ

उणादिसूत्रों पर वृत्ति में उज्ज्वलदत्त ने इसे उद्धृत किया है। पुनश्च विश्वप्रकाश तथा अमरकोश पर अज्ञात व्याख्याकार ने उद्धृत किया है।[८]

---

1 द्र. अमरमण्डन, भूमिका, पूना, १९४९. पृ. ६, ९

2 NCC. V. पृ. 97

3 सम्पा. Sarampore, 1873-74

4 TSS. II. पृ. ८७; NCC. V. पृ. १९२

5 NCC. V. पृ. १२८

6 TSS. पृ. ३२८; NCC. VI, पृ. १२८

7 विश्वप्रकाश, १९११, भूमिका

8 JOR. Madras. VII. पृ. ३७२, द्र. वोपालितसिंह

गोवर्धन[१]

इसे नारायण[२] ने, रायमुकुट ने टीकासर्वस्व[३] पर तथा सुभूतिचन्द्र[४] ने अमरकोश की व्याख्या चन्द्रशेखर ने इसे शिशुपालवध की व्याख्या[५] पर उद्धृत किया हौ इनके गोवर्धनकोश को मेदिनीकोश में तथा त्रिकाण्डविवेक में उद्ध२त किया गया है।[६]

गाविन्दभट्ट[७]

इसे वापदेव की कविकल्पद्रुम पर **दुर्गादासशर्मन्** ने अपनी व्याख्या में उद्धृत किया है।

चन्द्र[८]

इसे कोशकार के रूप में अमरकोश पर अज्ञात व्याख्या में[९] क्षीरस्वामी[१०] ने तथा रामनाथ ने त्रिकाण्डविवेक में उद्धृत किया है। कोशकल्पतरु के निर्माण के लिये विश्वनाथ वै. ने भी इसका प्रयोग किया है[११]

चन्द्रकोश[१२]

इसे भट्टोजिदीक्षित ने प्रौढमनोरमा में उद्ध२त किया है.।

---

1 NCC. VI. पृ.१८२,१८४.

2 JOR, Madras. XII. पृ.७-१२

3 TSS. edn. I. 164; II. पृ.२९७,३०५,३६८;III, २०,२४०,१७५;IV. १३० १८७.

4 JOR. Madras. VII. पृ.३७२

5 NCC. VI. पृ.१८२

6 NCC. VI. पृ.१८४

7 NCC. VI. पृ.२०१

8 NCC. VI. पृ.३४४;द्रं.चन्द्रकोश

9 JOR. Madras. VI. पृ.२४८

10 TSS. edn. II. पृ.८४,८५,८६,९२,११४,III. १२,२६२

11 Poona Orientalist. XII. पृ.२२.

12 NCC. VI. पृ.३४८;द्र.कालीशर्मन् कृत चन्द्रकोश

जयकोश[१]

यह अमरकोश पर अज्ञातकर्तृक व्याख्या में; अमरकोश की टीकासर्वस्व पर प्राप्त व्याख्या में सर्वानन्द द्वारा; सुजान की शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका पर अपनी टीका में कल्लोल भट्ट द्वारा उद्धरत है। (द्र. जयपोव्यायिक)

जयपोव्यायिक[२]

अमरकोश पर सर्वानन्द की अपनी व्याख्या में उद्धरत किया है। (द्र. जयकोश)

टीकासमुच्चयसार

इसे रायमुकुट ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।[३]

टीकासर्वस्व[४]

इसे अमरकोश पर **वन्द्यघट्ट** सर्वानन्द ने उद्धृत किया है।

टीकासार

इसे रायमुकुट ने अमरकोश पर उद्धृत किया है।[५]

ढौका[६]

हम्मीरकृत शब्दशब्दार्थमञ्जूषा पर मुरारिमिश्रकृत व्याख्या में यह कोश के रूप में उद्धृत है।

तन्त्रपाल — कोशकार

---

1 NCC. VI.Vol. VII. पृ. 170

2 NCC. VI.Vol. VII. पृ. 10

3 NCC. VIII. पृ. 2

4 NCC. VIII. पृ. 2

5 NCC. VIII. पृ. 2

6 NCC. VIII. पृ. 12

इसे अमरकोश पर रायमुकुट ने उद्धृत किया है।[१] अमरकोश पर भानुजी ने तथा मेदिनीकार ने भी इसे उद्धृत किया है।[२]

त्रिकाण्ड

इसे अमरसिंह के स्रोत में सुभूतिचन्द्र, सर्वानन्द तथा रायमुकुट ने स्वीकार किया है।

निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि इसको लिङ्गों के निर्धारण के लिये अमरसिंह ने प्रयोग किया। यह सम्भावित है कि त्रिकाण्ड तथा उत्पलिनी का प्रयोग नाम के लिये तथा व्याडि एवं वररुचि का प्रयोग लिङ्ग के लिये किया हो।[३]

त्रिविक्रमाचार्य क२त गीर्वाणभाष्ज्ञाभूषण[४]

त्रयम्बकमिश्र — पाण्डित्यरसायन अथवा **विशेषामृत**

इस कोश के कर्ता त्रयम्बक मिश्र है।[५]

दामोदरकृत उपाध्यायसर्वस्व

यह अमरकोश पर सर्वानन्द के द्वारा टीकासर्वस्व पर उद्धृत है।[६]

दिवाकर

इस अनर्घराघव पर पाञ्जका में पूर्णसरस्वती ने उद्धृत किया है। मेघदूत पर विद्युल्लता में, विष्णुपादादिकेशान्तरस्तोत्र पर भक्तिमन्दाकिनी में, मालतीमाधव पर रसमञ्जरी ने तथा मेघदूत पर कृष्णपति ने इसे उद्धृत किया है।[७]

---

1 ZDMG. 28 (1874) पृ.113

2 NCC. VIII. पृ. 153

3 Vogel, पृ. 27. पादटिपपणी; पृ. 312.

4 NCC. VI. पृ. 43

5 NCC. XII. पृ. 21 तथा NCC. VIII. पृ. 284.

6 JOR. Madras. VI. He=. 255, 277.

7 Unnithiri, NVP. Pūrṇasarasvatī - As verssatile Scholar; Narang, S.P. Meghadūta Studies.

दुर्गकृत दुर्गकोश[१]

दुर्ग

अनेकार्थकैरवकौमुदी[२] में एक उद्धरण दुर्ग एवं मंख से मिलता है। यह लिङ्ग सम्बन्धी है। क्या दुर्ग वैय्याकरण दुर्ग ही हैं?

दृष्टान्तसिद्धाञ्जनक[३]

धनञ्जय भट्टाचार्य[४] **कृत पर्यायशब्दरत्न (रत्नाकरऋ**

धर्म — ३ सर्गों में प्रणीत

यह अमरकोश पर टीकासर्वस्व में उद्धृत है।[५]

धनपाल

संस्कृत कोश का उल्लेख हेमचन्द्र ने अभिधानचिन्तामणि के स्रोत के रूप में किया है।[६] (द्र. धनपाल - प्राकृत कोश) **नञ्जुण्ड्यज्ज्वन्** कृत कोश[७]

नत्कीरकवि — बालप्रबोधिका[८]

नलोदयपदपाठ[९]

यह १५ उपदेशों में प्रणीत है।

---

1 द्र. कल्पद्रुकोश की भूमिका पृ.XXXI

2 Sharma, Sudha (1994), पृ.२०९

3 द्र.NCC. II. पृ.३१७.

4 सम्पा. Deccan College Research Institute, Poona, 1971.

5 TSS. II. पृ. 130

6 अभिधानचिन्तामणि - सम्पा.Böhtlingk. भूमिका, पृ. VII.

7 NCC. V. पृ.96

8 NCC. IX. पृ.380

9 Gode, P.K. Studies in Indkan Literary History. I. पृ. 429-436.

नागेन्द्र

यह श्रीधरसेन के विश्वलोचन[१] में उल्लिखित हैं जो उसके स्रोतों मे से एक हो सकता है।

नाममाला — अज्ञात

राघवभट्ट[२] ने अभिज्ञानशाकुन्तल पर इसके दो उद्धरण दिये गये है।

नारायणचक्रवर्तिकोश[३]

पद्मकोश[४]

इसे हस्तसञ्जीवन पर मेघविजयगणि ने उद्धृत किया है।[५]

पर्यायपदवारिधि[६]

(द्र. ढौका) (शब्दशब्दार्थमञ्जूषा पर) मुरारि मिश्र द्वारा उद्धृत।

पर्यायार्णव[७]

यह शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका की व्याख्या दृष्टान्तसिद्धाञ्जन में उद्धृत है।

पाल[८] — कोशकार

इसे मेदिनीकार ने अपने मेदिनीकोश के लिये प्रयुक्त किया है।

---

1 NCC. XIII. पृ.380

2 विश्वलोचन की प्रशस्ति,६;Gode, P.K. Studies in Indkan Literary History. I. पृ. 63 पादटिप्पणी

3 NCC. X. पृ.96.

4 CC. I. 212; I. 321. द्र. NCC.

5 Gode, P.K. Studies in Indkan Literary History. Vol.I. 1953. pp. 86-91

6 NCC. XI. पृ. 239

7 NCC. XI. पृ. 239

8 NCC. XI. पृ. 74

प्रयागदासकृत पद्मकोश[१]

यह कहना कठिन है कि प्रकाशित पद्मकोश से यह हस्तलेख भिन्न है या समान।

प्राणेश्वर

इसे कोशकार को अमरकोश पर टीकासर्वस्व में उद्धृत किया गया है।[२]

बालशर्मन्

इस कोशकार को रायमुकुट ने अमरकोश की व्याख्या पर उद्धृत किया है।[३]

भानुचन्द्र गणिकृत नाममाला अथवा **नामश्रेणिवृत्ति अथवा** अथवा **विविक्त-नामसङ्ग्रह**

असमस्त शब्दों का सङ्कलन जिसे विजयसेनसूरि के राज्य में संगृहीत किया गया।[४] (द्र. नामसङ्ग्रह)

भानुचन्द्रमणिकृत नामङ्ग्रह[५]

(द्र. नाममाला)

भार्गवाचार्य कृत **नामसङ्ग्रहनिघण्टु**[६]

भीमसेन कृत अभिधानचन्द्रिका

भोगीचन्द्र

इसे विश्वप्रकाश की भूमिका में उल्लिखित किया गया है।[७]

---

1 NCC. XI. पृ. 52

2 NCC. XI. पृ. 151

3 NCC. XI. पृ. 146

4 द्र. ZDMG २८ (१८७४) पृ. ११४

5 भानुचन्द्रगणिचरित्र भूमिका, एगहुर्प्र्व्हे ऐीगे, १५. पृ० ७० ; परिशिष्ट पृ० ५५-५६

6 NCC. X. पृ.४९

7 NCC. X. पृ.४९

मधुसूदन कृत **शब्दरत्नावली**[१]

मधुसूदन कृत **कोशसङ्ग्रह**[२]

राधाकृष्ण कृत

महेनद्र कृत **गोविन्दाभ्युदयचन्द्रिका**

इसे चकोर ने शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका की व्याख्या पर उद्धत किया है।[३]

महेश्वरमिर कृत **पद्मायपदरत्नमाला**

द्र. पर्यायरत्नमाला

महेश्वरसूरि कृत नामसिद्धान्तनिर्णय, नामानुशासन अथवा विश्वकोश मैथिल विद्याकर मिश्र कृत अभिधानचिन्तामणि[४] की शब्दानुक्रमणी

इसका नामन्तर विद्याधर मिश्र भी हौ

महेन्द्र कृत **गोविन्दाभ्युदयचन्द्रिका**

इसे चकोर ने शब्दलिङ्गर्थचन्द्रिका की व्याख्या पर उद्धत किया है।[५]

रत्नकोश

यह कृष्णपतिकृत मेघदूत की व्याख्या में उद्धत है।[६]

रत्नधर कृत **अभिधानविवेक**[७] — व्याकरण / कोश (?)

इसे रचयिता रत्नधर हैं।

---

1 अनुपलब्ध NCC. X. पृ.२९२ इसका अधिकतर भाग धन्वन्तरिनिघण्टु में से गृहीत है।

2 विश्वप्रकाश, १९११, भूमिका

3 Vogel. पृ.३६५

4 NCC. V. पृ.९७

5 कृष्णसूरि कृत अमरमण्डनम्, पूना, १९४९, भूमिका, पृ. १०; Adyar Library Bulletin. VII. i. पृ.४१

6 केशवस्वामी — नानार्थार्णवसंक्षेप - भूमिका; Vogel. पृ.३४६ से

7 NCC. I. पृ.२९४

रन्तिदेव

इसे सदानन्दगणि ने रामाश्रम की **सिद्धान्तचन्द्रिका** पर उदधृत किया है। इसका केवल एक उद्धरण मिलता है।[१]

रामकृष्ण कृत **नामलिङ्गाख्यकौमुदी**[२]

द्र. पीयूष — अमरकोश पर रामकृष्णकृत

रूपचन्द्र[३] — **रूपमञ्जरीनाममाला**

वरदाचार्य कृत **कान्तालीयखण्डनमण्डन**[४]

द्र. **कान्तालीय**

वल्लभगणि कृत **नमानिर्णय**

इस उसने नामसारोद्धार में उद्धृत में उद्धृत किया है।[५]

वाचस्पति

इसे विश्वप्रकाश की भूमिका में उद्धृत किया गया है।[६]

वाचस्पति मिश्र — कुसुमन ? कोश

विद्याधरमिश्र

द्र. मैथिल विद्याकरमिश्र

विद्या हं(स) वीरमिर — पर्यायपदमञ्जरी[७]

---

1 Narang, S.P. Meghadūta Studies, पृ35

2 NCC. I. पृ.२९६

3 Gode, P.K. Studies in Indkan Literary History. Vol.I. पृ.९९

4 NCC. X. पृ.४८

5 Vogel. पृ.३५९

6 NCC. III. पृ.३४१

7 NCC. X. पृ.४४

विश्वरूप

इसे विश्वप्रकाश ने नाम्ना उल्लिखित किया है।[१] इसका एक उद्धरण समाश्रम की **सिद्धान्तचन्द्रिका** पर सदानन्दगणि द्वारा किया गया है।[२]

वोपलित

इसका काल ९५० ई. से पूर्व है।[३]

शब्दार्णव

इसे रामाश्रम की **सिद्धान्तचन्द्रिका** पर सदानन्दगणि ने उद्धृत किया है।[४]

शाकटायन

केशवस्वामी ने इसका नाम्ना उल्लेख किया है।[५]

शुचिनाथ कृत **टीकाकारसमुच्चय**[६]

शुभाङ्ग

इनका कोश विश्वप्रकाश की भूमिका में उल्लिखित है।[७] इनकी उत्पलमालिनी को सर्वानन्द ने तथा नारायण विद्याविनोद ने अमरकोश पर उद्धृत किया है। संक्षिप्तसार पर जौमारनन्दी (कौमारनन्दी) ने भी इसे उद्धृत किया है।[८]

---

1 विश्वप्रकाश, १९११, भूमिका

2 NCC. IV. पृ.२५८

3 NCC. XI. पृ.२३८

4 विश्वप्रकाश, १९११, भूमिका

5 Gode, P.K. Studies in Indkan Literary History. Vol.I. पृ. 98

6 वही, I, पृ.६, ४९, ६०, २६३-२८०.

7 वही, I, पृ.९९ (एक उद्धरण)

8 केशवस्वामी — नानार्थार्णवसंक्षेप; Vogel, पृ.३४६ से

शेष

इस कोष का एक उद्धरण महेन्द्रसूरि ने अनेकार्थकैरवकौमुदी पर दिया है।[१]

शेषाख्यनाममाला[२]

सेव्यसेवकोपदेश

यह स्वामी एवं सेवक के सम्बन्धों तथा उसे सुधारसे के लिये लिखा गया उपदेशात्मक ग्रन्थ हैं।[३]

---

1 Sharma, Sudha (१९९४) अनेकार्थकैरवकौमुदी. ३.४६४. यच्छेष : ---- अथ व्यायामे।

2 Vogel. पृ.३३८

3 Bajaj, Om ए विश्लेषण - BORS. २५ में,पृ.३२४ से

(२) महेन्द्रसूरि[१]

१२ वीं शताब्दी के आचार्य हेमचन्द्रकृत **अनेकार्थसङ्ग्रह** कोश पर उनके समकालीन शिष्य महेन्द्रसूरि द्वारा प्रणीत **अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी** अथवा अनेकार्थकैरवकौमुदी नामक टीका उपलब्ध होती है। इस टीका का वैशिष्ट्य है कि संस्कृत के समस्त अनेकार्थक कोशों पर केवल महेन्द्रसूरिकृत **अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी** टीका ही पूर्णतः एवं व्यवस्थित रूप में उपलब्ध है।

कृतियाँ[२]

संस्कृत साहित्य के इतिहास एवं हस्तलेखों के विभिन्न ग्रन्थों में **महेन्द्र**' के नाम से उल्लिखित अनेक कृतियां हैं। महेन्द्रसूरि की एकमात्र प्रकाशित एवं उपलब्ध कृति अनेकार्थकैरवकौमुदी है। अन्य कृतियों के तो केवल हस्तलेख ही उपलब्ध होते हैं। अनेकार्थकैरवकौमुदी टीका के अतिरिक्त अभिधानचिन्तामणि, नर्मदासुन्दरीकथा, समुद्रदत्तकुबेरदत्त कथानक और कर्मस्तव भाष्य की ७० गाथाओं के रचयिता भी महेन्द्रसूरि हैं।

लेखक के नाम, गुरु, समय निवास स्थान अथवा धर्म के साक्ष्यों के आधार पर तीर्थमालास्तव अथवा तीर्थमालास्तोत्र एवं अवचूरी, शतपदी, यन्त्रराज अथवा यन्त्रराजागम, शिवताण्डव, विचारसप्ततिकाप्रकरण, मनः स्थिरीकरणप्रकरण एवं टीका और द्रव्यावली अनेकार्थकैरवकौमुदी के रचयिता महेन्द्रसूरि से भिन्न महेन्द्र की कृतियाँ है। जबकि वैद्यकसङ्ग्रह के रचनाकार महेन्द्र की अभिज्ञा पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में अनिश्चित है।

समय

अनेकार्थकैरवकौमुदी के रचयिता महेन्द्रसूरि के हेमचन्द्र (१०८८-११७२ ई.) का शिष्य और समकालीन प्रमाणित होने के कारण महेन्द्रसूरि द्वारा मङ्ख

---

1 डा. सुधा शर्मा के सौजन्य से।

2 Sharma, Sudha (1994) पृ.१-१६

(१२ वीं शती) को अपनी टीका में नाम्ना उद्धृत करने के कारण महेन्द्रसूरि का समय लगभग १२ वीं शती निश्चित ही है।[१]

व्याख्या - पद्धति

महेन्द्रसूरि ने अनेकार्थसङ्ग्रह कोश में सङ्ग्रहीत शब्दों एवं उनके अर्थों की व्याख्या के लिए अनेकार्थकैरवकौमुदी टीका में चार पद्धतियों का उल्लेख किया है — १. व्युत्पत्ति, २. लिङ्गनिर्धारण, ३. विषमार्थप्रकाशन और ४. दृष्ट-दृष्टान्त।[२]

व्युत्पत्ति —

महेन्द्रसूरि ने विभिन्न शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए शब्दों का पदभङ्ग करके द्योतित अर्थ बताते हुए, स्वर-संस्कार स्पष्ट शब्दों की व्याकरण द्वारा व्युत्पत्तियाँ देते हुए, अन्य शब्दों की उणादि परम्परा द्वारा, अनेकार्थक अथवा व्युत्पत्ति के अस्पष्ट होने पर अनेक व्युत्पत्तियाँ देने की तकनीक को अपनाया है।[३]

लिङ्गनिर्धारण

महेन्द्रसूरि ने **अनेकार्थकैरवकौमुदी** टीका में लिङ्गनिर्देश की पद्धति स्वयं निर्दिष्ट की है।[४] उन्होंने गुण, प्राणी, जाति एवं ध्वनिवाची शब्दों के लिङ्गनिर्धारण के लिए वाच्यलिङ्ग, रूपभेद, प्रत्ययभेद का आश्रय लेते हुए लिङ्गनिर्धारण किया है और विशेष होने पर पृथक् रूप से निर्दिष्ट किया है[५]

विषमार्थप्रकाशन

महेन्द्रसूरि ने शब्दों के कठिन अर्थों को पर्यायों द्वारा, अर्थों को भी भिन्न-भिन्न अर्थों द्वारा, प्रसङ्ग के आख्यान द्वारा, सकारण व्याख्या द्वारा, विवेचनात्मक वाक्यों द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।[६]

---

1 वही, पृ.१७, १८

2 वही, पृ. २०

3 वही, पृ. २०-२३

4 अने. टी. १.५-७

5 शर्मा, सुधा पृ. २३-४०

6 वही, पृ. ४०-४९

दृष्टदृष्टान्त

महेन्द्रसूरि ने विभिन्न शब्दों के अर्थों के स्पष्टीकरण के लिए विभिन्न न्यायों एवं उद्धरणों का प्रयोग किया है।[१]

व्युत्पत्तियाँ

महेन्द्रसूरि ने अनेकार्थकैरवकौमुदी टीका **अनेकार्थसङ्ग्रह** कोश में सङ्कलित प्रायः सभी शब्दों की व्युत्पत्तियां देने का प्रयत्न किया है महेन्द्रसूरि ने कुछ व्युत्पत्तियाँ जिनका स्वर संस्कार स्पष्ट है उनकी व्याकरणात्मक व्युत्पत्तियाँ दे दी है परन्तु उन व्याकरणात्मक व्युत्पत्तियों में भी कुछ अर्थसङ्गत हैं और कुछ अर्थ - असङ्गत। इनके अतिरिक्त कुछ नाम, रूढ़, देशज, तद्भव, संस्कृतेतर शब्दों आदि की व्युत्पत्तियाँ, व्याकरण - परम्परा से सम्भव न होने पर भी व्याकरण की उणादि परम्परा का आश्रय लेते हुए खींचतान करते हुए देने का प्रयत्न किया गया है जिससे अनेक व्युत्पत्तियाँ असङ्गतार्थ प्रतीत होती हैं।

उद्धरण

अनेकार्थकैरवकौमुदी टीका में महेन्द्रसूरि ने शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न ग्रन्थों से ८००० से भी अधिक उद्धरण दिए हैं। इस टीका में कतिपय उद्धरणों को छोड़कर अधिकांश उद्धरण ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार के नाम के बिना उद्धृत हैं तथा पूर्ण श्लोक उद्धृत न होकर किसी एक पाद अथवा पादांश का भी उद्धरण रूप में उल्लेख होने से उनका अनुसन्धान कार्य कठिन है। प्रो. ज़खारिया ने अनेक उद्धरणों के स्रोतो को पीटर्सबर्ग कोश, इण्डिश्चे श्प्रखे आदि ग्रंथों से खोजा है। तथापि उन्होंने पीटसबर्ग कोश में उद्धृत अधिकांश प्रकाशित कोशों के स्रोतों की, अनेक प्रकार के अनुपलब्ध स्रोतों, अज्ञात अथवा अप्रकाशित स्रोतों को छोड़ दिया है अथवा वे उन स्रोतों को ढूँढने में असमर्थ रहे हैं।

प्रंकाश्यमान शोधग्रन्थ[२] में प्रो. ज़खारिया द्वारा अनाविष्कृत उन और उद्धरणों के स्रोतों को ढूंढने का विशेष रूप से प्रयास किया गया है। ये उद्धरण ए.एम. घाटगे, वामन शिवराम आप्टे, इण्डिश्चे श्प्रूखे रोथ एवं ब्यूटलिङ्क कोश,मोनि-

---

1 वही, पृ. ४९-५४

2 वही, पृ. २०६-४४७

यर विलियम्स डिक्शनरी, लुडविक स्टर्नबाक, शब्दकल्पद्रुम, वाचस्पत्यम्, सुभाषितरत्नभाण्डागार, (प्रकाश्यमान) संस्कृत काव्य-पादानुक्रम-कोश एवं मूलग्रन्थों की सहायता से ढूंढने का प्रयत्न किया गया है।

महेन्द्रसूरि ने अपनी टीका में निघण्टु गौड, अजय, वैजयन्ती, व्याडि, शाश्वत, वाचस्पति, कात्य, शेष, अमर, दुर्ग, मङ्ख आदि को नाम्ना[१] उद्धृत किया है। इसके अतिरिक्त अमरकोश शाश्वतकोश, हलायुध की अभिधानरत्नमाला विश्वकोश, मङ्खकोश, पुरुषोत्तम की हारावली एवं हेमचन्द्र के अभिधानचिन्तामणि कोश और टीका तथा देशीनाममाला के उद्धरण अनाम्ना[२] उद्धृत हैं। आधुनिक कोशों में शब्दकल्पद्रुम[३] इसमें टीका को उद्धृत किया गया है।

कोशग्रन्थों के अतिरिक्त ऋक्ततन्त्र, अथर्वप्रतिशाख्य, ऐन्द्र व्याकरण, पाणिनि, महाभाष्य, काशिकावृत्ति, वर्धमानकृत गणरत्नमहोदधि, उज्ज्वलदत्तकृत उणादिसूत्र, कातन्त्र एवं हेमचन्द्रकृत शब्दानुशासन और लिङ्गानुशासन आदि व्याकरण-ग्रन्थों[४] से उद्धरण प्राप्त हुए है। इनमें ५०० ई. पू. से पूर्व के रामायण[५], महाभारतादि[६] काव्यग्रन्थों से लेकर कालिदास के कुमारसंभव[७] रघुवंश[८] मेघदूत[९] घटकर्परकृत-घटकर्परकाव्य,[१०] भारविकृत किरातार्जुनीय[११], भट्टिकाव्य, शिशु

1 वही, पृ. २१६-२२२
2 वही, पृ. २०६-२११
3 वही, पृ. २२२-२२३
4 वही, पृ. २२३
5 वही, पृ. २२३-२२४
6 वही, पृ. २२५-२२७
7 वही, पृ. २२८-२५०
8 वही, पृ. २५०-२७५
9 वही, पृ. २७५-२८४
10 वही, पृ. २८४
11 वही, पृ. २८४-२८९

पालवध[१], कुट्टनीमत[२], अमरुकशतक[३], हरविजय[४]प्रश्नोत्तररत्नमाला[५] नवसाहसाङ्कचरित[६], रामायणमञ्जरी[७], कालिदास[८], दर्पदलन[९], विक्रमाङ्कदेवचरित[१०], राजतरङ्गिणी[११], नैषधीयचरित[१२], कादम्बरीकथासार[१३], श्रीकण्ठचरित[१४], द्व्याश्रयकाव्य[१५] त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित[१६] आदि १२ वीं शती तक के काव्य-ग्रन्थों से उद्धरण उद्धृत किए गए हैं। महेन्द्रसूरि ने टीका में कालिदास के अभिज्ञान- शाकुन्तल[१७], विक्रमोर्वशीय[१८], मालविकाग्निमित्र[१९], श्रीहर्ष विरचित रत्नावली[२०] नाटिका एवं नागानन्द[२१] नाटक, भवभूति के उत्तर-रामचरित[२२],

---

1 वही, पृ. २८९-३३८
2 वही, पृ. ३३८, ३३९
3 वही, पृ. ३३९, ३४०
4 वही, पृ. ३४०-३४१,
5 वही, पृ. ३४१
6 वही, पृ. ३४१
7 वही, पृ. ३४१
8 वही, पृ. ३४१
9 वही, पृ. ३४२
10 वही, पृ. ३४२
11 वही, पृ. ३४२
12 वही, पृ. ३४२
13 वही, पृ. ३४३
14 वही, पृ. ३४४
15 वही, पृ. ३४४-३४५
16 वही, पृ. ३४५
17 वही, पृ. ३४५-३४७
18 वही, पृ. ३४७
19 वही, पृ. ३४७
20 वही, पृ. ३४९-३५०
21 वही, पृ. ३५०
22 वही, पृ. ३५१-३५२

मालतीमाघव[१] एवं महावीरचरित[२] नाटक, राजशेखर द्वारा प्रणीत बालरामायण[३], प्रचण्डपाण्डव अथवा बालभारत[४] एवं विद्धत्शालभञ्जिका[५] भट्टनारायणकृत वेणी-संहार[६] विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस[७] मुरारीकृत अनर्घराघव[८] नाटकों के अतिरिक्त हनुमन्नाटक[९] प्रबोधचन्द्रोदय[१०] एवं सत्य हरिश्चन्द्र[११] नामक नाटकों से भी उद्धरण लिए हैं। इसी प्रकार टीका में पञ्चतन्त्र[१२] हितोपदेश[१३] विक्रमचरित[१४] वेतालपञ्चविंशति[१५], कथार्णव[१६], भरटक-द्वात्रिंशिका[१७] आदि कथा-ग्रन्थों के अतिरिक्त सुबन्धुकृत वासवदत्ता[१८], बाणभट्टकृत कादम्बरी[१९] एवं हर्षचरित[२०] त्रिविक्रमभट्टकृत दमयन्तीकथा (नलचम्पू)[२१], बल्लालदेवकृत भोजप्रबन्ध[२२], हेम-

---

1 वही, पृ. ३५२-३५५

2 वही, पृ. ३५६

3 वही, पृ. ३६३-३६६

4 वही, पृ. ३६६

5 वही, पृ. ३६६-३६७

6 वही, पृ. ३५६-३४७

7 वही, पृ. ३५१

8 वही, पृ. ३५७-३६३

9 वही, पृ. ३४७-३४८

10 वही, पृ. ३६७

11 वही, पृ. ३६७

12 वही, पृ. ३६८-३७१

13 वही, पृ. ३७१-३७२

14 वही, पृ. ३७३

15 वही, पृ. ३७३

16 वही, पृ. ३७३-३७४

17 वही, पृ. ३७४

18 वही, पृ. ३७४-३७५

19 वही, पृ. ३७५-३७६

20 वही, पृ. ३७६

21 वही, पृ. ३७६-३८०

22 वही, पृ. ३८०-३८१

चन्द्रकृत परिशिष्टपर्वन्[१] आदि गद्यग्रन्थों से भी उद्धरण उपलब्ध हुए हैं। स्तोत्रकाव्यों में पञ्चस्तवी सूर्यशतक[२] चण्डीशतक[३], भक्तामरस्तोत्र[४] महिम्नःस्तव[५], शाम्बपञ्चाशिका[६], आनन्ददेवीशतक[७], वीतरागस्तोत्र[८], अयोग-व्यवच्छेदिका द्वात्रिंशिका[९] आदि ब्राह्मण एवं जैन दोनों स्तोत्रकाव्यों के उद्धरण उद्धृत किए गए है। नीतिग्रन्थों में चाणक्य-नीति[१०], भर्तृहरिशतक[११], पुरुषार्थोपदेश[१२], कुट्टनीमत[१३], भल्लटशतक[१४], शान्तिशतक[१५], आदि ग्रन्थों से उद्धरण उपलब्ध हुए हैं।

महेन्द्रसूरि ने मनुस्मृति[१६], याज्ञवल्क्यस्मृति[१७], मिताक्षरा[१८], आदि स्मृतिग्रन्थों से भी उद्धरण दिए हैं। टीका में भरतकृत नाट्यशास्त्र[१९], दण्डि-कृत

---

1 वही, पृ. ३८१
2 वही, पृ. ३८२
3 वही, पृ. ३८२
4 वही, पृ. ३८३
5 वही, पृ. ३८३
6 वही, पृ. ३८४
7 वही, पृ. ३८४
8 वही, पृ. ३८४
9 वही, पृ. ३८४
10 वही, पृ. ३८५-३८८
11 वही, पृ. ३८९-९२
12 वही, पृ. ३९२
13 वही, पृ. ३९२-९३
14 वही, पृ. ३९३
15 वही, पृ. ३९३-३९४
16 वही, पृ. ३९६-३९९
17 वही, पृ. ३९९
18 वही, पृ. ३९९
19 वही, पृ. ४००

काव्यादर्श[१], वामनकृत काव्यालङ्कारवृत्ति[२], आनन्दवर्धनकृत ध्वन्यालोक[३], धनञ्जयकृत दशरूपक[४], क्षेमेन्द्रकृत औचित्यालङ्कार[५], और कविकण्ठाभरण[६], भोजकृत सरस्वतीकण्ठाभरण[७], मम्मटकृत काव्यप्रकाश[८], महिमभट्टकृत व्यक्ति-विवेक[९] कुन्तककृत वक्रोक्ति जीवित[१०], आदि पूर्ववर्ती ग्रन्थों के अतिरिक्त साहित्यदर्पण, काव्यप्रदीप[११], अलंकारकौस्तुभ[१२],कुवलयानन्द[१३], और चित्र-मीमांसा[१४], आदि परवर्ती काव्यशास्त्र के उद्धरण भी उपलब्ध हुए हैं। छन्दःशास्त्र के ग्रन्थों में से सुवृत्ततिलक[१५], एवं छन्दोमञ्जरी[१६], के उद्धरण दार्शनिक ग्रन्थों में न्यायसूत्र[१७], साङ्ख्यकारिका[१८], वेदान्तसूत्रभाष्य[१९], हेमचन्द्रकृत योगशास्त्र[२०],

---

1 वही, पृ. ४००
2 वही, पृ. ४००-४०१
3 वही, पृ. ४
4 वही, पृ. ४०३
5 वही, पृ. ४०४
6 वही, पृ. ४०४
7 वही, पृ. ४०४
8 वही, पृ. ४०७-४१३
9 वही, पृ.४१३
10 वही, पृ. ४१३
11 वही, पृ. ४१४-४१५
12 वही, पृ. ४१६
13 वही, पृ. ४१६-४१७
14 वही, पृ. ४१७
15 वही, पृ. ४१७
16 वही, पृ. ४१८
17 वही, पृ. ४१८
18 वही, पृ. ४१८
19 वही, पृ. ४१९
20 वही, पृ. ४१९-४२०

एवं प्रमाणमीमांसा[१], सायणमाधवाचार्यकृत सर्वदर्शनसङ्ग्रह आदि से उद्धरण लिए गए हैं। इसी प्रकार टीका में उपलब्ध कुछ उद्धरण सुभाषितरत्नकोश[२], सदुक्तिकर्णामृत[३], सूक्तिमुक्तावली[४], शार्ङ्गधरपद्धति[५], सुभाषितसुधानिधि[६], सुभाषितावलि[७], सुभाषितरत्नाकर[८], सभ्यालङ्करण[९], सूक्तिरत्नकोश[१०], शतकावलि[११], कवितामृतकूप[१२], पद्यसङ्ग्रह[१३], सुभाषितार्णव[१४], काव्यकलाप[१५], इण्डिश्चे श्प्रूखे[१६], आदि सुभाषितग्रन्थों में भी उपलब्ध होते हैं। पुराणों में से श्रीमद्भागवत पुराण[१७], और गरुड पुराण[१८], के उद्धरण प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त षट्त्रयी[१९], बृहत्संहिता[२०], कामसूत्र[२१],

---

1 वही, पृ.४२०
2 वही, पृ.४२१
3 वही, पृ.४२१-४२२
4 वही, पृ.४२२-४२३
5 वही, पृ.४२३-४३६
6 वही, पृ.४३६
7 वही, पृ.४३६-३३७
8 वही, पृ.४३७
9 वही, पृ.४३७
10 वही, पृ.४३७
11 वही, पृ.४३७-४३८
12 वही, पृ.४३८
13 वही, पृ.४३९
14 वही, पृ.४३९
15 वही, पृ.४४४-४४५
16 वही, पृ.४४५
17 वही, पृ.४४६
18 वही, पृ.४४६
19 वही, पृ.४४६
20 वही, पृ.४४६
21 वही, पृ.४४६

देवश्वर[1], अह्निकतत्त्व[2], ब्राह्मधर्म[3] के विविध उद्धरण उपलब्ध हुए हैं।

उपर्युक्त उद्धरणग्रन्थों में ज़खारिया द्वारा सर्वथा अगवेशित परन्तु अन्य स्रोत-ग्रन्थों की सहायता से गवेषित सर्वथा नवीन उद्धरण रामायणमञ्जरी, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, सत्यहरिश्चन्द्र, आनन्ददेवीशतक, अयोगव्यवच्छेदिका द्वात्रिंशिका चाणक्यराजनीतिशास्त्र, काव्यप्रदीप, चित्रमीमांसा, प्रमाणमीमांसा, सुभाषितरत्नाकर, सभ्यालङ्करण आदि के है। इन उद्धरणों के लगभग १५० से भी अधिक भिन्न-भिन्न ग्रन्थों से सङ्गृहीत होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि महेन्द्रसूरि ने अकेले ही इन उद्धरणों को सङ्कलित नहीं किया अपितु कई लोगों ने मिलकर सामूहिक रूप से इनका सङ्ग्रह किया है अथवा हेमचन्द्र एवं उसके शिष्य-प्रशिष्यों ने राजाश्रय की सहायता से उद्धरणों के भण्डार को सङ्कलित किया होगा। इसके अतिरिक्त इन उद्धरणों के सङ्कलन में जैन और ब्राह्मण परम्परा में किसी प्रकार का भेदभाव प्रतीत नहीं होता[4]।

काव्य

दार्शनिक दो द्वात्रिंशिकाओं के अतिरिक्त हेमचन्द्र ने निम्नलिखित काव्य लिखे —

---

1 वही, पृ. ४४६

2 वही, पृ. ४४७

3 वही, पृ. ४४७

4 इस कोश के अन्य पक्ष इस प्रकार से उद्घाटित हुए हैं —१. अनेकार्थकैरवकौमुदी के काव्यात्मक स्रोत - सुधा शर्मा संस्कृत सङ्गीत जगदीश्वरी, Prof. Jagdish Sahai Kulshreshtha Felicitation Volume, Delhi, 1995, p. 72-84 2. Mahābhārata Allusions In Mahendrasūri's Anekārthakairavakaumudi : A Jain Tradition — Dr. Sudha Sharma. Modern Evaluation of the Mahābhārata, Delhi १९९५, p.१६०-१८१ ३. महेन्द्रसूरि द्वारा गृहीत कुमारसम्भव के कुछ पाठ-विवेचन - डा. सुधा शर्मा; Prof. S.N. Rath Felicitaion Volume, Delhi, १९९७, p.१३८-१५३

उपदेशमाला अथवा पुष्पमाला और उसकी वृत्ति इस वृति का नाम पुष्प- मालाप्रकाशन भी है।[१]

द्वयाश्रयकाव्य अथवा कुमारपालचरित

यह काव्य हेमचन्द्र ने अपनी व्याकरण को उदाहृत करने के लिए लिखा जो पूर्ववर्ती भट्टि एवं रावणार्जुनीय से अधिक प्रौढ है। इसके बीस सर्ग संस्कृत में तथा आठ प्राकृत में लिखे हुए हैं। ब्यूहलर ने द्वयाश्रयवृति का भी उल्लेख किया है जो सम्भवतः अभयतिलकगणि की व्याख्या ही हो। कुमारपाल चरित पर पूर्णकलशगणि ने व्याख्या लिखी है। पूर्वज, जयसिंह एवं कुमारपाल का जीवनचरित वर्णित होने के कारण द्वयाश्रय के दो उद्देश्यों - व्याकरण एवं इतिहास की पूर्ति करता है।

द्वयाश्रयकोश[२] — हेमचन्द्रकृत तथा हेमचन्द्रकृत वृत्ति

पद्मचरित

हेमचन्द्रकृत माना जाने वाला ग्रन्थ हस्तलेखों में उपलब्ध होता है। इस का कर्तृत्व सन्दिग्ध है।[३]

महादेवस्तोत्र

इसमें महावीर के ४४ स्तुत्यात्मक पद्य हैं।[४]

---

1 Narang Hemacandra's Dvyāśryakāvya : A literary and culture Study, Delhi, 1972 तथा द्वयाश्रयकाव्य (पुनर्मुद्रित) की भूमिका — Manfare (Kutch), १९८३ इस ग्रन्थ में हेमचन्द्र की जीवनी, कृतियां, द्वयाश्रयकाव्य - काव्य के रूप में; इतिहास के रूप में; व्याकरणविश्लेषण तथा सांस्कृतिक सामग्री का विस्तृत विश्लेषण है। द्र. Pandya, Vijay - द्वयाश्रयमहाकाव्य : एक साहित्यकमूल्यांकन है. वाङ्वि. पृ.३४९-३५९; Chandra Prabha : Historical Mahākāvyas in Sanskrit, Delhi, 1976 पृ. 179 से Lienhard, S. A History of classical poetry, wiesbaden, १९८४ पृ.२२६-२२७ त्रिपाठी राधावल्लभ सम्पा. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, IV. लखनऊ, पृ.२७१-

2 NCC. IX. पृ. २१६

3 Narang S.P. Dvyārśaya etc. पृ. 12

4 सम्पा. चरणविजय, भावनगर, १९३४

वीतरागस्तोत्र

इसमें १८८ गीतिकाव्यात्मक पद्य है।[1]

युगादिदेवचरित[2]

काव्यानुशासन तथा उस पर अलंकृतचूड़ामणि

यह संस्कृत काव्यशास्त्र के अनेक पक्षों पर विद्वत्तापूर्ण सर्वाङ्गीण नवनीत है। नाट्यशास्त्रीय सामग्री जो अनेक ग्रन्थों में नहीं थी, इस में अन्तर्भूत है। प्रायः पूर्ण कश्मीर परम्परा इसमें सारगर्भित रूप से संकलित है। प्राकृतभाषाओं से गृहीत उद्धरण इसे शास्त्रीय एवं लोक-परम्परा से अधिक जोड़ते हैं।[3]

---

1 सम्पा. चरणविजय, भावनगर, १९३४

2 Narang, S.P. Dvyāśraya etc. पृ. 13

3 सम्पा. KM. 1901; द्वितीय संस्करण, बम्बई, १९३४; सम्पा. Parikh, R.C. तथा Athovele, A.B. Bombay, 1938; अलङ्कारचूड़ामणि, विवेक तथा दो अज्ञात टिप्पणों सहित Parikh, R.C. तथा Kulkarni, V.M. Bombay] १९६४
अध्ययन :- काणे तथा डे (Poetics); Bhattacharya, S.P. Studies in Indian Poetics, Calcutta, 1981; मुसलगांवकार उपर्युक्त; Kukarni, V.M. Studies in Sanskrit Sāhrityaśāstra; Narang, S.P. Dvyāśraya etc, 1972 Pandey, K.C. Comparative Aesthetics (Vol. I.) Benaras, 1950; Warder A.K. Indian Kāvya Literature I; Bhattacharya, S.P. Hemacandra and the eleventh century Kashmir Poeticists. JASB. XXIII. No.1. 1957 पृ. 117-129; Betai, R.S. Treatment of Alaṅkāras in the Kāvyānuśāsana of Hemacandra JGRSJournal of Gujarat Research Society) Vol. XXII. No.4 1960 Bombay; Upadhyay, A.M. The Kāvyānuśāsana of Acharya Hemacandra - A critical study, Ahemdabad, 1987; है.वाङ्.वि.Nandi, Tapasvi पृ. 51-64 (Guṇa); Kulkarni, V.M. पृ.६५-७३ (Assessment); Tripathi, Radhavallabh पृ. 75-84 (HC. & Nātyaśāstra); Joshi, Aniruddha पृ. 85-91 (HC. & Mammaṭa); Upadhyay, Amrit पृ. 93-96 (Aesthetics) Sarma, Meera पृ. १३१-१४३ (Aesthetics);

गाथा तथा चरित

गाथाशतकप्रकरणटीका[१]

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित[२]

इसमें जैन धर्म के ६३ शलाकापुरुषों का पौराणिक शैली में निबन्धन है। इसमें महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक सामग्री उपलब्ध होती है।

स्थविरावलिचरित अथवा परिशिष्टपर्वन्

यह त्रिषष्टिशताकापुरुषचरित का परिशिष्ट है। जैकोबी के अनुसार यह मूलतः प्राकृत में लिखा गया संस्कृतीकरण हेमचन्द्र ने इस का सांस्कृतीकरण किया।[३]

दर्शन

अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका[४]

पृ. 248-261 (HC. & Nāṭyadarpaṇa) Shukla, Chitra पृ.२ 278-283 (Kāvyaprabheda); Shastri, A.C. (Gauṇā & Lakṣaṇa) - पृ. 284-291; Patel, Gautam (Pratibhā) - पृ. 292-300; Patel, Vasant, C. (Nāyaka-guṇa) - पृ. 272-277 - तथा Shukla, Ramesh (Adhyāpaka - dharmī) .301-313

1 Narang, S.P. Dvyāśraya etc. पृ.१३ हस्तलेख.NCC. XI. पृ.२३२ winternitz. M. HIL. II. पृ.५०७ से तथा ५१९ से Calcutta, १८९१, अंशों के जर्मन अनुवाद Hertex, J. Ausgewallte Erzuchlungen aus Hemchandrasisista Parvan. Leipzig, 1908.

2 सम्पा.६ भागों में भावनगर,१९०५-१९११; अंग्रेजी अनुवाद Johnson H.M. I Baroda, 1931. II-1937. III. 1949. IV 1954

3 सम्पा.Jacobi, H. Calcutta, 1883

4 द्र.Narang S.P. Dvyāśrayakāvya etc. पृ.१० - इस के ईश्वरवादखण्डन के सन्दर्भ में विश्लेषण — शास्त्री,वाई. एस.है.वाङ्.वि.पृ.१९९-२००; स्याद्वादमंजरी सम्पादन Potter. 2nd Rev. 1983. (Bibliography) पृ.२५० विश्लेषण — Dhruva, A.B. Calcutta, Jain Journal. Calcutta 1968. पृ.२५१-२६१

इसमें वर्धमान के स्तुतिरूप ३२ पद्य हैं जो अधिकतर दार्शनिक एवं गीतिपरक हैं। स्याद्वादमञ्जरी नामक व्याख्या जो जैनदर्शनस्वरूपा है, मल्लिषेण ने लिखी है।

अयोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका

अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिक के समान यह भी दार्शनिक एवं गीतिपरक है तथा इसमें भी ३२ पद्य हैं।[१]

प्रमाणमीमांसा तथा उसकी व्याख्या[२]

यह जैन तर्कशास्त्र पर प्रामाणिक ग्रन्थ है सतकड़ी मुकर्जी तथा नथमल टाटिया (भूमिका) के अनुसार सभी हस्तलेखों में एक विशेष स्थान पर समाप्त हो जाता है जिससे सूचित होता है कि इस के लेखन के साथ हेमचन्द्र दिवङ्गत हो गए तथा यह उन की अन्तिम कृति है।

प्रयोगशास्त्र तथा स्वोपज्ञविवरण[३]

---

1 द्र. Narang — वही, पृ.११

2 सन्दर्भ : Narang, S.P. Dvyāśraye etc. पृ.११; इस के अतिरिक्त Varanasi, 1970 (प्रकाशित); अनुवाद पुनर्मुद्रित Varanasi, 1970; Mookarjee, Satkari : The Buddhist Philosophy of Universal flux. (Reprinted). Delhi, 1975; अन्य सम्पादन Potter EIP. 2nd rev. Edn. 1983 I. Bibliography पृ.२५१ से सम्पादनः हिन्दी अनुवाद सहित - शुभचन्द्र भरिल्ल Sanghvi, अहमदनगर १९७० - Sanghvi, Sukhalalji Advances Studies in Indian logic and Metaphysics. Indian Studies : Past and present II. (२-३) १९६०-६१ पृ. १८९-२०१, ३८७-४९४ (पुनर्मुद्रित) कलकत्ता, १९६१; Hojun nagasaki — A study of the Pramāṇamīmāṁsā - an incomplete work on Jain logic Journal of Indian and Buddhist studies, 28. 1966 पृ.८६१-८६८; सुथार, गणेशीलाल - जैनन्याये आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरीणामवदानम्- है. वाङ्. वि. पृ. १६१-१६८
NCC. I. 154. II. 256 सम्पा. जर्मनभाषानुवादसहित I-IV windish E. ZDmG, 1874, पृ.१८५-२६२ ६७८.६७९. अनेक व्याख्याआ के आधार पर हीरालाल वी. हंसराज बम्बई १८९९.

3 सम्पा. विजयधर्म सूरि के विवरण सहित बिबियोटका इण्डिका, १७२, कलकत्ता

इस पर **इन्द्रसौभाग्यगणि** ने एक वार्तिक भी लिखी। इसके अन्य नाम अध्यात्मोपनिषद् अथवा अध्यात्मविद्योपनिषद् भी हैं।

जीवसमास और उसकी वृत्ति

यह सं. ११६४ में लिखी गई और हेमचन्द्र द्वारा लिखित प्रति उपलब्ध है।[१]

व्याख्याएं

अनुयोगद्वारा सूत्रटीका अथवा वृति

अनुयोगसूत्रों पर लिखी हुई यह व्याख्या है।

आवश्यकवृत्तिटीका अथवा आवश्यक वृति

हरिभद्र द्वारा लिखित ग्रन्थ पर हेमचन्द्र द्वारा लिखित टीका[२]

अन्य कृतियाँ

हस्तलेखों में कुछ अन्य कृतियों का कर्तृत्व हेमचन्द्र से जोड़ा जाता हैं जिन के विषय में विवाद अथवा सन्देह है। वे निम्नलिखित हैं —

विशेषावश्यकवृति

न्यायसूत्र

प्रायश्चितमुक्तावली

बलाबलसूत्र बृहद्वृति

का इताली अनुवाद.F. Belloni - Filippi. GSAIF. [Giornal della Societa Asiatica Italiana (Firenze) भाग,२,१९०८.पृ.१२३-३२२; भाग-२३ १९१०.पृ.१७१-२०८;भाग-२६.१९१४.पृ.९७-१३२ गुजराती अनुवाद सहित प्रकाशित केशवविजयगणि (द्वितीय संस्करण) बम्बई अहमदाबाद, १९१०; सम्पा. धर्मदास की उपदेशमाला सहित Bhavnagar, 1915; सम्पा. चुन्नीलाल हकमचन्द मानसागर मुनि के गुजराती अनुवाद सहित, अहमदाबाद/ सूरत, १९१७ सम्पा. एवं हिन्दी में अनूदित. मुनि समदर्शी प्रभाकर, दिल्ली, १९६३; विश्लेषण - Tatia, Nathmal. The yogasutra of Hemacandra Jain Journal. 2, 1968. पृ. 230-233 Patter, EIP. I.

1 Narang, S.P. Dvyāśraya etc. पृ.११

2 Narang, S.P. Dyāśraya etc. पृ.१३

भवभावनाप्रकरण — टब्बा व्याख्या सहित

विभ्रम सूत्र

शतकवृत्ति अथवा बृहच्छतकवृति

श्रीपालचरित

संग्रहिणी सूत्र

हेमचन्द्रविवेक[१]

आत्मगर्हास्तवन[२]

परमार्थबोध[३]

उत्तरद्वात्रिंशिका — हेमचन्द्रकृत व्याख्या मल्लिषेणकृत[४]

परिभाषा — हेमचन्द्र के अनुसार

इसका हेमहंसगणि ने पूरक बनाया।[५]

---

1 Narang, S.P. Dvyāśraya etc. NCC. II. पृ.४५

2 प्रका.रत्नाकरपच्चीसी Ahmedabad, 1909

3 NCC. XI. पृ.१८५

4 NCC. I. p.179 a NCC. II. p.305

5 मीमांसक, युधिष्ठिर. व्याकरण शास्त्र का इतिहास. II. पृ. २६७।७० तथा परिभाषासङ्ग्रह की भूमिका.पृ.२६-२७ NCC. XI. पृ.२१९

(३) पुरुषोत्तम

अभिज्ञा

कुछ विद्वानों के अनुसार सम्भवतः वैयाकरण पुरुषोत्तमदेव बङ्गवासी था तथा कोशकार कलिङ्गदेशवासी।

के. एन. महापात्र के अनुसार निश्चित रूप से वह उड़ीसा के गजपति राजा पुरुषोत्तमदेव जो १४६६-१४९७ ई. हुए, नहीं हैं।[१]

कोशशास्त्र के लेखक पुरुषोत्तमदेव भाषावृत्ति के लेखक ही होने चाहिए क्योंकि दोनों का एक ही उद्देश्य हैं व्याकरण के उदाहरण ढूंढना तथा हारावली में विविध स्रोतों से शब्दों का संकलन करना। दोनों ही बौद्ध है।

पुरुषोत्तमदेव का काल

पुरुषोत्तमदेव के जीवन काल के विषय में कुछ भी सुनिश्चित नहीं है। चक्रवर्ती के अनुसार वह बङ्गाली थे और राजा लक्ष्मणसेन की प्रार्थना पर उन्होंने व्याकरण के ग्रन्थ भाषावृत्ति की रचना की।[२]

सर्वानन्द

सर्वानन्द (११५९ ई.) ने अमरटीका में लक्ष्मणसेन के राज्याधिरोहण से दस वर्ष पूर्व उनकी भाषावृत्ति और तीनों कोशों का उल्लेख किया है।

सर्वानन्द के अमरकोष पर व्याख्या (११५९ ई.) में उद्धृत होने के कारण वह १०५० ई. के बाद के रहे होंगे।[३] शरणदेव ने दुर्घट में पुरुषोत्तमदेव और उनकी भाषावृत्ति को उद्धृत किया है।

काल नौवीं शताब्दी ई.

के. एन. महापात्र के अनुसार पुरुषोत्तम राजशेखर से पूर्व नौवीं शताब्दी ई. में हुए न कि लक्ष्मणसेन के राज्य में।[४]

---

1 Mahapatra, K.N. Puruṣottama, the Lexicographer - The Orissa Historical Research Journal II. 1953 & Jan 1954 पृ. 64-80

2 सम्पा. चक्रवर्ती, एस.सी. भाषावृत्ति, राजशाही, १९१८ भूमिका

3 Patkar, M.M. History of Sanskrit Lexicography पृ. 67

4 Mahapatra, K.N. Purṣottamadeva, the Lexicographer.

पुरुषोत्तम — बङ्गवासी

आन्तरिक साक्ष्य के आधार पर भट्टाचार्य ने इससे बङ्गदेशवासी बताया है।[१]

भाषावृत्ति के टीकाकार सुष्टिधराचार्य (१५-१७ वीं शताब्दी ई.) के अनुसार उन्होंने भाषावृत्ति की रचना लक्ष्मणसेन के काल में की।

विण्टरनित्स, बलदेव उपाध्याय, एस.के.डे., पाटकर तथा फोगल ने इसे बङ्गवासी स्वीकार किया है।

पुरुषोत्तम - उड़ीसा के

के. एन. महापात्र ने कोशकार पुरुषोत्तमदेव की कृतियों के पद्य उद्धृत किए हैं जिन से उड़ीसा के भौगोलिक यथा ऋषिकुल्या, महेन्द्र, कलिंग, उत्कल, ओड्र, वत्तनी, एकचक्र तथा एकाम्रकम् इत्यादि शब्द दिए हैं जो उड़ीसा के हैं जबकि बङ्ग देश के शब्द लुप्त हैं।

उड़िया के कुछ शब्द कुछ ध्वनिभेद से पुरुषोत्तमदेव की कृतियों में ढूंढे जा सकते हैं जो कि बंगाली में नहीं हैं। अतः आन्तरिक साक्ष्य पर उन्हें उड़ीसा का माना जाना चाहिए।[२]

यह तर्क अन्वेष्टव्य है क्योंकि पुरुषोत्तमदेव अवशिष्ट शब्दों का प्रयोग ढूंढ रहे थे त्रिकाण्डशेष में तथा हारावली में उन का गहन अनुसन्धान कर रहे थे। अनेक देशों के शब्द इन में अन्तर्भूत हैं जिन के आधार पर उन्हें तत्तत्प्रदेश का कहा जा सकता है। यह तथ्य अभी भी अनुसन्धान की अपेक्षा रखता है जिस में सिद्धान्त क्रियान्वित होते हों।

पुरुषोत्तमदेव बौद्ध

चक्रवर्ती तथा भट्टाचार्य मानते हैं कि अपनी कृतियों से बुद्ध के अभिवादन करने के कारण वह बौद्ध रहे होंगे[३] कोशकार पुरुषोत्तम ने जगन्नाथ को बुद्ध

Sept. 1953 and Jan १९५४ No.३४ पृ.64-80

1 सम्पा. परिभाषावृत्ति, राजशाही १९४६ भूमिका

2 Mahapatra, K.N. Puruṣottam, the Lexicographer. उपर्युक्त

3 भाषावृत्ति तथा परिभाषावृति की भूमिकाएं - भाषावृति नमो बुद्धाय; मुनिं प्रणम्य सर्वज्ञं

के साथ न देकर विष्णु के साथ दिया है।[१]

भाषावृत्ति में जिन, बौद्ध दर्शन, महाबोधि के प्रति सम्मान तथा त्रिकाण्डशेष में राहुल देवदत्त एवं मायादेवी का नाम उसके बौद्ध मत के ज्ञान को प्रकट करता है।

त्रिकाण्डशेष तथा वज्रयान

त्रिकाण्डशेष में वज्रयान के देवशास्त्र के अनेक नाम हैं यथा वज्रधर, महासुख, वज्री तथा सामन्तभद्र। यह सन्देहास्पद है कि शङ्कर से पहले कलिंग में जगन्नाथ की पूजा बौद्ध देव के रूप में होती थी।

कय्यट - (१०५० ई.) पुरुषोत्तम द्वारा उद्धृत[२]

इसे रामदास ने कातन्त्र की व्याख्या पर उद्धृत किया है।[३]

कृतियां[४]

इन की प्रमुख कृतियां निम्नलिखित हैं —

व्याकरण
भाषावृत्ति[५]
दुर्घटवृत्ति

इसका कर्तृत्व सन्दिध है।

कारककारिका

सर्वज्ञानप्रकाशकम् = त्रिकाण्डशेष नमो मुनीन्द्राय। अन्य कृतियों में यह अभिवादन नहीं मिलता।

1 Dasa, S.C. Proc. Nat sem. Dict. Pune. पृ. 132

2 Cardona, G. Pāṇini : A survey of Research, 1982. पृ. 283

3 NCC. XII. पृ. 147

4 उल्लिखित हैं - द्र. मीमांसक, युधिष्ठिर संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास . I पृ. ३७१-७४; II. पृ.१८३,२५०५१ NCC. XII. पृ.१४६ से। इसके जन्मस्थान के लिए Mohapatra, K.N. Orissa Historical Research Journal. II. 1953-54 : iii-iv. पृ. 64-80 Agrawal, Manisha, 1995 pp. 5-16

5 सम्पा. Chakravarti, S.C. Calcutta, 1915 (भूमिका) सम्पा. स्वामी द्वारिकाप्रसाद शास्त्री, वाराणसी, १९७१ (भूमिका)

महाभाष्यलघुवृत्ति

परिभाषावृत्ति

यह ललितवृत्ति नाम से भी ज्ञात है।

ज्ञापकसमुच्चय

उणादिसूत्रटीका

ध्वनिमञ्जरी[१]

विवरणटीका

पकारभेद[२]

तालव्यशकारभेद

गणवृत्ति

दशबलकारिका

विष्णुभक्तिकल्पलता[३] (काव्य)

प्राकृतानुशासन[४]

कोश

पुरुषोत्तमदेव एकाक्षरकोश[५]

---

1 सम्पा. कलकता, १९०३; कटकसङ्ग्रह में, १९१०

2 इस प्रकार के कोशों के लिए द्र. विविधशास्त्र (व्याकरण ध्वनि) कोश

3 इस का कर्तृत्व सन्दिग्ध है।

4 Nitti Doloci, L. Ed. *Prākṛtanuśāsana de Puruṣottamadeva* Paris, 1938

5 NCC. III, पृ.५६ (हस्तलेख)
सम्पादित संस्करण (1) Tantric texts. Arthur Avalon, Calcutta, Vol. 1.1913. (2) Twelve Kośas, Benaras, 1865. (3) Kośaratnākara, Dacca. Pt.1 pp.18-21. (4) Abidhānasaṅgraha, IV. N.S Press. Bombay, 1889.

यह कोश पुरुषोत्तम देव कृत है। यह कोश अन्य लेखकों से सम्बद्ध कोशों से अत्यन्त मिलता जुलता है।

इस कोश[१] का साम्य वररुचि कोश से है।[२] इसे आगम, अभिधान तथा धातुओं और शब्दानुशासन से संगृहीत किया गया है।[३]

एकाक्षरकोश तथा क्षपणक

इस कोष का समापन महाक्षपणक के एकाक्षरकोष के समान है। अर्थ की दृष्टि से इस कोष का महाक्षपणक के कोष से कोई सम्बन्ध नहीं।[४]

इस का आरम्भ किसी देवता या देवी की स्तुति से नहीं होता इस का समापन महाक्षपणक के एकाक्षरकोष के समान किया गया है। परन्तु इन दोनों का कोई भी आपस में सम्बन्ध नहीं है।[५]

एकाक्षरकोष तथा पण्डित मनोहर

अर्थ वैज्ञानिक दृष्टि से इस कोश का सम्बन्ध महाक्षपणक, वररुचि तथा अमरचन्द्र से है।[६]

द्व्यर्थकोश[७] — पुरुषोत्तमदेव द्र. दिरूपकोश

लाटकोश[८] के द्वारा प्रणीत **लाटकोश** हैं जिसे टीका सर्वस्व में उद्धृत किया गया है।

वर्णदेशना

---

1 सम्पा. अभिधानसङ्ग्रह (पुनर्मुद्रित), दिल्ली, १९८१ संख्या ४ पृ. १-३; एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह (१९६४); विश्लेषण - Sharma, Mithlesh, (1988) पृ.१२-१६ व्याडि (पृ.३) मनोहरपण्डित के कोश से उसका साम्य है पृ.३६

2 Sharma, Mithlesh (१९८८) पृ.१५. इस का सम्बन्ध महाक्षपणक के कोष से नहीं है। भास्करपण्डित का कोष अनुपलब्ध है।

3 आगमेभ्योऽभिधानेभ्यो धातुभ्यः शब्दानुशासनात्। एवमेकाक्षरं नामाभिधानं क्रिया मया॥

4 Sharma Mithlesh (1988) पृ. १५

5 Sharma Mithlesh (1988) पृ.१३-१६

6 Sharma, Mithlesh (1988) पृ.३६

7 NCC. IX. पृ.२१५

8 NCC. XII. पृ.१४५

यह शब्दों की शुद्धि एवं अन्तः परिवर्तन पर आधारित है। इनमें से बहुत शब्द द्विरूपकोश में उपलब्ध होते हैं जो वर्णदेशना में संगृहीत हैं।

इस कृष्णपति ने मेघदूत पर उद्धृत किया है।[१] रायमुकुट, उज्ज्वलदत्त, भरतसेन तथा धातुरत्नाकर ने भी इसे उद्धृत किया है।

इसके आरंभ में ही इस ग्रन्थ का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है कि शब्दों के रूपों में जो भ्रान्ति हो सकती है उसके निराकरण के लिये इस ग्रंथ का निर्माण किया गया।

त्रिकाण्डशेष कोष

त्रिकोण्डशेष कोष अमरकोष का पूरक है। पुरुषोत्तमदेव ने स्वयं स्वीकार किया है —

अलौकिकत्वादमरः स्वकोशे न यानि नामानि समुल्लिलेख।
विलोक्य तैरप्यधुना प्रचारमयप्रयत्नः पुरुषोत्तमस्य ॥[२]

त्रिकाणडकोश के अंतिम श्लोक में बताया गया है कि वे शब्द जो कि शिशुपालवधादि महाकवियों की कृतियों, बौद्ध धर्म ग्रन्थों एवं पुराणों, उत्पलिनी आदिकोष ग्रन्थों में भी प्राप्त होते हैं किन्तु जिनका प्रयोग अप्रचलित हो गया है वे शब्द भी त्रिकाण्ड शेष में संगृहीत किये गये हैं।[३]

त्रिकाण्डशेष कोष में तीन खंड हैं। ये तीनों कांड पुनः २५ अध्यायों में विभक्त हैं तथा सम्पूर्ण कोष १०३८ नानावृत्तों में निबद्ध है। इन कांडों तथा अध्यायों में विषय का विभाजन अमरकोष के आधार पर ही है। प्रथम कांड में १७२ श्लोक हैं। सर्वाधिक स्वर्गवर्ग (७९) में हैं। द्वितीय कांड में ३१० श्लोक हैं। तृतीय कांड में ५५६ श्लोक हैं।

---

1 Narang, S.P. Meghadūta Studies. पृ. ३

2 हस्तलेखों के लिए द्र.NCC. VIII. पृ.२३२ सम्पा. अभिधानसंग्रह N.S. Press. Bombay, 1889 सम्पा. B. Rāma Calcutta, 1807-8; संस्कृतकोश बम्बई, शक १९२९ (१८७२-७३ ई); तर्कपञ्चानन - कोशरत्नाकर - I. Dacca, 1870; Banglore, 1883; अभिधानसङ्ग्रह (पुनर्मुद्रित, दिल्ली, १९८१); सारार्थचन्द्रिका व्याख्यासहित - Ed. शीलखन्द महाथेर. बम्बई, १९११.

3 पुरुषोत्तम देव - त्रिकाण्डशेष, ३.२५ की श्रीशीलस्कंध की व्याख्या. पृष्ठ २८५

विभाजन

कुछ प्रसङ्गों को छोड़ कर त्रिकाण्डशेष का विभाजन अमर के समान है। यह काण्डों में विभाजित है और काण्ड वर्गों में।

नानार्थवर्ग

इस वर्ग (तृतीय वर्ग) में सब से अधिक शब्द जोड़े गए हैं तथा उनका संयोजन कान्त, खान्तादि के आधार पर किया गया है। विभिन्न लिङ्गों वाले शब्दों के अर्थ भी साथ २ दिए गए हैं।

तकनीक[१]

त्रिकाण्ड शेष - बुद्धवाची शब्द

अमरकोष के १७ बुद्धवाची शब्दों में पुरुषोत्तमदेव ने ३७ पर्याय जोड़े हैं। इसी प्रकार बौद्ध संस्कृति एवं वास्तुकला के लगभग २२ शब्द हैं जो अमर में नहीं हैं। यह सिद्धान्त हिन्दू-देव-शास्त्र पर भी घटता है।

प्राकृत शब्द

इसमें बौद्ध शब्दों के अतिरिक्त अनेक प्राकृतशब्द भी हैं।[२]

उद्धृत[३]

इसे मेदिनीकार, रघुनन्दन, उज्ज्वलदत्त मल्लिनाथ इत्यादि ने; अमरकोष पर रायमुकुट ने पदचन्द्रिका में तथा शब्दार्णव में उद्धृत किया है।

त्रिकाण्डशेष — व्याख्याएं

For the students Banglore, १८८३

सारार्थचन्द्रिका (व्याख्या) सम्पा. C.A. शीलखन्द महाथेर, बम्बई, १९११

द्र. Zachariae, T. GGA. 1929 पृ.४६०

---

1 द्रष्टव्य Dash, S.C. Proc. Nat. Sem. Dict. Pune. पृ.१३३-१३६

2 Zachariae : **GGA.** 1888. पृ. 853 Vogel. पृ. 332 Wilson, H.H. Collected Works II. London, १८६२ पृ.२७ सम्पा. अभिधान सङ्ग्रह (पुनर्मुद्रित) दिल्ली, १९८१. संख्या - २.पृ.१-३८

3 NCC. VIII. पृ. 232

द्विरूपकोश अथवा द्विरूपाख्यकोश

एक हस्तलेख में यह पाणिनिकृत भी माना गया है।[१] इनका तुलनात्मक विवरण ऋग्वेद, माध्यन्दिनी संहिता, अन्यसंहिताएं, ब्राह्मण, उपनिषद, अथर्ववेद तथा सूत्र ग्रन्थों से भी गृहीत है[२]

त्रिकाण्ड तथा हारावली इत्यादि का संकलन करते हुए भिन्न वर्तनी, वर्ण, तथा मात्रा वाले शब्दों का उन्होंने संग्रह किया जिसे स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में एकत्रित किया। कारणों का सङ्कलन मनीषा (१९९५) अग्रवाल ने किया है।

लगभग २५० द्विरूपशब्दों में से लगभग १०० शब्द वेद में उपलब्ध होते हैं। इसमें सब से अधिक द्विरूप स, श एवं ष के हैं। हलन्त शब्द भी अजन्तों में परिवर्तित हो गए।

हारावली

यह सामग्री आदि में त्रिकाण्डशेष के समान है परन्तु संकलित सामग्री विन्यास में उससे भिन्न।

यह २७० पद्यों का लघुकोष ग्रथ हैं। यह दो भागों में विभक्त है। समानार्थ तथा नानार्थ। समानार्थ भाग के तीन अंश हैं - पहले अंश में पूरे श्लोक में समानार्थ हैं - दूसरे अंश में अर्ध श्लोक में - तीसरे अंश में चौथाई श्लोक में समानार्थ हैं। नानार्थ भाग में भी यही पद्धति अपनाई गई है।[३] कई अत्यंत प्रसिद्ध तथा कठिन शब्दों को छोड़ दिया गया है।[४]

इसका निबन्धन ५ वर्गों में है जिनमें तीन पर्यायवाची तथा दो अनेकार्थ हैं। श्लोकावधि तथा अर्धश्लोकावधि में छन्दः परिमाण में प्रणीत यह कोश छन्द की अपेक्षा शब्दों के ग्रथन तथा सन्निविष्टि पर अधिक बल देता है।

---

1 हस्तलेखों के लिए द्र.NCC. IX. पृ.२०९; प्रकाशित द्वादशकोशसङ्ग्रह, बनारस, १९६५.

2 सम्पा.अभिधानसङ्ग्रह (पुर्नमुद्रित) दिल्ली, १९८१, संख्या ३ पृ.१-४ विस्तृत अध्ययन तथा वैदिक साहित्य से तुलना Agrawal Manisha 1995.

3 उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, पृ.३५०

4 Barooah, Anundoram - Nānārtha Saṁgraha, preface, p.25

२८० पद्यों में प्रणीत हारावली में अप्रयुक्त शब्दों का निबन्धन है। ये शब्द शब्दार्णव, उत्पलिनी, संसारावर्त जो क्रमशः वाचस्पति, व्याडि एवं विक्रमादित्य द्वारा प्रणीत हैं, से लिए गए हैं।[१] इस के प्रणयन के लिए उसे बारह वर्ष लगे।[२] धृतिसिंह के अतिथि बन कर उन्होंने जनमेजय एवं धृतिसिंह की सहायता से इसका निर्माण किया।[३]

हारावली में शब्द

देवताओं के लिए कुछ शब्द जो अमरकोश में मिलते हैं नए अर्थों में प्रस्तुत किए गए हैं। कुछ शब्द यथा शिव के लिए भगाली, विष्णु के लिए गदाग्रज, शतधामा तथा पृष्णिगर्भ; सूर्य के लिए हेलि; हाथी के लिए शूर्पश्रुति, द्विपापी, पेचकिन्, पद्मिन् तथा पीलु (द्र. फारसी फील = हाथी) तथा सांप के लिए कुम्भीनस द्विरसना (द्विजिह्व के सादृश्य में), समकोल, गोकर्ण तथा लता रसना[४] ये शब्द शारीरिक रूप से प्रतीति के आधार पर लोक में प्रचलित हुए होंगे तथा कोशों में गृहीत कर लिए गए।

उद्धृत

इसे वर्णरत्नाकर[५], सिद्धिचन्द्रगणि[६] में उद्धृत किया गया है।

---

1 हारावली, २७५ (Ed. अभिधानसङ्ग्रह Delhi. 1981 पृ.१-२२)
शब्दार्णव उत्पलिनी संसारावर्त इत्यपि कोशा वाचस्पतिव्याडिविक्रमादित्यनिर्मिताः

2 वही. २७६. हारावली निबद्धेयं मया द्वादशवत्सरैः

3 वही. २७७ तथा २७९ सुधियाजनमेजयेन यत्नाद्धृतिसिंहेन समं निरुपितेयम्
विदितो बहुदृश्वभिः कवीन्द्रैर्भुवि कोशानुमतः श्रमो मदीयः

4 अन्य प्रकार के शब्दों के लिए द्र. Banerjee, Manabendra Proc. Nat. Semi. Pune, पृ.४४-४६ इनमें मेघ, शिलीन्ध्र। इनमें कुछ शब्द अर्थों में अमर से भिन्न हैं तथा कुछ स्थानीय अर्थों को अभिव्यक्त करते हैं। कुछ शब्द अन्य शास्त्रों में प्रचलित तकनीकी हैं यथा व्यस्तार, कटङ्कटा, करभङ्ग

5 Chaterjee, S.K. (1928); Gode, P.K. Studies in Indian Literary History. Vol. I. संख्या ४२ हस्तलेख के पृ. ३४, ४०, ४६, ४९, ५२, ५३, ५५ तथा ५६ पर

6 Gode, P.K. उपर्युक्त, पृ. २७१

हारावली - अभिवर्धन- बृहद्धारावली

इसे रायमुकुट तथा भानुजिदीक्षित ने उद्धृत किया है।[१] इसके पाठ के विषय में अधिक ज्ञात नहीं है।

हारावली - व्याख्या

मथुरानाथ शुक्ल कृत यद्यपि आफ्रेख्ट[२] ने इसे बहुत पहले ग्रथित किया तथापि अद्यावधि यह दृष्टिगत नहीं हुई।

---

1 Vogel. पृ.३३३

2 Aufrecht, T. CC. I. पृ. 614; Vogel. पृ. 333

Bibliography

Alterkar, A.S. — *Rāṣṭrakūṭas* and their Times, Poona, 1934.

Apte, P.P. — Uddhāra-kośa,Tantra bhidhānakoś, and Śilparatna-kośa Proc. seminar. dict. Pune. pp.19-24

Apte, V.S. — Sanskrit English Dictonary Reprint, Delhi, 1965

Auftecht, T. — *ZDMG* *28,* 1874, pp.109 ff.

Catalogus Catalogorum Reprinted. Wiesbanden, 1962 Pt. I & II.

Avalon, Arthur — Ed. Tantric Texts, Vol.I Calcutta, 1913 and Reprinted.

Bajaj, Om. — Kṣemendra as a social reformer in Deśopadeśa. JOIB. 13(3)

	Darpadalan of Kṣemendra : A śtudy. PO. 17 (3-4)
Bali, Suryakant	Bhaṭṭoji Dīksita, Delhi, 1980
Banerjea, J.N.	Develpment of Hindu Iconography. Calcutta, 1946
Banerjee, Manavendu	Principles of dictionary making in Hārāvalī. Proc. seminar dict. Pune. pp.41-46.
Banerjee, R.D.	IA. 58
Benerjee, S.C.	ABORI. 45
Bäumer, Bettina	Ed. Kalātattvakośa. New Delhi.
Belvalkar, S.K.	PAIOC. II. Poona, 1919 pp. ii ff.
	Systems of Sanskrit Grammar
	Reprinted. Delhi,
Betai, R.S.	Treatment of Alaṅkāras in Kāvyāuśāsana of Hema. JGRS. XXII. no. 4 1960 Bombay.
Bhandarkar, R.G.	Vaiṣṇavism, Śaivism and Minor Religious Sects. Strassbug, 1913 Also Reprinted.

Also Hindi version available.

Bhate, Saroja — Some aspects of the grammar of Ācārya Hema. in Hai. Vān. Vi. 1990. pp.13-22

Bhatt, B.N. — Śrīkaṇṭhacaritam : A Study, Baroda, 1973.

Bhattacharya, Bishnupada — Yāska's Nirukta and the Science of Etymology. Calcutta, 1958.

Bhattacharya, D.C. — IHQ. 17. pp. 442 ff.; 18 pp.168 ff.

Bhattacharya, S.P.
— Jottings on Sanskrit Metrics, Calcutta, 1963
— Studies in Indian Poetics, Calcutta, 1981
— Hema. and eleventh cent. Kashmir Poeticists. JASB. XXIII. No. 1 1957, pp.117-129

Bhatta, Vasantakumar, M. — Siddhahaimśabdānuśā sane rūpavyākhyānapaddh- tiḥ. in

Hai. Vān. Vi. 1990. pp.144-152.

Bhyani, H.C. — Studies in Hema.'s Deśīnāmamālā, Varanasi, 1966.

— On Prakrit and Apadhramśa (in Gujarati)

in

Haim. Vāṅ. Vim.

Birwe, R. ABORI. Diamond Jubilee, Vol. p.47.

Bloomfield & Edgerton: (Vol. III. Emeneau) Rigveda Repetitions, 2 Vols. (3 parts), Cambridge, 1916. Vedic Variants, Philadelphia, 1930, 1932; 1934 Reprinted : Delhi.

Borooah, A. Bhavabhūti and his place in Sanskrit Literature, Calcutta, 1878

Botto, O. *Ksemendra e il suo Daśāvatāracartia .. Notizia introductive.* **Torino. 1951**

Bri-gu8n Rig-dzin • See : *Do8n-grub-chos-dban*

Bri-gu8n Rig-dzin *See Do8n-grub-chos-dban*

Buck. C.D. A Dictionary of Selected Synonyms in the Principal Indo-European Languages. Chicago, 1949.

Bühler, G. — *Uber das leben des Jaina Monches Hemacandra des Schülers des Devacandra aus der Vajraśākhā.* Wien, 1889

— English Translation : Patel, M. The life of Hemacandrācārya Shantiniketan, 1936.

Bühler, G. : *Indische Palaeographie* Strassburg, 1896 (Also English version and Hindi Version)

WZKM I.

Bohlingk, O *Indische sprüche I-III.* St. Petersbug, 870-73 (reprinted) Vol.

Cardona, George Pāṇini : A survey of Research, Delhi, 1980/82 ?

Chakravarti, N.P. *JA.* 209 (1926)

Chandra, K.R Vararuci vs. Hema. (In Gujarati)

in

	Hai. Vān. Vi. 1990. pp.161-177
Chandra Prabha	Historical Mahākāvyas in Sanskrit, Delhi, 1976.
Chatterjee, K.C.	Technical terms and technique of Sanskrit Grammar. 2nd edn. Calcutta, 1966.
Chaterjee, S.K.	— *Varṇaratnākara* : (1300-1325) of Jyotirīśvara Kaviśekhara's Ed. Suniti Kumar Chaterjee and B. Mishra, 1928
	— PAIOC. IV. Allahabad, 1928.
Chintamani, T.R.	JOR. 8. pp. 372 ff.
Chos-kyi-grags-pa	**See** *Do8n-grub-chos-dban*
Colebrooke, H.T.	Miscellaneous Essays II London 1873.
Dag yig Li si gur Kha8n	**See** *Mahāvyutpatti*
Dag yig za ma tog-1973	**See** *Mahāvyutpati*
Das, S.C.	Principles of Lexicography in Trikāṇḍaśeṣa in

	Proc. Nat. Sem. Dict. Pune. pp. 132-37
Debrunner, Albert	See Wackernagel, Jakob
De, S.K.	— History of Sanskrit Literature, Calcutta, 1947.
	— Sanskrit Poetics, Calcutta, 1960 (Hindi version also available)
	— Bengal's contribution to Sanskrit Literature and Studies in Bengal vaisnavism. Calcutta, 1960.
	— Wit, humour and Satire. OH. 3(2)
Devasthali, G.V.	Etymology and Historical Dictionary of Sanskrit HSHL. pp.1-12
Dhruva, A.B.	Jain Journal Calcutta, 1968 pp.251-261.
Dkon-mchog-phrin-las-bzagn	See Dogn-grub-chos-dban
Do8n-grub-chos-dban for Bri-gu8n Bka-brgyud-pa	Pub. D. Tosondu Senghe 1985 Reproduced from a collection of manuscripts from Limi

	in Northwestern Nepal (In Tibetan) (In Tibet) (Record Display from Melvyi-the University of California Catalog) See Other Title on boards : - *Phags Bod skad gñis brda grel da8n mgnon brjod khag bcas.*
Duff, C. Mabel	Chronology of India. Westminster, 1899 (Reprinted)
Duttaray, R.	OH. 11 (2)
Edgerton, F.	Pacatantra Reconstructed.
Eggeling, Julius	Catalogue of the Sanskrit Manuscripts in the Library of India Office. Vol. I. Part I London, 1889
Franke, R.O.	*Geschichte und Kritik der einhemischen Pāli Grammatik und Lexicographie.* Strassburg, 1902
Gajendragadkar, S.N.	Sanskrit Historical Dictionary and Vedānta in HSHL. pp.13-24
Ganguly, D.C.	History of paramar dynasty. Dacca, 1933.

Garg. Ganga Ram — An Enclopaedia of Indian Literature, 1982.

Gaurinath *Śāstrī* — The Philosophy of word and meaning. Calcutta, 1959.

Ghai, Ved Kumari — Hema. as a Lexicographer Hai. Vān. Vim

Jain, A.N. — A critical study of the Naiṣadhīyacarita. Baroda, 1957?

Jani, Jayadev — On the Paribhāṣas (In Gujarati)

in

Hai. Vān. Vi. 1990. pp.216-23

Johnson, H.M. — Tr. *Triaṣṭiśalākāpuruṣacarita* of Hemacandra Vol. I. Baroda, 1913; II. 1937; III. 1949; IV. 1954.

Jha, V.N. — Ed. Proceedings of the National Seminar on the Art of Dictionary making in Ancient India. Publication of the centre of Advanced Study in Sanskrit, Class E.No. 13 University of Pune, Pune, 1997.

	— Lexical meaning the apporach of the Sanskrit Śāstric tradition. Proc. seminar. dict. Pune. pp.79-82
Jhaveri, M.B.	Comparative and Critical Study of Mantraśāstra.
Jodhi, Aniruddha	Hema. and Mammata : A comparative study Hai. Vān. Vi. 1990. pp.85-91
Haas, E.	*ZDMG. 30*
Hacker, Paul	*Philologie und Altertumskunde. Hambug. 1951* *Beitrage zur Indischen*
Hazra, R.C.	IHQ. 17, PP.442 ff.
Hensgen, Hans.	*Das verhältnis des Amarasiṁha zu Kālidāsa dargestellt an einer untersuchung des Kumārasambhava 1-8 ZDMG.1 CIV. 1954. pp. 377-382.*
Hertel, J.	*Ausgewällte Erzählungnen aus* Hemacandra's Pariśiṣṭaparvan. Leipzig. 1908.

Hirszbant, B.A. — *Über Kṣemendra Darpadalana, Petersburg, 1890.*

Hota, Kashinath — Lexical Priciples of Śabdaratnapradīpa. Proc. Seminar. dict. Pune. pp.83-86

Johnson, H.M. — Tr. *Triṣaṣṭiśalākāpuruṣaca rita* of Hemacandra Vol. I. Baroda, 1913; II. 1937; III. 1949; IV.1954.

Kailash Chandra — *Bhuvanakośa* (Thesis) : Delhi University, 1978.

Kalicharana Śāstrī — Bengal's contribution to Sanskrit Grammar in the Pāṇinian and Cāndra systems. Calcutta, 1972.

Kane, P.V. — History of Dharmaśāstra. 5 Vols. Poona.

— History of Sanskrit Poetics, Delhi, 1961 (Hindi version also available)

Karmarkar, R.D. — PAIOC. I. Poona 1919 pp. 62ff.

K.A. Sivaramakrishna Sastri	How to mark the accented in the Historical Sanskrit Dictionary in HSHL. pp.128-131.
Katrē, S.M.	Two Lectures on Linguistics. K.M. Institute of Hindi studies and Linguistics. Agra, 1959 Tr. in Hindi Kośavijñāna by Sarojini. Sharma, Agra, 1980.
—	Lexicography, Annamalai Univ. Publ. Annamalai Nagar, 1965.
—	Sanskrit Lexicography and Middle Indo-Aryan. Woolner Comm. Vol. pp.133-136.
—	Amara's contribution to Indian Lexicography in Vikrama Smṛti.
Keith, A.B.	The Religion and Philosophy of the Vedas and Upanisads. Cambridge, 1925. Also Reprinted. Also Hindi version available.

Keith, A.B. — A History of Sanskrit Literature, Reprint, London, 1956.

Kelkar, Ashok R. — The scope of a Historical Dictonary in HSHL. pp.70-72

Kielhorn, F — IA. 19

Kreyenberg, E. — *Gesang des Śrīkaṇṭhacaritam des Maükha.* Münster, 1924.

Krishnamachariar, M — History of Classical Sanskrit Literature, Madras, 1937

Delhi, 1970 (Reprint)

Kulkarni, E.D. — Kośa citations in commentarial literature belonging classical period. Vāk. 1951, 1953.

Kulkarni, E.D. — The *Dhanurveda* and its contribution to lexicography

BDCRI. XIV. 1952-53 pp.208-220

Kulkarni, Nirmala — The Lexicographic Norms intended by Śrīharṣa

Proc. seminar. dict. Pune. pp.25-29

Kulkarni, V.M.	Studies in Sanskrit Sāhityaśāstra.
	Hema. : An assessment
	in
	Hai. Vān. vi. 1990. pp.65-73
Kunnuswamy *Śāstrī*	Indian Ephemeris (Reprinted)
Laddu, S.D.	— On the recording of forms, indicating the parts of speech and some other points in HSHL. pp.73-75
	— A glimpse of Hema. contribution to Sanskrit and Prakrit Grammars.
	in Hai. vān. Vi. 1990. pp.13-22
Landau, Sindney, I.	Dictionaries - - The art and Craft of Lexicography. Cambridge, 1989.
Lanman, Charles, Rockwell	A Sanskrit Reader : with vocabulary and notes. 1906 Reprinted, Delhi, 1983.
Lamotte, Etienne	*Histoire du Buddhism Indien* Louvain, 1958.

Liebert. G. *Iconographic Dictionary of the Indian Religions.* *Leiden, 1976. Indian Reprint: 1986.*

Liebich, B. *Cāndra Vyākarana : die Grammatik des Candragomin.* Leipzig, 1902

— Zur Eintuhrung IV. Analyse der Candra Vrtti, Heidelberg, 1920.

(Reprint), Wiesbaden, 1966.

— *Das Datum des Candragomin's und Kālidāsa.* Breslau, 1903.

Lienhar, S. A History of Classical Poetry. Sanskrit-Pali-Prakrit Wiesbaden, 1984.

Limaye, V.P. Critical Studies on the Mahābhāṣya VVRI. Hoshiarpur, 1974.

Lokesh Chandra Amarakoṣa in Tibet. New Delhi, 1965.

Loman, J.R.A — Types of Kashmirian society in Ksemendra's

Deśopadeśa. ALB. 31(2)

Lüders, H. Varuṇa I. Göttingen, 1951, II. 1959.

Macdonell, A.A Vedic Mythology. Strassburg, 1897

Also Reprinted. Also Hindi Version available by Surya Kant : Vidika Devaśâstra

Macdonell, A.A Vedic Grammar. Strassburg, 1910 Reprint, Delhi, 1975.

Madhu Rani A semantic study of Kālidāsa's works with reference to Amarakośa Unpublished Thesis, Delhi University, 1987.

Mahapatrra, K.N. Purṣottama, the Lexicographer. The Orissa Historical Ṛesearch Journal II., 1953-54

Mainkar, T.G. Some poetic aspects of the Rgvedic repetitions, Poona, 1966.

Malashekhra, G.P. Pāli Literature of Ceylone London, 1928.

Mandal B.C.

The date of Maṅkha's Śrīkaṇṭh Caritam. JOIB.26. 1977.

Mehendale, M.A. — Nirukta Notes

— On the Nighaṇṭu and the Nirukta of Yāska

— Analysis of meaning in HSHL. pp.76-88

Proc. seminar. dict. Pune Lexicography & Lexicology Proc. seminar. dict. Pune. pp.7-11

Meulenbeld, J. — The Mādhavanidāna and its chief commentary.

Meyer, J.J. — Altindische Schelmebücher

— *Das Weib in alindischen Epos. Lepzig,* 1915.

— English Tr. Sexual life in ancient India 2nd Edn. London, 1952.

Mitra, Rajendra Lal Notices of Sanskrit Manuscripts.

Modak, B.R. The ancillary lierature of the Atharvaveda :

—

A study with reference to the Pariśistas. New Delhi, 1993.

Mookerjee, Satkari — The Buddhist Philosophy of Universal flux (Reprinted.) Delhi, 1975.

Nagasaki, H. — A study of the *Pramāṇamīmāṁsā* - an incomplete work on Jain logic

Journal of Indian and Buddhist Studies, 28, 1966, pp.861- 868

Nakamura, Hajime. — Indian Buddhism : A survey with Bibliographical Notes. Japan, 1980; Delhi, 1987.

Narang, S.P. — A study of *Śāstra-kāvyas* in Sanskrit Literature. Ph.D. Thesis, Delhi University, 1967 (Partly published with revised versions and papers)

— *Bhaṭṭi-kāvya* : A study, Delhi, 1969 (A part of the thesis : A study of Śāstra-kāvyas in Sanskrit Literature. Ph.D. Thesis, Delhi University, 1967.

— Hemacandra's Dvyāśrayakāvya : A literary and Cultural Study.

(A revised and enlarged part of the thesis : A study of Śāstrakāvyas in Sanskrit Literature. Ph.D. Thesis, Delhi University, 1967.

— Grammatical sources of Halāyudha's Kavirahasya. PAIOC. Aligar, 1967.

(A part of the thesis : A study of Śāstrakāvyas in Sanskrit Literature. Ph.D. Thesis, Delhi University, 1967.

Kālidāsa Bibliography, Delhi, 1976. Also Bibl.

— Meghadūta Studies: On the basis of the comm. Kṛṣṇapati, Delhi, 1979.

— Some Observations on the Ekasvarakānda: A monosyllabic Dictionary in

Anekārthasaṅgraha of Hemacandra

in

Haima. Vān. Vim. 1990 pp.97-106

— Sanskrit-sangīta-vaijayantī Kamlesh Kumari Kulashreshtha Comm. Vol. Ed. Kulashreshtha, Sushma & Narang, S.P. Delhi, 1992.

— The psychological category of Sanskrit kāraka on the basis of Hema

in Sāmmanasya, 1994.

— Modern Evaluation of the Mahābhārata (Prof. R.K. Sharma Fel. VOl. Ed. Narang, S.P. Delhi, 1995

— *Sanskrit-sangīta-Jagadīśvarī Jagdish* Sahai Kulashreshtha Fel. Vol. Ed. Kulashrestha, Sushma & Narang, S.P. Delhi, 1995

— Addenda to Sanskrit Kośa Researches (with special reference to commentaries)

in

Seminar the art of dictionary making

in

Ancient India Ed. Jha, V.N. University of Pune, Pune, 1997 pp.97-130

— On the identity of *Saṁsārāvarta* alias Vikramāditya. (Summary of Paper śubmitted to AIOC. to be held at Baroda in Oct. 1998.

— Pāda-index of classical Sanskrit Poems. (a letter only) Vol. I. Delhi, 1998

Megahaduta Studies : On the basis of the comm. Delhi,

On the identity of Samsārāvartaalias Vikramāditya. (Summary of Paper submitted to AIOC. to be held at Baroda in Oct. 1998.

Pāda-index of classical Sanskrit Poems. (a let-

ter only) Vol. I. Delhi, 1998 (to be released)

Nandi, Tapasvi & Rajendra Nanavati — Ed. *Haima-vāṅmaya-vimarśa.* Papers presented at the seminars on Kalikālasarvajña Hemacandrācarya, Gandhinagar, 1990

— Gunavicāra in Hema. Kāvyānuśāsana

Haima. Vāṅ. Vi. 1990. pp.51-64.

On the Alaṅkāras

Hai. Vān. Vi. 1990. pp.262-271 (In Gujarati).

Nitti, Dolci, L. — *Ed. Prākrtānuśāsana de Purusottamadeva,* Paris, 1938.

Palsule, G.B. — A Concordance of Sanskrit Dhātupāthas, Poona, 1955.

Sanskrit Dhātukāras, Poona

Pandey, K.C. — Comparative Aesthetics Vol. I Benaras, 1950.

Pandey, Raj Bali — Indian Palaeography, Delhi, 1957 Hindi Tr. Allahabad, 1978.

Pandey, M.K.C. — Semantic Embodiment and Decipherment in Amarakoṣa
Proc. seminar. dict. Pune. p.31-39

Pandya, Vijay — *Dyāśraya* : A Literary appraisal
Hai vān. Vi. 1990. pp.349-359.

Panse, Ujjwala — Hemacandra's *Nighantuśeṣa*. Proc. seminar. dict. Pune. pp.47-55.

Patel, Gautam — On Pratibha of Hema.
in
Hai, vān. Vi.1990 pp.292-300 (in Gujarati)

Patel, M. — Tr. of Bühler's Hemacandra. See Bühler, G. über ....

Patel, Vasant, C — *Nāyakaguṇa* of Hema.
in Haim. Vāṅ. Vi. 1990. pp.272-277

Patkar, M.M. — History of Sanskrit Lexicography, 1981.

Patkar, M.M. — IHQ. 19 .

Patki, Rajani S. — Glimpses of Dhanvantarīya Nighaṇtu : A specialized lexicon

on Medicine. Proc. seminar. dict. Pune. pp.63-67.

Patya, Hukam Chand — The Medinīkośa (or the Nānārthaśabdakośa) vis-a-vis the principles of Lexicography Proc. seminar. dict. Pune. pp.13-18

Pavolini, P.E. — *GSAI.* 5.

Petech, L. — China and Tibet in the early 18th cent. Leiden, 1972.

Phags Bod skad gñis brda grel dagn mgnon briod khag bcas — See *Title : Bri-gu8n Bka-brgyid-pa of Pub. D. Tsondu Senghe 1985*

Pischel, R. — *Grammatik der Prakrit Sprachen* Strassburg, 1900 Also English and Hindi version.

Potter, — Encyclopaedia of Indian Philosophy Vol. I. Bibiliography. Rev. Edn. Delhi, 1983

Prasad, Mantrini. — Language of the Nirukta

Raja, K. Kunjunni. — Indian Theories of Meaning. Madras, 1963; 2nd edn. 1969.

— The nature and scope of etymology in Sanskrit Dictionar on Historical Principles in HSHL. PP.70-72

Raghavan, V etc. Ed. *New Catalogus Catalogorum*. University of Madras, I. 1949 (Also Vol. I Revised., 1968 II. 1966, IV. 1968, V. 1969) VII. Raja, Kunnuni, 1973;

— NIA. Ross Volume. pp.239 ff.

Raghavan, V. — Bhoja's Śrngāraprakāśa. Madras, 1963 Also revised. Also Hindi version available Tr. P.D. Agnihotri, Bhopal, 1980.

— IHQ. 19, pp.73-78

Rajwade, V.K. Reflection on the Amarakośa ABORI. VI. pp.26-45

Rao, T.A. Gopinath Elements of Indian Iconography. 2 vols. Madras, 1914.

Raychoudhri. H. Dynastic History of Northern India, Calcutta, 1936.

Renou, Louis *La Durghaṭavṛtti de Śaraṇadeva.* Vol. I. paris, 1940.

Renou, Louis and others *L' Inde Classique.* Vol. I Paris, 1947.

Renou, Louis — Religions of Ancient India. London; 1953.

Renou, Louis *Vocabulaire du Rituel Vedique,* Paris, 1954.

— See Wackernagel, Jakob

Renou, L. JRAS. (N.S.) 15

Rice, L. *For Vastukośa*

See **JRAS. (N.S.) 15.**

Roth & Bohtlingk: *Sanskrit Wörterbuch* 7 Vols. St. Petersbug, 1855. Reprinted with Nachräge, Delhi, 19??

Sanghvi, Sukhala Advanced Studies in Indian Logic and metaphysics.

in Indian Studies : Past and Present II. (2-3), 1960-61, pp.189 ff. & 387 ff. Reprinted Calcutta, 1961.

Sankrtyayana, Rahul JBORS. 21 pp.40 ff.

Sarma, E.R. Sreekrishna — A note on the treatment of Techical and semi-tecnical terms in Historical Sanskrit Dictionary *in* *HSHL.* pp.128-131.

Sarma, Meera — New Traits of Aesthetics in Kāvyānuśāsana. in Hai. Vān. Vi. 1990. pp.131-143.

Śāstrī, Hara Prasad — A descriptive Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Library of the Bengal Vol. I Pt.1

Śāstrī, P.P. Subrahmanya — Sanskrit Manuscripts in the Tanjore Mahārāja Serfoji's Sarasvati mahal Library. Tanjore.

Śāstrī, P.P. Subrahmanya — Author Index of Sanskrit manuscripts in the Government Oriental Manuscripts Library, madras, 1940.

Schmidt, R. — *ZDMG.* **69, 1915** (On Darpadalana).

Schonberg, J. — Kṣemendra's *Kaviḱaṇṭhābharaṇa.* Wien,, 1884.

Sgra sbyor bam po gñ *pa. 1973.*	See *Mahāvyuitapatti*
Sharma, Sudha	— Mahābhārata allusions in the Mahendrasūri Anekārthakairavakaumudī : A Jain Tradition in Modern Evalutation of the Mahābhārata (Prof. R.K. Sharma Fel. Vol. Ed. Narang, S.P. pp. 160-181)
	— Rath Fel. Vol.
	— Sanskrit Saṅgīta Jagadīśvarī
Shastri, A.C.	On Gauṇā & Laksaṇā in Hema. in Hai. Vāṅ. Vi. 1990. pp.284-291. (In Gujarati)
Shastri, K.A. Nilakanta	The Cholas, Madras, 1955.
Sternbach, L.	Subhāsita, Gnomic and Didactic Literature. Wiesbaden, 1974.
Sternbach, L.	See महासुभाषितकोश
Sternbach, L.	See चाणक्यराजनीति
Suthar, Ganeshilalcārya	Jainanyāye A

Śrīhemacandrasūrīnām -avadānam Hai. Vāṅ. Vi. 1990. pp.161-168.

Sircar, D.C. — Indian Epigraphical Glossary. Delhi, 1966.

Sukthankar, V.S. — Prolegomena to the Critical Edition of Mahābhārat : Ādiparvan. Poona (See Mahābhārata)

Tanjur. Sgra mdoi skor See Sgra moi skor :

Tantrābhidhānakośa, — London & Calcutta, 1937.

Tatia, nathmal — The Yogaśāstra of Hema. JJ. 2.1968. pp.130 ff.

Tewari, S.P. — Contribution of Sanskrit inscriptions to Lexicography, Delhi, 1987.

Thakor, Shakti — Hema, Nāṭyadarpaṇa & Uparūpaka in Hai. Vāṅ. Vi. 1990. pp.248-251 (In Gujarati).

Tripathi, Dipti — Hema. and Nāṭyaśāstra

in
Hai. Vān. Vi. 1990. pp.74-84

Turner, R.L. — Comparative dictionary of Indo-Aryan Language. 1962.

Ullmann — Semantics

Unnithiri, NVP — *Pūrṇasarasvatī* - As a versatile scholar
Journal of Haryana Sanskrit Sahitya Akademi, 1986.

Upadhye, A.N. — Orthographical explanation of certain Prakrit forms. PAIOC. Eighth Session, 1937.

Upadhyaya, A.M. — The *Kāvyānuśāsana* of Acharya Hema. A critical Study Ahemdabad, 1987. Ācārya Hema's aesthetics : some theoretical and practical aspects
in
Hai. Vān. Vi. 1990. pp.93-96.

Varma, Siddheshwar — PAIOC. I. Poona 1919 pp.68 ff.

Vatsyayana, Kapila — General Editor : *Kalātattvakośa:* A Lexicon of fundamental

concepts of the Indian Arts. Vol. II. Ed. Baumer, Bettina, concepts of Space Time. New Delhi.

Velankar, H.D. Utpala and Varāhmihira in relation to Sanskrit. in C.K. Raja Fel. Vol. Jinaratnakośa.

Vīrașūriya, Jinasoma Samskrta Kośa Sāhityaya, 1991. In Sinhalese

(Record Display from Melvylthe university of California Caltalog)

Viśvanāth *Śāstrī* On Paribhāṣās and predecessors (In Gujarati)

in

Hai. Vāṅ. Vi. 1990. pp.224-238.

Vogel. C. — Vāgbhaṭa's Aṣṭāṅgahṛdaya. Wiesbaden, 1965.

Indian Lexicography. Wiesbaden, 1979.

Wackernagel, Jakob *Band I Altindische Grammatik (Introduction generale Nouvelle*

edition du texte paru en 1896, au tome I Par Louis Renou. Göttingen, 1957. Nachträge zu Band I. 1957. Von Albert Debrunner.

Band II. 1 Einleitung zur Wortlehre. Nominalkomposition, 2. unveränderte Aufläge 1957.

Nachrage zu Band II. 1. 1957 Von Albert Debrunner

Band II. 2

Die Nominalsuffixe. 1954. Von Albert Debrunner

Band III

Nominalflexion Zahlwrot -- Pronomen, 1930

Band IV.

Verbum und Adverbium. Bearbeitet von Abert Debrunner In Vorbereitun.

Waddell — JRAS. 1984.

Warder, A.K. — Indian Kāvya Literature Vol. I. Delhi, II.

1972; IV. 1983; VI. 1987.

Westergaard, N.L. — *Radices Linguae Sanskritae,* Bonn, 1841.

Whitney, D.W. — Sanskrit Grammar. Reprint, Delhi, 1962.
Hindi Tr. 2 Vols. Lucknow

Whitney, D.W. — Roots Primary and derivatives Reprint, Delhi.

Williams, Monier — Sanskrit-English-Dictionary
Reprint, Delhi, 1981.

Wilson, H.H. — Collected Works, London, II. 1862,; V. 1865.
— Grammars and
Dictionaries of Sanskrit Language Reprit : Delhi, 1979

Winternitz, M. — History of Indian Literature. Vol. 1-2 English Tr. Ketkar, Calcutta, Vol. III. Pt. i-ii Tr. Subhadra Jha, Delhi, 1967.

Woolner, Alfred C.

Introduction to Prākṛt, Reprint Varanasi, 1972.

Zachariae, T. — *Beitrage zur Indischen Lexicographie, Berlin, 1883*

— *Die Indischen Worter-bucher (Kośa). Strassburg, 1897 Series: Grundriss der Indoarischen Philologie Altertumskunde. Ibd. hft.3B*

— *GGA 1894 pp.817 and 822.*

— *Epigomena zu der ausgabe des maṅkhakośa SKAW. 141, Wien, 1899*

— WZKM. 14 p.225 & 35, p.37.

Zwa-lu Lo-tsā-ba *See Mahāvyutpatti Dag yig Za ma tog-1973*

Sonam Angdu, 1945

Sgra sbyor bam po g,164is pa. 1973

Dag yig Za ma tog

Dag yig Li Sii gur Kha8n

Sgra sbyor bam po gñis pa.

the Dag yig Za ma tog

and

the Dag yig Li Sil gur Kha8n

Publisher Rinchen Tondup Tongspan, 2973

Titles: Tibeto-Sanskrit lexicographical materials

Series: Tibeto-Sanskrit-Hindi

grammars and dictionaries V.1

Notes: "Basgo Tongspon publication

In Tibetan : Pref. in English

Known as :

Subjects: Tibetan language

Lexicography

Sanskrit Language — Lexicography

Sgra moi skor : the collected commentaries and exegetic works concerned with the explanation of the prin-

ciples of Sanskrit grammar poetics, metrics, lexicorgraphy and dramaturay translated from the original Sanskrit into Tibetan. Published:

Delhi Karmapae Choedhey, Gyalwae Sungrab Partun Khang, 1985. Series : Sde-dge Bstan-gyur series v Language: Tibetan Other title: *Tanjur. Sgra mdoi skor*

(Record Display from Melvylthe University of California Caltalog)

हिन्दी आदि (देवनागरी क्रम)

अग्रवाल, मनीषा	पुरुषोत्तमदेव के द्विरूपकोश का समालोचनात्मक अध्ययन वैदिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में
उपाध्याय, बलदेव	संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, वाराणसी, १९६९
उपाध्याय, बलदेव	वैदिक साहित्य और संस्कृत वाराणसी, १९७३
ओझा, रायबहादुर पं. गौरीशंकर हीराचन्द्र	भारतीय लिपिमाला, अजमेर,
कत्रे, एस.एम.	कोश विज्ञान
कपूर, अञ्जु (सेठ)	वैजयन्ती कोश के भूमिकाण्ड का समालोचनात्मक अध्ययन
कुमार, शशिप्रभा	सम्पा. कलातत्त्वचिन्तन
कुलकर्णी, ई. डी.	कोशांची अवररनेम टीका ग्रन्थांतील (मराठी)
गुप्ता, सुधा	सामाजिक विकास : अमरकोश से हलायुध तक प्रो. सत्यपाल के निर्देशन में दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. फिल् का लघु शोध प्रबन्ध १९७९ (अप्रकाशित)
गौरोला वाचस्पति	संस्कृत साहित्य का इतिहास वाराणसी, १९६०
चौधरी, राघवप्रसाद	पाञ्चरात्रागम, पटना १९८७
त्रिपाठी, राधा वल्लभ	सम्पा. संस्कृत वाङ्मय का बृहद इतिहास, भाग ४, लखनऊ १९९७
त्रिपाठी, राम सुरेश	संस्कृत व्याकरण दर्शन, दिल्ली, १९७२

द्विवेदी, बालमुकुन्द	संस्कृत कोश : उद्भव के विकास इलाहाबाद, १९७९
नारङ्ग, सत्यपाल	संसकृत के व्याकरणात्मक काव्य - परमेश्वरानन्द शास्त्री स्मृति ग्रन्थ, दिल्ली
निर्मल कुमारी	अभिधानरत्नमाला (हलायुधकोश)
पाठक, चन्द्रहंस	औचित्य सम्प्रदाय का हिन्दी काव्यशास्त्र पर प्रभाव प्राचीन भारत काल गणना एव पारम्पारेक संवत्सर वाराणसी
फक्का, सुषमा (अब खन्ना)	देववाची शब्दों का विकासं संस्कृत कोशों के आधार पर १२ वीं शताब्दी तक
भगवद्दत्त	वैदिक वाङ्मय का इतिहास
मिर, विद्या निवास	भारतीय परम्परा, भोपाल, १९८९
मीमांसक, युधिष्ठिर	व्याकरण शास्त्र का इतिहास २ भाग, अजमेर
विद्यालङ्कार, अ.	आयुर्वेद का बृहत् इतिहास
शर्मा केशव	संस्कृतकोश वाङ्मये सामान्यपरिचय, संस्कृत शोध संस्थानम् शिमला, १९७६
शर्मा देवव्रत सेन	संस्कृत कोश का उद्भव एवं विकास, चण्डीगढ, १९८७
शर्मा, मिथलेश (१९८८)	संस्कृत में एकाक्षरी कोशों का समालोचनात्मक अध्ययन, प्रो. सत्यपाल नारंग के निर्देशन में पी.एच. डी. शोध प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय, १९८८ (अप्रकाशित)
शर्मा, श्रीराम	नानार्थरत्नमालायाम् स्वीकृतो उच्यते

शर्मा, सुधा — क्षीरस्वामीकृत अमरकोशशोद्धाघाटन टीका का समालोचनात्मक अध्ययन प्रो. सत्यपाल नारङ्ग के निर्देशन में एम. फिल के लिये लघु शोध (हिन्दी में) प्रबन्ध, दिल्ली विश्वविद्यालय, १९८० (अप्रकाशित)

शर्मा, सुधा — महेन्द्रसूरिकृतं अनेकार्थकैरवकौमुदी का समालोचनात्मक अध्ययन प्रो. सत्यपाल नारङ्ग के निर्देशन में पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय, १९९४ (अप्रकाशित)

शास्त्री, वाई. एस. — हेमचन्द्राचार्यकृत ईश्वरवादखण्डन अन्ययोगव्यवच्छेदिका के विशेष सन्दर्भ में

शाह, अम्बालाल — सम्पा. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास भाग.५ वाराणसी, १९६९

शिव नारायण शास्त्री — वैदिक वाङ्मय में भाषा चिन्तन, दिल्ली, १९७२

सत्येन्द्र — पाण्डुलिपिविज्ञान

संस्कृत ग्रन्थ (देवनागारी क्रम)

आदिरादि एकाक्षरी नाममाला अज्ञात कर्तृत्व — सम्पा. एकाक्षरनामाकोशसङ्ग्रह, अजमेर, १९६४ पृ.१०९-११३

अथर्ववेदसंहिता — सम्पा. विश्वबन्धु, VVRI. होशयारपुर, १९६०

अनेकार्थध्वानिमञ्जरी - क्षपणककृत

अनेकार्थरत्नपञ्जूषा — समयसुन्दर सम्पा. सेठ देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्डसीरिज़, १९८१

अनेकार्थसङ्ग्रह हेमचन्दकृत	*With Anekārthakairavakaumudī by mahendrasori Ed. Zachariae, Theodor Bombay, 1893 Ed. Abhidānasangraha, Reprinted, Delhi, 1981*
अनेकार्थसमुच्चय – शाश्वतकृत	*Ed. zachariae, Berlin, 1882 Ed. Kulkarni, N.N. Poona,1930*
अभिधानचिन्तामणि – हेमचन्द्रकृत	*With German Tr., copious extracts from Ḥemacandra's Comm. and Śesas*
	Ed. Bohtlingk. Otto & Rieu, C. St. Petersburg.
	Bhattacharya, N.C. With Bengali Tr. Calcutta, 1907-1908
	Pub. Jagveri Hirachandra Kasturacand Chaukasi, Meganabhai, Moticand Jainapustakoddhālā, 92. Surat, 1945
अभिधानरत्नमाला / षड्रसानिघण्टु	*Ed. with Telugu. Madras, 1881 & 1928*
अभिधानरत्नमाला – हलायुधकृत	*Ed. Aufrecht, London / Edinburgh 1861*
	hegveceg&efōle*Lahore, 1928*
	Delhi, 1975
	सम्पा. जोशी, जयशंकर (हिन्दी सहित) लखनऊ, १९७९ द्र. हलायुधकोश
अभिधानरत्नमाला अथवा षड्रसनिघण्टु	*Ptd. Madras 1881, 1928, 1939 etc.* (with Telugu)

अभिधानसङ्ग्रह	*or collection of Sanskrit Ancient Lexicons Vol. I. Ed. Durgaprasad. K.P. Parab & Śivadatta, 1889 Reprinted, Ed. V. Upadhayay, Delhi, 1981*
अभिनव निघण्टु	Ed. Bombay, 1900 & 1938
अभिधानादि एकाक्षरीनामाला अज्ञातकर्तृत्व	सम्पा. एकाक्षरनामकोषसङ्ग्रह पृ.११६-११९
अमरकोश — अमरसिंह	*Editions and Vernacular translations*
वही	*Raghavan, V. NCC. I.*
वही	*Ed. Borooah. A. Berhampore, 1887*
वही	*Ed. S.V. Subahrama Śāstri, Madras, 1904.*
वही	*Ed. Haragovinda Śāstrī Benaras, 1937.*
वही	*Ed. Sardesai, N.G. & Padye, D.G. Poona, 1940 / 41*
वही	*Ed. Śivadatta, Bombay, 1944 Reprinted Chaukhamba Sanskrit Pratishthan, Delhi, 1984.*
वही	*Ed. ramanthan A.A. Adyan Library Series-101. Madras. 1971.*
अमरसिंहोद्घाटन — क्षीरस्वामीकृत	*Ed. Liebich, B. Breslau, 1930*
	Sharma, H.D. Poona
अमरपदविवृति अथवा लिङ्गभट्टीय लिङ्गयसूरीकृत	MIWith Telugu explanations. 1915.

अमरकोशसन्नय (सिंहली)	*Partly ed. by A. De Silva Devarakkhita Batuvanbtudavi, Colombo, 1880*
अमरखण्डनम् — श्रीहर्षकृत	*Ed. Chintamani, T.R. JOR. 5. p.16*
अमरमण्डन — कृष्णसूरिकृत	*Ed. Raghavan, V. DCPR. Poona, 1949 SIAL. 4*
अष्टाङ्गहृदय — वाग्भटकृत	*Ed. Vogel, C. Vāgbhata's Astāngahrdaya. Wiesbaden, 1965*
उणादिकोश	सम्पा. स्वामी दयानन्द अजमेर, १९६
उणादिकोश — शिवराम त्रिपाठी	प्रका. बनारस, १८७३
उणादिकोश — महोदववेदात्ती	*Ed. Madras University, Madras, 1956*
उणादिसूत्र — उज्ज्वलदतव्याख्या	mechee.Aufrecht, T. Bonn. 1859.
उपसर्गार्थचन्द्रिका	चारुदेव शास्त्री कृत
ऊष्मविवेक — गदसिंह	*Ed. Jha, Parameshvara, Darbhanga, 1980*
ऋक्प्रातिशाख्य	*Ed. Varma, Virendra Kumar Chowkhamba Sanskrit Pratisthan, 1992*
ऋग्वेद	*Ed. Śrīmaddayānanda Sarasvati Ajemr, Sam 2019*
ऋग्वेदानुक्रमणी — माधवभट्टकृत	mechee.Madras University Sanskrit Series, 2
एकस्वरकाण्ड — हेमचन्द्र	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ. ५६-५७
एकाक्षर — माधव	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp 38-48*

एकाक्षरकाण्ड	सम्पा. एकाक्षरनामाकोशसंग्रह (१९६४) पृ.४९-५५
एकाक्षरकाण्ड — राघवकवि	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ.१२-१८
एकाक्षरकोश, अज्ञातकर्तृक	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ.९०-९२
एकाक्षरकोश — मनोहरपण्डित	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ. १२०-२२
एकाक्षरकोश — महाक्षपणक	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ.६३-६४
	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ.
एकाक्षरकोष — पुरुषोत्तमदेवकृत	*Ed. K. Vitsarakāra with Bengali Tr. Calcutta, 1987-88*
वही	*With Bengali Tr. G. Tarkaratna, Kosacandrikā, Dhaka, 1893*
वही	*Anonymous*
	With Marathi Meanings Sholapur, 1908
वही	*A. mahapatranka, with Oriya Tr. Cuttuck, 1910.*
एकाक्षरकोश — पुरुषोत्तमदेव	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंग्रह (१९६४) पृ.७६-७९
एकाक्षरनामकोशसङ्ग्रह	*Kākṣaranāmakoṣasaṅgraha Ed. Ramaniya Vijaya, Jodhpur, 1964.*
एकाक्षरनूतननाममाला — विश्वशम्भुमुनि	*With Marathi meanings Sholapur, 1908*

एकाक्षरनाममाला — महाराज शाहकृत	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंङ्ग्रह (१९६४) पृ.९३-९४
एकाक्षरनाममाला — मेदिनीकारकृत	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंङ्ग्रह (१९६४) पृ.१००-१०३
एकाक्षरनाममाला — वररुचिकृत	सम्पा. एकाक्षरनामकोशसंङ्ग्रह (१९६४) पृ.७१-७५
एकाक्षरनाममाला सुधाकलक्ष्मुनिकृत	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.58-62*
एकाक्षरनाममाला सौभरि	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.19-27.*
एकाक्षरनाममालिका — अमरचन्द्र	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.80-81*
एकाक्षरनाममालिका — विश्वशम्भूकृत	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.1-11*
एकाक्षरसंज्ञाकाण्ड — महीपसचिव	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.*
एकाक्षरीनानार्थकाण्ड — धरसेनाचार्य	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.82-84*
एकाक्षरीनाममाला — महेश्वरकवि	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.123-136*
एकाक्षरीनाममाला नत्वादि अज्ञातकर्तृक	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.114-115*
एकाक्षरीमातृकाकोश अज्ञातकर्तृक	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.104-108*

एकाक्षरीय	*Ed. Ekaksaranāmakosasangraha (1964) pp.67-70*
एकावलीकोश	सम्पा. कोशरत्नाकर भाग -१ पृ.२१-२६
औचित्यविचारचर्चा — क्षेमेन्द्र	*Ed. KM. i. 115 ff (Reprinted)*
औषधिकोश	mechee. Ahemdabad, 1899.
कच्चायन व्याकरण	सम्पा. तिवारी, लक्ष्मी नारायण और शर्मा, बीरबल बनारस, १९६२
कटकसङ्ग्रह	कटक, १९१०
कलाविलास — क्षेमेन्द्र	*Ed. KM. I Schmidt, 1914*
कल्पद्रुकोश — केशव	*Ed. Sharma, Ramavatar, GOS Baroda, 1928, 1932*
कविकण्ठाभरण क्षेमेन्द्र कृत	*Ed. Schonberg, J. Ksemendra's Kavikaṇṭhābharaṇa. Wien, 1884.*
कविरहस्य — हलायुध	*Ed. Heller, L. Göttingen, 1894*
काठक संहिता	सम्पा. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर, पाडी, चतुर्थ संस्करण, १९८३.
कात्ययान श्रौतसूत्र	*Ed. Parvatiya, Nityananda. Chowkhamba Sanskrit Series, 1985*
कालिदास ग्रन्थावली	*Ed. Dvivedi, Rewa Prasad. Varanasi, 1976 (Original text) (Kālidāsa Granthāvali Critical Edn. with variants), 1985*

कुमारसम्भव कालिदास कृत	*With Vallabhadeva; Ed. DMG: by Srimannarayanamurthy* *Also See Patel, Gautam: Kumarasambhava With Vallabhadeva; Ahmedabad*
कोशकल्पतरु (द्रुम) विश्वनाथ वैद्य	*Ed. Poona, 1957*
कोशचन्द्रिका	*Dhaka, 1893*
कोशरत्नाकर	भाग - १, १८७०, पृ.१७४
कोशरत्नाकर	*Vol. I., Bombay, Śaka, 1929*
कोशसङ्ग्रह	*Ed. By bhattacharya, G.V. Calcutta, 1907-1908, p.1924-25*
कोशावतंस — राघव आपा खण्डेकर	
क्रियानिघण्टु / आख्यतचन्द्रिका - वीरपाण्ड्यकृत	*Ed. Telugu Script Mysore*
अमरकोशोद्घाटन क्षीरस्वामि कृत	द्रष्टव्य अमरसिंह कृत अमरकोश
गणरत्नमहोदधि — वर्धमान कृत	*Ed. Eggeling, J. London, 1979 (Reprinted)*
ग्रहकोश	Kosśacandrikā, Dhaka, 1893
चरणव्यूहसूत्र	सम्पा. शर्मा, उमेश चन्द्र, अलीगढ, १९७८
चाणक्य राजनीति	*Maxims on Rājnīti : Comp. from various collections of maxims attributed to Cāṇakya. Ed.*
चान्द्रव्याकरणचन्द्रगोमिन्	सम्पा. चटर्जी क्षितीश चन्द्र पूना, १९५३
	सम्पा. दोशी, जोधपुर, १९६७

जिनरत्नकोश

तन्त्राभिधानकोश — *London & Calcutta, 1937*

तिलकमञ्जरी — धनपालकृत — *Tilakamanjari — Dhanapala KM. 85*

तैत्तिरीयसंहिता — सम्पा. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर, परडी, १९५७

त्रिकाण्डशेष पुरुषोत्तमदेव — *Ed. B. Rama. Calcutta, 1807-1808*

Ed. Kośaratnākara Vol. I., Bombay, Śaka, 1929

Ed. Tarkapancanana, Dacca, 1870 Banglore, 1883

Ed. Mahathera, Shilakhanda, C.A. Bombay, 1917

Ed. Abhidhānasangraha, Reprinted, Delhi, 1981

दुर्घटवृत्ति — शरणदेवकृत — *Ed. Renou, Louis. Vol. I. Paris, 1940*

देशीनाममाला — हेमचन्द्रकृत — *Ed. Bühler, G. Göthingen, 1879*

Bhavnagar, 1916-17

Ed. Vikram Vijay Muni Patan, 1946-47

Ed. Doshi, B.J. Bombay, 1960

देशीशब्दकोश — सम्पा. आचार्य तुलसी तथा महाप्रज्ञ लाडनू, १९८८

द्रव्यगुणसङ्ग्रह — चक्रपाणिदत — *Ed. Sen, D.N. Calcutta, 1871*

द्राह्यायण श्रौतसूत्र — सम्पा. एम. रामनाथ दीक्षित, मद्रास, १९८२

द्वादशकोशसंग्रह	वाराणसी, १८६५ / ६६, १९२९
धन्वन्तरिनिघण्टु	सम्पा. एस.के. शास्त्री और राव, पी.वी. तेलुगु, मद्रास, १८९२
धरनीदास	सम्पा. इ.डी. कुलकर्णी, पूना, १९६८
धातुकोश — धनश्यामकृत	प्रका. JSML. XXVI. 253
ध्वनिसङ्ग्रह — भरतसेन	Ed. Banerjee, S.C. ABORI. 45 P.49
निरुक्त — यास्क	*Ed. Roth, R. Göttingen, 1847-1852 Skold, H. Lund, 1926*
	Sarue, Lakshman Lahore, 1927 (Translation and Introduction Reprint, Delhi, 1962)
शिवनारायण शास्त्री	
निरुक्तपञ्चा दिल्ली	
नानार्थरत्नमाला	*Ptd. in Telugu or Grantha characters & Grantha gloosses Madras Ist 1856, 1870, 1879 etc.*
	section with Marathi Sholapur Meaning, 1908
नानार्थसङ्ग्रह	सम्पा. अनन्दोराम असम १९६९ पुनर्मुद्रण बरुआ १८८४
नानार्थ संङ्ग्रह — अजयपाल	सम्पा. चिन्तामणी, टी.आर., मद्रास यूनिवर्सिटी संस्कृत सीरिज़, १०, १९३७
नानार्थार्णव संक्षेप केशवस्वामी	सम्पा. टी. गणपति शास्त्री, टी एस. एस. ९०,९९ त्रिवेन्द्रम १९२६-२७, पुनप्रकाशित, त्रिवेन्द्रम, १९९०

नाममाला — धनञ्जय	सम्पा. कन्नड़ अनु., मद्रास और बंगलौर, १८८४
	गुजराती अनु. द्वारा, टी. पालिताना सूरत, १९१२
	जैन, महेन्द्र कुमार, मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला, काशी १९५०
नाममालिका — भोज	सम्पा. कुलकर्णी, इ. डी. और गोखले, वी.डी. दक्खन कालिज, स्नातकोत्तर और रिसर्च इन्टीट्यूट, पूना, १९५५
नामलिगानुशासन — अमर	(द्र.) अमरकोश
	सम्पा. अभिधानसङ्ग्रह, पुनप्रकाशित दिल्ली, १९८१
पर्यायमुक्तावलि — हरिचरण (उड़िया सहित)	कटक, १८७५ एस.एन.एफ १९०७ प्रकाशित
पर्यायरत्नमाला — माधवकर (बंगाली अनु.)	सम्पा. सी. भट्टाचार्य, कलकत्ता १९३४
पारस्करगृह्यसूत्र	सम्पा. भाकड़े, गंगाधर, द्वितीय सम्पा. दिल्ली, १९८२
प्राकृत प्रकाश — वररुचिकृत	सम्पा. उपाध्याय, बलदेव, बनारस, १९७२
प्राकृतानुशासन पुरुषोत्तम	*Ed. Nitti Dolci Luigia Paris, 1938*
बृहत्कथामञ्जरी — क्षेमेन्द्र	सम्पा. KM. ६९, १९०१ (पुनर्मुद्रित)
बोधिसत्त्वसंवरविंशक — चन्द्रगोमिन्	*Tibetan translated by Chos-grub and also into Chinese Both versions were edited by Daishun Ueyama Indogaku Bukkyogaku Journal of Indian and*

	Buddhist Studies, Takyo Q. Nakamura, Hajime. Indian Buddism : A Survey with Bibliographical Japan, 1980; Delhi, 1987
ब्रह्ममहापुराण	सम्पा. शर्मा, राजेन्द्रनाथ, दिल्ली १९८५
भट्टिकाव्यम् — भट्टि कृत	*Ed. Karandikar. M.A & Shailaia. Delhi, 1982*
भाषावृत्ति — पुरुषोत्तमदेव कृतं	स्वामी द्वारिका प्रसाद शास्त्री, वाराणसी, १९७१
मङ्खकोश — मंख	*Ed. Zachariae, Theodor with extracts from the comm and three indexes, Reprinted, Varanasi, 1972*
महाभागवत उपपुराण	सम्पा. पुष्पेन्द्र कुमार, दिल्लीए १९८३
महाभारत — आदिपर्व	*Ed. Sukthankar, V.S Prolegomena to the Critical Edition of the Poona*
महाभारत अनुशासनपर्व	(द्र.) विष्णुसहस्रनाम
	सत्यभाष्यम् सम्पा. और व्या. वशिष्ठ, सत्य
	सम्पा. गीताप्रेस गोरखपुर
	सम्पा. नीलकण्ठ व्याख्या सहित
महाव्युत्पत्ति	*Zwa-lu Lo-tśa-ba Daga yig Za ma tog- 1973 Sonam Angudu, 1945- Sgra sbyor nbam po gñnis pa. 1973 Dag yig Za ma tog Dag yig Li śii gur Kha8n Sgra sbyor bam po gñnis pa, the Dag yig Za ma tog and the Dag yig Li sil*

gur Kha8n Publisher Rinchen Tondup Tongspon, 1973

Title : Tibeto-Sanskrit lexicographical materials

Series : Tibeto-Sanskrit-Hindi

grammars and dictionaries v.1

Notes : "Basgo Tongspon publication in Tibetan : pref. in English

known as :

Subjects : Tibetan language Lexicography

Sanskrit Language — Lexicography

Sanskrit Language — Lexicography

Tibetan language — Dictionaries

(Record Display from Melvyl the University of California catalog)

महासुभाषितसङ्ग्रह — mechee.K.V. Sarma VVRI. Hshiarpur, 1981

माधवीयधातुवृत्ति सायण — सम्पा. शास्त्री, द्वारिकादास, वाराणसी, १९६४

माध्यन्दिनसंहिता — सम्पा. मीमांसक, युधिष्ठिर, १९७१

मेघदूत — कालिदास — सम्पा. मुखोपाध्याय, एस. कलकत्ता, १८६९

Pandey, G. Calcutta, 1872-73

	Jivanand Vidyasagar, Calcutta, 1872
	Kashi Sanskrit Series, 41 Benaras, 1916
	Hoshing, Jagannātha śāstrī. 3rd. edn. 1968.
राजतरङ्गिणी — कल्हण	*Tr. Stein, M. (Reprints) Delhi.*
राजनिघण्टु — नरहरि	*Thirteen Chapter with German by Garbe, R. Indischen Mineralien, Leipzig, 1882 With glosses in Marathi, Kanarese and Hindi.*
राजव्यवहारकोश — रघुनाथ	प्रका. शिवचरित्र प्रदीप मराठी भारत इतिहास संशोधक मंडल पूना, १९२५
ललितासहस्त्रनाम	सम्पा. वासुदेव शर्मा, दिल्ली, १९८५
लिंगपुराणम — शिवतोषिणी भाष्यसहित	सम्पा. दिल्ली, १९८९
लिंगानुशासन — दुर्गासिंह	सम्पा. कोपरकर, डी.जी. पूना, १९५२
लिंगानुशासन हेमचन्द्र	*Ed. Franke, R.O. Göttingen. 1886*
लोकप्रकाश — क्षेमेन्द्र	सम्पा. जदु, आर.डी. श्रीनगर, १९४७
वर्णरत्नाकर — कविशेखर ज्योतिरीश्वरकृत	चटर्जी, एस. के.
	Proc. AIOC. IV. Allahabad, 1998
वस्तुकोश	*Kittel For Vastukośa See Fo Mangarāja IA.I; For Vastukośa : IA.4.*
वस्तुकोश	*Rice, L. Vastukoś See JRAS. (N.S.) 15*

विश्वप्रकाश — महेश्वर कृत — *Ed. Chowkhamba Sanskrit Series. 1911*

With Telugu Comm. by M.A. Śāstrī Kotipalli, 1913

विश्वलोचन / मुक्तावली — *Tibetan version by Dharmapālabhandra alias Chos-skyons-b / lzah-Po of Za-lu (1441-1528*

Manglol version by Anonymous Q. Vogel

वाचस्पत्यम् — सम्पा. श्रीतारा नाथ वाचस्पति, पुनर्मुद्रित, वाराणसी, १९६२

वायुमहापुराण — सम्पा. शर्मा, राजेन्द्र नाथ, दिल्ली, १९८५

विश्वप्रकाश — महेशकृत — सम्पा. बनारस, १९११

विष्णुसहस्त्रनाम — सत्यभाष्यम् — सम्पा. और व्या. वशिष्ठ, सत्यदेव, दिल्ली, १९६९

द्वितीय मुद्रण, १९८६

तृतीय मुद्रण, १९९६, Vol. I और II

वैजयन्तीकोश — यादवप्रकाश — *Ed. Haragovinda Śāstrī Varanasi, 1971*

वैदिक पदानुक्रमकोष — सम्पा. विश्वबंधु, वी.वी. आर. आई. होशियारपुर, विक्र. १९९९

वैद्यनिघण्टु — अभिनवकृत — see: Jainasiddhantabhāskara, IV ii.

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी — भट्टोजिदीक्षित कृत — *Ed. Pancholi, Bala Krishna Vol. IV.*

Ed. Chowkhamba Sanskrit Samsthana

शतरुद्रीयमन्त्र	पुनर्मुद्रित शि.स.ना. पृ. २५४२५५
शब्दभेद / शब्दरत्नाकर	सम्पा. हरगोविन्द तथा बेचरदास, वाराणसी १९१३
शब्दकल्पद्रुम — राधा कान्त देव	*1-5 Reprint, Delhi, 1988*
शब्दरत्नप्रदीप	*Ed. Śāstrī, Hariprasada. RORI, Jaipur, 1956*
शब्दरत्नसमन्वयकोश	*Ed. Shastri, Vitthalram lalluram Baroda, 1932 GOS. 59*
शब्दरत्नाकर	*Ed. Mīmāmsaka, Yudhisththira, Ajmer, 1967*
शिवपुराण	सम्पा. पुष्पेन्द्र कुमार, दिल्ली, १०८१
शिवसहस्रनामाष्टकम्	*Introduction and Śivasahasraāmakośa : A dictionary of Names, by ram Karan Sharma Delhi, 1996*
शोभनस्तुति / तीर्थेशस्तुति — शोभनकृत	*KMG. VII*
शैवागमपरिभाषामञ्ज	*Ed. & Tr. French Instt. Pondicherry, 1979*
षट्कोशसङ्ग्रह	सम्पा. काशी, १८७३-७४
समयामतृका — क्षेमेन्द्र	*Ed. KM. 10, 1988 (Reprinted)*
संस्कृतकोश	बम्बई, शक. १९२९
संस्कृतकोशयुग्मम्	*karachi. 1867 / 68*
हलायुधकोश — हलायुध कृत	द्र. अभिधानरत्नमाला
हारावली — पुरुषोत्तमदेव कृत	*Reprinted : Abhidhānasagrah, Delhi.*



राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058